P.k. III.

Rāmāyaṇa. – Āraṇyakāṇḍa.

Arund Kand

रामायण बालमीकीयभाषा

راماین بالمیکی

आरण्य काण्ड



जिसको

सकल हरिभक्त व महात्माओं के रामचरित्र श्रवणार्थ श्री मुन्शी नवलकिशोर
अवध समाचार सम्पादक ने अयोध्या संस्कृत पाठशाला के तृतीयाध्यापक
श्री पण्डित महेशदत्त जी से संस्कृत बाल्मीकीय रामायण से
भाषा में यथा तथ्य उल्था कराया

लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छापी गई
दिसम्बर सन् १८८२ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् दिसम्बर सन् १८८२ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा (इतिहास)	महाभारत पर्व्व अलेह-	रामायण रामबिलास	रामायण गीतावली स-
महाभारत	दा सी हैं	रामायण तुलसी कृत	विनय पत्रिका बा. मो-
१- पहिले हिस्सा में-	१-आदि पर्व्व	रामायण सटीक मय मान	विनय पत्रिका बा. शि-
आदि पर्व्व सभा पर्व्व	२-सभा पर्व्व	सदीपिका कोष आदि	विष्णु पुराण भाषा
बन पर्व्व	३-बन पर्व्व	रामायण तु०टी० सुखदेव क-	लिंग पुराण
२- दूसरे हिस्सा में	४-विराट पर्व्व	तथा जिल्द बंधी	प्रश्नोत्तरखण्ड
विराट पर्व्व उद्योग पर्व्व	५-उद्योग पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की मय	भविष्योत्तर पुराण
भीष्म पर्व्व द्रोण पर्व्व	६-भीष्म पर्व्व	तसवीर वक्षेपक	बाराह पुराण
३- तीसरे हिस्सा में	७-द्रोण पर्व्व	रामायण तुलसी कृत सा-	शुक्र नीति
कर्ण पर्व्व शल्य पर्व्व	८-कर्ण पर्व्व	तों काण्ड	रसवृष्टि व रसचंद्रोदय
गदा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	९-शल्य पर्व्व व गदा	१-बाल काण्ड	सुदामा चरित्र
योशिक पर्व्व विशोक प-	पर्व्व सौप्तिक मय योशि-	२-अयोध्या काण्ड	कृष्ण गीतावली
र्व्व स्त्री पर्व्व शान्ति पर्व्व	क व विशोक व स्त्री पर्व्व	३-आरण्य काण्ड	श्री अनुरागरस
में राज धर्म्म आपद् ध-	१०-शान्ति पर्व्व में राज	४-किष्किन्धा काण्ड	सौदागर लीला
र्म्म मोक्ष धर्म्म	धर्म्म मोक्ष धर्म्म व दान	५-सुन्दर काण्ड	रासलीला
४- चौथे हिस्सा में	धर्म्म	६-लंका काण्ड	भुवनेश भूषण
शान्ति पर्व्व दान धर्म्म	११-अश्वमेध आश्र-	७-उत्तर काण्ड	**नाटक**
अश्वमेध आश्रम वा-	म बासिक मुशल पर्व्व	रामायण शब्दार्थ कोष	प्रबोधचन्द्रोदय
सिक पर्व्व व मौशल पर्व्व	महा प्रस्थान स्वर्गा-	रामायण का इतिहास	रामाभिषेक
व वाण प्रस्थान स्वर्गारो-	रोहण	रामायण मानस दीपिका	आनंद रघुनंदन
हण पर्व्व हरिवंश पर्व्व	१२-हरिवंश पर्व्व	रामायण कवितावली	भ्रमजाल

॥ श्रीरामभद्रोभद्रमातनोतु ॥

रामायणवाल्मीकीयभाषा ॥

आरण्यकाण्ड ॥

दो० बन बिहरण अशरण शरण सिया लषण रघुबीर ॥
चरणकमल शिर धरत जो हरण प्रणत जनपीर १

महागहन बन दण्डकारण्य में प्रवेशकर अति दुर्द्धर्ष आत्मवान् श्रीरामचन्द्रजी ने तपस्वियों के आश्रम मण्डल देखे १ जिनमें कुश चीर ठौर ठौर परेहैं ब्रह्मविद्या की लक्ष्मी का प्रभाव अच्छीतरह विद्यमान होरहा है जैसे आकाश में भीटिके सूर्य्यमण्डल को मारे तेजके कोईनहीं देखसक्ता वैसेही ब्रह्मविद्या के प्रभाव के कारण वेभी बड़ी कठिनता से देखने के योग्य हैं २ व सब जीवोंके रहने के योग्य सुन्दर झारे बहारे अङ्गण सहित नानाप्रकार के सिंह हरिणादि मृगगण व मयूरादि पक्षियों से भरेपुरे ३ व जहां अप्सरावों के झुण्डके झुण्ड नाचरहे हैं कोई कोई अप्सरा किनारे किनारे घूमरही हैं अति विशाल यज्ञशाला बनीहैं जिन में अग्निस्थापन के कुण्ड अति रमणीक बने हैं श्रुव मृगचर्म्म कुशादि सब धरेहैं ४ व यज्ञकरने का इन्धन प्रत्येक पर्णशाला में स्थापित है नदियों के जलसे भरेपुरे कलश धरे हैं नानाप्रकार के फलमूल कन्दादि मुनियों के भोजन के लिये एकत्र हैं बनके बड़े बड़े पुण्यदायक वृक्ष विद्यमान हैं जिनमें अति स्वादिष्ठ फल लगेहैं ५ व नानाप्रकार के उपहार होम बस्तुओं से अर्च्चित वेदपाठ से शब्दायमान इसहेतु अति पुण्यदायक होरहे हैं अन्य चित्रकूट वनके पुष्प फुलारहे हैं कमल युक्त छोटी २ तलैयां विद्यमान हैं ६ फिर फलमूल भोजन करने वाले नियमित समय पर बोलने देखने सुननेवाले जितेन्द्रिय चीर मृगचर्म्म वल्कलादि धारी सूर्य्याग्नि के समान तेजस्वी अति पुराने मुनियों से सँयुक्त हैं ७ व पुण्यरूप नियताहार परमर्षिगणों से शोभित ब्रह्मभवन के समान

शोभायमान वेदपाठ सेनादित हैं ८ व वेदपाठी बड़े बड़े भाग्यवान् ब्राह्मणों से शोभित हैं ऐसे तपस्वियों के आश्रममण्डल श्रीमान् श्रीरामचन्द्रजी ने देखे ९ व देख धनुष परसे रोदा उतार आश्रमों के सामने चले इनको आतेही देख दिव्यदृष्टि से महर्षियों ने जानलिया कि श्रीरामचंद्र जी हैं १० इसलिये प्रसन्न मनहो सबके सब रामचन्द्र व महायशस्विनी श्री जानकी जीके सम्मुख मुनिलोग चले फिर चन्द्रमा के समान धर्म्मचारी रामको उदय देख ११ व लक्ष्मण जानकी कोभी देख सब मुनि लोगों ने मङ्गलपाठ पढ़ पढ़ तीनो जनोंको अङ्गीकार किया १२ श्री रामचन्द्र जीका प्राकृत विलक्षणरूप शोभा सम्पति सुकुमारता व सुवेषता देख सब वनवासी इनके आकार में विस्मित हुये कि ये विलक्षण पुरुषपुराण यहां कैसे आये १३ व वैदेही लक्ष्मण श्रीरामचन्द्र जीको आश्चर्य्यरूप देख सब वनवासी बिना पलकमारे यकटक निहारने लगे १४ व श्री रामचन्द्रादिक जो अपूर्व्व अतिथि मिलेथे तिनको सर्व प्राणियों के ऊपर दया करनेवाले मुनि लोगोंने पर्णशाला में लाय टिकाया १५ पहुंचतेही पहुंचते प्रथम बहुत अच्छीतरह पूंछपांछ सत्कारकर फिर अग्नि समान तेजस्वी मुनियोंने सुन्दर शुद्धजल लाय पादप्रक्षालनादि करनेको दिया १६ व परमानन्दित हो स्वस्त्ययनादि मङ्गल पुण्याह वचन पढ़ने लगे तदनन्तर मूल फल पुष्पादि दिया फिर सुन्दर स्थान रहनेके लिये बताया १७ बतायकर सब धर्म्मज्ञ मुनिलोग हाथजोर श्रीरामचन्द्र जी से बोले कि आप हमलोगोंके धर्म्मपाल शरण्य हैं व परम यशस्वी हैं १८ व पूजनीय मान्यहैं क्योंकि दण्डधारी राजा गुरू के समान होता है इससे सब प्रकार से आप पूजा करनेके योग्य हैं क्योंकि आपही जब प्रजाकी रक्षा करतेहैं तो उनके अर्थ धर्म काम मोक्ष चारो पदार्त्थ सिद्ध होतेहैं १९ तिससे राजा सब श्रेष्ठश्रेष्ठ पदार्त्थों को भोगता है व उसके सब प्रणाम करते हैं इससे हम सब लोगोंकी रक्षा आपकरें क्योंकि हम सब आपके राज्यमें बसतेहैं २० जो कहिये कि हम भीतौतुम लोगों के समान वनमें घूमतेहैं कैसे तुम्हारी रक्षाकरैं सो नहीं आप सबके राजा स्वामीही रक्षा करनेही लायकहैं चाहै अपने नगर में बसेहों चाहै वनमें जो कहिये कि तुम लोगभीतो अपनी तपस्या के बलसे सबकी व अपनी

रक्षा करसक्ते दुष्टोंको दण्डदे सक्ते हौ सो नहीं है राजन् हम लोगों ने अब दण्डधारण छोड़दिया है व क्रोधको जीतलिया जितेन्द्रिय होगयेहैं और प्रजा पालनमें समय समयपर सब क्रोधादिकों का काम परताहै२१ इससे हम सब लोगों की रक्षा आप निरन्तर करते रहिये जैसे गर्भ में टिके व छोटे बालकों की रक्षा माता करती है हम लोगों के तपस्याही धन है जिसमें इसमें किसी प्रकार का विघ्न न हो २२ ॥

चौ० इमि कहि मूल फूल फल लाये। जो त्यहि काल मुनीशन भाये ॥ अरु वनभव नाना फल जाती। लषन सहित रघुपतिहि पोसाती १। २३ सब तापस सिद्धेश मुनीशा। अनल समान महान कवीशा॥ न्याय चतुरविधिवत रघुनाथहि। पूजाकीन अनाथ सनाथहि २। २४॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेप्रथमस्सर्गः १ ॥

इसरीति से जब श्रीरामचन्द्रजीकी पहुनई मुनियों ने अच्छी तरह की व रात्रि बीती सूर्योदय हुआ तो श्रीरामचन्द्र प्रातस्सन्ध्या वन्दनादि कर मुनियों से पूंछ वनमें विचरनेलगे १ जिस बनमें नानाप्रकार के मृगगण घूमरहेथे ऋक्ष ब्याघ्र घूमतेथे वृक्ष वल्ली आदि सब टूटेफाटे परेथे बड़े बड़े दुर्द्दर्श तड़ागादि जलाशय विद्यमानथे २ नानाप्रकार के पक्षीबोलरहेथे झिंगुरआदि शब्दकररहेथे ऐसेबनमें घूमतेघूमते लक्ष्मण के आगे चलेजाते श्रीरामचन्द्रजीने देखा ३ सीताजीभी सङ्गहीथीं तो उस व्याग्घ्रादि घोरमृग सेवित वनमें पर्वत के शिखर के समान महा घोरशब्द करतहुये एक राक्षसको देखा ४ जिसकी अँधऊ कुआँकेसमान गहरी आँखेथीं व बड़ाभारी मुखथा अति विकट शरीर बड़ा विकराल पेटथा जिसके देखनेहीसे मनुष्य डरजायँ कहीं टेढ़ा कहीं सूधा कहीं ऊँचा कहीं खाली समानांग कोई न था अति लम्बे चौड़े सर्वांगथे महा बिकराल घोरदर्शनथा ५ चरवीसे ओद रक्तमें भिगोयाहुआ व्याग्घ्र का चमड़ा ओढ़े यमराजके समान मुहँबाये जिसेदेख सब प्राणियों को भय होतीथी ६ वह राक्षस तीनि सिंह चार वाघ दो भ्यड़हे दश पृषत व दांत सहित चरबी लगाहुआ एक हाथीका मूंड़ लियेथा ७ दो लोह के त्रिशूलभी लियेथा व अति भयानकशब्द करताथा ऐसा राक्षस श्रीराम

लक्ष्मण व जानकीजीको देख ८ बड़ा क्रोधकर इनके सामने दौरा मानों उस समय प्रजाभक्षण के लिये यमराजही था अति भयानक शब्दकर मानों पृथिवीको कँपाताहीथा ९ अति वेगसे दौरआय जानकीजीको कंधों पै चढ़ालिया व श्रीरामचन्द्रजी से बोला कि तुम दोनों जन जटा चीर धारणकिये वनमें सहितस्त्री आयेहौ इससे अपनाको मरेहीसमझो १० बाण धनुष तरवार हाथमें ले दण्डकारण्य में आयेहौ फिर यहतो कहौ तुमतो दोनोंजन तपस्वी हौ यह स्त्री कैसे संगहै सोभी दो जनोंके बीच में एकहीहै ११ इससे हमको तुमदोनों बड़े अधर्म्मचारी देखपड़तेहौ तुम दोनों कौनहौ जो तपस्वियों के वेषका दूषण करतेहौ कहां तपस्वियों का वेष कहां स्त्री को संग रखना बतावोतो कौनहौ व हमतो विराधनाम राक्षसहैं इस दुर्गवनमें रहतेहैं १२ हथियार बाँधे इसवनमें घूमाकरते व नित्य ऋषियों का मांसही खातेहैं अब इस तुम्हारी स्त्री को अपनी स्त्री बनावेंगे १३ व तुम दोनों पापियोंका रुधिर संग्राम में पान करेंगे जब दुष्टात्मा विराधने ऐसे दुष्ट वचनकहे १४ तोजानकीजी ऐसे निडर बचन सुन भ्रान्त चित्तहो प्रचण्ड पवनके वेगसे कँपतेहुये केलाके वृक्षके समान मारे भय से काँपउठीं १५ तब विराधके कन्धोंपै स्थित जानकीजी को देख अति उदासीन मुखहो श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजीसे बोले १६ हे लक्ष्मण देखो तो राजाधिराज जनकजीकी कन्या अति शुभाचारिणी हमारी स्त्री विराधके कांधेपरबैठीहै १७ कहां ये अत्यन्त सुखसे पालित हुई राजाधिराज की पुत्री अतियशस्विनी कहां राक्षसके वशमें परनासो कुछनहीं कैकेयीको जो बांछित हमलोगों के साथथा व जो बरदान उस नेमांगाथा वहसिद्ध हुआ १८ जोदुष्टाकैकेयी अपनेपुत्रको राज्यदिलाकर भी न संतुष्टहुई बड़ीदूरतक देखनेलगी कि यदियेरहेंगे तोहमारे पुत्रके राज्यमें कुछ विघ्न करेंगे इससे वनवास भी दिलाया १९ देखो यद्यपि हम सब प्राणियों के प्रियथे तथापि उस हमारी मँझिली माता ने हमें वनवास दिलाया अब उसके सब काम सिद्ध होगये २० हे लक्ष्मण हमको जैसा दुःख वैदेही को राक्षस के स्पर्श करने से है वैसा पिता के बियोग व राज्य छूटने से नहीं है २१ जब श्रीरामचन्द्र जी ने ऐसा कहा तो मारे शोक के आँशू भर अति क्रोध कर लक्ष्मणजी बोले

जैसे क्रोध युक्त सर्प को कोई रोंके वह फुफुकार छोड़ता हुआ इधर उधर तड़फड़ाय २२ कहा हे श्रीराम सब प्राणियों के नाथ हो जैसे कि इंद्र सबके नाथ हैं सो अनाथ के समान क्यों दीनवचन बोलते हो व परिताप करते हो हम ऐसा सेवक भी यहीं विद्यमान है तिसपर भी आप संसारियों के समान वचन कहते हो २३ देखिये तो इसी समय हम क्रोधकर एकही बाण से इस दुष्ट विराध नाम राक्षस को मारते हैं कि यह प्राण त्याग करता है व पृथिवी इसका रुधिर पीवेगी २४ ॥

दो० राज्य काम महँ भरत पर भयो क्रोध जो मोर ॥
सो बिराध पर छोड़िहों जिमि हरि गिरि पवि छोर १ । २५

कुंडलिका ॥

मेरे भुज बल बेगसों बेगित शर उरमाहिं ।
पैठे जाय बिराध के या महँ संशय नाहिं ॥
या महँ संशयनाहिं जीव निकसै तनुपाहीं ।
अति घूर्णितह्वै सोइ गिरैतुरतै महिमाहीं ॥
जयजयधुनि मुनिकरैं भरैंसुखगुनि गुनतेरे ।
मृषा न कहहुं बनाय बचन फुर मानहुं मेरे २। २६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेद्वितीयस्सर्गः २ ॥

इस तरह लक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्रजी से कह हँसते हुये विराध से बोले कि आप कौन हैं जो इस वन में सुख पूर्वक बिचरते हैं १ यहसुन अपने वचन से वन को पूर्ण करता हुआ विराध दोनों जनों से बोला कि तुम दोनों जन कौन हो व कहां जावगे हमारे पूछने से यह बताओ २ तब श्रीरामचन्द्रजी अंगाराकार मुख राक्षस विराध से बोले कि हम तो राजा इक्ष्वाकुजी के कुल में आज कल उत्पन्न हुयेहैं ३ जाति हमारी क्षत्रिय की है जो धर्म क्षत्रियों को चाहिये वे सब हम में हैं अब आज कल वनमें आयेहैं जो तुम दण्डकारण्य में घूमते हो सो कौन हो तुम्हारे जानने की हमें इच्छा है ४ यह सुन सत्य पराक्रम श्री रामचन्द्रजी से विराध बोला हे राजन् हम आपसे कहते हैं सुनिये ५ हम जव नाम के को पुत्र हैं व हमारी माता का शतह्रदा नाम है व इस पृथिवीतल में

सब राक्षस हमारा विराध ऐसा नाम कहते हैं ६ व ब्रह्माजी के प्रसाद
से तपस्या करने के कारण ऐसा वर पाया है जिससे प्राकृती शस्त्रों से
हमारा वध नहीं होसक्ता न हमारे अंगही कट वा टूट सक्तेहैं ७ अबजाना
सुनी तो होहीगई अच्छा है कि इस अपनी स्त्री को यहां छोड़ इसके
विषयकी वासना से भी अनपेक्ष हो जिसजिस मार्ग होकर आयेहौ उसी
की चुप्पे जल्द भागजाव क्योंकि हम तुम्हारे प्राण नहीं लिया चाहते ८
यह सुनमारे कोप के नेत्र लाल कर श्रीरामचंद्रजी पापी विकृता-
कार विराध राक्षस से बोले ६ हे नीच पुरुषार्थहीन तुझे धिक्कार है
हमने जाना कि तू मृत्यु चाहता है सो रण में हमारे सामने खड़ा हो
अवश्य मृत्यु पावेगा हम अब जीता तुझे न छोड़ेंगे १० इतना कह
धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ा अति तीखे बाण चढ़ाय श्रीरामचंद्रजी ने उस
राक्षस को निशाना बनाय मारा ११ धनुष पै चढ़ाय सुवर्ण के पंखलगे
हुये गरुड़ व पवन के समान शीघ्रगामी सात बाण श्रीरामचंद्रजी ने
चलाये १२ वे सब सातो बाण मुरैला के पंखों के समान चित्र विचित्र
वस्त्र ओढ़े विराधराक्षस के शरीर में पैठकर उसपार निकल रुधिर
लगने के कारण अग्नि के समान देदीप्यमान हो पृथिवी में जाय गिरे
१३ जब विराध के शरीर में बाण लगे तो जानकीजी को भूमिमें बैठाय
शूल उठाय अति क्रोधसे रामचंद्र व लक्ष्मणजी की ओर दौरा १४ उस
समय शूल ले हल्ला करता हुआ विराध मुख बाये ऐसा शोभित हुआ
है जैसेमुख फैलाये यमराज शोभा पाते हैं १५ तब कालान्तक के समान
रूपधारी विराधके ऊपर इन दोनों भाइयों ने बाणों की वर्षाकरदी १६
तब वह महा भयानकरूप विराध ठठाकर हँसा व जँभुआनाउसके जँभु-
आतेही उसके देह से सब बाण निकल कर भूमि में गिरपरे १७ व राम-
चंद्रजीके बाणोंके लगने से भी न मरा क्योंकि उसे तो वरदानहीथा कि
किसीके शस्त्रास्त्र से न मरै इसलिये प्राणों को रोंकशूल ऊपरको उठाय
विराध श्रीरामचंद्रजी व लक्ष्मणजीकी ओर दौरा १८ रामचन्द्रजी ने दो
बाण ऐसी अँटकर से मारे जिससे अग्नि समान प्रज्वलित आकाश में
आता हुआ वज्रके समान उसका शूल कटगया १६ रामचन्द्रजीके बाणों
से कटा हुआ विराधका शूल ऐसागिराहै जैसे वज्रसे काटा हुआ पर्वतका

खंडगिरै २० जब विराध के हाथमें शूल न रहा तो राम लक्ष्मण दोनोंभाई काले नागके समान खड्ग उठाय तिसको मारने के लिये अति बेगसे उसके पास पहुंचे व खड्ग चलाये २१ वउसके खड्ग प्रहार लगे भी परन्तु उसने अपने भुज फैलाय दोनों नरव्याघ्रों को पकर कांधेपै चढ़ाय चाहा कि यहांसे कहीं दूरले जाय इनको पटकूं २२ उसके इस अभिप्रायको जान श्रीरामचन्द्र जी लक्ष्मणजी से बोले कि बहुत अच्छा यह राक्षस हमको तुमको इसीगली की लेचले कुछभी संदेह नहीं २३ जैसा चाहै वैसाही यहराक्षस हमको लेचलै क्योंकि यहीहम लोगों के जानेका मार्गहीहै जिसकी यह निशाचर जाता है २४ एतोयह बिचारतेहीरहे कि उस निशाचरने भी अपने बलवीर्य्य से दोनों भाइयों को ऊपर को उठार बालकों के समान कान्धपर बैठालिया २५ ॥

दो० रघुबर लषनहिं काँधपर रजनीचर बैठाय ॥
घोरपुकारतवनहिंतन चल्योबहुतहरषाय १ । २६

कुण्डलिया ॥

घेरे तरुवर अति सघन महामेघ निभजौन ।
महा तरुन युतवन बिरयो खल बिराध है तौन ॥
खल बिराध है तौन जहां पक्षिन के संघा ।
कूजत हैं दिनरैन बसैं वृक्षन के जंघा ॥
शिवा निकर जहँबसैं लसैं मृग ब्यालन ढेरे ।
तहँ बिचित्र बनमाहिं जात रघुपति कहँघेरे २ । २७

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेतृतीयस्सर्गः ३ ॥

महाभुज रघूत्तम श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मणजी को पकर विराध को जाते हुये देख श्रीजनककुमारी ऊंचे स्वरसे बहुत रोईं १ कि हायये अति सत्यवान् शीलवान् व पवित्र दशरथजी के पुत्र श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मणजी हैं जिनको यह रौद्ररूपी राक्षस लिये जाताहै २ हे राक्षसोत्तम इनदोनों भाइयों को तोतुम लिये जातेहौ हमेंयहां वृक वा चित्ता वा बाघ खाय लेंगे इससे तुम्हारे प्रणाम करतीहैं कि तो हमें भी लेचलौ वा इन्हीं दोनों भाइयों को छोड़दो ३ जानकीजी के ऐसेदीन वचन सुन श्रीराम लक्ष्मण

दोनों भाइयों ने तिस दुष्टात्मा के मारने के लिये अति शीघ्रता की ४
यहांतक कि लक्ष्मणजी ने उसदुष्ट भयानक का बावांबाहु तोड़डाला व
श्रीरघुनाथजी ने दहिना ५ जबदुष्ट विराध के दोनोंहाथ भी तोड़डारे गये
तो उद्विग्न चित्तहो मूर्च्छा को पाय बिचेत धरणी में मेघके समान गिरा
जैसे वज्रके लगने से पर्वत गिरैथे ६ गिरने के पीछे दोनों भाइयों ने
उसदुष्ट राक्षस को मूका चटकना पैर आदिसे खूब धुनका व उठाये
उठाय चट्टान पै खूबही पटका ७ यद्यपि उसदुष्ट राक्षस के बहुत वाण
लगे व दोनों भाइयों ने तलवारोंसे भी ठौर ठौर काटा व हजारों बार
उठाय उठाय भूमिमें भी पटका तथापि वरदान पाने के कारण वहदुष्ट
राक्षस न मरा ८ तिसको देख श्रीरामचन्द्रजी ने जाना कि यह अब किसी
तरह नहीं मरसका मं यही है कि कहीं दूरही उठाकर फेंकदें क्योंकि
पर्वताकार इसका शरीर है यहशोच भयवालोंको भी अभय देनेवाले
श्रीरामचन्द्र लक्ष्मणजी से बोले कि ९ हे पुरुषव्याघ्र मेरि तपस्या के
बलसे इस राक्षस को संग्राम में शस्त्रसे नहीं जीत सके इससे लावो
पृथिवी खोदकर इसे गाड़दें और कोई उपाय नहीं देख परती १० इस
से यही अच्छा है कि इस महा भयानक गजाकार राक्षस के गाड़ने के
लिये इसवन में बड़ाभारी एक गड़हा खोदाजाय ११ विलम्ब न की-
जिये अभी गड़हा खोदिये लक्ष्मणजी से ऐसाकह श्रीरामचन्द्रजी अपने
चरण से विराध का कण्ठदबाय खड़े हुये १२ श्रीरामचन्द्रजी के ऐसे
वचन सुन वह राक्षस श्रीराम पुरुष पुराण से बोला १३ हे पुरुषसिंह
इंद्र सम पराक्रमी आपने हमें मारा अब हमको विदितहुआ कि आप
पुराणपुरुषहैं प्रथम मारे अज्ञान के हमने आपको नहींपहिंचानाथा १४
हे रामचंद्र अब हमने आपको बनाय अच्छीतरह जानलिया आप की
माता को धन्यबाद हैं व वैदेही लक्ष्मणजीको भी हमने जाना अब कुछ
भी संदेह नहीं रहा १५ महाराज हम पूर्व जन्ममें गन्धर्ब थे तुम्बुरु
हमारा नाम था कुबेरजीके शापसे इस घोर राक्षसी योनिको पहुंचे १६
प्रथम तो उन्होंने क्रोध से शाप दियाथा जब हमने बड़ी प्रार्थना
की तो महायशस्वी कुबेरजी हमसे बोले कि जब महाराजाधिराज दश-
रथजी के पुत्र श्रीरामचन्द्रजी संग्राम में तुम को मारेंगे १७ तब फिर

तुम अपने पूर्व स्वभाव व रूप को पाय स्वर्ग को चलेआवोगे प्रथम जब उनकी सेवा हमने नहीं कीथी तब तो उन्होंने मारे क्रोध के शाप दियाथा जब हमने प्रसन्न किया तब आपके संयोगसे पुनःस्वर्ग-वास बताया १८ कुछ हमने और अपराध भी नहीं कियाथा केवल रम्भा नाम अप्सरा में ही चित्त लगाया था इसी पर राजा कुबेर अप्र-सन्न हुये अब आप के प्रसाद से उस महादारुण शाप से छूटे १९ अब अपने स्थान को जातेहैं आप का कल्याण हो कि हमको इसशाप से छोड़ाया आप अब ऐसा कीजिये कि यहां से छः कोश पर महा प्रतापी शरभंग नाम महात्मा रहतेहैं २० उनका तेज सूर्य के समान है आप उनके पास शीघ्रही जाइये वे आपका कल्याण करेंगे २१ हां एक काम अवश्य कीजिये कि बड़ा भारी गड़हा खोद हमारा यह शरीर गाड़दी-जिये फिर कुशल पूर्वक चलेजाइये क्योंकि मरे हुये राक्षसों का यही सनातन धर्म है २२ कि जो मरण के पीछे गड़हा खोदकर मूंद दिये जातेहैं उनको सनातन लोक मिलते हैं श्रीरामचंद्रजी से ऐसा कह वाण से पीड़ित विराध २३ देह छोड़ स्वर्ग में जाय पहुंचा व उसके ऐसे वचनसुन श्रीरामचंद्रजी ने लक्ष्मणजी को आज्ञादी कि २४ हे लक्ष्मण हाथी के समान भयानक अति भयंकर कर्मकारी इस राक्षस के लिये इस वनमें एक बड़ा भारी गढ़ा खोदो २५ लक्ष्मणजी से यह कह कि गढ़ा खोदो श्रीरामचंद्रजी विराध के कन्धे पर चरण से दबाय खड़े होगये २६ तब खन्ता ले लक्ष्मणजी ने महात्मा विराधके निकट ही बड़ा भारी गढ़ा खोदा २७ तब श्रीरामचन्द्रजी ने अपना चरणारविंद उसके गले के ऊपर से हटाया व दोनों भाइयों ने पकड़ महाशब्द करते हुये विराध को उसी अपने खने हुये गढ़ा में डार दिया २८ महा परा-क्रमी श्रीरामलक्ष्मणजी ने अति बल से उठाय आनंदितहो जोरसे रोते हुये राक्षस को संग्राम में मार उस गड़हे में बरजोरी से डारदिया २९ जब देखा कि अति तीखे वाणों से व खड्गसे भी इसमहाअसुरके प्राण नहीं निकलतो तो दोनों भाइयो ने बिलमें प्रवेश कर उस दुष्ट का बध किया ३० मारने के और भी उपाय थे पर विराधने अपना मरण आप-ही से श्रीरामचंद्रजी से बताया था कि मेरा बध शस्त्रास्त्रोंसे न होगा३१

सोई उस विराध के वचन सुन श्रीरामचंद्र जी ने बिलमें प्रवेश करने का बिचार किया जब वह बिलमें प्रवेश करायागया तो उसने ऐसा भयंकर शब्द किया जिससे वनका वन पूर्ण होगया ३२ ॥

कुंडलिका ॥

धरणी में खनि गाड़िकै खल बिराध कहँ दोय ।
राम लषण प्रमुदित भये भीति रहित दुख धोय ॥
भीति रहित दुख धोय प्रहर्षित भे दोउ भाई ।
शिलानिकर बिलउपर धरयो बहुबिधि चितलाई ॥
राक्षस को इमि मारि गाड़ि किय अद्भुत करणी ।
बनबासी अति मुदित मुदित पुनि भै यह धरणी १ । ३३
दोनों भाई स्वर्ण के चित्रन चित्रित चाप ।
लै बधि समर बिराध कहँ तनिक न कीन्हों दाप ॥
तनिक न कीन्हों दाप ग्रहण करि जनककुमारी ।
प्रमुदित ह्वै बन माहिं सुबिहरत अवध बिहारी ॥
जिमि अम्बर गत चन्द्र दिवाकर सोहत आई ।
तिमि बनमें मुद सहित बिहर पर दोनों भाई २ । ३४

इत्यार्षेश्रीमद्रामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकांडेचतुर्थस्सर्गः ४ ॥

अति भीम पराक्रमी विराध राक्षस को वनमें मार जानकीजी को प्रेम पूर्वक लपटाय बहुत तरह से समझायबुझाय महापराक्रमी १ श्री राम अति तेजस्वी अपने भाई लक्ष्मणजी से बोले हे भाई जिससे कि हम लोग कभी के वनवासी नहीं हैं इससे इस वन में रहने से बड़ेबड़े कष्ट विदित होतेहैं २ आइये अति शीघ्र तपोधनशरभंगजी के आश्रमपैचलें यह कह श्रीरामभद्रजीशरभंगजी के आश्रम पै गये ३ तिन महातपस्वी अमित प्रभाव शरभंगजी के समीप महाअद्भुत पदार्थ श्रीरामचंद्रजी ने देखा ४ वह यहथा कि अपने शरीर से ऐसे देदीप्यमान मानोंसूर्य व अग्नि हैं अति सुन्दर रथपै चढ़े आकाश में खड़े जिनकेपीछे सहस्रों देवता लोग खड़े ५ धरणीको कोई भी नहीं छूते सुन्दर प्रभायुक्त भूषण धारण किये अति स्वच्छ वस्त्र धारण किये इन्द्रजीको देखा ६ जिनकी पूजा उन्हीं

के समान बहुतसे देवगण कररहेथे रथमें सहस्त्र हरित रंगके घोड़े नहेथे वह रथ नतो आकाशमें था न भूतलमें किन्तु अन्तरिक्षही में विद्यमान था ७ जिसकी दीप्ति मध्याह्न के सूर्य्यके समान व जो पाण्डुरवर्ण के बादर के समान उज्ज्वल चन्द्रमाके मण्डलके समान गोलथा ऐसे रथको श्रीरामचन्द्र जीने बहुत निकटसे देखा ८ तिसके पीछे चित्रविचित्र मालाओंसे शोभितबहुत साफ श्वेत छत्रदेखा फिरचमर व बेनादेखा जिनमें सोनेकी डांड़ी लगीथी ९ इन्हें दो स्त्रियां इन्द्रजी के शिर पै घुमाती थीं उससमय गन्धर्व्व देव सिद्ध व बहुत परमर्षि लोग १० अन्तरिक्षमें प्राप्त इन्द्र जब शरभंग जी से वार्त्ता कररहे थे तो ये सब गन्धर्व्वादि योग्य वाणीसे इन्द्रजीकी स्तुति करतेथे ११ उसी समय में देवराजको देख महाराज श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजी से बोले व रथकी ओर इसारा कर लक्ष्मणजीको अद्भुतरूप देखाने लगे १२ हे लक्ष्मण देखोतो अति प्रकाशवान् शोभायुक्त अद्भुत सूर्य्य समान देदीप्यमान अन्तरिक्षमें टिका हुआ रथ कैसे शोभित होताहै १३ जो घोड़ेइन्द्रजीके पूर्व्वकालमें हम लोगोंने सुनेथे वे अन्तरिक्षमें प्राप्त दिव्यरूप निश्चयकर येही हैं १४ व जो ये रथके चारोंओर सौ सौ युवावस्था को प्राप्त खड्ग हाथमें लिये कुण्डल धारण किये खड़े हैं १५ जिनकी छाती बहुत चौड़ी व बड़ी है बाहें परिघके समान लम्बी हैं व जो सब लालेही बस्त्र धारण किये हैं ये सब व्याघ्रोंके समान दुरासदहैं अर्थात् सबमें ऐसी सामर्थ्यनहीं कि जो उनके पास जायसकें १६ देखो सबकेगलेमें अग्नि समान प्रकाशित हार परे हैं व सबकी २५ ही बर्षकी अवस्था है १७ ये सब देवताही लोग हैं क्योंकि देवताओं की सदा पचीशही बर्षकी अवस्था रहती है व यही स्वभाव उनका होता है कि सबको उनके दर्शन प्रिय लगतेहैं १८ अब सहित जानकी तुम मुहूर्त्तमात्र यहीं तबतक बैठे रहौ जबतक हम जान आवें कि इस रथ पै यह अति तेजस्वी कौन है १९ लक्ष्मणजीसे ऐसाकह कि तुम इसी स्थानपै बैठौ श्रीरामचन्द्रजी आप शरभंग जीके आश्रमको चले २० रामचन्द्रजीको सामने आतेहुये देख शरभंगजीसे झटपट बिदाह्वै इन्द्रजी देवताओं से यह बोले कि २१ ये श्रीरामचन्द्रजी जो बनाय सन्निकट आयगयेहैं जबतक हमसे बोल-

चाल न करें तभी तक तुमलोग हमको अन्यस्थान पर ले चलो जिसमें कि वे हमको न देखसकें २२ क्योंकि अभी इनसे वह काम कराना है जोकि इनके सिवाय अन्यसेहोहीनहीं सक्ता फिर जब उसकर्म्म को कर आवेंगे अर्थात् रावण को जीत हम लोगों का अर्थ सिद्ध करदेंगे तब थोड़ेही दिनो में अच्छीतरह इनके दर्शन करेंगे अभीके दर्शन करने व सम्भाषण करने से रावण कोपकर नहीं जानते कौन उपद्रव उठावे २३ यहकह इन्द्रजी शरभंग मुनिसे पूंछ उन तपस्वीका बहुत मानकर घोड़े नद्धेहुये रथपै चढ़ स्वर्ग्गलोक को चलेगये २४ जब इन्द्रजी चलेगये तो जानकी लक्ष्मण सहित श्रीरामचंद्रजी अग्निहोत्र करतेहुये शरभंगजीके निकट पहुंचे २५ व राम जानकी लक्ष्मण तीनो जन तिन मुनिराज के चरणोंमें प्रणामकर तिनकी आज्ञासे स्थान व निमन्त्रण पाय बैठे २६ तिसके पीछे श्रीराघवजीने इन्द्रके आनेके समाचार पूंछे मुनिराज शरभंगजीने बिधिपूर्व्वक रामचंद्र जीसे बताये २७ कि हे रामभद्र हमने अत्युग्र तपस्या की जिससे ब्रह्मलोक पर्य्यंत सबलोक जीतलिये जिनका जीतना बिना परमात्मा के भजन दुर्ल्लभ है इसलिये ये इन्द्र बरदान दे हमको ब्रह्मलोक को लेजाया चाहते थे इसीसे यहां आयेथे २८ परन्तु हे नरव्याघ्र हमने जाना कि आप बहुतही निकट आयगये हैं इसलिये परमप्रिय अतिथि आपको बिना देखे हम ब्रह्मलोक को नहीं गये २९ रहा अब हे पुरुषव्याघ्र अति धार्म्मिक महात्मा आपके संग समागम कर स्वर्ग्गलोक व ब्रह्मलोक वा मोक्षपद जहां चाहेंगे चलेजायँगे ३० हे नरशार्दूल हमने ब्रह्म सम्बन्धी व स्वर्ग सम्बन्धी बहुतसे अक्षय शुभ लोक अपनी तपस्या से जीते हैं अब आपसे यह प्रार्त्थना है कि हमारे सबलोकों के ऊपर अनुग्रह कीजिये अर्त्थात् परमधाम जाने के समय उन्हीं लोकोंमें होतेहुये पवित्र करते जाइयेगा ३१ जब इसतरह सर्व्व शास्त्र विशारद नरशार्दूल श्री रामचन्द्रजी से शरभंग ऋषि ने कहा तो श्रीराघव महाराज बोले ३२ हे महामुने जो आपकी आज्ञाहो तो जो जो लोक आपने जीतेहैं हमसब यहीं प्राप्त करादें क्योंकि हम इस वनमें वसा चाहते हैं ३३ जिस रामचन्द्रके तुल्य इंद्र केवल हैं उन्हों ने अब शरभंगजीसे ऐसा कहा तो वे फिर श्रीरामभद्र से बोले ३४ हे राम इसी

बनमें थोड़ीही दूरिपर अति धार्म्मिक महातेजस्वी सुतीक्ष्णनाम जितें-द्रियमुनि रहतेहैं वे आपका कल्याण करेंगे व रहने के लिये स्थान भी बतावेंगे ३५ वहां जानेका मार्ग्ग इसी मन्दाकिनी के निकट होकर है जिस नदीके स्रोतमें नावके समान पुष्प बहते हैं व पश्चिम को बहतीहै बस इसके तीरतीर चलेजाइये सुतीक्ष्ण मुनिका आश्रम मिलजायगा ३६ यही मार्ग्गहै परन्तु एक मुहूर्त्तभर यहां ठाढ़ेठाढ़े हमको देखा कीजिये कि जबतक हम अपने इस शरीर को छोड़ें जैसे पुरानी खाल सर्प्प छोड़ देताहै ३७ यहकह अग्निमें बहुत इंधन लगाय मंत्र पढ़पढ़ घृतसे आ-हुतिदे शरभंग जी पूर्णाहुति के समय आप भी इसी अग्निमें प्रवेशकर गये ३८ तिस मुनिके रोम बाल पुरानी खाल हाड़ मांस व रुधिर सब अग्निने भस्म करदिया ३९ फिर उस अग्नि से अग्नि समान तेजस्वी एक बालक निकला वह दिव्यरूप शरभंगजीका था सो शोभायमान होनेलगा ४० ॥

दो० आहिताग्नि ऋषि गया महा पुण्य देव गण लोक ।
नांघि ब्रह्मलोकहि गयहु शरभंग गत सब शोक १ । ४१

कुण्डलिका ॥

सो द्विज वर कृत पुण्य नहिं भुवन तासु सम कोय ।
ब्रह्मलोक महँ बिधिहि अनुचर युत देख्यहु सोय ॥
चरयुत देख्यहु सोय बिधिहु पुनि द्विज कहँ देखा ।
मुदित गात ह्वै तासु बहुरि स्वागत अवलेखा ॥
निकट आपने बास दीन आना त्यहि को निज ।
ह्वै प्रसन्न सब भांति बसन लाग्यो तहँ सो द्विज २ । ४२

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेपंचमस्सर्ग्गः ५ ॥

जब शरभंगमुनिराज श्रीरामचन्द्रजी के देखतेही देखते ब्रह्मलोक को चलेगये तब अति तेजस्वी श्रीरामचन्द्रजी के दर्शन के लिये मुनियों के झुण्डके झुण्ड आये १ उनमें कुछ तो वैखानस थे जो प्रजापति के नखों से उत्पन्न हुये हैं कुछ बालखिल्य थे जो प्रजापति के बारोंसे उ-त्पन्नहुये हैं कुछ सम्प्रक्षाल थे जो परमात्मा के चरण कमलों के धोनेसे

उत्पन्न हुये हैं कुछ मरीचिप थे जो सूर्य्य वा चन्द्रमा के किरणमात्र को पीकर रहते हैं कुछ अश्म कुट्टथे जो केवल पत्थरहीसे कूट पीस कच्चाही अन्न खातेहैं कुछ पत्रआहार तपस्वी थे जो वृक्षोंके पत्तेही भोजन करते हैं बहुत तपस्वी २ दन्तोलूखली थे जिनके दांतही उलूखल कहे ओखरी हैं बहुत उन्मज्जक थे जो सदा कण्ठ भरे जलमें डूबे रहते हैं बहुत गात्रशय्यथे जिनके व्याघ्र हरिणादिके गात्र जो चर्मादि सोई शय्या हैं बहुत अशय्य थे जो कुछ बिछातेही नहीं बहुत अनवकाशिक थे जिनको पूजा पाठ करने से कुछ अवकाशही नहीं मिलता ३ बहुत मुनि सलिलाहार थे जो जलमात्रही पीकर रहते हैं बहुत बायुभक्ष थे जो पवनही पीकर रहते बहुत आकाशनिलय थे जो बिना छायेकोये निरारेही में सदा रहते बहुत स्थण्डिलशायी थेजो भूमिमात्र पर रहते ४ बहुत ऊर्द्धबासी थे जो पर्व्वत वृक्षादि ऊंचेही स्थान पै सदा रहते बहुत दान्तमुनिलोग थे जिनके इन्द्रियगण नियमित समय परही अपनी अपनी बासना को चाहते हैं बहुत आर्द्र पटवासर थे जो रात्रिदिन जलमें परे रहनेके कारण ओदेही बस्त्र सदा धारण किये रहते बहुत सजपथे जो सदा जप किया करते बहुत तपोनिष्ठथे जो परमात्मा के बिचार में तत्पर रहते बहुत पंचतपोऽन्वित थे जो ग्रीष्मकालमें पंचाग्नि तापा करते ५ व जितने मुनि लोग थे सब ब्राह्मी शोभा युक्त थे सब दृढ़ योगाभ्यास करते ऐसे सब मुनिलोग तपस्वी शरभंग के आश्रम पै श्रीरामचन्द्रजी के दर्शनको आये ६ व सब धर्मज्ञ ऋषि समूह परम धर्मज्ञ धर्मधारियों में श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी से बोले ७ कि आप इस इक्ष्वाकुकुल के व इस पृथिवी भर के प्रधान व नाथ भी हैं जैसे कि देवताओं के इंद्रजी हैं ८ आप अपने यश व पराक्रम से तीनों लोकों में बिख्यात हैं व आप में पितृव्रतत्व व सत्यत्व व धर्म भी है कि उसके समान दूसरे में नहीं है ९ इसलिये महात्मा धर्मज्ञ व धर्मवत्सल आप को पाय हे नाथ अपने प्रयोजन के वशीभूत ह्वै आपसे कुछ कहते हैं सो क्षमा करने के आप योग्य हैं १० हे नाथ जो राजा प्रजा से छठां अंश लेलेता है व और सपुत्र के समान प्रजाओं की रक्षा नहीं करता तिस राजा को बड़ा अधर्म होताहै ११ व जो राजा अपने प्राणोंके समान प्रजाओं के प्राणों

को समझता व अपने इष्ट प्राणों के व पुत्रों के समान सब राज्य निवासियों को जानता सदा सबकी रक्षा किये रहता १२ हे राम वह पुरुष बहुत वर्षों तक निरन्तर कीर्त्ति पाता है व ब्रह्मा के स्थान को पहुंच वहां पूजित होता है १३ और जो मुनि लोग मूल फलादि भोजनकर धर्म करते हैं उसमें भी जो राजा धर्म से प्रजापालन करता है उसका चतुर्थांश पाताहै १४ सो यह बाणप्रस्थ गण जो वनमें बसाहै व बहुत है जिसके नाथ आपही हैं वह अनाथ के समान राक्षसों से मारा जाता है १५ सो कुछ यह बात बनाय के नहीं कहते आप यहां आय देखिये कि महात्मा मुनियों के हाड़ परेहैं जिनको राक्षसों ने मार मार भक्षण करलियाहै १६ सो बहुधा जो मुनिलोग पम्पा नदी से ले मन्दाकिनी के किनारे तकके वनमें बसते हैं व जो चित्रकूट पर्बत पै बसते हैं उन्हीं लोगों का नाश ये राक्षस लोग करतेहैं १७ सो अति भयंकर कर्मकारी राक्षसलोग जो वनमें तपस्वियों का नाश करते हैं उसे हम लोग नहीं सहसक्ते १८ तिससे आप को शरण्य जान शरणागत हुयेहैं निशाचरों से मरते हुये हम लोगों का पालन आप कीजिये १९ आपको छोड़ भूतलमें और कहींशरण नहीं जिसके पासजायँ इससे हे महाराजकुमार इनदुष्ट राक्षसों सेहमलोगों की रक्षाकीजिये २० श्रीरामचन्द्र जी परमतपस्वियोंकी विपत्तिके समाचार तपस्वियोंकेही मुखसे सुन सब मुनियों सेबोले २१ हे मुनिलोगो हमतो आपलोगोंकी आज्ञा के पात्रहैं हमसे ऐसा न कहिये हमको केवल अपनेहीं कार्य्यके लिये वनमें पैठाइये कुछहमारेकार्य्यकीओर दृष्टि नदीजिये २२ हमइसवननेंजोआये हैं तो आपलोगोंको जो राक्षसोंसे भयहै उसके मिटानेके लिये व पिता जीकी आज्ञा पालनेकेलिये कुछ अन्यकाजकरनेके लिये नहींआये २३ यदिकेवल पिताकी आज्ञाहीका पालन करनाहोता तो औरहीकहीं चले जाते जोइधरयदृच्छासे हमआयगये हैंतो आपलोगोंके कार्य्यहीके सिद्ध करनेकेलिये आयेहैंसोअब हमारा यहबनबास सफलहोगा क्योंकि इस बासमें आपलोगोंका कामकरेंगे २४ अबबताइये हम तपस्वियोंके शत्रु राक्षसोंको संग्राममें जरूरमारेंगे हेतपोधनलोगो भाईसहित हमारेबल कोसबलोग देखेंतो क्या करते हैं २५ ॥

कुण्डलिका ॥

धर्म्मधुरन्धर राम अरु लक्ष्मण तापसन काहिं ।
दै बर सकलतपस्वियुत चलेमुदित मनमाहिं ॥
चले मुदित मनमाहिं सुतीक्ष्ण तापस पाहीं ।
महाबीर रणधीर तनिक मन संशय नाहीं ॥
तहँ पहुँचे मुनिसंग यथा सुरसंग पुरन्दर ।
रघुकुलभूषण समनृपति बरधर्म्मधुरन्धर १ । २६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽरण्यकाण्डेषष्ठस्सर्गः ६

श्रीरामचन्द्रजी अपने भाईलक्ष्मण व जानकीजी के साथ तपस्वियों कोसंगले सुतीक्ष्णजीके आश्रम पैआये १ मार्ग्गमें बहुत बड़ी २ नदियां परीं जिनमें अथाह जलथा शरभंगजीके स्थानसे यहसुतीक्ष्ण जीका स्थान दूरभी है दूरहीसे वहपर्व्वत देखपरा मानों उँचाईमें सुमेरु पर्व्वत है२ तिसकेपीछे नानाप्रकारके वृक्षोंसे सघनबन देखपरा उसमें श्रीराम जानकी व लक्ष्मणजीपैठे ३ बहुत पुष्पफल युक्तवृक्षोंसे घेराहुआ मालादि जहांटँगेथे एकआश्रम देखपरा ४ तहांदेखातो मलिनकमलोंकीमालाधारणकिये तपस्वी सुतीक्ष्णजी बैठेथे उनसे श्रीरामजी विधिपूर्व्वक बोले ५ हे भगवन् हमरामचन्द्रहैं आपको देखनेआयेहैं इससे हेसत्यबिक्रम महर्षिजी धर्म्मज्ञ हमसेबोलिये ६ धर्म्मधारण करनेवालोंमेंश्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजीकोदेख अतिधीर मुनिराज दोनोंभुजोंसे पकरछातीमें लगायबोले कि ७ हेसत्यधारण करनेवालोंमें श्रेष्ठ श्रीराम आप अच्छीतरहसे आये यह आश्रम आपके चरणारविन्दोंके परनेसे अब सनाथहुआ ८ हेबीर इसमहीतलमें देहछोड़ हमदेवलोक को नहींजाते क्योंकि आपके दर्शन की अभिलाषा कियेरहे हैं ९ यहभी हमने इंद्रसेसुनाहै कि आप राज्य छोड़चित्रकूटको आयेहैं यहां देवराजके आनेका यहप्रयोजनथा कि १० हमने ऐसेपुण्यके कर्म्मकियेहैं जिनसे सबलोक जीतिलियेहैं सोसुरेश्वर वहीकहनेआयेथे कि आपइसलोकको छोड़चलिये उनलोकोंमें निवास कीजिये ११ सोहमतो आपके दर्शनार्त्थीथे अभीनहींगये सबमुनि व देवर्षिलोगउनकी सेवाकरते हैं क्योंकि हमने अपनीतपस्यासे जीतिलिया

है चाहैंजिसको बसावें अबलक्ष्मण जानकी सहित आपहमारे प्रसादसे चलियेउनमें बिहार कीजिये १२ यहसुन महातपस्वी तेजस्वीसत्यबादी महर्षिसेआत्मज्ञानीश्रीरामचन्द्रजीबोलेजैसेकिब्रह्माजीसेइंद्रबोलतेहैं १३ हेमहामुनिजी हमजबचाहेंगे अपनेआपउनलोकोंको ग्रहणकरेंगे अबहा-लसालतो इसबनमें कोईस्थान बताइये जहां हमबसें १४ यहबात हमने महात्मा शरभंगजी व गौतमजीसे सुनीहै कि आपसब प्राणियोंके हित करनेमें निरत व सबकहींके वृत्तांत जाननेमें कुशलहैं १५ लोकमेंप्रसिद्ध मुनिराजसे जबरामचंद्रजीने ऐसाकहातो अतिहर्षितहृवे सुतीक्ष्णजी म-धुरवचनबोले १६ हेराम यदिऐसा चाहतेहौ तौतोयही आश्रम सबगुणयुक्त है आनंदसे रमिये ऋषिलोगभी यहां विचराकरते इससे किसीतरह का भयभी नहीं व फूलमूलफल यहांसबकालोंमें मिलाकरतेहैं १७ हांएकबात हैकियहां बड़ेरव्याघ्र सिंहादि मृगगण आयाकरतेहैं परवेभी किसीको मारते नहीं केवल अपना रूपही देखाय सबको लोभाय निर्भय यहांसे चले जाते हैं आप उनसे न डरियेगा न उन्हें मारियेगा १८ यही एक दोष मृगों के आने जाने का यहां कुछ कुछ है और कुछभी नहीं महर्षि के ऐसे वचन सुन अतिधीर श्रीरामचन्द्रजी १९ धनुष पै बाण चढ़ाय बोले कि हे महाभाग तिन आयेहुये मृग समूहों को २० अतिपैने बाण से हम मारडारेंगे क्योंकि जो आपको उनसे कष्टहुआ तो इससे अधिक कौन कष्टहोगा २१ यहसुन मुनिराज कुछ न बोले रामचन्द्रजीने जाना कि मुनिको मृगोंका बध प्रसन्न नहीं इससे कहा कि इस मृगबाधित स्थानपै हम बहुत दिनोंतक बसना नहीं चहते यहकह श्रीरामचन्द्रजी सन्ध्या करने लगे २२ सायं सन्ध्योपासन कर श्रीरामचन्द्रजी ने वहीं सुतीक्ष्ण के आश्रम पै लक्ष्मण जानकी समेत निवास किया २३ ॥

कुण्डलिका ॥

सुन्दर तापस योग्य शुभ अन्न सुतीक्षण लाय ।
पुरुषशिरोमणि राम अरु लषणहिं सादरजाय ॥
लषणहिं सादरजाय दीन बहुबिधि सनमानी ।
अति पबित्र सबभांति महा मुनिवर बिज्ञानी ॥
सन्ध्या समय बिताय भईजब रजनिशुभङ्कर ।

तब मुनिवर हरषाय दीनफल अतिशय सुन्दर १ । २४

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेसप्तमस्सर्गः ७॥

फल मूलादि भोजनकर श्रीराम लक्ष्मण व जानकी जी सुतीक्ष्ण से पूजा पाय रात्रिभर वहीं सोये बड़ेप्रातःकाल जागे १ व जानकी लक्ष्मण समेत कमलादि पुष्पोंसे सुगन्धित जलसे मुख हस्त पादादि धोये व स्नान किये २ व अग्नि देवतादि कों की पूजाभी समयपर तिस तपस्वियों के वनमें की ३ जब बनाय सूर्य्यनारायण उये तो पापरहित तीनों जन सुतीक्ष्णजी के निकट जाय अति मनोहर वचन बोले ४ हे भगवन् जगत्पूज्य आपसे पूजित हमलोग रात्रिभर बड़े सुखसे रहे अब आपसे पूछते व जातेहैंक्योंकि येमुनिलोग हमकोशीग्घ्रता करातेहैं कि शीघ्र चलो ५ हमलोग भी चाहते हैं कि दण्डाकारण्यवासी पुण्य शील ऋषियों के सब आश्रममण्डल शीग्घ्रही देखें ६ इसलिये आपकी आज्ञा इस समय चाहतेहैं कि धर्म्म नित्य तपस्या से जितेन्द्रिय अग्नि की शिखाके समान शिखा धारण करनेवाले इन मुनिश्रेष्ठोंके साथ जायँ ७ जबतक कि सूर्य्यनारायण का घाम ऐसा न हो कि कोई सह न सकै हम तभी तक जाया चाहते हैं अर्थात् अभी जैसे कि जिसको अन्याय से लक्ष्मी मिल जाती है व उसके कभी पूर्व्वकाल में लक्ष्मी नहींरही वहपुरुष शीग्घ्रही चला जाताहै ८ यहकह मुनिके चरण पकर सीता लक्ष्मण के साथ श्रीरघुनाथजीने बन्दनाकी ९ जबदोनोंभाई मुनिके चरण छूनेलगे तो मुनिराज ने दोनोंजनों को उठाय स्नेह पूर्व्वक बनाय बड़ेजोर से छातीमें लपटाय येवचन बोले कि १० हेराम लक्ष्मण व जानकी के संग निर्भय मार्ग्ग में चलेजाव जानकीजी तो मानों तुम्हारी परछाहीं केही समान पीछे पीछे चलतीहैं ११ बहुतअच्छा इन दण्डकारण्य निवासी मारे तपस्याके देदीप्यमान तपस्वियोंकेभी रम्यआश्रममण्डल देख आइये १२ व बहुत फल मूलसहित फुलाने वन जिनमें प्रशस्त मृगगण भरेहैं व पक्षियोंके झुण्ड केझुण्ड बोलरहे हैं ऐसेवन भी देखिये १३ व फुलाने कमलों के खंड सुन्दर जल जिन तलाओं में हंस कारंडवादि पक्षी विराजमानहैं वे भी देखोगे १४ पर्व्वतों के झरनाभी देखोगे जिनमें आपलोगों की दृष्टि विहार

करेगी व अति रमणीयवनभीदेखोगे जिनमें मोरआदिपक्षी बोलतेहैं १५ हेवत्स लक्ष्मण तुमभी जाव व हेराघव आपभी जाइये परयह सब मुनियों के आश्रम की शोभा देख फिर इस आश्रम पै आइयेगा १६ जबमुनि ने ऐसाकहा तो रामचन्द्र व लक्ष्मण दोनों भाइयों ने अच्छाकह मुनिके प्रणामकर चलने की तयारी की १७ चलने के समय जानकीजी ने अति सुन्दर तरकस व धनुष व तलवार दोनों भाइयोंको दिये १८ ॥

चौ० शुभ तरकस सुस्वन बर चापू । लै निज कर सब बिधि गतदापू ॥ राम लषन गवने शुभ बेषा । मुनि आश्रमसों युतशुभरेखा ॥ १ । १९ ॥ परम रुचिर तनु दोनों भाई । मुनिवरकी बर आज्ञा पाई ॥ खड्गचापतरकसधरिनीके । चले सिया युत रघुकुलटीके २ । २० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेअरण्यकाण्डेऽष्टमस्सर्गः ८ ॥

जब सुतीक्ष्ण मुनिराज से आज्ञाले श्रीरामचन्द्रजी चले तो अति मनोहर व मधुर बाणीसे श्रीजानकीजी अपने स्वामीसे बोलीं १ कि जो धर्म्म सूक्ष्म बिधिसे मिलता है वह बहुत इच्छा चलाने के दुःखसे नहीं मिलता २ इच्छा चलाने से तीन दुःखहोते हैं एकतो मिथ्या बोलना व इससे भी दो बड़े पाप हैं३ एकतो पर स्त्रीके संग भोगकरना दूसराबिना बैरके किसी को मार डारना सो इन तीनों में आप का वचन मिथ्या न कभी हुआ है न होगा ४ व परस्त्रीकी अभिलाषा भी आपको कभी नहीं होसक्ती क्योंकि उसमें धर्म्म नाश होजाता है सोहेमनुष्येन्द्र यह बात तो न आपको कभी हुईहै न है न होगी ५ योंसाक्षात् कौनक है पर स्त्री गमन करने की इच्छा तो कभी मनमें भी आपको नहीं हुई न अब है न होगी क्योंकि यदि ऐसा होतातो प्रकटही होजाता इसीसे आप नित्य अपनीहीं स्त्री के संग बिहार भी करते हैं ६ इसके सिवाय धर्म्मिष्ठता सत्यसन्धता व पिताकी आज्ञा पालकता आदिगुण तो असंख्य विद्यमान हैं इसीसे धर्म्म सत्यादि सब गुण आपमें टिके हैं ७ सोइन्हें आदि सब शुभगुण आपमें हैं व सदा बने रहेंगे क्योंकि ऐसे गुण जितेन्द्रिय पुरुषही करसक्ते फिर आपकी कृपा से तो सबप्राणी जितेन्द्रिय होसक्ते हैं व होतेहैं फिर आपकी क्याकहना आपतो जितेन्द्रिय शिरोमणिहैं ८

पर वह जो तीसरा स्वभाव बिनाबैर किसीके प्राणों को मारने वाला है आपको प्राप्त हुआहै ९ क्योंकि दण्डकारण्य निवासी ऋषिलोगोंकी रक्षा के लिये आपने संग्राममें राक्षसों के मारनेकी प्रतिज्ञा की है १० क्योंकि इसी निमित्त आप धनुषबाण धारण कर भाई सहित दण्डकारण्यको आये हो ११ सो अब जबसे आपको हमने दण्डकारण्य को चलते देखा है तबसे हमारे मनमें बड़ी चिन्ता है क्योंकिउसी वृत्तांतकी चिन्तना बनीहै हमतो यही चाहती हैं कि जिसमें हम लोगोंकाकल्याण होता वही काम आप करते १२ हमको आपका दण्डकारण्य का जाना नहीं अच्छा लगता उसका कारण हम कहती हैं सुनिये १३ आप भाई सहित धनुर्व्बाण धारणकर वनको जाते हो वहां वनचरों को देख बाण अवश्य चलावोगे १४ क्योंकि क्षत्रियोंकेसमीप धनुषका रहना व अग्नि के समीप सूखे ईंधन का रहना ये दोनों उनके २ बलको बढ़ाते हैं अर्थात् क्षत्रियलोग हथियार होनेपै जरूरही किसी के ऊपर चलाना चाहते आगि सूखेईंधनको पायअवश्य बरनेलगती १५ इसबिषयमें एक इतिहास कहती हैं सुनिये किसी वनमें मृगगण व पक्षी बहुत रहते थे उसी में एक बडे पवित्रतपस्वी सत्यवान रहतेथे १६ उनकी बड़ी तपस्या देख उसके बिघ्नकरनेके लिये इन्द्रजी हाथमें खड्गले योधा का रूपबनाय मुनिकेआश्रम पै आये १७ व अतिपुण्य रूप तपस्या करते हुये मुनिके निकट अपनी तरवार थाती की रीतिपर स्थापित करदी कि आप इसकी रक्षा करते रहियेगा जब हम आवेंगे अपनी लेजायँगे १८ यह कह इन्द्रतो चलगये मुनि उस खड्गको पायउसकी रखवारी में लगे वनमें घूमा करते अपना जिसमें बिश्वास न जाता रहै उसकी रक्षा किया करते १९ जहां कहीं फल पुष्प मूलादि आनने जातेथे उसथाती के रखाने के लिये उस खड्गको संगही लिये जाते २० रोज २ शस्त्र धारणकिये फिरने के कारण मुनिकी बुद्धि अति रौद्र होगई तपस्या करनेका बिश्वास जातारहा २१ प्रतिदिन उससे जीवों को मारने लगे ऐसा रौद्र स्वभाव होगया कि महाप्रमत्त होगये सब धर्म्म जाता रहा तिसी शस्त्र के बांधने से मरनेके पीछे मुनिराज नरक को गये २२ शस्त्रके सँय्योग का यह पूर्व्वकाल का वृत्तांत कहा जैसे इन्धनादि का

अग्निके साथ सँय्योगहै वैसेही शस्त्रके सँय्योग से मनुष्योंका सँय्योग है २३ सो मारे स्नेह व मानके आपको हमने स्मरण कराया कुछहम आपको सिखलाती नहीं हैं इससे आप धनुर्व्वाण धारणकिये रहते हैं बिना अपराध किसी को कभी न मारिये २४ दण्डकारण्य में बिनाबैर तहांके रहने वाले राक्षसों के मारने की बुद्धि आप न कीजिये क्योंकि हे वीर बिना अपराध किसी को मारने की प्रशंसा विद्वान् लोग नहीं करते २५ जो कहिये कि फिर क्षत्रियों को शस्त्रधारण करने का कौन प्रयोजन सो वनमें विचरतेहुये क्षत्रियों का धनुष धारण करना निरपराध जीवोंके मारने के लिये नहींहै वरन जो वनमें दुःखी लोगहैं उनकी रक्षा के लिये है इसलिये आप भी इससे दीनोंकी रक्षाही कीजिये २६ फिर बाजी बाजी बातें एक संग नहीं शोभित होतीं जैसे कहां शस्त्रका बांधना कहां वनमे घूमना कहां क्षत्रियों का धर्म्म कहां तपस्या करना ये सब कर्म्म विरुद्ध हैं एक दूसरे से सम्बन्ध नहीं रखते इससे जहां का जो धर्म्म हो वहां वही करना चाहिये २७ असमय में शस्त्रधारण करने से कातरों की बुद्धिही के समान बुद्धि करनी चाहिये अयोध्यामें जाय फिर आप क्षत्रियों के मुख्य धर्म्मकी रक्षा कीजियेगा यहां वनमें कौन क्षत्रियों का धर्म्म क्योंकि असमय है २८ इसमें कोई दोषनहीं जो आप वनमें शस्त्र न धारण करेंगे क्योंकि यदि राज्य छोड़ आप वनको आये व यह मुनियों के समान आचरण करेंगे तो हमारी सासु व ससुर की भी अक्षय प्रीति आपमें होगी क्योंकि उनकी यही तो आज्ञाहै कि मुनिवेष धारण कर वनमें वसो कुछ क्षत्रियवेष धारण करने व क्षत्रियधर्म्म पालन करने की आज्ञा नहीं फिर जब आपके पिता माताही की ऐसी आज्ञा ठहरी तो शस्त्र धारण की कौन आवश्यकता है २९ सो जिस धर्म्मकी आपको आज्ञा है वही कीजिये क्योंकि धर्म्मही से अर्थ होता है व धर्म्मही से सुख कहांतक कहें धर्म्मही से सब कुछ मिलता है क्योंकि इस असार संसारमें धर्म्मही सारहै ३० सोधर्म्म नानाप्रकारकेनियमोंसे आत्माको कष्टदेकर शरीर दुर्व्वल करने से बड़ी यत्नसे मिलता है कुछ सुखकरने से धर्म्म रूप सुख नहीं मिलता ३१ इससे हे सौम्य पवित्रमति हो इस तपोवनमें जो तपस्वियों के धर्म्म हैं उन्हीको कीजिये हम आपको क्या

समझावें क्योंकि चतुर्दश भुवनों में सब कुछ निश्चय निश्चय आपको विदित है ३२ ॥

कुण्डलिका ॥

नारी चापल धर्म्मसों हमहुं कही यहबात ।
नहिंतोतुमसनधर्म्मकोकहिसकिहैगुणव्रात॥
कहिसकिहै गुणव्रातबातयहआपसहानुज ।
मनमेंलेहु बिचारि रुचै जो करहु महाभुज ॥
परनहिंकरहु विलम्ब साधुमानहुं उरधारी ।
सोकीजैममवचनठीकनहिं जोभणिनारी १ । ३३

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेनवमस्सर्ग्गः ६ ॥

पतिभक्ति परायण श्री विदेहकुमारी के ऐसे वचन सुन धर्म्म मेंटिके श्रीरामचन्द्रजी जानकी जीसे बोले १ हे धर्म्मज्ञ जनककुमारि तुमनेजो हमाराहित कर वचन कहा सो तुम्हारे कुलके उचितही हैं बहुतही अच्छा कहा २परन्तु हेदेवि तुमने जोकहा हमभी कहतेहैं सुनो क्षत्रियलोग जो चापधारण करते हैं तो इसीलिये जिसमें कोई दुःखित होके वचन न सुनावे ३ सो चाहिये किसी दुःखितका वचनसुनपरै न किकिसी अच्छे महात्माका सो एक महात्मा को कौन कहै दण्डकारण्यनिवासी सब महातपस्वी मुनि लोग अति दुःखित हो सबके शरण देनेवाले हमारे शरण को आप आये ४ व बहुत काल से मूल फलादि खाय २ इसवन में बसते हैं परन्तु अति क्रूरकर्म्मवाले राक्षसोंसेसुखनहीं पाते५ क्योंकि वे लोग मांस भक्षी ठहरे फिर सबों के रूप भयानक तो होतेही हैं आय मुनि लोगों को भोजन कर लेते हैं उनमें के बचे बचाये दण्डकारण्यवासी मुनि लोग ६ हमारे निकटआय बोले हमने उनके मुखकेऐसे वचन सुन ७ यह वचन शुश्रूषा की व कहा कि आप लोग हमारे ऊपर प्रसन्न हो तुमलोगों के ऐसे दुःखित वचन सुन हमको बड़ीभारी लज्जा आतीहै८जोकिआप ऐसेमुनिलोग जिनकी प्रार्त्थनाहमको करनीचाहिये सो तुम्हींलोग हमारी प्रार्त्थना करतेहो कहिये हम आपलोगों का कौन काम करें यह हमने मुनियोंके निकटकहा ६ तबसब मुनिलोगों ने आय

हमसे ये वचन कहे कि दण्डकारण्यके रहनेवाले नानारूपधारी राक्षस लोग १० हम लोगों को बड़े २ दुःख देतेहैं सो इस विषय में आप हम लोगों की रक्षा कीजिये जब हम लोग अमावास्या पूर्णमासी आदि पर्व्वोंमें विशेष होम करने लगते वा प्रतिदिन जब होम का समय आता है ११ तब अतिकठिन मांस भक्षी राक्षस लोग आय २ हठ कर २ यज्ञ विध्वंस करते व मारते पीटते हैं इससे इन राक्षसों से व्याकुल महा तपस्वी लोगोंकी १२ जोकि अपनी गति ढूंढ़रहे हैं उनकी परम गति आपही हैं यद्यपि हम लोग भी अपनी तपस्याके प्रभाव से राक्षसों का नाश कर सक्ते हैं १३ तथापि बहुत दिनों की बटोरी हुई तपस्याका खण्डन नहीं किया चाहते तपस्या में बड़े २ विघ्न होतेहैं इससे बड़े दुःख से साध्यहै १४ राक्षसलोग हम लोगोंको भक्षणभी किये जातेहैं पर तपस्याका फल नष्ट होने के भय से हमलोग राक्षसों को शाप देकर नहीं मारते क्योंकि शापदेनेसे तपःफल जाता रहता है तिससे दण्डकारण्य वासी राक्षसों से पीड़ित हमलोगों की १५ रक्षा सहित अपने भाई लक्ष्मण जीके इस वनमें कीजिये क्योंकि आपही दोनों हम लोगों के नाथ हैं हमने जब मुनियों के ऐसे वचन सुने तो उनसे कहा कि तुम लोगों का पालन हम सब प्रकारसे करेंगे १६ हे जनककुमारि दण्डकारण्य में ऋषि लोगों से ऐसी प्रतिज्ञा हमने की इसे जबतक हम यह शरीर धारण किये जीते हैं तबतक तो इस कीहुई प्रतिज्ञाको नहीं छोड़ सक्ते १७ क्योंकि यह हमारा स्वाभाविक मतहै कि मुनियों काही प्रियहमें इष्टहै उसके विपरीत कैसे करसक्ते हैं चाहे हम अपने प्राण छोड़ दें वा तुमको व लक्ष्मण दोनों को त्यागदें १८ परन्तु जिसकिसी के विषय में प्रतिज्ञा करें फिर न छोड़ें उसमेंभी ब्राह्मण के पालनादि के विषय में जो वचन कहे उसका प्रतिपालन तो विशेषहीकरें तिससे हम को यही चाहिये कि अवश्य ऋषियों का परिपालन करें १९ हे वैदेहि चाहे प्रतिज्ञा भी न कीहो पर ब्राह्मण का कार्य्य अवश्य करें फिर जब प्रतिज्ञाही करचुके तो क्या कहना वचन का पालन तो अवश्यही करेंगे व हमने यहभी जाना कि हमारे स्नेह व सौहार्दसे तुमने ऐसा वचन कहा २० हे सीते हम तुम्हारे ऊपर बहुतप्रसन्नहैं कुछभी

अप्रसन्न नहीं हैं जो बचन तुमने कहे वे तुम्हारे कुलकेही योग्य हैं तुम हमारी धर्म्मचारिणी हो व प्राणोंसे भी अधिक प्रिय हो २१ ॥

दो० मैथिल नृपकी सुता सों इमि कहि श्री रघुनाथ ॥
धनुलै रम्यतपोवनहिं गे सिय लक्ष्मण साथ १ । २२

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये आरण्यकाण्डे दशमस्सर्गः १० ॥

चलने के समय श्रीरामचंद्र जीतो आगे २ चले तिनके पीछे २ मध्य में अति शोभन श्री जानकीजी चलीं तिनके पीछे २ धनुष हाथमें लिये लक्ष्मणजी चले १ दोनों भाई जानकी जीके साथ विविध प्रकारके पर्वत व वन नदीआदि अतिरमणीक देखतेदेखाते चले २ मार्ग्गमें नानाप्रकार के सारस चकई चकवा आदि पक्षी जो नदियों के तीर रहते हैं व कमल सहित ताल जिनमें जलचारी पक्षी विराजमान थे ३ चीता आदि बाघों के झुण्डकेझुण्ड मतवाले बड़ी सींगवाले भैंसे शूकर व वृक्षों के बैरी हाथी ४ इनको देखते २ बहुत दूरतक चलेगये तबतक सूर्य्यनारायण अस्त होने लगे आगे एक चार कोश का लम्बा चौड़ा तड़ाग देख परा ५ जिसमें नानाप्रकारके कमल लगेथे हाथियों के झुण्डके झुण्ड से नहातेशोभितहंस सारसादि जलजन्तुबोलते६ उस प्रसन्नजल व रमणीय तालाव में गाने बजाने का शब्द तो सुनपरा परन्तु कोई गाने बजाने वाला न देखपरा ७ उस शब्द को सुन मारे आश्चर्य के श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मण जी उसी स्थान पै टिके हुये धर्म्मभृत् मुनिसे पूंछनेलगे ८ हे महामुने यह अत्यद्भुत सुन हम लोगों के मनमें बड़ा आश्चर्य्य है यह क्या है अच्छीतरह से कहिये ९ जब श्री रामचन्द्र जी ने धर्म्मात्मा मुनिसे ऐसापूछा तो मुनिराजउस सरका प्रभावकहनेलगे १० हेराम इस तड़ाग का पंचाप्सरनामहै व बहुतदिनोंकाहै इसे माण्डकर्णि मुनिनेअपने तपोबलसे बनायाहै ११ वेमाण्डकर्णि महामुनिजी वायु पानकर दशसहस्त्र वर्ष पर्य्यन्त यहांबड़ी कठिन तपस्या करतेरहे १२ उस तपस्या से इन्द्र बरुण कुबेराग्नि सूर्यादि देवता सबव्याकुलचित्तहो एकत्रबैठ आपस में बोले १३ कियेमुनिजो तपस्या करतेहैं हम लोगोंमेंसे किसी न किसी का स्थान चाहतेहैं यह कह सब उद्विग्न चित्तहो १४ मुनिकी तपस्या में

बिघ्नकरने के लिये अप्सराओंमें मुख्यपांच अप्सरा उनलोगोंनेभेजीं १५ यद्यपि मुनिराज सिद्धथे पर देवताओं काकार्य्य सिद्धहोने के लिये उन अप्सराओं ने मुनिको कामके बश करदिया १६ उन पांचो अप्सराओं को मुनिने अपनी स्त्री बनालिया व उनके लिये उस तलाव के भीतर एक अति सुन्दरघर बनाया १७ उसमें वे पांचो अप्सरायें सुखसे रहने लगीं व तपाबल से मुनिराज युवावस्था को प्राप्त होगये इससे वे लोग उनके संग विहार करने लगीं १८ वहीलोग मुनिके संग विहार कररही हैं यहउन्हीं का गाना व उनके भूषणों का मनोहर शब्द सुनाई देताहै १९ मुनिके ऐसे वचन सुन श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी ने बड़ा आश्चर्य्य माना २० व आपस में उसीके आश्चर्य्य की बातें कहते सुनते कुश व फटेवस्त्र ठौर ठौर परेहुये वेद पाठादि ब्राह्मणों की लक्ष्मी सहित आश्रम देखा २१ श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण व जानकी जी वहांबसे वहांके रहनेवाले मुनिलोग कन्दमूल फलादिसे उनकी पूजाकरने लगे२२परम शोभायमान उस आश्रम पै बस मुनिलोगों से पूजा पाय पाय और और आश्रमों पै गये २३ उन मुनिलोगों के समीप श्रीराम जानकी लक्ष्मण कहीं तो नवमासबसे कहीं ग्यारह कहीं एकवर्ष रहे २४ कहींचार मास कहीं पांच कहीं छः कहीं सात कहीं आठ कहीं तीन कहीं साढ़ेतीन २५ कहीं इनसे न्यूनाधिकबसे तिन मुनियों के आश्रम पै बसते श्रीरामचंद्रजीको दशवर्ष बीतगये जानकीजी व लक्ष्मणजी के संग घूमते घूमते २६ फिर सुतीक्ष्णमुनि के आश्रम पै आये वहां मुनियों ने बड़ीपूजाकी २७ तिस आश्रम पै कुछदिन तक श्रीरामचन्द्रजी रहे एकदिन विनय सहित तिन सुतीक्ष्ण मुनिसे २८ बोले कि इस वनमें कहीं मुनियों में श्रेष्ठ अगस्त्यमुनि २९ रहते हैं यहहमने कथा कहनेवाले मुनिलोगोंसे सुनाहै परन्तु यहनहीं जानते कि उन महातपस्वीजी का कौन वनहै ३० फिर उस वनमें उन महात्मा का अति रमणीय मंदिर कौनहै उनको प्रसन्न करनेके लिये लक्ष्मण जानकी समेत ३१ प्रणाम करने के लिये जाया चाहते हैं यहबड़ा भारी मनोरथ हमारे हृदयमें है ३२ कि हमजाय इन मुनिराज की सेवाकरें सुतीक्ष्णजी ने रामचंद्रजी की वाणीसुन ३३ श्रीरामचंद्रजीसे बोले कि सहित लक्ष्मण आपसे हमभी यहकहनेवाले

थे ३४ कि आप जानकी लक्ष्मण सहित अगस्त्यजी के पास जाइये बड़ीखुशी कीबात है कि आपहीने इस विषय में हमसे पूंछा ३५ हेरामचंद्रजी जहां अगस्त्य मुनि रहते हैं वह आश्रम बताते हैं इसस्थान से सोरहकोश दक्षिण ओर जाइये पहिले अगस्त्यजी के भाईका स्थान है ३६ वहां बहुत अच्छी समान भूमिहै वपीपरी का बड़ावन है इसके सिवाय औरभी बहुत से वृक्षहैं जोफूला फरा करतेहैं नानाप्रकार के पक्षी बोला करते ३७ उस वनमें स्वच्छजल पूर्ण हंस कराकुल चकई चकवादि पक्षी सहित बहुत से बड़े बड़े व छोटे छोटे तालाव हैं उनमेंनानातरह के कमल फूल रहेहैं ३८ वहां आप एकरात बसके प्रातःकाल वहांसे दक्षिण ओर चलियेगा उसके आगेभी बड़ावन मिलैगा ३९ चारकोश पै अगस्त्यजी का स्थान है वहां भी नानाप्रकार के वृक्षोंका बड़ाभारी वनहै ४० वहां आपके संग लक्ष्मण व जानकी जी बड़ी प्रसन्नतासे रहेंगे क्योंकि वहांका वन बहुतवृक्षोंसे सघन होनेके कारण प्रसन्नही होनेके योग्यहै ४१ जो महामति अगस्त्यजी के देखने का विचार कियाहै तो आजही जानेका भी विचार कीजिये ४२ मुनिके ऐसे बचन सुन प्रणामकर श्रीजानकी लक्ष्मण सहित अगस्त्यमुनि के देखने के लिये श्रीरामचन्द्र चले ४३ मार्गमें चित्र विचित्र वन बादरों के समान ऊंचे ऊंचे पर्व्वत तालाव नदीआदि देखतेचले ४४ सुतीक्ष्ण मुनिके बताये रास्तामें चलेजाते थे कि रामचन्द्र जी लक्ष्मण जीसे बोले ४५ कि तिन अगस्त्यजी के महात्मा भाई का हमजानते हैं यही आश्रम है जो देखाई देताहै ४६ क्योंकि जैसे कुछ इसवन के वृक्ष फलोंके भारसे झुके झुकाये सुनेथे वैसेही देख परते हैं ४७ व पकी पीपरियों के फलोंका सुगन्ध पवन के वगसे कडुआ चलाआता है ४८ व ठौर २ काटे हुये काठ प.े हैं वैडूर्य्यमणि के समान हरे कुश भी सबकहीं लगे देखाई देतेहैं ४९ व यह वनके बीच में मुनिके स्थान परका धुआं है जो काले बादल के कँगूरों के समान देखाई देताहै ५० व सुन्दर एकान्त वाले घाटों में स्नान कर २ येब्राह्मण लोग बैठे हैं व अपने २ लाये फूलों से देवताओं की पूजा कररहे हैं ५१ इससे ठीक २ जान पड़ता है कि सुतीक्ष्णका बताया हुआ अगस्त्य जीके भाईका यही

आश्रमहै ५२ कि जिनके भाई अगस्त्य जीने मृत्युको बँधुआकर संसार के हित के लिये ऐसा पुण्य किया कि यह दक्षिण की दिशाभी सबलोगों के जाने आने वाली होगई ५३ यहां पर एक समय वातापी व इल्वल दोनों भाई सङ्गही आये ये दोनों दुष्टदैत्य ब्राह्मणों को मारा करते हैं ५४ उनमें इल्वल ब्राह्मण का रूप धारण कर जब श्राद्धका समय आता तो आप संस्कृत वाणी बोल ब्राह्मणोंका निमन्त्रण करै ५५ जब ब्राह्मण लोग भोजन करनेको बैठैतो वह दुष्ट अपने भाई वातापीको भेड़ा बनाय उन ब्राह्मणोंको भोजन करने को देदेता ५६ जब वे ब्राह्मण लोग भेड़ा रूप वातापी को भोजन करजाते तो उसका भाई इल्वल पुकारता था कि भाई वातापी अबनिकलआवो ५७ अपने भाईका बड़े जोरसे वचन सुन ब्राह्मणों के पेट फार २ भेड़ाकी बोली बोलता वातापी निकलआता ५८ इस तरह से उन दोनों दुष्ट दैत्यों ने हजारों ब्राह्मण मारडाले यह दशा बहुत दिनोंतक रही प्रतिदिन सैकरों ब्राह्मण मरतेथे ५९ जबये समाचार देवताओं ने जाने तो अगस्त्यमुनिकी बड़ी प्रार्थना की जिस से वे इल्वल व वातापी के यहां आये सब ब्राह्मणों के समान उनका भी न्योता हुआ व भेड़ा रूप वातापी भोजनके लिये दिये गये अगस्त्यजीने भोजन कर लिया ६० इल्वल ने फिर अपने भाईको पुकारा कि भाई वातापी निकलतो आवो ६१ जब इल्वल ने अपने भाई वातापी को पुकारा तो उस बिप्रघाती स अगस्त्यजी हँसकर बोले ६२ कि हमने अब तुम्हारे भाई को खायकर पचायडाला अब वह दुष्ट कैसे निकल सक्ता है वहतो यमपुरको चलागया ६३ जब मुनिसे अपने भाई के मरजाने के वचन सुनतो बड़ा क्रोध कर वह दुष्ट निशाचर इल्वल मुनि को मारने दौड़ा ६४ जैसेही सामने दौड़ा है कि महातेजस्वी मुनिने अग्नि के समान क्रोध दृष्टिसे देखदिया कि उसी स्थान पै इल्वल भस्म होगया ६५ यह तड़ागवन शोभित उन्हीं महात्मा अगस्त्यजी के भाई का आश्रमहै जिन्होंने ब्राह्मणोंके ऊपर दया कर ऐसा दुष्कर कामकिया है ६६ इसतरह रामचन्द्र व लक्ष्मणजी बतलाते चलेजाते थे कि इतने में सन्ध्याकालआया सूर्य अस्तहोगये ६७ उसीस्थानपै सायंसन्ध्याबन्दन कर दोनोंभाई मुनिके प्रणाम करनेके लिये उसआश्रमपै गये ६८ व जाय

प्रणाम किया मुनिने बड़ा शिष्टाचार व्यवहार किया कन्दमूल फलादि खाय उसरात्रिमें तीनों जने वहींरहे ६९ जबरात्रि बीतगई बनाय सूर्य्य निकलआये तोअगस्त्यजीके भाईसे श्रीरामचन्द्रजी बोले ७० हे भगवन तुम्हारे आश्रम पै इस रात्रि में हमबड़े सुखसे रहे अब आपके प्रणाम करते हैं व तुम्हारे बड़े भाई अगस्त्यजी के दर्शन करने के लिये आज्ञा मांगते हैं ७१ यह सुन मुनिने कहा बहुतअच्छा आप जाइये तब श्रीराम मुनिके बताये मार्गको चले मार्ग में बार २ उस वनकी शोभा देखते जाते थे ७२ जिसवनमें जल कदम्बकटहर सांखू अशोक धवई किरवार महुआ बेल तेंदू आदि वृक्ष ७३ अच्छीतरह फूले फुलाये फुलानी लताओं से शोभित सैकरों जंगलीथे उनको श्रीरामचन्द्र जीने देखा ७४ जितने वृक्षथे बहुधा हाथियों ने उनकी डालियां तोड़डाली थीं व सबपै बानर चढ़ेथे मतवाले पक्षी भी सबों पै बोलरहे थे ७५ तबराजीवलोचन भवभय मोचन श्रीरामचन्द्रजी पीछे पीछे आतेअति सुलक्षण लक्ष्मण जी से बोले ७६ कि इनसब सुन्दर पुष्पपत्र सहित वृक्षोंके होनेसे सब पशु पक्षियोंके निर्व्वैर रहनेसे विदित होताहै कि अगस्त्यजी का यही स्थान है ७७ इनका अगस्त्य ऐसानाम इन्हीं के कर्म्म से प्रसिद्ध हुआ है थकेलोगों के श्रमका नाशनेवाला यहउन्हीं का आश्रम है जो देखाई देताहै ७८ देखोतो इसके वनमें यज्ञका धुआं छायरहाहै वृक्षोंमें फटेवस्त्र टँगे हैं शान्तचित्त पशुगण बैठे हैं व नानाप्रकार के पक्षीबोल रहेहैं ७९ जिन अगस्त्यजी ने मृत्युको जीत लोक के हितके लिये दक्षिण दिशा सबकिसी के जानेके योग्य करदिया ८० यहउन्हीं का आश्रमहै जिनके भयसे राक्षस लोग दक्षिण दिशामें आतेतो हैं परवहां के लोगों को भय नहीं देखाते ८१ क्योंकि जबसे इसदिशा में अगस्त्यजी आय टिके हैं तबसे सबराक्षस प्रशान्तचित्तहो निर्व्वैर होगये हैं ८२ व उन्हीं भगवान् अगस्त्यजी के नामहीं से यहदक्षिण की दिशा कुशल होगई इसीसे राक्षसलोग इसमें कुछजबरदस्ती नहीं करसक्के ८३ इन्हीं अगस्त्य जी का शिष्य विन्ध्याचल एकसमय ऐसाबढ़ा कि सूर्य्यनारायण का मार्गही रुकगया तबसब देवताओं की प्रार्थना से अगस्त्यजी विन्ध्य के स्थान पै गये इनको देख उसने साष्टाङ्ग प्रणामकिया तो मुनिने कहा

जबतक हम न आवें तबतक तुम ऐसेही पड़ेरहना तबसे अगस्त्य तो दक्षिण दिशाको चलेगये आजतक लौटेही नहीं विन्ध्य भी उनकी आज्ञा मान बढ़ता नहीं ८४ यहशुद्ध पक्षि सहित अति शोभायमान आश्रम विख्यात चरित व चिरंजीवी अगस्त्यजी का है ८५ येलोक पूजित साधु प्रकृति सदा सज्जनों के हितकरने में निपुण अगस्त्यजी आयेहुये हम लोगों को आशीर्वाददेंगे ८६ ॥

दो० हम आराधन यहँकरब मुनि अगस्त्य करनीक ॥
शेष दिवस वनवास के यहँ बिताउब ठीक १ । ८७
यहांदेव गन्धर्व ऋषि सिद्ध अगस्त्यहि आय ॥
निराहार ह्वै नित्यही सेवत अति मनलाय २ । ८८
यहां मृषावादी पुरुष क्रूर स्वभाव अजान ॥
लज्जा रहित सपापनहिं जीवत मुनि अपमान ३ । ८९
यहांयक्ष सुरनाग अरु पतग नियत आहार ॥
वसत करन हित धर्मकर भलोएहु व्यवहार ४ । ९०
यहां महात्मा लोग ह्वै सिद्धगये सुरगेह ॥
रविसम तेज विमान चढ़ि तनुतजि लहिनव देह ५ । ९१
आराधित सुरयहँ नरन विविध राज्य सुख देत ॥
यक्ष देवकरि देतयह थल प्रभाव सुखहेत ६ । ९२
लषण जाय मुनिसों कहहु आगेचलि शुभबैन ॥
सिया सङ्ग रघुनाथ यह आये आशिष लैन ७ । ९३

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेएकादशस्सर्ग्गः ११ ॥

तब रामचन्द्रजीके छोटे भाई लक्ष्मणजीअगस्त्यजीके आश्रममेंपैठे व उनकेशिष्यसे बोले १ कि अयोध्यापुरीके राजादशरथजीके ज्येष्ठपुत्रमहा-बली श्रीरामचन्द्रजी अपनीस्त्री सीताजीकेसाथ मुनिकोदेखनेकेलिये आये हैं२ हम उन्हींके छोटेभाई हैं लक्ष्मण हमारा नामहै तिन्हींकेआज्ञाकारी व भक्तहैं सायद तुमनेभी सुनाहोगा ३ हम सब लोग अपने पिताकी आज्ञासे वनको आयेहैं आपके मुनिराजको देखाचाहतेहैं इससेजायमुनि से कहो ४ लक्ष्मणजीके वचन सुन अगस्त्यजीका शिष्य जहां अग्नि-

शाला में मुनिराज बैठेथे बतानेके लिये गया ५ तपस्यासे महातेजस्वी मुनिसे हाथजोड़ रामचन्द्रजीका आगमन शीघ्रही कहा ६ जैसा कुछ लक्ष्मणजीने कहाथा वैसेही अगस्त्यके शिष्यने कहा कि राजादशरथ जीके पुत्र रामचन्द्र लक्ष्मणजी ७ अपनी स्त्री सीतासहित आपकोदेखने व सेवा करनेकेलिये आश्रमपै आयेहैं ८ इस विषयमें जैसाजैसा बिचार आपकाहो वैसी आज्ञा दीजिये शिष्यसे रामचन्द्रजी का व लक्ष्मण का आगमनसुन ९ व बड़े भाग्यवाली जानकीजीकाभी आगमनसुन अगस्त्य जी बोले कि बड़े भाग्यकी बातहै जो बहुत दिनोंके पीछे श्रीराम हमको देखनेको यहाँआज आयेहैं १० हमभी रामचन्द्रजीका आगमन मनसे चाहतेथे इससे जाव आदर सहित राम लक्ष्मण व जानकी को ११ हमारे समीप लावो बिनाहमारे पूंछेहीक्यों नहीं बुलालाये जबमहात्मा व धर्म्मज्ञ मुनिने ऐसाकहा तो १२ मुनिका शिष्यप्रणाम करबोला कि बहुतअच्छा बुलाये लिये आताहूँ यह कह बहुत जल्द मुनिका शिष्य अग्निशाला से निकलआय लक्ष्मणजी से बोला १३ कि रामचन्द्र जी कौन हैं मुनिको देखने को चलें तब लक्ष्मणजी उसशिष्यके साथ जहां रामचन्द्रजी थेगये १४ व उसको श्रीरामचन्द्र जानकी जीको देखादिया उसने बड़ी नम्रतासे अगस्त्य जीके वचन जाय कहे १५ व सत्कार सहित रामलक्ष्मण जानकीजीको उसने मुनिके निकट प्रवेश कराया १६ भीतर जायदेखा तो प्रशान्तचित्त हरिणबैठे थे ब्रह्मा शिव १७ विष्णु इन्द्र सूर्य्य चन्द्रमा त्वष्टा कुबेर १८ धाता विधाता पवन वरुण १९ गायत्री सावित्री सरस्वती आठोवसु वासुकी आदिसर्प्प गरुड़ २० कार्त्तिकेय धर्म्म इन सबकेस्थान बनेथे रामचन्द्रजीने सबदेखे मुनिभी अपने शिष्योंके संगकुटीसेनिकले २१ मुनियोंमेंबड़ेतेजस्वी अगस्त्यजीको देख रामचन्द्रजी लक्ष्मणजीसे बोले २२ हेलक्ष्मण देखोतो तपोबलसे प्रकाशित अगस्त्यजी कुटीसे निकसते हैं यहसब तपस्याहीका प्रभावहै जो इनका ऐसा तेजहै २३ इतना कह सूर्य्य समान तेजस्वी अगस्त्यजीके चरणों के श्रीरामचन्द्र जीने प्रणाम किया २४ प्रणामकर हाथजोड़श्री रामलक्ष्मण व जानकी तीनोंजन मुनिके आगे खड़ेहुये २५ मुनिने चरणपखारने के लिये जलमँगादिया व बैठनेके लिये आसन फिरकुशल

प्रश्नकर कहाकि बैठिये २६ तिसके पीछे बलिबैश्वदेव विधिसे अग्निमें आहुतिदे अतिथियों की पूजाकर वाणप्रस्थ धर्म्मसे भोजन दिया २७ व महाधर्म्मज्ञ मुनिश्रेष्ठ धर्म्म जाननेवाले व हाथजोड़े बैठे श्रीरामचन्द्र जीसे बोले २८ हे राम जो तपस्वी होके अतिथियोंका सत्कार नहीं करता वह झूंठी साखी देनेवाले पुरुषके समान परलोक में जाय अपना मांस खाता है २६ फिर सब लोकोंके राजा धर्म्मचारी महारथ पूजनीय मानने के योग्य अतिथि हो हमारे स्थान पै आप प्राप्त हुये ३० अब आपकी पहुनई करनी चाहिये यहकह फल मूल पुष्प व अन्य उत्तम उत्तम पदार्थों से रामचन्द्र जीकी पूजाकर फिर अगस्त्यजी बोले ३१ ॥

चौ० महादिव्य यह बैष्णवचापू । हेमवज्र भूषितगतदापू ॥ विश्व कर्म्म निर्म्मित अति शोभन । देखत राम सकल मनलोभन १ । ३२ अरु रवितेज सरिस यहबाना । सफलदीन्त्यहिविधि भगवाना ॥ अक्षय बाणभरा यह तरकस । दीन्ह इन्द्र हमकहँ दोउ पुनितस २ । ३३ निशित बाण पूरित पुनि दोऊ । अनलसमान तेजहैं सोऊ ॥ स्वर्णविभूषितमुष्टिक शोभन । महा खड्ग यह देखत लोभन ३ । ३४ रघुबर रणमहँ असुर समूहा । यहि धनुजीति विष्णुकरि ऊहा ॥ देवन दीन्ह विपुलश्री आपू । पूर्व्वकाल यह वार्त्ता लापू ४ । ३५ वहधनु वे तरकस वह बाना । पुनि वह खड्ग राम बलवाना ॥ विजयहेतु लीजै जिमि सुरपति । लेतवज्र निज करमहँ वरमति ५ । ३६ इमि अगस्त्यकहि सकल बरायुध । रामहिं दीन प्रवीण महाबुध ॥ महातेजसी मुनि भगवाना । बोल्यहु बहुरि बचन सुखसाना ६ । ३७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेद्वादशस्सर्गः १२ ॥

हेरामचन्द्र हे लक्ष्मण तुम दोनोंजन जानकी सहित जो हमारे प्रणाम करनेके लिये यहां आये इससे हम बहुत प्रसन्न हुये तुम्हारा कल्याण हो १ हमने जानाकि मार्ग्गके श्रमसे तुम दोनों भाइयों को बड़ा कष्टहुआ फिर जानकीको क्याकहें उनको तो अतिही कष्टहुआ इससे जनककुमारी उस कष्टके मिटाने की इच्छा करती हैं २ क्योंकि ये बड़ी सुकुमारी हैं अभीतक कोई कष्टभी इनके ऊपर नहीं पड़ाथा क्या करैं पतिके स्नेहसे

बहुत दोषयुक्त वनको प्राप्तहुई ३ इससे हे राम जिसतरह ये सीता सुख से यहां रहें वैसा कामकरो इन्होंने बड़ा दुष्करकर्म्म किया जो सब सुख छोड़ तुम्हारे संग वनको चली आई ४ हे राम जबसे सृष्टि हुईहै स्त्रियों की यही प्रकृतिहै कि सम्पत्तिमान् पुरुषमें तो प्रीति करती हैं व निर्द्धनको छोड़देती हैं ५ व बिजुली के समान चंचलता तलवार आदि शस्त्रोंकी तीक्ष्णता गरुड़ व पवन के समान वेग स्त्रियों के स्वभाव में होतेहैं ६ परन्तु येआपकी भार्य्या इन दोषों से रहित हैं इसीसे बड़ाई करने के योग्य व पतिव्रतास्त्रियोंमें सबसे पहिले गिनती करनेके योग्यहैं जैसे देवर्षियोंमें अरुंधतीकी गिनती होतीहै ७ ॥

दो० शोभित भो यहदेश जहँ सिया लषणयुत आप ॥
बसिहो रघुवर बहुतदिन वर्द्धित सकल प्रताप १ । ८
इमि सुनि मुनिवर के वचन हाथ जोरि श्रीराम ॥
बोले ऋषिसों अनल सम तेजवंत गुणग्राम २ । ९

कि हम धन्यहैं व बड़ा अनुग्रह आपने किया जो भाई व स्त्री सहित हमारे गुणोंसे आप प्रसन्नहुये १० अब आपसे यही पूछतेहैं कि कोई ऐसा स्थान बताइये जहां जलभी हो व वनभी बहुत हो जहां बसनेसे सब सुखसे रहें ११ रामचन्द्रजी के वचनसुन धर्मात्मा अगस्त्यजी एक दोघड़ी तक ध्यानदे बिचार बोले १२ हे तात यहांसे आठकोश पै एक स्थान है वहां फल मूल जल बहुतहैं व मृगगण भी बहुतहैं रमणीयभी बहुतही है पंचवटी ऐसा उसका नामहै १३ वहां जाय कुछ कुटीआदि बनाय लक्ष्मणके सङ्ग क्रीडाकरिये व पिताकेवचन विधिसहित पालिये १४ हेराम तुम्हारे व दशरथजीके स्नेहसे हमने अपनी तपस्याके प्रभाव से तुम्हारे वनवास का वृत्तांत सब जानलियाहै १५ व अपने तपोबल सेहो आपके हृदयकाभी अभिप्राय जानलियाहै कि इसतपोवनमें हमारे साथ बसके राक्षसोंको माराचाहतेहो १६ इसीसे तुमसे कहतेहैं कितुम पंचवटीको जाव वहवन अति रमणीयहै वहां जानकी सुखसे रहेंगी १७ वहदेश बड़ाई करनेकेही योग्यहै व बहुत दूरभी नहींहै वहां गोदावरी नदीभी बहतीहै सीताका चित्त वहां बहुतलगेगा १८ मूलफलादिभी वहां बहुतहैं पक्षीभी बहुततरह के रहतेहैं पुण्य व रमणीयभी है व एकांतभी

बहुतही है १९ आपभी सदाचारी हैं व रक्षाभी करनेमें समर्त्थहैं इससे वहां बस तपस्वियों का पालनभी खूब करोगे २० देखो वह वरगदका बड़ाभारी वृक्ष देखाई देताहै पहिले यह महुआ का वन मिलेगा उसके उत्तरओर होके जाना २१ आगे पर्वतकी थोड़ीही दूरपै पंचवटी देखपड़ेगी वहां सदा वन फूलाफला रहताहै २२ जब अगस्त्यजी ने ऐसा कहा तो सहित लक्ष्मण श्रीरामचन्द्रजी सत्यवादी तिन मुनिराज की आज्ञाले २३ व तिनके प्रणामकर दोनोंभाई जानकी सहित उसपंचवटी को चले २४ ॥

हरिगीतिका ॥

धरि चाप शर कर महिप बालक सुभग तरकसहूलिये ।
समर मैं दर रहित द्वौजन स्वमन हर्षित हू किये ॥
मुनि कथित मारग बीच गवने पंचवटि मुख कै भले ।
लषत नाना तरु लता गण जात प्रमुदित ह्वैचले १ । २५

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डे त्रयोदशस्सर्गः ॥ १३ ॥

जब श्रीरामचंद्रजी पंचवटी को चले तो बीचमें अति भयानक व बड़ा पराक्रमी बड़ाभारी एक गीधको देखा १ वन में उसकोदेख रामलक्ष्मण दोनों भाई उसे राक्षस जान बोले कि आप कौन हैं २ यहसुन वह अति मधुर व सीधीबोलीसे रामचन्द्र जीको प्रसन्न कराताही हुआ बोला कि हेबरस हमको अपनेपिताजीके मित्रसमझो ३ पिताका सखाजान उसपक्षी की बड़ी पूजाकर श्रीरामचन्द्रजीने तिसका कुल व नामपूंछा ४ रामचन्द्रजीके बचनसुन वह पक्षी अपना कुल व नाम कहनेलगा जिसमें सब प्राणियों की उत्पत्ति निकल आई ५ कहा हेराघव पूर्व्वकाल में जितने प्रजापति हुयेहैं उनको हम प्रथमसे कहते हैं सुनो ६ सबसे पहिले कर्द्दमजी हुये दूसरे विकृत तीसरे शेष चौथेसंश्रय पांचवें बहुपुत्र ७ छठें स्थाणु सातवें मरीचि आठवें अत्रि नवयेंक्रतु दशयें पुलस्त्य ग्यारहयें अंगिरा बारहयें प्रचेता तेरहयें पुलहा ८ चौदहयें दक्ष पन्द्रहयें विवस्वान् सोलहयें अरिष्टनेमि सत्रहयें कश्यप येसबसे पिछले प्रजापति हैं ९ उनमें दक्ष प्रजापतिके अति प्रसिद्ध व महायश-

स्विनी ६० कन्याहुईं १० उनमें अतिसुन्दरी ८ कन्याओं का कश्यपजी के संग विवाहहुआ उनके नामयेहैं अदिति दिति दनू कालका ११ ताम्रा क्रोधबशा मनु व अनला इनस्त्रियोंकेऊपर प्रसन्नहो कश्यपजी फिर बोले १२ कि तीनों लोकके भरण पोषण करनेवाले हमारे समान पुत्र तुमलोग उत्पन्नकरो यहसुन अदिति दिति दनू १३ व कालका इन चारोंने तो अपने पतिमें मनलगाया व बाक़ी चारोंने पतिके कहनेमें न मन लगाया अदितिके ३३ देवता हुये १४ बारह आदित्य ८ बसु ११ रुद्र २ अश्विनीकुमार व दितिने बड़े यशस्वी दैत्य उत्पन्न किये १५ यह वन समुद्रसहितपृथ्वी पूर्व्वकालमें उन्हींकीरही व दनू ने अश्वग्रीव नाम पुत्रउत्पन्न किया १६ नरक व कालक दोपुत्र कालकासे हुये क्रौञ्ची भासीश्येनी धृतराष्ट्री व शुकी १७ये लोक में प्रसिद्ध पांचकन्या ताम्राने उत्पन्नकिया उनमें क्रौञ्चीसे खूसट पैदाहुये भासीसे भासहुये १८ श्येनीसेबाज व बड़ेतेजस्वी गीध उत्पन्नहुये व धृतराष्ट्रीके हंस कलहंस१९ व चकई चकवा उत्पन्नहुये शुकीके नता नाम कन्याहुई नताके बिनता कन्याहुई २० हेराम क्रोधबशा के दश कन्याहुईं उनकेनाम मृगी मृगमन्दा हरी भद्रमदा २१ मातंगी शार्दूली श्वेतासुरभि सुरसा व कद्रुका येसब शुभ लक्षण युक्तथीं २२ उनमें जितने मृग हैं सबमृगीके पुत्रहैं व मृगमन्दा के सबऋक्ष सृमर चमरी आदिपुत्रहैं २३ व भद्रमदाके इरावती नाम कन्याहुई तिसइरावती के सबकाप्रिय ऐरावतनाम महागजराज उत्पन्नहुआ २४ हरीके सबसिंह पुत्रहुये व बड़े बिचारी बानरभी इन्हींके हुये शार्दूलीने गोपुच्छ व बाघपुत्र उत्पन्न किये २५ व मातंगी के सब हाथीहुये हेराम श्वेताके सब दिग्गज उत्पन्न हुये २६ सुरभिकेदो कन्या उत्पन्नहुईं एकरोहिणी दूसरी परम यशस्विनी गन्धर्व्वा२७उनमें रोहिणीने गायबैल उत्पन्न किये व गन्धर्व्वाके सबघोड़े हुयेसुरसाकेसब नागहुये हेराम और कद्रूके पन्नग२८मनुनाम कश्यपकीस्त्री से मनुष्य उत्पन्नहुये२९उनमेंचारभेदहैं प्रथम ब्राह्मण दूसरे क्षत्रिय तीसरेवैश्य चौथे शूद्र३०व सब पुण्य फलवाले वृक्ष अनलासे उत्पन्न हुये फिर शुकीकी पौत्रीविनता व सुरसाकीकन्याकद्रूहुई ३१ इसकद्रूके सहस्रों नागउत्पन्न हुये जोकि पृथिवीको धारण करतेहैं व गरुड़ और अरुण दो विनिताके

पुत्रहुये ३२ तिन अरुणाजीसे हम व हमारे बड़ेभाई सम्पाति उत्पन्नहुये हमारा जटायु नामहै व हमारी माताका श्येनी ३३ जो तुम चाहो तोहम तुम्हारी सहायता करेंगे जब कभी फल मूलादि लाने के लिये तुम व लक्ष्मण दोनोंभाई चलेजावगे तो हम सीताकी रक्षाकियेरहेंगे ३४ यह सुन श्रीरामचंद्र पिताके मित्र जान परमानंदित हो जटायुकी बड़ीपूजा कर लपटाय मिले व झुंकके प्रणामकिया व जटायु ने बारबार पिताकी मित्रता कही उसे सुनसुन हर्षितहुये ३५ व कहा कि बहुतअच्छा आप जानकी की रक्षा करतेरहिये यहकह जटायुको संगले लक्ष्मण जानकी सहित श्रीराम पंचवटीको शत्रुओंको भस्मकरते चले जैसेअग्नि पांखियों को भस्म करता है ३६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेचतुर्दशस्सर्गः १४ ॥

नानाप्रकारके मृग सर्पसहित पंचवटीमेंजाय बड़ेतेजस्वी अपने भाई लक्ष्मणजीसे श्रीरामचद्रजीबोले १ कि महर्षिअगस्त्यजीनेजो देश रहने केलिये बतायाथा वहां आगये पंचवटीदेश यहीहै देखोतोवन फुलारहाहै २ जिससे सब काम करनेमें तुम निपुणहो इससे सब कहीं दृष्टिफैलाय देखोतो हमलोगों के रहनेवाला आश्रम किसस्थान पै है ३ जहां कि बैदेहीका व हमारा तुम्हारा दोनोंका चित्त लगे ऐसा स्थान देखो जहां समीपही जलभीहो ४ व जहां वनभी रमणीय हो जलभी सुहावन हो व पत्र पुष्प कुश इन्धनभी निकटहीहो ५ जब रामचंद्रजीने लक्ष्मणजी से ऐसाकहा तो हाथजोड़ वे सीताजीके सामनेही रामचंद्रजी से बोले६ हे श्रीरामचंद्रजी जबतक आप विद्यमान हैं तबतक हम आपके अधीनहैं हमारे विचारका कुछ ठीकनहीं इससे आपही विचारकर हमको आज्ञा दीजिये कि यहां पर पर्णकुटी बनावो ७ लक्ष्मणजी के ऐसे वचनसे श्री रामचंद्रजी बहुत प्रसन्नहो स्थान ढूंढ़ने लगे जब अति सुंदर सब गुण युक्त स्थान देखा तो लक्ष्मण जी ८ का हाथ अपने हाथ से पकड़ उस परम सुहावन स्थान पै लेगये जो रहने के लिये विचारा था व यह बोले ९ कि यह स्थान अति मनोहर है भूमि यहां की समान है सब पुष्पितवृक्ष लगे हैं यहीं तुम परमरम्य स्थान बनाओ १० क्योंकि

देखो इसके समीपही यह कमल शोभित तलैया बहती है जिसके कि-
नारे किनारे नानाप्रकार के वृक्ष लगेहैं फूलोंकी सुगन्ध आयरहीहै ११
व जैसा अगस्त्यजी ने कहाथा यह गोदावरी नदी भी फुलाने वृक्षों से
शोभित है १२ हंस कारण्डवादि पक्षी बैठे हैं चकई चकवा भी बैठे हैं
मृगगण भी झुण्डके झुण्ड यहां हैं फिर इस स्थानसे न बहुत दूरही है
न बहुत निकटही है १३ व ऊंचे ऊंचे पर्व्वत दिखाई देतेहैं जिनपै मोर
बोल रहे हैं नानाप्रकार की कन्दरा विद्यमान हैं फूले फूले वृक्षों से घेरे
हैं १४ मानों सोने चांदी तांबेके बनेबनाये परम सुहावने हाथीहैं अपनी
हथिनियों से शोभित हैं बीच बीच कन्दराओं में बैठे पक्षी बोलरहे हैं
मानों धवरहरों के झरोखों में बैठे हैं १५ साखू तार तमाल खजूर कट-
हल निवार तिमिश पुन्नाग १६ आम्र अशोक तिलक केतकी चम्पादि
फुलाने वृक्षोंसे शोभित १७ स्यन्दन चन्दन कदम्ब वड़हल धवई
अश्वकर्ण खैर शमी पलाश पांड़रिडांड़ इनवृक्षोंसेभी पर्व्वतघेरेगयेहैं १८
यहस्थान पुण्य रमणीय व बहुत मृगगण पक्षिगण सेवित है हे लक्ष्मण
यहांइस जटायु पक्षीके साथवसेंगे १९ जब इसतरह लक्ष्मणजी कहेगये
तो बहुतही जल्द भाई श्रीरामचन्द्र जीके लिये स्थान बनादिया २०
उसमें बड़ीभारी पर्णशाला बनाई दीवारें मिट्टीसे उठादीं सुन्दर सुन्दर
खम्भा गाड़दिये ऊपर लम्बे लम्बे वांशधरे २१ उन तिरछे वांशों पै
शमी की डालें काट काट बिछायदीं रस्सियों से बहुत मजबूतीके साथ
बांधदी उसके ऊपर कुशकाश शरपतवृक्षोंके पत्ते बिछादिये२२ उसके
ऊपर फिरभी शमीकी डालोंकी वत्तियां धरधर कसकस बांधदिया इस
तरहका मनोहरस्थान रामचन्द्रजी के रहनेके लिये महाबलवान् लक्ष्मण
जीने बनायदिया २३ व गोदावरी नदीमें जाय स्नानकर कमलके फूल
व फलले फिरआये २४ उनपुष्पोंसेवास्तु विधिसेपूजाकर शान्तिवाचक
मन्त्रादि पढ़े जब बनाय शुद्धपर्ण कुटीहुई तो रामचन्द्रजीको देखाया २५
रामचन्द्रजी व जानकीजी उस परमरम्य स्थानको देख बहुतही प्रसन्न
हुये २६ व रामचन्द्रजी लक्ष्मणजीको छातीमें लगाय प्रेमसों लपटाय
अति मधुर वचन बोले २७ हेवीर तुमने बड़ाभारी कामकिया हम तुम्हारे
ऊपर बहुत प्रसन्नहुये यह भेंट उसी प्रसन्नताकी है और क्या तुमको

दें २८ हे लक्ष्मण अभिप्रांय जाननेवाले व उपकार माननेवाले व धर्म्मज्ञ तुम ऐसे पुत्रको पाय पिताजीको भी कुछ कृत्य करनेको बाकी नहींरही तुमने सब कुछ करदिया २६ ॥

दो० इमि लक्ष्मणसों कहि परम लक्ष्मीवर्द्धन राम ॥
वहुफलयुत अतिरम्य तहँ वसेलोक अभिराम १ । ३०
कछु दिन सीता लषण युत तहां वसे रघुनाथ ॥
जिमिसुरपुर सुरपति वसत देवनकरत सनाथ २ । ३१

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेपंचदशस्सर्गः १५ ॥

महात्मा श्रीरामचन्द्रजीके सुखपूर्व्वक तहां बसतेही बसते शरदऋतु बीता हेमन्त ऋतु आया १ एकदिन जब बनायप्रातःकाल हुआ तोस्नान करने के लिये श्री रामचन्द्रजी अति रम्य गोदावरी नदीको गये २ संग मेंजानकीजीभीथीं व कलश हाथमेंलिये पीछे२ लक्ष्मणजी भीथे वेबोले३ हे प्रिय बोलनेवाले श्री राम जिस हेमन्त कालमें अन्न से शोभित हो मानों भूषणहीं पहिरने के समान सँव्वत्सर शोभित होता यह आप को प्रिय वहीकाल आयगया ४ देखिये सब जनों के शरीर मारे जाड़े व पाला के रूखे होगये पृथिवी में सब हरे रंगके नाज लगे हैं मारे जाड़े के पानी बहुत नहीं छुआजाता अग्नि का तापना सबको प्रिय लगता ५ सज्जन लोगों ने नये अन्नसे देवता पितरों की पूजा की अबसबनवा-न्नकर पापरहित हुये ६ देशवासी सब कामों से पूर्णहुये सब के घरमें दही दूध आदि गोरस भरा है राजा लोग विजय करने व प्रजा की रक्षा के लिये पृथिवी में ठौर २ घूमरहेहैं ७ अबसूर्य्यनारायण के दक्षि-ण दिशामें बिराजमान होने के कारण उत्तर की दिशा नहीं प्रकाशित होती जैसे विना सिन्दूर लगाये सुभगास्त्री ८ एकतो हिमालय पर्व्वत का स्वभावही है कि उसपै पाला पड़ा करता है दूसरे अब सूर्य्य के दूर चले जाने से जैसा उसका हिमवान नाम है ठीक २ औरभी पाला जमा होगया ९ अब मध्याह्न में सूर्य्य का घाम होनेके कारण दिन ब-हुत अच्छा लगता छाया व जल नहीं अच्छालगता १० अब आजकल के दिनों में सूर्य्य की किरण कम हो गई हैं इसीसे कुहिरा पड़ा करता

है जाड़ बहुत होता पवन चलने से औरभी ठण्ढा मालूम होता मारे जाड़ेके वृक्षोंके पत्ते सूख गयेहैं ११ आज कल की रात्रियोंमें बिना छाये स्थान में नहीं रहाजाता जब तक पुष्य नक्षत्र सहित पूसकी पूर्णमासी नहींहोती तबतक ऐसीही रातें हुआ करेंगी शीतकी बड़ी वृद्धि होरही है १२ सुन्दरता सूर्य्य से दबजाने व पाला के मारे किरण धूमिल होजाने से चन्द्रमा नहीं प्रकाशित होता जैसे बाफ लगने से दर्प्पण अन्धा सा हो नहीं प्रकाशित होता १३ जैसे मारेघामके श्याम होजानेसे सीताजी लक्षित होती हैं पर शोभित नहीं होतीं वैसेही पाला से मलिन होजानेसे पूर्णमासीकी भी चांदनी नहीं शोभित होती १४ देखिये पश्चिम का पवन बहता है एकतो इसकी प्रकृतिही ऐसी है कि शीतलहीहोता दूसरेपाला संयुक्तहै इसी से इसकाल में दूनी शीतलता इस में है १५ यव गोहूं आदि युक्त ओससे मुंदे वन सूर्य्योदय होनेपै क्रौंचसारसादि पक्षियों से शोभित होते १६ देखिये खजूर के फूल के आकार चावल भरी हुई वालियोंसे कुछ नीचेको झुके हुये पीले रंगके जड़हन धान शोभित होते हैं १७ पाला व कुहिरा से ढकी किरणों के चलने से दूरउये सूर्य्य चन्द्रमा के समान शीतल व न्यून प्रकाश विदित होते हैं १८ देखो दोपहर के पहिले घामका तेज कुछ जानही नहीं पड़ता दोपहर को कुछसुख देता है उसी समय कुछ पीलासा हो पृथिवी में शोभित होताहै १९ व वनोंकी भूमि पाला पड़ने से भी घास सहित होने व कड़ेघाम के होने से शोभित होती है २० वनका हाथी शीतजल पीने के लिये शूंड़ लपकाताहै परंमारे जाड़े के लौटालेता है पिआसाही रहजाता है २१ व ये जलचारी पक्षी यद्यपि बहुधा जलही में रहाकरते हैं पर इसशीतकाल में पानीमें बुड़ी मारने को मन नहींकरते जैसे कादर मनुष्य संग्राम में नहीं पैठते २२ ओसकी बूंदियों के पड़ने व कुहिरा की अँधियारी से युक्तहोने के कारण बिना फूलकी वनश्रेणी जानों सोयरहीहै २३ नदियों का जल ओसपड़ने से मूंदगया है केवल बोलनेहीं से जाना जाता है कि यहां सरहसें हैं पाला के मारे बालू ओदी होगई है केवल किनारों से विदित होता कि यहांनदी है २४ पाला के पड़ने व सूर्य्य किरण मन्दहोने के कारण मारे शीतलता के पर्व्वतों के आगेभी जोजल है स्वादिष्ट है २५ तालोंमें अब

जल कमहोने व अतिशीत पड़ने से कमलों की डाँढ़ीमात्र रहगई सबपत्ते गिरपड़े हैं पखुरियां भी नहीं रहगईं इससे वेनहीं शोभित होते २६ हे पुरुष सिंह इस शीतकाल में दुखित हो अयोध्यापुरी में तुम्हारी भक्तिसे धर्म्मात्मा भरत तपस्या करते होंगे २७ राज्यमान व विविधप्रकार के बहुत भोगछोड़ तपस्वी हो नियत समयपर भोजन करते शीत भूतल पै सोतेहोंगे २८ वेभी इससमय उठेहोंगे सब मन्त्र्यादिकों के साथ स्नान करने के लिये सरयूनदी को जातेहोंगे २९ परन्तु वेतो अत्यन्त सुखसे बढ़ेथे व बड़ेही सुकुमार हैं मारेजाड़े के इसबड़े प्रातःकालमें कैसेसरयू में नहातेहोंगे ३० कमलदलनयन श्यामस्वरूप शोभावान् सूक्ष्मोदर महात्मा धर्म्मज्ञ सत्यवादी सभामें बड़ेढीठे जितेन्द्रिय ३१ प्रियभाषी मधुर वचन बोलनेवाले आजानुबाहु शत्रुओं के मारनेवाले भरतजी विविध भांति के सुखछोड़ बड़ेभाई आपकी सेवा सब तरहसे कररहे हैं ३२ महात्मा भरत आपके भाईने स्वर्ग्ग जीतलिया जो कि वनमें भी टिकेहुये आपके अनुरूपही तपस्या करते हैं ३३ जो यहलोक में कहावत है कि मनुष्यों में पिताका स्वभाव नहींहोता बरन माताही का स्वभाव होता है इसको भरत भाईने झूंठ करदिया क्योंकि कैकेयी का स्वभाव उनमें नहीं है ३४ ॥

दो० भर्त्ता दशरथ जासु सुत भरत साधु शुभ शील ॥
सो केकयिकिमिइमिकठिन प्रकृतिभईदुश्शील १ । ३५
धार्म्मिकलक्ष्मण स्नेहवश कहे वचन सुनिराम ॥
सहिनसके जननी अयश बोले शुभ गुण धाम २ । ३६
तात न नींदहु केकयिहि कवनिहुंबिधि यहिकाल ॥
दशरथ अरु श्रीभरतकी कहिकरु कथानिहाल ३ । ३७
मम मति दृढ़ वनवास महँ भरत नेह की बात ॥
कहि २ बावरि करततुम जरत सकल ममगात ४ । ३८
प्रिय अरु मधुर पियूष सम नेहकारि हृदिधारि ॥
भरत वचन सुमिरत सदा ममनन होत हरारि ५ । ३९
नहिं जानत कब भरत रिपुदमन और तुमसाथ ॥
मिलब भली बिधि प्रेमसों दीनहुं करत सनाथ ६ । ४०

इमि विलपत गोदावरी तट पहुंचे रघुनाथ ॥
लषण सियायुत तहँकियो शुभअस्नान समाथ ७ । ४१
शुभजलसों सुरपितरगण तर्प्पणकरि रघुवीर ॥
उदित सूर्य अरु देवतन वन्द्यो त्यहि नदि तीर ८ । ४२
तहँअन्हायसियलषणसँग इमिशोभितरघुनाथ ॥
जिमि शंकर सोहत कुधर सुता नन्दि के साथ ९ । ४३

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेषोडशस्सर्गः १६ ॥

श्रीरामचंद्रजी व जानकीजी व लक्ष्मण तीनोंजन अस्नानकर गोदावरीके तीरसे अपने स्थानपै आये १ व वहां पहुंच दोपहरसे प्रथमकाल की सब क्रियाकर अपनी पर्णशाला में जायबैठे २ वहां महर्षिलोग सेवा किया करते इससे सहितसीता सुखीरहाकरते अपनी पर्णशालामें जानकीजी क साथ बैठे शोभितहोते ३ जैसे चित्रा अपनी स्त्रीके साथ चंद्रमा शोभित होतेहैं व वहीं बैठे २ लक्ष्मण अपने भाईके साथ विविधि भांति की कथा कहा करते ४ श्रीरामचंद्रजीका चित्ततो कथा कहने में लगाथा कि इतने में एक राक्षसी अपने मनसे घूमती घूमती वहांआई ५ उसका शूर्प्पणखा नामथा व राक्षसोंके राजा रावणकी वहिनथी व उसने देवताओंसे भी अधिक शोभायमान श्रीरामचंद्रजीको देखा ६ जिनरामचंद्र जीका मुखारविंद अतिसुन्दर व वाहें बड़ीलम्बी कमलदल समान नयन हाथीका सा वल व चाल व जटाधारण किये ७ सुकुमाररूप बड़ाभारी डील राजलक्षणयुक्त काले कमलदलके समान श्यामस्वरूप कोटिकाम सम सुन्दर ८ इंद्रसेभी अधिक तेजस्वी ऐसे श्रीरामचंद्रजीको देख वह राक्षसी काममोहितहुई रामचंद्रजीकातो सुन्दर मुखारविन्दथा व उसका बड़ा खराब रामचंद्रजीका मध्यभाग पतला था उसका बड़ाभारीपेटथा९ वे बिशालनयनथे वह बिरूपनयनी उनके सुंदरश्याम बालथे उसके लाले २ थे उनका रूप सबको प्रियथा उसका किसीको भी नहीं उन का बोल बहुतही अच्छाथा उसका बड़ाभयानक १० उनकी युवावस्था थी उसकी बड़ी दारुण वृद्धावस्था उनका बोल बड़ा सुहावन उसका बड़ाही कठोर वे सब न्याययुक्तही आचरण कियेथे यह सब दुराचारही

करती थीं उनको देखतेही सब प्रसन्न होजाते इसको देखतेही डरते ११ ऐसी शूर्प्पणखा कामातुरहो श्रीरामचन्द्रजीसे बोली कि तुम जटा रखाये तपस्वी का बेष धारण किये बाणधनुष लिये १२ राक्षससेवित इसदेश को काहेको आये व तुम्हारे आनेका कौन प्रयोजनहै वह हमसेकहो १३ जब राक्षसी शूर्प्पणखाने ऐसाकहा तो अपने सरल स्वभावसे श्रीरामचन्द्र सब वृत्तान्त कहनेलगे १४ कि देवताओं से भी अधिक पराक्रमी एकराजा दशरथजी हुये तिनके हम ज्येष्ठपुत्रहैं इससमय सबलोग हमारा रामनाम कहतेहैं १५ ये हमारे छोटेभाईहैं लक्ष्मण इनका नामहै व हमारे बड़े भक्तहैं ये राजा जनककी कन्या हमारी भार्य्या हैं इनका सीता नामहै १६ अपने पिता व राजादशरथके व माता कैकेयीके कहने से धर्म्मके अर्थ यहांवनमें बसने आयेहैं १७ अब तुमको जानना चाहतेहैं कि किसकी कन्याहो व तुम्हारा नामक्याहै स्त्री किसकीहो सामान्यरीतिसे तो हमने भी जाना कि तुम राक्षसों का मनहरनेवाली कोई राक्षसीहो परबिशेष तरहसे जानना चाहतेहैं १८ फिरयहां किसवास्ते आईहो हमसे सबब्योरासहित कहो ऐसेरामचन्द्रजीके वचनसुनकामातुरहो वह राक्षसी बोली १९ हेराम हम इसकाब्योरा कहती हैं हमारे बचनसुनो हमारा शूर्प्पणखा नामहै व हम राक्षसीहैं जबजैसा चाहतीहैं वैसारूप धारण करलेतीहैं २० इस वनमें अकेलेही घूमा करतीहैं पर सबको भयभीत करतीहैं हमारे भाईका रावण नामहै यदिकभी तुम्हारे कानमें नाम पड़ाहो २१ एक हमारे भाईका विभीषण नामहै पर वे बड़े धर्म्मात्माहैं राक्षसों कैसे आचरण उनके नहीं हैं एक भाईका कुम्भकर्ण नामहै ये बड़े बलवान्‌हैं परसोते बहुत दिनोंतकहैं २२ दो खर व दूषण नाम हमारे और भी भाई हैं ये समर में बड़े प्रसिद्ध हैं २३ हम अपने सब भाइयोंसे भी अधिक बलवती हैं परन्तु तुमको अपूर्व्व पुरुष देख पुरुषोत्तमजान मारेप्रेमके अपना पतिबनाने के लिये यहांआई हैं २४ इससे बहुत दिनों के लिये हमारे भर्त्ता होवो सीता से कौन सुख करोगे क्योंकि हम सबसे अधिक तेज धारण किये हैं व अपने बलसे जहां चाहती हैं चली जाती हैं कोई कहीं रोंक टोंक नहीं सक्ता २५ न कहो कि सीतासे क्यों न सुख होगा तो येतो अनेक बिकारयुक्त व सुन्दरता

रहित हैं ये तुम्हारे योग्य नहीं हैं तुम्हारे योग्य हमी हैं इससे हमको अपनी उत्तम स्त्री समझो २६ जो कहो कि फिर सीताकी कौन गति होगी तो इन बिरूपा व असती व कराल रूपिणी व सूक्ष्मोदरी को तो तुम्हारे इन भाईके साथ हम खालेंगी क्योंकि मनुष्यतो दोनों हई हैं२७।

दो० तब तुम मम सँग विविध वन पर्व्वत शृंग अनेक ॥
देखत दंडक बिचरिहहु कामी रहित बिबेक १ । २८
इमि सुनि शूर्प्पणखा वचन वचनविशारद राम ॥
हँसिबोले मद युतनयनि तासों सब गुणग्राम २ । २६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेसप्तदशस्सर्गः १७ ॥

कामकी फांशी में फँशी शूर्प्पणखा से मन्द २ मुसुकाते श्री राम मधुर वचनसे अपने मनमाना बोले १ अयि शूर्प्पणखे हमारातो बिवाह होगया है देखो अति प्राणप्यारी हमारी यह स्त्री बैठी है जो कहो कि दूसरी करलेय सो नहीं क्योंकि तुम्हें ऐसी उत्तम स्त्रियों को सौतिआपन बड़ा दुःख देता है २ हां हमारे ये छोटे भाई जिनका लक्ष्मण नाम है बड़ेशीलवान बहुतही सुन्दर सब सम्पतिमान् व बड़े पराक्रमी हैं इन का अभी बिवाह नहीं हुआ ३ व अपूर्व्व स्त्री के संग बिवाह भी किया चाहते हैं अभी युवावस्था को प्राप्त भीहैं रूपवान जानो बड़ेही हैं इस-से इस तुम्हारे रूप के योग्य यही पति हैं ४ हेबिशालाक्षि इन हमारे भाई को भर्त्ता बनावो जिसमें बिना सौतकी रहो जैसे सुमेरु पर्व्वत पै सूर्य्य की प्रभा अकेलीही रहती है ५ इसतरह जब रामचन्द्र जी ने कहातो वह राक्षसी काम मोहित तो थीही रामचन्द्र जीको छोड़ बड़ी जल्दी के साथ जाय लक्ष्मणसे बोली ६ कि तुम्हारे इस रूप के योग्य हमीं भार्य्या होनेवाली हैं क्योंकि हमारा सारूप कहीं २ ढूंढ़नेसे मिलेगा इससे हमको अपनी स्त्री बनावो हमारे संग सुखपूर्व्वक दण्डकारण्य में विचरोगे ७ इसतरह जब उस राक्षसीने कहा तो लक्ष्मणजी तो बा-र्त्ता करने में बड़ेही कुशल थे मुसुकाकर उस शूर्प्पनखी से उचित बचन बोले ८ हे कमलवर्णिनि हम पराये दासकी स्त्री होके क्यों दासी हुआ चाहती हो क्योंकि हमतो इनअपने बड़े भाईके अधीनहैं फिरजो पराधीन

ठहरा उसकी अधीनतामें सुख कैसे होसक्ताहै ९ इससे सकल संपत्ति-
मान हमारे इन बड़े भाईकी तुम दूसरी स्त्री होवो ऐसा करने से तुम्हारे
सब प्रयोजन सिद्ध होंगे आनन्दित भी बनी रहोगी सुन्दर वर्णभी
बना रहेगा क्योंकि हमारे तुम्हारे रंगमें कुछ अन्तरभी है इनकाभी
श्यामस्वरूप होनेसे कुछ २ तुम्हारे रूप से मिलता है १० व इनकी
यह स्त्री तुम्हारे मतसे कुरूपवती अति कराल वेष धारण किये बड़े
ऊंचे पेटवाली महाबूढ़ी भी है इससे इसको छोड़ तुमको ये अवश्य
अङ्गीकार करेंगे ११ क्योंकि कौनऐसा चतुर मनुष्य है जोतुम्हारे ऐसे
उत्तम रूपको छोड़ मानुषी स्त्रीकोग्रहण करै १२ यहसुनकराल रूपिणी
अँधऊ कुम्भांके समान पटलिये उसदुष्टा ने लक्ष्मणजीके वचन सत्यही
माने यह न जाना कि ये हँसौआ करते हैं १३ इससे सीताजी के सङ्ग
पर्णशाला में बैठेहुये श्रीरामचन्द्रजी के निकट जाय काम मोहित हो वह
दुष्टाबोली १४ कि इसविरूपा अपतिव्रता करालरूप गहिरे पेटवाली व
बूढ़ी स्त्री को पाय हमको बहुत नहीं मानते १५ अबहम तुम्हारेदेखतेही
देखते इस तुम्हारी स्त्री को भक्षण कियेलेती हैं बिनासौतिकी हो तुम्हारे
सङ्ग सुखपूर्व्वक घूमेंगी १६ लूकाके समान नेत्रलिये अति क्रोधकर वह
दुष्ट मृगनयनी श्रीजानकीजी की ओरदौड़ी जैसेबड़ीभारी उल्का रोहि-
णी की ओरदौड़े १७ तिसमृत्यु फांशीके समान आतीहुईशूर्प्पणखा को
पकड़ महाबलवान् श्रीरामचन्द्रजी अति कोपकर लक्ष्मणजीसे बोले १८
हे लक्ष्मण इनदुष्ट स्वभाव अनारियों से हँसौआ कभी न करनाचाहिये
देखोतो जानकी जी कैसे दुखसे जीरही हैं १९ इससे इस कुरूपवती
दुष्टा अति मदान्ध व बड़ेभारी पेटवाली राक्षसी को कुछ अङ्गभङ्ग कर-
डालिये २० यहसुन क्रोधकर रामचन्द्रजीके सामनेहीं तलवार उठाय
लक्ष्मणजी ने शूर्प्पणखा की नाक व कान काटडाले २१ तब नकटी व
कनकटी शूर्प्पणखा बड़ेऊंचे स्वरसे चिघड़ वनमें इधर उधर दौड़ी २२
व महाविरूपा महाघोरा रुधिर चुचाती हुई वहराक्षसी वर्षाकालके वा-
दल के समान विविधप्रकार के शब्द करने लगी २३ व मुखसे रुधिर
उगलती हुई महाघोर दर्शन युक्त दोनों वाहु पकड़कर रोदनकरती महा-
वनमें पैठगई २४ ॥

कुण्डलिका ॥

निश्चरगण संकुलजन स्थान प्राप्त अति तेज ।
निजभ्राता खर निकट गे करती दीदारेज ॥
करती दीदारेज विगत वररूप भयावनि ।
गिरीजाय महिमाहिं आहिकरि शोककरावनि ॥
गिरतगमनसों वज्रयथा क्षितिमहँश्रुति दुष्कर ।
आयगये त्यहिकाल तहां सुनिकैरव निश्चर १ । २५
भार्य्यालक्ष्मणसहित रघुनन्दन कहँ वनमाहिं ।
आये कहि वहुभांतिसों शूर्पणखा त्यहिपाहिं ॥
शूर्पणखा त्यहिपाहिं रुधिर पूरित सब अङ्गा ।
मोहितमूर्छितकह्यहु नासिका अरु श्रुतिभङ्गा ॥
खरदूषण अरु त्रिशिरकेरिभगिनी यहआर्य्या ।
होनचह्यहुज्यहिभांति रामचन्द्रहुकीभार्य्या २ । २६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेऽष्टादशस्सर्गः १८ ॥

सबप्रकार से विरूप नाक कान रहित रुधिर बहतीहुई अपनी बहिन शूर्प्पणखा को देख मारे क्रोध के सन्तप्त खर नाम राक्षस बोला १ कि अरे उठो उठो मोहछोंड़ो भ्रम त्यागकरो साफसाफ बताओ कि इसतरह की रूपवती तुमको किसने बिना नाक कानकी करडाला २ भला वह कौनहै कि सोतेहुये विषधर कालेनागको निरपराध खेलके साथ अँगुली से खोदकर जगाता है ३ हमनहीं जानते कि वह कौनहै जो कालफांसी में अपना गला बांध हालाहल विष पीकर बैठाहै जो तुमको प्राप्त हुआ है ४ भला ऐसी पराक्रमवती व बलवती यथेच्छाचारिणी व स्वच्छन्द रूपवती यमराजके समान चलनेवाली तुमको किसने इसदशाको पहुंचाया ५ देवता गन्धर्व्व भूत प्रेत ऋषि आदि महात्माओं में कौन ऐसा पराक्रमी है जिसने तुमको ऐसी विरूप करडाला ६ औरकी कौन गणना है देवताओं में इन्द्र भी ऐसे नहीं जो हम से बैर कर सकें ७ आज जिसने अपराध कियाहै उसके प्राण प्राणान्त करनेवाले बाणोंसे निकाललेंगे जैसे नीरमें मिलेहुये क्षीरको पीतेहीपीते हंस निकाल

लेताहै ८ यहनहीं जानते कि संग्राममें हमारे मारेहुये किस पुरुषके रुधिर को पृथ्वी पानकिया चाहतीहै ९ व नहीं जानते कि संग्राममें हमारे मारे हुये किस पुरुषका मांसपक्षी लोग अंगोंसे नोच २ भक्षण करेंगे १० फिर संग्राम में जिसको हममारने लगेंगे उसकी रक्षा देवता गन्धर्व्व पिशाच राक्षसादि कोई भी न करसकेंगे ११ इससे धीरेसे चैतन्यहो उसको हमसे बताओ जिस दुष्टने वनमें जबरदस्ती तुमको जीताहै १२ महाक्रोधयुक्त अपनेभाईखरकेऐसे वचनसुनरोतीहुई शूर्प्पणखाबोली १३ कि युवावस्था को प्राप्त बड़े सुकुमार महाबलवान् कमलनयन चीर व मृगचर्म्म धारण किये १४ फल व मूल भक्षण करनेवाले जितेन्द्रिय तपस्वी धर्म्मचारी राजादशरथ के पुत्र दोनोंभाई राम व लक्ष्मण १५ जो गन्धर्व्वराजसे भी अधिक रूपवानहैं व जितने महाराजों में गुण चाहियेसबउनमें विद्यमानहैं व यहनहीं जानपरता कि देवताहैं वादानव १६ उनके साथ युवावस्थाको प्राप्त अति रूपवती सब भूषण धारण किये वहां एकस्त्रीभी हमने देखीहै १७ उनदोनों भाइयोंने एकत्रहो उसस्त्री को अपने बीचमें बैठाय जैसे कोई बिना मालिक की पुंश्चली स्त्री की दुर्द्दशा करताहै वही दशाहमारी की अर्थात् नाककान काटडाले १८ अब हम तिस दुष्टास्त्री व उन दोनों भाइयोंका सहित फेना रुधिर पिया चाहती हैं जब कि तीनों संग्राम में मारे जायँ १९ यह हमारा पहिला काम जानों तुमने किया जोकि हम संग्राममें तिस स्त्रीका और उन दोनों पुरुषों का रुधिर पान करें २० शूर्प्पणखा के ऐसा कहतेही महा क्रोधी खरने यमराज के समान बिकराल महा पराक्रमी १४ राक्षस भेजे २१ व उनसेकहा कि शस्त्र धारण किये चीर व मृगचर्म्म पहिरे ओढ़े दो मनुष्य एक स्त्रीको संग लिये अति भयानक दण्डकारण्य में आये हैं २२ इससे उन दोनों पुरुषों को मारकर फिर उस दुराचारिणी स्त्रीको मारो क्योंकि यह हमारी बहिन शूर्प्पणखा उन सबका रुधिर पान करेगी २३ इससे हेराक्षसो अपने तेजसे उनदोनोंको जीतहमारी इस बहिनका यह इष्ट मनोरथ शीघ्रही पूराकरो २४ जब तुमलोग संग्राम में उनदोनों भाइयों को मारडालोगे तो यह हमारी बहिन देख परमानन्दित हो रुधिर पान करेगी २५ इस तरह जब खरने कहा तो वे

१४ राक्षस तिस शूर्प्पणखा को बताने के लिये संग ले पवन के वेग से चलायमान बादरों के समान जहां रामचन्द्रजी थे वहां को गये २६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेएकोनविंशस्सर्गः १६ ॥

तिसके पीछे अति कराल रूपिणी कनकटी व नकटी शूर्प्पणखा राक्षसों के संग रामचंद्रजी के आश्रमपै आई उन दोनों भाइयोंने व जानकी जीने भी राक्षसोंको देखा १ व उन राक्षसोंने भी रामचन्द्रजीको जानकी जीके साथ पर्णशाला में बैठे व लक्ष्मणजी को उनकी सेवा करते देखा २ तिस शूर्पणखा व तिन राक्षसों को आते देख श्रीमहाराजकुमार श्री रामचंद्रजी महातेजस्वी अपने भाई लक्ष्मणजीसे बोले ३ हलक्ष्मण एक दो घड़ी रक्षा करने के लिये इन जानकी के समीप बैठो हम इन राक्षसों को जो इस शूर्प्पणखा की सहायता करने के लिये इसके मार्ग्ग में आये हैं मारेंगे ४ परमविज्ञानी श्री रामचंद्रजी के वचन सुन बहुत-अच्छा ऐसाकह लक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्रजी के बचन की बड़ाई करने लगे ५ व धर्म्मात्मा श्रीरामचन्द्रजी सुवर्ण से भूषित अपने धनुष पै रोदा चढ़ाय तिन राक्षसोंसे बोले ६ कि हम राजादशरथ जीके पुत्र हैं रामचन्द्र व लक्ष्मण नामहै दोनों जन भाई हैं सीता अपनी स्त्रीको संग ले दण्डकारण्य को आये हैं ७ यहां फल व मूल तो भोजन करते इन्द्रियों को अपने काबू में रखते हैं तपस्वीहैं सदा धर्म्मही के आचरण करते व इसी दण्डक वनमें वसते हैं तुमलोग हमको क्यों मारते हो ८ जो कहते हो कि हमतो नहीं मारते तुम क्यों धनुर्व्वाणादि लियेहो सो हमतो ऋषिलोगों के कहने से महापापी व दुष्टों को संग्राम में मारने के वास्ते धनुष पै रोदा चढ़ाये हैं ९ इससे हे राक्षसौ सन्तुष्ट होकर यहांही खड़े रहौ भागना न चाहिये यदि अभी इस संसार में प्राणों से कुछ प्रयोजन हो तो लौटजावो १० श्रीरामचन्द्र जीके ऐसे वचनसुन ब्राह्मण मारने में तत्पर हाथोंमें त्रिशूल लिये वे १४ राक्षस क्रोधकरके बोले ११ सबके सब नेत्र लालकिये अति कठोर वचन कहतेथे श्रीरामचंद्रभी अरुण कमलनयन कि जिनका पराक्रम उन दुष्टों ने अभी कभी देखाही नथा तिनसे कहने लगे कि १२ हमारे स्वामी महात्मा खरको

क्रोध कराय संग्राम में हमलोगों के मारने से तुम्ही अभी प्राण छोड़ोगे १३ क्योंकि हम बहुत लोगोंके आगे रणमें खड़ेहोने की भी अकेले तुम बेचारेकी कौन शक्तिहै फिर युद्ध करनेको कौनकहै वह तो असम्भवहीहै १४ इन हमारे बाहुओंसे चलाये हुये परिघ पटात्रिशूलादिकों से प्राण पराक्रम व धनुष सब छोड़ोगे १५ इतना कह वे सब चौदहराक्षस क्रोध कर बड़े तीषे आयुध उठायउठाय रामचंद्रजीकी ओर दौड़े १६ व सब अस्त्र शस्त्र अति दुर्जय श्रीरामचंद्रजी के ऊपर चलाये तिन चौदहों के चलायेहुये त्रिशूलादि श्रीरामचंद्रजी ने १७ उतनेहीं सुवर्णभूषित बाणों से काटडाले व महातेजस्वी श्रीरामचंद्रजी ने तिसके पीछे सूर्यसमान देदीप्यमान बाण लिये १८ लेकर बड़ाही क्रोध कर धनुष पर चढ़ाय राक्षसों को निशाना बनाय १६ बाण छोड़े जैसे इंद्र वज्र छोड़ते हैं वे बाण राक्षसों की छातियों में पैठ रुधिर में बूड़ २० निकल कर भूमि में जाय गिरे जैसे व्यमोर से सर्प्प निकलते हैं तिन बाणोंसे छिन्नभिन्न हो राक्षसलोग भूमिमें गिरपरे जैसे जड़ कटजानेपै वृक्ष गिरपड़ते हैं २१ हृदयों में बाण लगनेके कारण रुधिरमें डूबेहुयेथे चौदहों के प्राण जाते रहे इनसबोंको भूमिमें गिरेदेख शूर्पणखा मारे क्रोधके मूर्छित होगई २२ व वहां से भागी जाय खरके पास गिरी जैसे गोंद लगीहुई लता गिरतीहै वैसेही रुधिर सुखनेसे गुल्थियां पड़गईथीं २३ मारे शोकके पीड़ितहो अपने भाई खरके समीप बड़ेजोरसे जाय ऊंचेस्वरसे रोई व आंशु गारनेलगी व बिलकुल उदासीन मुखी होगई २४ ॥

दोहा ॥

शूर्पणखा लखि तिनमरण रणमहँ भागि बहोरि ॥
खरसों भाष्यो जिमि मरे राक्षस चित्त कठोरि १ । २५

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेविंशस्सर्गः २० ॥

अनर्थके लिये आईहुई शूर्पणखा को देख मारे क्रोधके खर बड़ेजोर से बोला १ कि हे शूर्पणखे हमने तो तुम्हारे लिये मांस भक्षी बड़े बड़े शूरवीर चौदहराक्षस भेजे फिर अबतुम क्यों रोतीहो २ वे लोग हमारे बड़े भक्त व बड़े अनुरागी नित्यही हमारा हितकरनेवाले फिर शत्रुलोग

उनको मारें भी तो मरनेवाले नहीं इससे कोई मार तो सकाहीं नहीं व न यही है कि हमारे वचन उन्होंने न माने हों वहां गयेही न हों ३ यह क्या बातहै जिसकेलिये हा नाथ हा स्वामिन् ऐसा पुकारतीहुई सर्प्पके समान पृथिवी में लोटरही हो कहोतो हमारे सुननेकी इच्छाहै ४ हमऐसे स्वामीकी विद्यमानताहीमें अनाथोंके समानरोदनकरती हो उठो२ ऐसी कदरई न करो ५ जब खरने इसतरह कहके समझाया बुझाया तो आंशुसे भरेहुये नैन पोंछपांछ शूर्पणखा खरसे बोली ६ कि हमारे कान नाक काटलियेगये तब रक्तचुचुवातीहुई तुम्हारेपास आई तुमने समझाया बुझाया ७ व हमारा प्रियकरनेके लिये रामचन्द्रके मारनेको तुमने बड़े शूरवीर चौदह राक्षस भेजे ८ यद्यपि वे शूलपटा आदि हथियार हाथोंमें लियेथे पर समरमें पहुंचतेही पहुंचते रामचन्द्रने बाणों से मारडाला ९ उन महावेगवान् राक्षसोंको भूमिमें गिरेपड़े देख रामचन्द्रजीके महाकर्म्मजान हमको महाभय हुई १० हे निशाचर तब हम अति भयभीत व ऊबके फिर तुम्हारे शरणमें आईं अबभी सब ओरसे भयही भय हमको देखाई देतीहै ११ इससे विषादरूप मगर गोहोंसे भरेपूरे महाभय की लहरें लेतेहुये शोकसागर में डूबतीहुई हमको क्योंनहीं रक्षाकरते १२ फिर जो मांसभक्षी राक्षस हमारी रक्षाके लिये तुमने भेजेथे उनको भी तीखे बाणोंसे रामचंद्रने मारडाला भूमिमें पड़े हैं १३ जो हमारे ऊपर दयाहो व इन बेचारे राक्षसोंके ऊपर भी कृपा हो व रामचंद्र के साथ लड़ने की शक्ति व तेज हो तो १४ राक्षसों के छोटे मोटे शत्रु दण्डकारण्य निवासी रामचन्द्र को मारडालो यदि वैरियों के मारने वाले रामचन्द्रको तुम आजही न मारडालोगे तो १५ निर्ल्लज्जहो तुम्हारेही आगेहम प्राणत्याग करदेंगी क्योंकि हम अपनी बुद्धि से जानती हैं कि संग्राम में तुम १६ रामचन्द्रके सामने न खड़े होसकोगे यद्यपि तुम्हारे साथ सेनाभी बड़ीभारी है व अपना को शूरभी मानतेहो वस्तुतः शूरनहींहो मिथ्याही अपना में पराक्रम समझतेहो १७ जोकुछ शक्ति रखतेहो तो अपने भाई बन्धुओं को संगले अभीजनस्थानसे चलो हे मूढ हेकुलाधम रामचन्द्र को समरमें मारो १८ यदि मनुष्यरूप धारी भी रामलक्ष्मणको समरमें न मारसकोगे तो निर्ब्बल व अल्प प्रभाव

तुम्हारे बसनेसे यहां क्याहै १६ क्योंकि रामचन्द्रके तेजसे निन्दितहो तुमतो आपनाशको प्राप्त होजावगे वे महाराज दशरथजीके पुत्रहैं व बड़े तेजस्वी हैं २० फिर अकेलेही नहीं उनके भाई भी बड़ेही पराक्रमी हैं जिन्होंने जबरदस्ती हमारी नाक व कान काटलिये इसतरहवहराक्षसी शूर्प्पणखा बहुत रोयधोय २१ अपने भाई खरके समीप मारे शोक के व्याकुल हो मूच्छित होगई जब मूर्च्छाजागी तोफिर दोनों हाथोंसेछाती पीट पीट अतिरोदन करनेलगी २२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेएकविंशस्सर्गः २१ ॥

इस तरह जब शूर्प्पणखा ने खरको धिक्कारा व पचकारा तो वहरा-क्षसोंके बीचमें बैठ बड़ेकड़े वचन बोला १ कि तुम्हारे अपमान से हम को अपार क्रोधहुआ है यहांतक कि उसेहम धारणभी नहांकरसक्ते जैसे क्षारसमुद्र सबओर से उठेहुये बेगको नहीं आड़सक्ता २ और मरणो-न्मुख रामचन्द्र मनुष्य शरीर को पराक्रम से हम कुछभी नहीं गिनते क्योंकि वेतो अपने पापोंसेही हतहो आज प्राणोंको छोड़ेंगे ३ इससे ये आंशु बन्दकरो व इस व्याकुलता को छोड़ो भाई सहित रामचन्द्र को हम यमपुरको भेजेही देतेहैं ४ हे राक्षसि हमारे परसासे मारेहुये प्राण रहित रामचन्द्रकागर्म्मरुधिर आज भूतलमेंतुमअच्छीतरहपानकरोगी ५ खरके मुखसे ऐसे वचनसुन अति हर्षित हो मारे मूर्खताके शूर्प्पणखा राक्षसों में श्रेष्ठ अपने भाई खरकी बड़ाई करनेलगी ६ जब पहिले तो शूर्प्पणखा ने खरको कठोर वचन कहे व पीछेसे बड़ाईकी तोवह दूषण नाम सेनापति से बोला ७ कि हमारे चित्तके अनुयायी अतिबेग वाले संग्रामसे जीतेजी हारकर न लौटनेवाले चौदह हजार राक्षस ८ जो कि श्यामघटा के रंगकेहों व लोकके मारडालने में निपुणहों सबप्रकार केउद्योग करने में तत्पर ऐसेराक्षसों को तैयारकरो ६ व हमारा रथतै-यारकरो उसपै नानाप्रकार के धनुषवाण तलवार व विविधप्रकार की तीषीशक्तियां धरो १० क्योंकि पुलस्त्य मुनिके बंशमें उत्पन्न महात्मा हमलोग राक्षसोंके मारनेकेलिये आयेहुये रामचन्द्रके संग्राममें निपुण हम सबसे आगे चला चाहतेहैं ११ इसतरह जब खरने कहा तो श्याम

वर्ण के अच्छे घोड़े नहा सूर्य्यके रंगका रथ दूषण लाया १२ वह सुमेरु पर्व्वतके आकार पक्केसुवर्णके भूषणोंसे भूषित सुवर्णहींको पहिया लगा हुआ वैदूर्य्यमणि का गुम्मजबना १३ जिसमें ठौरठौर मछली फूलवृक्ष पर्व्वत चन्द्रमा सूर्य्य आदि मंगलकेपदार्थ सुवर्णके बनायेगयेथेसुआमैना आदि शुभपक्षी भी बनेथे १४ ध्वजापताका आदिसब सँयुक्त चारोंओर से छोटीछोटी घंटालगीं सुंदर घोड़ेनहे ऐसेरथपै मारे क्रोधके खरसवार हुआ १५ खर व दूषण दोनों सब राक्षसों की सेना देख जिसमें लोग नानाप्रकारके आयुधलियेथे ध्वजा पताका निशानादि सब विद्यमान थे आगेको चलो ऐसाबोले १६ यह सुन अति भयानक पताका निशान व नानाप्रकार के आयुध युक्त महा बेगवती सेना जनस्थान से चली १७ उसमें मुद्गर पटाशूल अतितीषि फरसा खड्ग चक्र तोमरादि शस्त्र धारण किये लोगथे सबकेसब शोभायमानथे १८ शक्ति परिघ धनुष गदा खड्ग मूसर बज्रादि अस्त्रशस्त्रलिये राक्षस अति बेगसे चले १९ खरके मनकी बातकरनेवाले चौदहहजार राक्षस सबतरहके अस्त्रशस्त्र ले जनस्थानसे चले २० उन भयानक रूप राक्षसों को दौरते चलेजाते देख खरका भी रथ कुछतिनके समीप पहुंचा २१ व खरकी आज्ञापाय जो श्यामतुरंग उस के रथमेंजुतेथे सारथि ने जल्दीके साथ हांके २२ जब शत्रुओंके नाशकर- नेवाले खरका रथ चला तो उससे ऐसा शब्द हुआ जिससे सब दिशा व विदिशा पूर्ण होगईं २३ ॥

कुंडलिका ॥

कीन्हो खर अति क्रोध तब खर स्वर करि त्यहि काल ।
रिपु मारण हित चल्यहु जिमि अन्तक करत विहाल ॥
अन्तक करत विहाल प्रेरणा कीन तहाहीं ।
सारथि कहँ ततकाल पकरि निज करसों बाहीं ॥
शब्द भयानक करत मेघ सम सो चित दीन्हों ।
करका वर्षा यथा तथा सो रण महँ कीन्हों १ । २४

इत्यार्षे रामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेद्वाविंशस्सर्गः २२ ॥

जिस समय खरकी सेनाचली अतिघोर अमंगलकारी रुधिर के स-

मान अरुणरंग के जलकी वर्षा होनेलगी उस समय बादर गदहों के समान धूमिले रंगके होगये १ इसके सिवाय सुन्दर साफ सुथरा पुष्प बिछीहुई सड़कपै बड़े वेगसे चलेजातेहुये खरके घोड़े बिछला बिछला गिरपडे २ व सूर्यके मण्डलकी सब ओर श्याम व अरुण घेरा बनगया यहभी महा अशुभहुआ ३ तिसके पीछे अति दारुण एक बड़ा भारी गीध खरकी पताकाके दण्ड पै आय दबाय करबैठा ४ व जनस्थान के समीप समीप आय मांसभक्षी पक्षी विविधि भांतिकी खराब बोली बोलने लगे ५ व जिस दिशामें सूर्यनारायण उदयथे उसमें सिआरिनियां राक्षसोंके अमंगल देनेवाले कठोर व भयंकर शब्द बोलनेलगीं ६ व हाथियों के आकार लाल जल बरसानेवाले अति भयानक बादरोंके मारे कहीं आकाश में अवकाश नरहा ७ ऐसी घोर अँधियारी हो आई कि जिसे देख सबके रोम खड़े होगये इसीसे दिशा व प्रदिशाओं में कहीं कुछ सुझाई नहीं देता ८ व ओदेरुधिर के रंगकी संध्या बिना कालहीके होगई खर के सामने घोरमृगगण व पक्षी बोलनेलगे ९ उजलीचील्ह शृगाल गृद्ध आदि जीव चिल्लाने लगे उनका बोल सुनने से भय होतीथी व नित्यही अमंगल करनेवाली शृगालियां जिनके देखनेही से भीति होती संग्राम में १० मुखों से मानों अंगोर उगिलतीहुई सेना के सामने बोलने लगीं बिना शिर का पुरुष घरना के आकार सूर्यके निकट देखपरनेलगा ११ बिना अमावास्याही के राहुने सूर्यको ग्रहण करलिया पवन बड़ेवेग से चलनेलगे सूर्यकीदीप्ति जातीरही १२ जुगुनूके समान प्रभावान् नक्षत्र बिना रात्रिही के आकाश से गिरनेलगे छोटे छोटे तालों में जल व कमल सूखगये मछली व पक्षीमर२ उन्हींमें लीनहोगये १३ तिससमय में सब वृक्ष बिना फल पुष्पके होगये व बिना पवनके चलने परभी धूमिल धूलि उड़ने लगी १४ व मैना पक्षी चीं चीं कूं कूंशब्द करनेलगे भयानक उल्कापात सहित शब्द होनेलगे १५ व रथ पै सवार चलेजाते खरको विदित होता कि वन पर्वत सहित पृथिवी चलतीहै १६ खरका वाम भुज थरथरानेलगा व वहभी कांपनेलगा जब किसीओर निहारता था तो आँखों में आँशु भरआतेथे १७ उस समय खरका शिर भी बहुत पिरानेलगा पर मारेमोहके वह न लौटा व तिन रोम खड़े करादेनेवाले

उत्पातों को देख १८ हँसकर खर राक्षसोंसे बोला कि ये जो घोरदर्शन उत्पात होरहेहैं इनको देख १६ मारे पराक्रमके हम कुछभी नहीं समझते जैसे वलवान् पुरुष दुर्वलोंको कुछनहीं समझता फिर हमतो चाहें तोअपने तीक्ष्ण वाणोंसे आकाशसे नक्षत्र भूमिमें गिरादें २० व क्रोधकरेंतो मृत्युको भीमारडालें इससे महापराक्रमी राम व उनके भाई लक्ष्मणको २१ बिना तीक्ष्णवाणों से मारडाले न लौटेंगे व जिस हमारी बहिनीके निमित्तरामचंद्र व लक्ष्मण दोनों ने विपरीत कामकिया अर्थात् उसकीनाक कान काट डाले २२सो अब वह हमारीभगिनी शूर्पणखा उनदोनों भाइयों का रक्त पीकरसकामा हो व आजतककहीं हम हारेनहीं२३ सोतुमलोगजानतेहीहोकुछ झूंठ मूंठ नहींकहते यदिहम क्रोधकरेंतोमतवालेऐरावतहाथी समेत इन्द्र को २४ रणमें वज्र हाथमें लियेही लिये मारडालें फिर उन दोनों मनुष्यों के मारडालने में क्याहै यह कह खर गर्जा तिसे सुन राक्षसोंकी बड़ीभारी सेना २५ व अति हर्षितहुई यद्यपि मृत्युकी फाँशी में बांधीहै उसीसमय युद्ध देखनेकी इच्छासे महात्मालोग आये २६ उनमें देवता गन्धर्व ऋषि सिद्ध चारण सबथे वे सब एकत्रहो परस्पर बोले२७॥

दो० लोक सुमंगल निरतगो विप्रन्हकर कल्यान ॥
होयराम रजनीचरन जीतहिं सहित बिधान १ । २८
चक्र पाणि जिमि हरि सकल दैत्यनजीतत धाय ॥
तिमि राघव जीतहिं समर निश्चर खेत खिलाय २ । २६

यह व इसीतरह और भी कहते सुनते देवता व ऋषिलोग बिमानों पै चढ़े बड़ी खुशीको प्राप्तहुये व देखा तो राक्षसोंकी सेनामें जितनेराक्षस थे सबके सब आयुहीन होरहेथे ३० रथके ऊपरचढ़ा खर सेना के आगे आगे चलाजाता था उसके आगे पीछे व बगलों में श्येनगामी १ पृथुश्याम २ यज्ञशत्रु३ विहंगम ४। ३१ दुर्ज्जय ५ परवीराक्ष६ परुष ७ कालकामुख ८ मेघमाली ६ महामाली १० वरास्य ११ व रुधिराशन १२। ३२ ये १२ महा पराक्रमी राक्षस चलेजाते थे व महाकपाल १ स्थूलाक्ष २ प्रमाथि ३ त्रिशिरस ४ ये ४ सेना के आगे व दूषण के पीछे पीछे चले जातेथे ३३ ॥

दो० भीम वेग रणपर कठिन राक्षस सेन कराल ॥

राम लषणकहँ प्राप्तजिमि रवि बिधुकहँ ग्रहजाल १ । ३४

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेत्रयोविंशस्सर्ग्गः २३ ॥

जब अति तीक्ष्ण पराक्रमी खर रामचन्द्रजीके आश्रमपैपहुंचा तोवेही उत्पात होनेलगे जोकि अपने स्थानसे चलने के समय खरको हुयेथे व उनको भाई सहित श्रीरामचन्द्रजीने देखा १ तिन घोर उत्पातों कोदेख बड़ा क्रोधकर व उनका फल विचार कि प्रजाओं के लिये बहुतही अहितहैं श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजीसे बोले २ हेलक्ष्मण सब प्राणियोंके नाशनेवाले नानाप्रकारसे उठेहुये उत्पातों को देखोतो जोकि सब राक्षसोंको संहार करने के लिये उठेहैं ३ देखोतो गर्द्दभों के समान धूमिले बादर आकाशमें घूमरहेहैं व बड़े जोरसे गर्ज गर्ज रुधिरकीवर्षा कररहे हैं ४ हमारे सब वाणोंसे धुआँ निकलरहाहै सब वाण युद्धकरनेमें प्रसन्न हैं धन्वाओं की पीठ चांदी सोनाके समान चमकतीहैं इन शकुनों से राक्षसों का अशुभ व हमारी विजय सूचित होतीहै ५ जिसतरहसे ये वनचारी पक्षी हमारेआगे बोलरहेहैं ऐसे बोलनेसे राक्षसोंके प्राण रहने में संदेहहै ६ देखो यह हमारी दहिनी बांह बारबार फरकती है इससे समझपरता है कि महाघोर विकराल युद्धहोगा ७ परन्तु उस युद्ध में हमारी जय व शत्रुकी पराजय होगी क्योंकि तुम्हारा मुखारविन्द सुप्रसन्न व प्रकाशित देखपड़ता है ८ क्योंकि ॥

दो० समरहेतजोचलतनर होतप्रभाबिनआस्य ॥
तिनकीआयुपक्षीणही होतऔर पुनिहास्य १ । ६

सुनो इन क्रूर कर्म्म करनेवाले राक्षसों का घोरशब्द सुनाईदेता है व उन दुष्टों की बजाईहुई तुरुही सुनाईदेतीहै १० पण्डित पुरुषको चाहिये कि जिसे बिपत्ति आने की शंकाहो और अपना शुभचाहे तो पहिलेहीसे ऐसा उपायकरै जिसमें विपत्ति लगे न आवै ११ तिससे जानकी को संगले धनुर्व्वाण धारणकर इस पर्वतकी कहीं ऐसी गुहामें जायबैठोजो वृक्षोंसेघेरीहो १२ तुमकोहमअपने चरणोंके सौगंदखिलाते हैं कि हमारे इसवचनका उल्लंघन न करोचलेहीजाव विलम्बनकरो १३ यहहम बनाय जानतेहैं कि तुम ऐसेशूर व वलवान् हो कि अकेलेही इन

सब राक्षसों को मारसक्ते हो इसमें कुछभी संशय नहीं परन्तु इन सब निशाचरोंको हमीं मारनाचाहतेहैं १४ जब रामचन्द्रजीने ऐसा कहा तो तो लक्ष्मणजी सीता जीको संग ले व बाण धनुष ग्रहणकर पर्व्वत की गुहा में चले गये १५ जब सीताजी को संग ले लक्ष्मणजी गुहाको चलेगये तो बड़ी शीघ्रता के साथ श्री रामचन्द्रजी ने कवच धारण किया १६ उस अग्नि के समान कवच के धारण करनेसे रामचन्द्रजी ऐसे विभूषित हुये मानों महा अग्नि उठके खड़े होगये १७ महा पराक्रमी श्री रामचन्द्रजी धन्वाको उठाय बाणोंको ग्रहणकर धनुष की रोदा का टंकोर दे दे दिशायें पूर्ण करने लगे १८ तिसके पीछे देवता गन्धर्व्व सिद्ध चारण आदि महात्मा युद्ध देखने की इच्छासे वहां आये १९ व महात्मा ऋषिलोग भी आये जो वेद वादियों में बड़े श्रेष्ठथे एकत्र बैठ आपस में सब कहने लगे २० कि लोकका कल्याण चाहनेवाले गो ब्राह्मणोंकाकल्याण हो व समरमें श्रीरामचंद्रजी राक्षसोंको जीतें २१ जैसे चक्र हाथमें लिये श्री विष्णुजी संग्राम में सब दैत्यों को जीतते हैं यह कह फिर आपस में बोलनेलगे २२ कि ॥

दो० राक्षस चौदह सहस अरु धर्म्मात्मा श्रीराम ॥
एकओर दहु होय गो कौनि भांति संग्राम १ । २३

इस रीतिसे सब राजर्षि सिद्ध गण ब्रह्मर्षि लोग कहनेलगे व मारे खुशी के खड़े रहे देवतालोग भी विमानों पै सवार दूरसे देखरहेथे २४ महातेजस्वी श्री रामचन्द्रजी को संग्राम में अकेले खड़ेदेख सब प्राणी भयभीत हुये कि नही जानते आजकितना परिश्रम श्रीराघवको पड़ेगा २५ अति मनोहर श्री रामचन्द्रजी का रूप जिसके समान दूसरा नहीं वह क्रोध करनेसे महा विकराल रुद्ररूपके समान होगया २६ इसतरह देव गन्धर्व किन्नर कहीरहेथे कि महागम्भीर शब्द करती अति घोर ढाल तलवार आदि लिये २७ चारोंओरसे राक्षसों की सेना आनपहुंची जिसमें लोग मारपीट आदि बातें आपसमें कररहेथे २८ कोईकोई लोग अपने अपने धनुषोंकी प्रत्यंचा खींचखींच बजातेथे कोईकोई योद्धाहर्षित होते नगारेभी बहुत बाजतेथे २९ इनसब लोगोंका ऐसा शब्दहुआ कि जिससे वह वन पूर्ण होगया व उससे डरके वनके सब पशु पक्षी भाग

खड़ेहुये ३० लौटकर पीछे कोई जीवनहीं देखताथा ऐसी घूमधड़क्के की सेना रामचन्द्रजीके सामने आय पहुँची ३१ जिसमें बीर नानाप्रकार के आयुध लिये थे देखनेमें समुद्रके समान उफलाती चली आती थी समर करनेमें बड़े चतुर श्रीरामचन्द्रजीने नयनारबिन्द फैलाय सब ओर देखा तो ३२ युद्धकरने को तैयारखरकी सेना चलीआतीहै उस समय धन्वा को सँभार तरकसों से तीर निकाल ३३ सब राक्षसों के मारनेके लिये कोप किया उस समय ऐसे बिकराल स्वरूप होगये मानों प्रलयसमय के अग्नि हैं ३४ महातेजस्वी रामचन्द्रजी को देख वनदेवताओंको बड़ी व्यथा हुई क्योंकि क्रोध युक्त रामचन्द्रजीका मुखारबिन्द उनलोगोंनेकाहे कोदेखाथा केवलउसीसमय क्रोधकिये रामचन्द्रका मुखउन्होंनेदेखा ३५ जैसे दक्षके यज्ञ विध्वंस करनेकेलिये महादेवजीने कोपकिया था ३६ ॥

दो० चापाभरण रथाश्वअरु कवचआदिसों सेन ॥
निश्चरकी भैतिमियथा प्रातजलदनीलेन १ । ३७

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेचतुर्विंशस्सर्गः २४ ॥

धनुर्व्बाण धारण किये महाक्रुद्ध शत्रुघाती श्रीरामचन्द्रजी को अपने संगियोंसहित खरने देखा १ देखतेही अपने सारथि से बड़े ऊँचेस्वर से कहा कि रामचन्द्र के सामने रथले चल २ खर की आज्ञापाय सारथि ने जहां रामचन्द्र जी अकेले धन्वापै टङ्कोर देतेहुये खड़ेथे वहां घोड़ोंको हांका ३ खरको रामचन्द्रजीकी ओर वेगसे जातेदेख उसके श्येनगम्या-दि बारहो मंत्री चारोंओरसे होलिये व सबके सब महानाद करनेलगे ४ उस समय मंत्रियों के मध्यमें खर ऐसा शोभित होताथा जैसे नक्षत्रों के मध्यमेंमंगल शोभितहोतेहैं ५ तिसकेपीछे महापराक्रमी श्रीरामचन्द्रजी के ऊपर हजारबाण चलाय समरमें खर ऊँचेस्वरसे शब्द करनेलगा ६ व तिन रामचन्द्रजी को धन्वा कँपातेदेख अन्यभी सबराक्षस नानाप्रकारके शस्त्रास्त्र उनके ऊपर वर्षने लगे ७ व बड़ा क्रोध कर रणमें महाशूरवीर श्रीरामभद्रजी के ऊपर मुद्गर लोहे के शूल फांशी तलवार फरशाआदि अस्त्रशस्त्र उन लोगों ने छोड़े ८ वे सब राक्षस मेघोंके समान महाकाय व महाबलवान थे रथ घोड़ेआदि सवारियोंपै चढ़चढ़ रामचन्द्रजीसे ल-

ड़ने आयेथे ९ व बाजे बाजे पर्वताकार हाथियों पै सवार होकर समरमें रामचंद्रजी को मारडारने की इच्छासे आयेथे इससे बाणों की बर्षा उन के ऊपर करने लगे १० जैसे बादर पर्वत के ऊपर वर्षा करते हैं वैसेही उन राक्षसों ने श्रीरामचंद्रजी के ऊपर वर्षा की सब राक्षसों के बीच में रामचंद्रजी कैसे विदित होतेथे ११ जैसे प्रदोष की रात्रियों में पार्षदों के बीचमें महादेवजी विदित होतेहैं राक्षसों के चलाये शस्त्रास्त्र श्रीरामचंद्र जीने १२ अपने बाणोंके साथ ग्रहणकिये जैसे नदियोंकी धारा समुद्र ग्रहण करता है यद्यपि रामचंद्रजी के अति घोर बहुत से शस्त्रास्त्रलगे पर उनसे उनको कुछ ब्यथा न हुई १३ जैसे देदीप्यमान बहुतसे वज्रों से हिमालय पर्वतको ब्यथा नहींहोती श्रीरामचंद्रजी सबअंगों में सविष बाणों के लगने से ऐसे रुधिर बहनेसे शोभितहुये १४ जैसे संध्याकाल के बादरोंक मध्य में होनेसे सूर्यशोभित होतेहैं रघुनंदनजी की यह दशा देख सब देवता गंधर्व सिद्ध व परमर्षिलोग बड़े बिषादको प्राप्तहुये१५ क्योंकि रामचंद्रजी अकेले व सहस्रों राक्षस उनको घेरेथे सबकी यह दशा देख श्रीरामचंद्रजी ने महाक्रोधकर धन्वाको बड़े जोरसेखींच १६ सैकरों हजारों अतितीक्ष्णबाण छोड़े वे सब बाण किसीके रोंकने के मान के न थे व बड़े दुःख से सहने के योग्य थे समरमें बाण नहीं थे जिस के ऊपरचले मानों उसपै कालकी फांशीचली १७ ऐसे लक्षोंबाण लीला पूर्वक श्रीरामचंद्रजीने चलाये वे सब शत्रु की सेना में पहुंचपहुंच १८ राक्षसों के प्राण लेनेलगे जैसे कालकी फांशी जिसकेऊपर परती प्राण लेहीलेती वे रामचंद्रजी के चलाये बाण राक्षसों की देहोंको बिदार रक्त लगने से लाल रंगकेहो १९ देहोंसे निकल अन्तरिक्ष में जाय बरतेहुये अग्नि के समान शोभित होनेलगे इसतरह पर रामचंद्रजी के धन्वा से असंख्य बाण छूटे २० वे सब राक्षसों के प्राणोंके हरनेवालेहुये उन्हीं से श्रीरामचन्द्रजी ने राक्षसोंकेधनुष ध्वजा ढाल कवच २१ बाहु हाथ भूषण हाथियों की शूंड़ के समान जाघें सैकरों व हजारों काटडाली २२ इनके सिवाय सुवर्ण के कवच पहिरे घोड़े रथ व सारथि सहित हथिवाल व सवार सहित हाथी मये सवार घोड़े २३ इन सबको पनच से छूटे हुये श्रीरामचंद्रजीके बाणों ने छिन्नभिन्न किया व पैदरों को समर

में मार यमपुर को पहुंचाया २४ इसतरह अति तीक्ष्ण बाणों के अति जोर से लगने से कट कुट कर निशाचर लोग अति भयानक व दुःखित शब्द करनेलगे २५ सुकुमार स्थानों में भेदन करनेवाले विविधप्रकार के बाणों के लगने से वह निशाचरोंकी सेना अति पीड़ित हुई कि अकेले रामचन्द्रके मारेही सुखको न पहुंची जैसे सूखेवनको अग्निसे सुख नहीं पहुंचता २६ फिर कोई कोई निशाचर जो बड़े पराक्रमी व शूरथे प्रास शूल फरशाआदि अस्त्रशस्त्र श्रीरामचंद्रजी के ऊपर चलानेलगे२७ तब महाबाहु श्रीरामचंद्रजी ने अपने बाणों से उनलोगों के शस्त्रास्त्रोंको रोंक और बाणों से समर में तिनके प्राण हरलिये व शिर काटडाले२८ जब उनके शिर कटगये व ढाल तलवार धनुष आदि छिन्नभिन्न होगये तो सबके सब धरणी में गिरपड़े जैसे अमृत हरणे के समय नन्दन वाटिका के वृक्ष गरुड़जी के पंखों के पवन के लगने से उखड़कर गिरपड़ेथे २९ जो कोई निशाचर मरने से बचेथे केवल घायलही हुयेथे वे व्याकुलहो अपनी रक्षाके लिये खर की शरण को गये ३० तिन सब को समझाय बुझाय धनुर्बाण ले बड़ा क्रोध कर दूषण नाम राक्षस क्रोधकिये हुये श्रीरामचंद्र जी की ओर दौड़ा ऐसा क्रुद्ध था मानों दूसरा यमराजही है ३१ जबउनलोगों ने दूषण को अपना अगुआकार पायातो साखू ताल शिला आदिको आयुध बनाय फिरलौटकर रामचंद्र जीकी ओर यात्राकी ३२ व समरमें आतेही शूल मुद्गर पाशादि की वर्षा श्रीरामचंद्रजीके ऊपरकी ३३ कोईकोई उनमें वृक्षही उखाड़उखाड़ बरसाते थे कोईकोई पर्व्वत के टुकड़े इससे महाभयानक युद्धहुआ ३४ इसयुद्धमें उधरसे तो राक्षस लोग सब शस्त्रास्त्रों की वर्षा करते थे इधर से श्रीरामचंद्रजीके अमोघ बाण चलतेथे उनलोगों ने फिर शस्त्रास्त्रोंसे श्रीरामभद्रको पीड़ितकिया ३५तब सब दिशा व उपदिशाओंमें राक्षसोंको भरेदेख व उनके बाणोंके बीचमेंपड़ ३६ महाबली श्रीरामचंद्रजीने बड़ा भयंकर शब्दकर अतिदेदीप्यमान गन्धर्व्वास्त्र तिनराक्षसोंकेऊपर चलाया ३७ इस अस्त्रके चलानेमें धनुष से हजारों किड़ोरों बाण निकले जिनसे सबदशोदिशा पूर्णहोगईं ३८ उनबाणों के लगनेसे राक्षसलोग ऐसे पीड़ित हुये कि उनके चलाये हुये शस्त्रास्त्रों को ग्रहण करते हुये व

उत्तमबाण छोड़ते हुये व सबके प्राण खींचतेहुये श्रीरामचन्द्रजी को देखतेही न थे कि कहांहैं और बाण कहांसे आतेहैं ३६ बाणोंकेमारे ऐसा अन्धकार होगया कि सूर्य्यसहित आकाश आच्छादित होगया कहींकुछ भी सुझाई नहींदेता इस दशामें भी श्रीरामचंद्रजी स्वस्थताही के साथ अपने स्थानपै खड़े बाण छोड़रहेथे ४० एकहीसमय में लड़नेके लिये झुकेहुये व एकही संग मरेहुये व एकही संग गिरेहुये राक्षसों से समर की पृथिवी पूर्ण हो भयंकर होगई ४१ उस समय जिधरदेखो रणभूमिमें निहत पतित क्षीण छिन्नभिन्न व विदारित राक्षसही राक्षस देखाईदेते ४२ व रामचंद्रजीके बाणोंसे छिन्नभिन्न पगड़ीसहित शिरोंसे बजुल्ला सहित बाहोंसे जांघ व बाहोंसे गिरे नानाप्रकार के विभूषणों से ४३ व घोड़े हाथी रथोंसे चमर ब्यजनों छत्रोंसे व नानाप्रकार की ध्वजाओंसे ४४ व शूलपटादि शस्त्रोंसे वह पृथिवी पूर्णहोअतिभयानक होगई ४५ तिन सबको मारेहुये परेदेख जो राक्षस बाकीरहेअतिव्याकुलहो शत्रुओंकेजीतनेवाले रामचंद्रजीकीओर न चलसके ४६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेपंचविंशस्सर्गः २५ ॥

दूषणने अपनी सेनामारीहुई देख बड़ेबड़े विकराल अतिबेगवान् १ पांचहजार राक्षसोंको जो समरसे लौटना जानतेही न थे आज्ञादी वेलोग समरमें जाय शूल पटा खड्ग पत्थर वृक्षादिकोंसे २ व बाणोंसे लगातार रामचंद्रजीके ऊपर वर्षाकरनेलगे वह वृक्षों व पत्थरोंकीवर्षा प्राणोंके हरनेहीवालीथी ३ पर श्रीरामचंद्रजीने अपने तीक्ष्णबाणों परही उस वर्षा को ग्रहण किया व उसे ग्रहणकरनेत्र मूंदलिये ४ पीछेसे बड़ा कोपकिया व सब राक्षसोंके मारडालने का विचारकिया उससमय मारेकोपके व तेजके देदीप्यमान श्रीरामचंद्रजीने ५ दूषणसहितसेनाकेऊपर बाणोंकी वर्षा करदी तब शत्रुओं का दूषण करनेवाला दूषण नाम सेनापति क्रोधकर ६ वज्रके समान बाण रामचन्द्रजीके ऊपर बरसानेलगा तब श्रीरामचन्द्रजीने बड़ा क्रोधकर क्षुराकेसमान तीषेबाणसे दूषणका महा धनुष ७ काटडाला व चारबाणों से उसके चारो घोड़े मारडाले तीक्ष्ण बाणोंसे घोड़ोंको मार अर्द्धचन्द्राकार बाणसे उसके सारथिका ८ शिर

काटलिया व तीनवाण उस दूषण नाम राक्षसकी छातीमें मारे अब वह बिना धनुष बिनारथ व बिनाघोड़ों व सारथिके होगया ६ तबतो उसने पर्व्वतकेशृङ्गके सदृश जिसके देखनेही से रोम खड़े होजायँ सुवर्णके वन्दों सेबांधा व देवताओंकी सेनाका अभिमर्दन करनेहारा १० फिर लोहकी कीलोंसे जड़ा शत्रुओंकी चरवीसे चभोरा वज्रके समान कठोर व शत्रुओं के पुरके द्वारका विदारण करनेवाला ११ व महासर्प्पके समान तिस परिघको ले समरमें क्रूरकर्म्म करनेवाला दूषण राक्षस श्रीरामचन्द्रजी की ओर दौरा १२ तिसदौरे आतेहुये दूषणके भूषण सहित दोनों हाथ दो बाणोंसे श्रीरामचन्द्रजी ने काटडाले १३ तब उसका बड़ाभारीशरीर घूमकर संग्राम भूमिमें गिरपरा व हाथ कटेहुये उसका परिघ इन्द्रध्वज के समान उसके आगे गिरा १४ गिरनेके समय कटेहुये हाथों से मुहके बल दूषण ऐसा पृथिवी में गिरा जैसे दांत टूटजानेपै महामनस्वी गज-राज भूमिमें गिरता है १५ तिसमारेहुये दूषण को रणमें गिरादेख सबप्राणी बहुतअच्छा बहुतअच्छा ऐसा कह श्रीरामचन्द्रजी की बड़ाई करनेलगे १६ तिसके पीछे बड़ा क्रोधकर मृत्युकी फांशीमें फँशेहुयेउस के तीनसेनापति बड़ी २ सेना अपने सङ्गले श्रीरामचन्द्रजी के मारने को दौरे १७ उनके नामये थे एकमहाकपाल दूसरा स्थूलाक्ष तीसरामहा बलवान प्रमाथी उनमें महाकपाल नाम राक्षस तो बड़ा शूलउठाय १८ व स्थूलाक्ष पटालेकर प्रमाथी फरशा लेकर इनतीनोंको दौरेआते देख श्रीरामचन्द्रजीने बड़े तीक्ष्ण बाणोंसे १६ इनकी अगुआनीकी जैसेलोग आयेहुये अतिथियोंकी अगुआनी व उचित पूजाकरते हैं महाकपालका तो रघुनन्दनजीने पहुंचतेही शिरही काटलिया २० व अनगन्ती बाणों से प्रमाथीको मथा स्थूलाक्ष को मोटी आँखों को बाणोंसे पूरणकर दिया २१ ये तीनों कटेहुये वृक्षोंके समान पृथिवी में भहरायपरे इनके पीछे पांचहजार जो दूषणके अनुयायीथे अतिकोपकर एकक्षण मात्रमें २२ मारकर उनसबको श्रीरामचन्द्रजीने यमपुरको पठादिया तब दूषण व उसके अनुयायियोंको मारेगये सुन २३ खरने अति क्रोधकर महाबल-वान् और २ सेनापतियोंसे कहा कि देखो अपने अनुगामियों समेत यह दूषण तो समरमें मारागया २४ हे सब राक्षसो तुमलोग अपने

सङ्ग बड़ी सेनाले कुमानुष श्रीरामको नानाप्रकार के शस्त्रास्त्रोंसे मारडालो २५ इतना कह महा क्रोधकर खर रामचन्द्रजी की ओर दौरा उसके सङ्गही श्येनगामी पृथुग्रीव यज्ञशत्रु विहङ्गम २६ दुर्ज्जय करवीराक्ष पुरुष कालकार्म्मुक हेममाली महाकाली सर्प्पास्य व रुधिराशन २७ ये १२ महाबलवान् सेनापति अपनी अपनी सेनाओंकेसङ्ग वाणचलातेहुये रामचन्द्रजीकी ओर दौरे २८ इनसबको आतेहुये देख सुवर्ण व रत्नोंसे भूषित अग्निके समान देदीप्यमान वाणोंसे श्रीरामचन्द्रजी ने तिससेनाको मारडाला २९ वे सुवर्ण के पङ्खलगे व धुआं सहित अग्निके समान रामचन्द्रजीके वाणोंने तिन राक्षसोंको मारडाला जैसे वज्र वृक्षोंको भस्म करदेते हैं ३० श्रीरामचन्द्रजी ने राक्षसों का सैंकरा सौ वाणों से व तिनका हजाराहजार वाणों से समरमें विनाश ३१ तिन बाणोंसे उननिशाचरोंके कवच व विभूषण टूटगये व धनुष छिन्नभिन्न होगये देहोंसे रुधिरकी धारा बही इससे व्याकुल हो धरणी में गिरपरे ३२ सब राक्षसों के बार छूटगयेथे सबके अंगों में रुधिर लगा था इसलिये इनके एकओर से वहां परने के कारण कुशबिछी वेदी के समान पृथिवी लगती थी ३३ उस समयमें राक्षसोंके मारेजाने व तहांहीं परेरहने व रक्तकी कीचमें सानी सौंदन होनेसे वह घोरवन नरक के समान भयानक होगया ३४ चौदहहजार राक्षसों को अकेले मानुष शरीरधारी रामचन्द्रजी ने पैंदर मारडाला ३५ अब उस समरमें जितनी सेना लड़नेकेलियेआईथी उसमें महापराक्रमी खरव त्रिशिरा राक्षस व शत्रुओंके नाश करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी यही तीन बाकीरहे ३६ बाकी सब लक्ष्मणजी के बड़े भाई रामचंद्रजीने रणमें मारडारे यद्यपि सबके सबमहापराक्रमी व बड़े भयानक व बड़े दुःखसे सहने केयोग्यथे ३७ ॥

कुण्डलिका ॥

महाभयंकर सैन्यअति रणमहँ मार्योराम ।
धर्मयुद्धही सों हत्यो तनिक नहीं गतिवाम ॥
तनिकनहींगतिवामताहि लखिखरअतियोधा ।
रथपरभयहु सवार गयहुतहँ करिकै क्रोधा ॥
राघव मारण हेतु चेतु मन वाण धनुर्द्धर ।

वज्रलिये पुरुहूत सदृश सो महा भयंकर १ । ३८

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकांडेषड्विंशस्सर्गः २६ ॥

खर को रामचंद्रजी के सामने जाते देख सेनापति त्रिशिरा राक्षस खर के प्रणामकर बोला १ हे खर आप ऐसे साहस से लौटजायँ महा-पराक्रमी हमको इस कार्यके लिये नियोजित करें बस महाबाहु श्रीराम को समरमें मारेहीहुये देखें २ हम आपकेआगे सत्यही कहतेहैं व अपने आयुध की शपथ करतेहैं कि सब राक्षसों के मारनेके योग्य रामचंद्र को यथा विधि मारडारेंगे ३ कि तो इसरणमें हमी इन रामचंद्रके मृत्युहोंगे कि तो यही हमारे मृत्युहोंगे आप दो घड़ी इनसे न लड़ें केवल साक्षी होके बीचमें खड़ेरहें देखलें कैसायुद्ध होताहै ४ किती रामचंद्र मारेजा-येंगे तो हर्षित हो जनस्थानहीं को जाइयेगा व हमारे मारजाने पै युद्ध-ही करने को जावगे ५ जब मृत्यु के लोभसे त्रिशिरा ने खरसे ऐसी प्रार्थना की तो खरने कहा अच्छा जाव तुम्ही लड़ो यह सुन त्रिशिरा रामचंद्रजीके सम्मुख चला ६ घोड़े जुतेहुये व देदीप्यमान रथपै ही सवारहो त्रिशिरा रामचंद्रजी के सम्मुख तीनकँगूरावाले पर्वतके समान दौरा ७ व महामेघों के समान बाणोंकी धारा छोड़नेलगा इसके पीछे भीगेहुये नगारे के समान नादभी करनेलगा ८ त्रिशिराको आतेदेख श्री रामचंद्रजी ने पैने बाण कँपातेहुये धनुषही से लिया ६ वह श्रीरामचंद्र जी व त्रिशिरा का संग्राम अतिही भयानक हुआ जिसको देखनेवाले केभी रोम खड़े होजाते यह समर अति बलवान् सिंह व हाथीही कासा हुआ १० त्रिशिरा ने बड़े वेगसे तीनबाण रामचंद्रजी के माथेमें मारे उनको न सह व बड़ा कोपकर त्रिशिराको कोप करातेही ऐसे रामचंद्रजी बोले ११ अहो बड़े आश्चर्यकी बातहै हमतो जानतेथे कि राक्षस लोगबड़ेही पराक्रमी होतेहैं तिनमें तुमतो बड़ेही विक्रमी शूरहो परंतु तुम्हारे बाण हमारे ललाट में फूलों केही समान लगे इस से विदित हुआ कि तुम्हारे कुछ भी पराक्रम नहीं १२ अब धनुष की रोदासे छूटे हुये हमारे भी बाण ग्रहण करो यह कह बड़ा कोपकराय विषधर सर्पोंके समान १३ चौदहबाण त्रिशिरा की छाती में मारे व

चार बाणों से उसकेचारोघोड़े मार डाले १४ व महातेजस्वी श्रीराम-
चन्द्रजी ने आठ बाणों से उसके सारथि को रथही पै मार गिराया १५
व एक बाणसे मारा रथकी पताका कटगई जब रथ टूटगया और उसपर
से त्रिशिरा उछलकर अलग कूदनेलगा १६ उसीबीच में रामचन्द्रजी
ने उसके हृदय में बहुतसे बाणमारे कि जिनके लगने से वह जड़मनुष्य
के समान होगया १७ उसीलागे अति वेगवाले तीनबाणों से उसकेतीनों
शिरकाटकर गिरादिये तिसके पीछे धुआंके समान रुधिर गिराता हुआ
रामचन्द्रजी के बाणोंसे पीड़ित त्रिशिराके १८ शिरतो पहिले गिरे पीछे
से आपभी उसी समर में गिरा अबजो त्रिशिर के मारेजानेके पीछे कुछ
राक्षस बाकीरहे व भागकर खरके पीछे लुके १६ बरन वहांसे भी भागे
वहांभी खड़े न होसके तिनको भागते देख खरने बहुत लौटाया पर वे
न लौटे तब बड़ाकोपकर खर रामचन्द्रजीकी ओर दौरा जैसे राहु चन्द्रमा
को दौड़ता है २० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेसप्तविंशस्सर्गः २७ ॥

दूषण व त्रिशिरा को संग्राम में मारेदेख रामचन्द्र जी का पराक्रम
विचार खर केभी थरथरी उठी १ फिर शोचने लगा कि अकेलेही राम-
चंद्रजीने यह बड़ीभारी व अति बलवती राक्षसोंकी सेना मारडाली दूषण
व त्रिशिरा को भी मारडाला २ इस बातको विचार अपने मनमें बहुत
उदास हो खर रामचन्द्र जी की ओर दौरा जैसे नमुचि नाम दैत्य इंद्र
के ऊपर दौराथा ३ खरने बड़ेजोरसे धनुष खींच रक्त पीनेवाले बहुतसे
बाण विषधर सर्प्पोंके समान चलाये ४ व धनुषको बार बार टंकोर गुरु
से सीखी विद्या दिखाता हुआ खर रथपै सवार हो समर के मार्ग पै
चला ५ पहुंचतेही पहुंचते सब दिशाओंको बाणों से भरदिया तिस को
ऐसा देख रामचन्द्रजीने भी बड़ाभारी धन्वालिया ६ व प्रज्वलित अग्नि
के आकार के बाणों से आकाशको ऐसा पूर्ण करदिया कि अवकाशही
न रहगया जैसे मेघ वृष्टि से पूर्ण करते हैं ७ फिरखर व श्री रामचन्द्र
जी दोनों जनोंने ऐसी बाणावरी की कि आकाश व पृथिवी के बीच में
जो अवकाशथा सब भरहुआ ८ दोनों जन परस्पर एक दूसरे के बध

की इच्छा किये ऐसे बाण चलातेथे कि उनसे सूर्य्य मूंदगये कहींभी प्रकाशित नहीं होताथा ९ तिसके पीछे नानाप्रकारके बाणोंसे समर में खरने श्रीरामचन्द्रजीको मारा जैसे हथिवाल अंकुशसे महा गजेन्द्रको मारता है १० रथपै चढ़े हुये हाथ में धनुषलिये तिसखरको हाथमें पाशलिये यम के समान सब प्राणियों ने देखा ११ व खरने सब राक्षसोंकी सेना के मारनेवाले परम पुरुषार्थमें टिकेहुये श्रीरामचंद्रजी को संग्राम करने से थके समझा १२ व उसको सिंह के समान पराक्रमी व सिंहही के समान ऐंड़ के साथ चलते देख रामचंद्रजीका जी कुछभी न ऊबा जैसे खरगोश आदि छोटे जीवों को देख सिंह नहीं ऊबता १३ तब सूर्य्य के समान प्रकाशित बड़ेभारी रथ पै सवार हो खर राम-चन्द्रजी को प्राप्तहुआ जैसे पांखी अग्निको प्राप्त होती है १४ तिसके पीछे इन महात्मा श्रीरामचन्द्रजी के धनुर्बाण खरने अपने हाथोंकी शीघ्रता देखाने के लिये काटडाले १५ व फिर और बड़ेतीषे सात बाण ले क्रोध कर रामचन्द्रजी के कवच में मारे ये बाण इंद्रके वज्र के समान थे १६ फिर महातेजस्वी व पराक्रमी श्री रामचंद्रजी को उसने हजार बाणों से पीड़ितकर समरमें बड़ा नाद किया १७ खरके चलायेहुये तीषे बाणोंके लगनेसे सूर्य्यसम प्रकाशित श्रीरामचन्द्रजी का कवच भूमिमें गिरपरा १८ इसतरह से ऐसाकोई भी अंग न रहा जहां खरने बाण न माराहो सर्व्वांगों में खरके मारेहुये बाणोंके लगनेसे रामचन्द्र जी समरमें बिना धुआँके अग्निके समान देदीप्यमान विराजमान हुये १९ तिसके पीछे श्रीरामचन्द्रजीने शत्रुको मारडालनेकेलिये और बड़ा भारी धनुषलिया इसमें बड़ाभारी शब्द होताथा २० यह धनुष विष्णु के तेजसे संस्कृतथा रामचन्द्रजी को अगस्त्य महर्षि ने दियाथा व कहाथा कि खरको इसीसे मारना इससे वही धनुष ले रामचन्द्रजी खर के ऊपरको दौरे २१ व सुवर्णके पंखलगे बड़ेभारी बाणों से क्रोधकर समरमें खरकी ध्वजा काटडाली २२ वह ध्वजा सोनेकीथी इसीसेबहुत ही दर्शनीथी जब रामचन्द्रजीने छिन्नभिन्न करदी तो पृथिवी में आय ऐसी शोभितहुई जैसे कभी देवताओं की आज्ञासे सूर्य्य पृथिवी में आय जायँ तो शोभितहों २३ उसीबीचमें खरने बड़ाकोपकर चार बाण राम-

चन्द्र जी के अंगों में मारे अन्य अंगोंकी अपेक्षा हृदयको अति सुकुमार जान एक बाण हृदयमें भी मारा जैसे लोग भालोंसे मतवाले हाथीको मारतेहैं २४ खरके धनुषसे छूटेहुये बहुत बाणोंके लगनेसे श्रीरामचन्द्र जीका शरीर रुधिर से भीगगया इससे उन्होंने बड़ाही क्रोधकिया २५ धनुर्द्धरोंमें श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजीने इसीसे धनुषले खरको निशानबनाया छः बाण मारे २६ उनमें एक तो शिर में मारादो दोनों बाहोंमें व तीन चन्द्रार्द्धाकार मुखवाले बाण छातीमें मारे २७ तिसके पीछे महा तेजस्वी श्रीरामभद्रने महाक्रोधकर बाढ़ि धरायेहुये तेरह बाणोंसे उस राक्षसको मारा २८ उनमें एकबाणसे तो रथका युग काटडाला फिर चारबाणों से चारोचित्र विचित्र घोड़े छठें बाणसेखरकेसारथिकाशिर २९ तीनबाणोंसे रथकेतीनों बांश व दोबाणोंसे दोनोंपहिया बारहवें बाणसे खरका धनुष सहितबावां हाथ ३० व हंसतेहीहंसते बज्रके समान तेरहवेंबाणसे इन्द्र के समानपराक्रमी श्रीरामचन्द्रजीने खरको मारा ३१ जब खरका धनुष टूटगया व रथभी टूटाघोड़े व सारथिभी मारडालेगये तो हाथमें गदाले कूदकरवह भूमि में खड़ाहोगया ३२ ॥

हरिगीतिका ॥

अति महारथ रघुनाथजीके सकल कर्म्म विलोकिकै ।
सबदेवऋषि गन्धर्व किन्नर मुदित मननहिं रोंकिकै ॥
करजोरि बहुत निहोरिपूजत तासुसोगुण जोहर्‍यो ।
खरकेरथ सारथि तुरँग धनुरादिजो विधिसों बन्यो १ । ३३

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेऽष्टाविंशस्सर्गः २८ ॥

विरथ खरको हाथमें गदालिये आगे खड़ा देख महातेजस्वी श्रीरामचंद्रजीने सुननेमें अति कोमल वास्तव में अति कठोर वचनकहे १ हे खर गज अश्व रथादि सँयुक्त बड़ी सेनाके बीचमें टिकके तुमने ऐसेदारुण कर्म्म कियेहैं जिनकी निंदा सबलोकोंमें होतीहै २ जो पुरुष सबप्राणियों को दिक्ककरता व निर्ल्लज्ज होके पापकर्म्म करनेलगताहै चाहे वहतीनों लोकोंकाभी स्वामीहो नहींरहसक्ता ३ हेनिशाचरलोकविरुद्ध तीक्ष्णकरने वाले पुरुषकेमारनेवाले सबजन होजाते हैं जैसे दुष्ट सर्प्प को आतेही देख लोगमारनेलगतेहैं ४ जोपुरुष लोभसे वा कामसेहर्षितहो हिंसा व परस्त्री

गमनादि पापकरताहै व उनके फलकोनहीं समझता वहउस पापके फलको अवश्य प्राप्तहोताहै जैसे ब्राह्मणी अर्थात् बांभनि नामकीड़ा अकाल वृष्टि केसाथ के गिरेहुये पत्थरों को लोभसे खायजातीहै पर तुरन्त मरजाती है ५ ऐसेही हे राक्षस दण्डकारण्य में वसेहुये इन बेचारे धर्म्मचारी महा भाग्यवाले तपस्वियों को मारकर तुमभी फलपावो गे ६ न कहो हमनेतो बहुत पापकिये कुछदोष न विदित हुआ सोनहीं पापकरनेवाले क्रूर स्वभाव लोक निन्दित लोग ऐश्वर्य्य को पाय बहुत दिनोंतक नहीं रहसक्ते जैसे जर सड़जानेपै वृक्षखड़े नहीं रहते ७ पापकर्म्म करनेवाला उस पापके फलको जब उसका समय आता है अवश्य प्राप्तहोता है जैसे समय पाय अपने अपने ऋतुमें वृक्षोंमें पुष्प फलादि लगते हैं ८ हे निशाचर जैसे विष सहित अन्न खानेवालों को तुरन्तही फल मिलता है वैसे संसार में पापकर्म्म करनेवालों को तुरन्त फल नहींमिलता पर समय पाय अवश्य मिलताहै ९ इसीलिये घोरपाप करने वाले व संसार का अप्रिय चाहने वाले तुम ऐसेदुष्टों के प्राणही हनने के लिये हमारे पिताजी ने हमको वनको भेजाहै १० इससे काञ्चन भूषित हमारे छोड़ेहुये वाण तुम्हारे शरीर को भेदनकर आजजाय धरणी में गड़ेंगे जैसे सर्प्पवामी को फोड़ पृथिवी के भीतर चलेजाते हैं ११ इस दण्डकारण्य में जिन धर्म्मचारी तपस्वियों को तुमने भक्षण कियाहै आज संग्राम में मारडारे जानेसे तुम सहित सैन्य तिनके पीछे जावगे १२ जिन ऋषियों को तुमने इसवन में मारा है विमानों पै चढ़ेहुये वेलोग मारेहुये व नरक में टिकेहुये तुमको आज देखें १३ हे कुलाधम यतकर जैसेबनै अस्त्र शस्त्र चलाव आज पकेताल के फलके समान तेराशिर काटकर गिराते हैं १४ जब रामचन्द्रजीने ऐसाकहा तो मारेक्रोधके आंखें लालकर व क्रोधके मारे थरथराय खरबोला १५ हे दशरथ के पुत्रराम इनप्राकृत राक्षसों को मार अपने बूते अप्रशंसनीय अपना को कैसे प्रशंसित करते हो १६ जोलोग पराक्रमी वलवान् पुरुषों में श्रेष्ठहोते वे अपने तेजके अहङ्कार से कुछनहीं कहते १७ व जोलोग प्राकृत अजितेन्द्रिय व क्षत्रियों में अधम होते वे तुम्हारी तरह निरर्थक बकते हैं १८ भला मृत्यु संशय प्राप्त करनेवाले समर में बातके प्रस्ताव विना अपने कुलका नाम

ले अपनी स्तुति कौनकरेगा १६ इसबकनेसे तुम्हारी सबतरह से लघुता पाईजाती है जैसे कि सुवर्ण सदृश कच्ची पीतल की लघुता अग्नि में तपाने से होजाती है प्रथम हम तुमको महापराक्रमी महारणधीर समझे थे अब इसबकने से वहबात जातीरही जैसे कच्ची पीतल को लोग सुवर्ण समझते हैं जबवह अग्नि में डाली जाती है तो श्याम होजाने के कारण वहबात जाती रहती है २० भलागदा धारणकिये हमको यहां टिकेनहीं देखते जो कि धातुओं से चित्र विचित्र पृथ्वीके धारण करनेवाले बड़ेभारी पर्व्वत के समान यहां विद्यमान हैं २१ अबतो हम हाथमें गदालिये समरमें तुम्हारे प्राणलेनेके लिये प्राप्तहैं जैसे तीनों लोकोंके प्राण नाशने केलिये फांशी हाथमें लिये यमराज २२ अब तुम को चाहे अभी बहुत बतलाना हो परहम कुछ न बोलेंगे क्योंकि सूर्य्य अस्तहुआ चाहतेहैं फिर युद्धमें बिघ्नहोगा २३ तुमने चौदहहजार राक्षस मारडाले हैं इससे आज तुम्हारे मारने से उनके आंशुपोंछेंगे२४ यहकह खरने बड़े मजबूत बन्दबँधी हुईगदा रामचन्द्रजीके ऊपर चलाई जैसे इंद्रवज्र चलाते हैं २५ वह खरके हाथसे चलाई देदीप्यमान बड़ी गदा अंजरे पंजरेके वृक्ष लतादिकों को भस्मकरती रामचंद्रजीके निकट पहुंची २६ मृत्युकी फांशीके समान आतीहुई उस महा गदाके रामचंद्र जीने अपने बाणोंसे अन्तरिक्षही में सैकड़ों खंडकर डारे २७ व रामचंद्र जीके बाणोंसे छिन्नभिन्न हो वह महागदा मंत्र व औषधों के बलसे निपातितसर्प्पिणी के समान भूमिमें गिरपरी २८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेएकोनत्रिंशस्सर्गः २९ ॥

तिस गदाको बाणोंसे भेदनकर धर्म्मवत्सल श्रीरामचंद्रजी मुसुकाय खरको कोप करातेही ऐसे बोले १ हे राक्षसाधम तुम्हारे बस यहीइतनही सर्व्वधन बलहै जो तुमने दिखायाहै वा और भी कुछ है हमारे बिचार से तो तुम अति शक्तिहीन हो वृथाही हमसे अपने बलकी बड़ाई करतेहो २ जिस गदापर तुमको बड़ा विश्वास था जिसके माथे अपने नामकी बड़ाई करते थे उसको देखतेहो हमारे बाणोंसे टूटीफटी पृथिवी में परीहै ३ व जो तुमने कहाथा कि तुमकोमार मरेहुये राक्षसोंके आंशु

पोंछेंगे वहभी तुम्हारा वचन मिथ्या हुआ ४ अवअतिनीच ओछे स्वभाव वाले व मिथ्या भाषी राक्षसके प्राण हरलेतेहैं जैसे गरुड़जी अमृत हर लाये थे ५ आज हमारे बाणोंसे काटेहुये तुम्हारे गरेका रुधिर फेना व बुल्लाओंसे भूषित पृथिवी पिएँगी ६ व अभी सब अंगोंमें धूलि लगाय दोनो भुज रहित हो उत्तम स्त्रीके समान पृथिवीको लपटाकर शयनकरो गे ७ राक्षसोंमें निर्ल्लज्ज तुम जब महानिद्रा को पाय सोय जावगे तो यह दंडकवन शरणमें आये लोगोंका रक्षकहोगा ८ व तुम जहां हमारे बाणोंसे मारडारेजावगे ऐसे जनस्थान में निर्भ्भयहो मुनिलोग बिचरेंगे ९ आज अपने अपने पति पुत्र देवरादि बन्धुओं के मारजानेसे बड़े जोरसे रोतीहुई भयभीत व औरोंको डरवाती हुई राक्षसियां यहां इधर उधर शिरपीटती हुई हाय माय बाप करतीहुई दौड़ती फिरेंगी १० व जिन राक्षसियों के तुमऐसे दुराचारी पतिहो व अपने अनुरूप निरर्थक शोकके रसको जानेंगी ११ हे निर्ल्लज्जस्वभाव हे क्षुद्रात्मन् हे नित्यही ब्राह्मणों के शत्रु अरेतेरे भयसे डरतेहुये मुनिलोग अग्निमें आहुतिदेते हैं १२ वनमें जब रामचंद्रजीने ऐसे कोपकरानेवाले बचन कहे तो बड़ेकड़े वचन कह कह कर खर श्रीरामचंद्रजी को दुर्व्वाद कहनेलगा १३ कि हे राम अब हमने निश्चय कर जाना कि तुमबड़े अहंकारी हो क्योंकि भयमें भी निर्भ्भय रहते हो इसीसे तुम्हें यह नहीं जान परता कि क्या कहनेकेयोग्यहै क्या अयोग्य क्योंकि तुम मृत्युकेबशमेंतो हुईहो १४जो पुरुष कालकी फांशीमेंफँसेहोते वे कार्य्यअकार्य्यनहींजानते क्योंकिउनकी छवो इन्द्रियोंकी शक्तिजातीरहतीहै १५ इसतरहश्रीरामचन्द्रजीसे कह नेत्र तनेनेकर खरने देखा तो सन्निकटही एक साखू का वृक्ष लगाथा १६ समरमेंमारनेके लिये चारोंओर निहार चबुरीबांधबड़े जोरसे उसे उखाड़लिया १७ व बड़ाभारी शब्दकर श्रीरामचन्द्रजी के ऊपर मारा व कहा कि तुम मरे मरे १८ तिसको आतेदेख बाणोंसे काट प्रतापी श्रीरामचन्द्रजीने समर में खरके मारनेके लिये कोप करसया १९ उससमय श्रीरामचन्द्रजीके पसीना होआया नेत्रलाल होगये हजारबाण खरके अंगोंमें मारे २० जहां जहां बाण लगे उन मार्ग्गों से रुधिर की धारा चली जैसे पर्व्वतोंके झरनोंसे जलकी धारा चलतीहै २१ संग्राममें

श्रीरामचन्द्रजीने बाणोंसे खरको विकल करदिया तब रुधिरके गन्धसे मत्तवाला हो खर रामचन्द्रजीके सामने दौड़ा २२ खरके बाणादि काटने वाले व अति शीघ्र विक्रमी श्रीरामचन्द्रजी क्रोधकिये दौड़ आते खरको रुधिर में डूबादेख प्रतिपद उसको पछारते चलेगये २३ व उसके मारने के लिये श्रीरामचन्द्रजीने अग्निके समान देदीप्यमान बाण लिया मानों दूसरा ब्रह्मदण्डही था २४ यह बाण श्रीरामचन्द्रजीको परम बुद्धिमान् इन्द्रजीने दियाथा इससे धर्म्मात्मा रघुनन्दनजीने धनुषपै चढ़ाय खरके ऊपर छोंड़ा २५ वह रामचन्द्रजीका छोंड़ाहुआ बाण वज्रपातके समान शब्दकर जाय खरके ऊपर गिरा २६ उस बाणके अग्निसे जलताहुआ खर पृथिवी में गिरपरा जैसे महादेवजीके मारनेसे श्वेतारण्यमें अन्धकासुर गिराथा २७व जैसे इन्द्रके वज्रसे भग्नहो वृत्रासुर नमुचि व बल गिरेथे वैसेही रामबाणसे हतहो खर गिरपरा २८ इसी समयमें देवता चारण व गन्धर्वलोग दुन्दुभी बजाय बजाय चारोंओर से रामचन्द्रजी के ऊपर फूलोंकी वर्षा करनेलगे २९ व बड़े विस्मितहुये कि डेढ़ही मुहूर्त्तमें पैने बाणों से रामचन्द्रजी ने ३० कामरूपी चौदहहजार राक्षसों को जिनमें खर दूषणादि मुख्यथे संग्राम में मारडाले ३१ भाई सर्वदर्शी सर्व्वगति श्रीरामचन्द्रजीमें महत्कर्म्मता वीर्य्य व आश्चर्य्यरूप दृढ़ता जोहै येसब कर्म्म विष्णु के तुल्य हैं सो क्यों न हों विष्णु के तो अवतारही हैं ३२ ऐसाकह सब देवतालोग जैसे आयेथे वैसेही अपने अपने स्थान को गये तिसके पीछे राजर्षि व महर्षि लोग एक संगहोके आये ३३ व रामचंद्र जीकी बड़ाईकर अगस्त्यादि मुनिश्रेष्ठबोले, किइसीलिये महातेजस्वीइन्द्र जी ३४ शरभंगजीके पुण्य आश्रमपरआपके निकट आयेथे वइसीलियेम हर्षिलोग बड़ेउपायसे आपको यहां लायेहैं ३५ और कुछप्रयोजन न था केवल इन पापकर्म्मा राक्षसोंकेही मारने का कामथा क्योंकि येलोग हम लोगोंके शत्रुहैं हेरामचन्द्र आपने हम लोगोंका यह कार्य्यकिया ३६ अब महर्षिलोग दण्डकारण्यमें अपना धर्म्म निर्भयहो करेंगे महर्षिलोग यह कहतेहीथे कि जानकीजीके साथ लक्ष्मणजी ३७ पर्व्वतकी गुहासेनिकल सुखपूर्व्वक अपने स्थान पै आये तिसकेपीछे महर्षियों से पूजित विजयी श्रीराम ३८ लक्ष्मणजीसे पूजित अपने आश्रम पै आये तिन महर्षियों

के सुख देनेवाले व शत्रुओं के मारनेवाले श्रीरामचंद्रजीको देख ३९ श्री जानकीजी अति प्रसन्नहुईं व अपनेस्वामी श्रीरामचन्द्रजी को प्रेमसेमिलीं फिरराक्षसोंको मारेहुये परे देख ४० व श्रीरामचन्द्रजीको कुशलपूर्वक देख बहुत सन्तुष्टहुईं ४१ ॥

कुण्डलिका ॥

मारण राक्षस गणन के मुदित महर्षिन वन्द्य ।
श्रीरामहिं प्रमुदित बदन जनकसुता अभिनन्द्य ॥
जनकसुता अभिनन्द्य प्रेमसों मिली बहोरी ।
हर्षित भे सब गात बार बहु करत निहोरी ॥
सकलगये निज सदन महर्षिराज ऋषिचारण ।
सिया लषणसँग रामटिकेतहँ रिपु गणमारण १ । ४२

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेत्रिंशस्सर्गः ३० ॥

जब खरदूषणादि सब मारेगये तो अकम्पन नाम राक्षस बड़ी जल्दी के साथ जनस्थान से भाग वेग से लंका में जाय रावण से बोला १ हे राजनजनस्थाननिवासी बहुत से राक्षस मारेगये व खर भी संग्राम में मारागया हम बड़े कष्टसे बच के यहां आयेहैं २ जब अकम्पन के मुख से ऐसी बात सुनी तो क्रोध के मारे लाल नेत्रकर अपने तेज से जारःताहीसा रावण अकम्पन से बोला ३ किसके प्राण पराधीन हैं जिसके महाभयंकर जनस्थान राक्षस हीन कर दिया वह कौन है जो तीनों लोकों में जिसके रहने का स्थान नहीं ४ क्योंकि हमसे बिगाड़ कर इन्द्रभी सुख से नहीं रहसक्ते व कुबेर यमराज व विष्णु भी नहीं सुख से रहसक्के ५ इनके सिवाय हम काल के भी काल हैं अग्नि को भी हम भस्म कर सक्ते हैं बहुत कौन कहे मृत्युको भी मरण धर्म्म के साथ सँय्युक्त करा सक्ते हैं ६ व अपने वेगसे पवनके वेगको नष्टकरसक्ते व क्रोध करेंतो अपने तेजसे सूर्य्य व अग्नि दोनोंको भस्मकर डारें ७ इस तरह से क्रुद्ध रावण से मारे भय के भीत हो सन्देह युक्त वाणीसे हाथ जोड़ अकम्पन रावणसे अभय मांगने लगा ८ तबरावण ने कहा अच्छा तुमको अभय दान देते हैं जैसा वृत्तान्त हो ठीक २ कहो तब अकम्पन

विश्वास मान सन्देह छोड़ सब हाल कहनेलगा ९ कि सिंह के समान पुष्टांग युवावस्थाको प्राप्त महास्कन्ध वाले बड़े मोटे व लम्बे बाहुवाले १० श्यामस्वरूप महायशस्वी महाशोभावान् अपने समान अन्य किसीका बल व विक्रम न रखनेवाले राजा दशरथ जीके पुत्र रामचन्द्र जी अबभी जनस्थान में हैं उन्हीं ने जनस्थान में खर दूषणादिकों को मारा ११ अकम्पन के वचन सुन राक्षसों का स्वामी रावण मदान्ध हाथी के समान श्वास ले यह बोला १२ हे अकम्पन क्या इन्द्र सहित सबदेवों के साथ रामचन्द्र जनस्थान में आये जो सबों को मारडाराकहो तो १३ रावण के फिर वचन सुन अकम्पन तिन महात्मा श्रीरामचन्द्र का बल व विक्रम कहने लगा १४ कि सब धनुर्द्धरों में श्रेष्ठ महातेजस्वी दिव्य शस्त्रास्त्रों के गुणों से सम्पन्न संग्राम में बड़ेही धर्म्मात्मा रामचन्द्रजी आप तो ऐसे हैं १५ व तिन्हीं के अनुरूप अति बलवान् अरुणनयन दुन्दुभि के समान् शब्द करनेवाले पूर्णमासी के चन्द्रसमान मुख उनके छोटे भाई लक्ष्मण भी सङ्ग हैं १६ इन्हीं के संग वे श्रीमान् राजराजेश्वर श्रीरामचन्द्रजी हैं जैसे अग्नि के संग पवन रहता है सो तिन्होंने जनस्थान विध्वंस किया १७ देवता महात्मा कोई बेचारे उनके संगनहींथे न हैं इस विषय में आप विचार न कीजिये केवल रामहीं के छोड़े सुवर्ण पुङ्ख लगेहुये बाण १८ पांच पांच मुखके सर्प्पहो के राक्षसों को भक्षण करते हैं फिर जिस जिस मार्ग्ग में भयभीत हो राक्षस लोग भागते हैं १९ तिस तिस मार्ग्ग में रामचन्द्रजी को आगेही खड़े देखते हैं इसीतरह से तुम्हारा जनस्थान उन्होंने नष्ट करदिया २० अकम्पन के वचन सुन रावण बोला कि लक्ष्मण सहित रामचन्द्र के मारने के लिये अभी जनस्थान को जायँगे २१ जब रावणने ऐसाकहा तो अकम्पन बोला हे राजन् वृत्तान्त सहित रामचन्द्रजी का बल व पौरष सुनिये २२ महा यशस्वी श्रीरामचन्द्रजी औरके तेजसे असाध्य हैं क्योंकि कोपकरने पै वे बड़ीभारी श्रावण भादों मासों की नदीके वेगको बाणों से आड़सक्ते हैं २३ व ताराग्रह नक्षत्र सहित आकाश को यथेच्छ पीड़ितकरसक्ते हैं व ये श्रीरामचन्द्रजी कष्ट में पड़ीहुई पृथ्वी को भी उबारसक्ते हैं २४ व समुद्र के जलको भेदन

कर सबलोकों को बोर सक्ते हैं क्योंकि सबकुछ करने में समर्थ हैं व चाहें तो बाणोंसे समुद्र का वेग व वायुको भी रोंकदें २५ व पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम अपने विक्रम से लोकों का संहारकर फिर प्रजाओं को उत्पन्न करसक्ते हैं २६ हे रावण रणमें रामचन्द्रजी तुम्हारे जीतने के मानके नहीं हैं व न उनको येराक्षसही जीतसक्ते हैं जैसेपापी पुरुष स्वर्ग को नहीं जीतसक्ते २७ व तुमको कौनकहै हम जानते हैं कि उनको कोई देवता दैत्यभी नहीं जीतसक्ता फिर मारडारना तो जानों बहुतही कठिन है हां युद्धकरके तो कोईभी नहीं मारसक्ता उनके मारने की एकयह उपाय है सो एकचित्तहो के सुनो २८ उनकी भार्य्या लोक में अत्युत्तमा है जिसका सीता ऐसानाम है अवस्था सोरहवर्षकी सब अंग अपने अपने आकार के योग्य रत्नादि भूषणों से भूषित स्त्रियों में रत्नरूप २९ उनकी उस स्त्रीके तुल्य न तो कोई देवीहै नगन्धर्व्वी न अप्सरा न नागकन्या न कोई अन्यही स्त्री फिर मनुष्य की कोई स्त्री उनके तुल्य कैसे होसक्ती है ३० तिससे तुम वनमें उनका मान मथनकर उनकी स्त्री हरलावो बिना जानकी के रामचन्द्र आप न रहसकेंगे मरजायँगे ३१ राक्षसों का राजा रावण इसबातको सुन प्रसन्नहुआ व चिन्तनाकर अकम्पनसेबोला ३२ कि बहुतअच्छाप्रातःकालही रथपैचढ़अकेलेसारथिकेसंग हमजायँगे व सीताको हर्षितहो इस महापुरीको लावेंगे ३३ यहकहगदहा नहे रथ पै सवारहो सूर्य्यसम प्रकाशित रथहोनेकेकारणरावण सब दिशाओं को प्रकाशित कराताहुआ चला ३४ उससमय वह राक्षसेन्द्रका रथआकाश यममार्ग्गमें तिरछाचलनेके कारण ऐसाशोभित हुआहै जैसेबादरकेबीचमें चन्द्रमा शोभित होताहै ३५ अकम्पननेजाना रावण जनस्थानको जाताहै पूरवहमारीच नाम राक्षसके आश्रमपै पहुंचा व ताटका के पुत्रमारीच को प्राप्त हुवा वहां मारीचने मनुष्यों को जो पदार्त्थ दुर्ल्लभहैं उन खानेपीने की वस्तुओंसे राजा रावण की पूजाकी ३६ जब अच्छी तरह आसन जल अन्नादि से रावण कीपूजा करचुकातो बहुतहितवचनसेमारीचबोला ३७ हे राक्षसाधिप हे रावण लोकों का कुशल तोहै जिससे तुम बड़ी जल्दी के साथ आयेहो हमको बड़ी शंकाहै परजानते नहींहैं कि क्यों ऐसे हरबर आये ३८ जब मारीचने महातेजस्वी रावण से ऐसाकहा तो बतलाने

में बड़ा चतुररावण बोला ३९ हे तात अति कठिन कर्म्म करनेवाले रामचन्द्रने सबघोर से रक्षा करनेवाले खरादि हमारेराक्षसोंको मारडारा व अवध्य जनस्थान को भी निपातित किया ४० अब हम तिनकी स्त्री हराचाहते हैं इस कार्य्य में दूत आपबनें बसयही सहायता चाहते हैं रावण के वचन सुन मारीच बोला ४१ हे राक्षसशार्दूल मित्रका रूप धारण किये तुम्हारे किस शत्रुने सीता को बताश कि तुम हरलावो वह कौनहै कि तुम्हारेयहांसे बढ़ायागयाहै व बढ़तीको नहीं मानता४२ सीताको यहांलावो ऐसाकौन कहताहै भला हमसेबतावो तोवह बतानेवाला कौनहै जो सब राक्षसों के लोक का शृंग काटना चाहताहै ४३ जो तुमको इस विषयमें प्रोत्साहित कराताहै वह तुम्हारा शत्रु है इसमें कुछभी सन्देह नहीं क्योंकि वह तुमसे विषधर नागके मुखसे विषवालादांत उखड़ाना चाहता है ४४ हेराजन् इस जानकीके हरण रूप कर्म्म से तुमको किसने कुमार्ग्ग में चलना सिखाया अरे सुखपूर्व्वक अपने घरमें सोतेहुये तुम्हारे शिरमें किसने यह थपेड़दी ४५ हे रावण अति विशुद्ध सूर्य्यवंश में जन्म सोई मानों लम्बी शूंड़है जिसकी तेजही महामद जिसका बड़े दीर्घ बाहुही दांतरूप जिसके ऐसे मदान्ध हाथी रूप रामचन्द्रजीको संग्राम में लड़ने के योग्य तुम नहींहो ४६ हे रावण रणके मध्यकी स्थिति के लिये जो उत्सुकता सोई मानो बारहैं जिसके व चतुर राक्षस लोगही जानों मृगहैं तिनके नाश करने वाले बाणहीं मानों अंगहैं तिनसे पूर्ण पैन खड्ग सोई दांत जिसके ऐसे पुरुषसिंह श्रीरामचन्द्रजी को सोतेहुये जगाने के योग्य तुम नहींहो ४७ हेराक्षसराज हे रावण धनुष के चढ़ाने में जो भुजोंको वेगकरना परता वही कीचड़ जिसमेंहै बाणोंका चलना मानों लहरियों का समूह जिसमें ऐसे अति घोर रामही मानों पाताल के मुख हैं सो इसमें कूदने के योग्य तुमनहीं हो ४८ ॥

कुंडलिका ॥

लंकेश्वर निशचरपते रावण होहु प्रसन्न ।
कृपाकरहु निज जनन पर लंकहिजाहुससन्न ॥
लंकहि जाहु ससन्न आपने दारन संगा ।

विहरहु नित सुखसहित नहोकुछ मानसभंगा ॥
भार्य्यायुत श्रीराम बनहि बिहरैं अवधेश्वर ।
यामहँ सबसुख होय यहीमम मतलंकेश्वर १ । ४९
दो० रावण इमि मारीचके सुनिकै वचन तुरन्त ॥
लङ्काकहँलौट्यहुभवन निजपैठ्यहुधनवन्तर । ५०

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेएकत्रिंशस्सर्गः ३१ ॥

वहां मारीच के स्थानसे रावण तो अपने गृहको आया यहां शूर्पणखा अति भयङ्कर कर्म्म करनेवाले चौदहहजार राक्षसों को अकेलेही रामचंद्र जी से मारे देख १ व दूषण खर त्रिशिरा को भी रणमें मारे देख फिर मेघके समान गर्ज्जने लगी २ फिर बहुत गर्ज्जगुर्ज्जकर अन्य लोगों से दुष्कर रामचन्द्रजीके कर्म्मदेख अति ऊबके रावणकी पालीहुई लङ्कापुरी को गई ३ व जाय देखातो देवताओंके संग बैठेहुये इन्द्रके समान मन्त्रियों केसाथ महातेजस्वी रावण विमानपै बैठाहै ४ सूर्य्यवत्प्रकाशित सुवर्ण के आसनपै बैठा कैसा लगता जैसे सुवर्णकी ईंटोंसे बनी हुई वेदीपर बहुत घृतहुनाहुआ अग्नि शोभित होता ५ फिर देवता गन्धर्व्व भूत व महात्मा ऋषिलोगोंके जीतने के बाहर अति भयंकर रूप मानो मुह बाये दूसरा यमराजही बैठाथा ६ फिर देवताओं व राक्षसों के संग्राम में मणि युक्त वज्रकृत घाव सहित व ऐरावत हाथीके दांतों से बड़ाभारी चिह्न छाती में विद्यमान ७ फिर बीशभुजा दशशिर व दर्शन करनेके योग्य छत्र चामरादियुक्त बड़ीचौंड़ी छातीवाला वीरस्वरूप सब राजलक्षणोंसे लक्षित ८ फिर धारण कियेहुये वैदूर्यमणिके समान प्रकाशित पक्के सुवर्ण के सब भूषण पहिरे सुन्दर भुजावाला सुन्दर शुक्लदांत बड़ाभारी मुख पर्व्वताकार डील ९ फिर सैकरोंबार देवताओंसे व विष्णुसे युद्धकरनेके कारण विष्णुजीके चक्रसे व देवोंके अन्य शस्त्रास्त्रों से ताड़ित १० व सबदेवोंके आयुधोंसे माराहुआ व जो समुद्र किसीसे चलायमान नहीं होते उनको भी चलायमान करनेवाला व शीघ्रही सर्व्व कार्य्य करनेवाला ११ व पर्व्वतों को भी उखारडारनेवाला देवताओं का भी मर्दन करनेवाला धर्म्मों को नाशकरनेवाला परस्त्री गमनकरनेवाला १२ सब दिव्यास्त्र-

धारी सदा यज्ञविघ्नकारी नागोंकी भोगवती पुरीमें जाय वासुकि नाम सर्प्पराजको जीत १३ व तक्षकनाम सर्प्पको जीत तक्षककी स्त्रीको हरलानेवाला फिर कैलास पर्व्वतपै जाय कुबेरजीको जीत १४ पुष्पकनाम यथेच्छाचारी विमान लानेवाला नन्दननाम वन व नलिनी व चैत्ररथवन १५ इनको नाशकरनेवाला व क्रोधसे देवोंकी फुलवाड़ियों को उजारनेवाला फिर ऊते हुये महाभाग्यवाले चन्द्रमा व सूर्य्यों को १६ अपनी वाहोंसे निवारण करनेवाला पर्व्वतके शृङ्गके समान ऊंचा व दशहजारवर्ष वनमें तपस्याकर १७ आगे जिसने ब्रह्माजीके लिये अपने शिर अग्निमें आहुतिकर दियेथे तभी देवता दानव गन्धर्व्व पिशाच पतंग सर्प्प १८ इनसे संग्राममें अभय मांगलिया मनुष्यके आकार परब्रह्मपरमात्माको छोड़ और ब्रह्माकी सृष्टिभरसे न माराजाऊं यह वरदान मांगलिया था व यज्ञों में ब्राह्मण लोग जिसकी स्तुति मन्त्रों से करने लगेथे १९ व जो महावली यज्ञ में आहुति डारनेके समय यज्ञोषधि वह वनसाकल्य को नष्ट भ्रष्ट करदेताथा जो यज्ञ होम करभी डालते उनका फल हरलेता ऐसा महादुष्ट ब्रह्मघाती क्रूर कर्म्मकारी रावणथा २० फिर बड़े कर्कश स्वभाववाला व दयाहीन प्रजाओं के अहित में रत सब प्राणी व सबलोक वालों को भय देनेवाला २१ ऐसे क्रूर कर्म्म करनेवाले महावली रावणनाम राक्षस अपने भाईको उस राक्षसी शूर्पणखाने देखा जोकि दिव्य वस्त्र आभरण धारण किये दिव्य माला पहिनेथा २२ आसनपै सुन्दर रीति से बैठाथा उस समय मानों कालही की मूर्त्तिथा ऐसा राक्षसेन्द्र महाकाय पुलस्त्य मुनि के कुलकी वृद्धि करनेवाला २३ उपरि लिखित गुण युक्त रावण से भय विह्वल हो वह राक्षसी बोली शत्रुओं के मारनेवाला मन्त्रियों के बीच में बैठा रावण बैठाथा २४ ॥

[illegible]

[illegible]

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेद्वात्रिंशस्सर्गः ३२ ॥

तिसके पीछे मन्त्रियों के बीच में बैठेहुये लोकके रोवानेवाले रावण

[illegible] कठोर वचन बोली कि हे रावण तुम काम के भोगों में प्रमत्तहो इसीसे अपने मन माने काम करते हो तुम्हारे ऊपर किसीका अंकुश रूप दबावभी नहीं इसीसे बड़ी भारी भय उठी है व तुम्हारे जानने के योग्य है पर तुमनहीं जानते २ सुन्दर भोजन व स्त्रियों के ग्राम्य सुखों में लीन स्वेच्छाचारी व लोभी राजाको प्रजा बहुत नहीं मानती जैसे कि स्मशान के अग्नि को अपवित्र जान लोग अन्य कार्य्य के योग्य नहीं समझते ३ जो राजा अपने आप समयपर आवश्यक कार्य्य नहीं करता वह राज्य सहित तिन्हीं कार्य्यों से नष्ट होजाता है ४ दुराचारी कुरूप पराधीन राजाको लोग दूर से बराते हैं जैसे नदी के दलदलको हाथी बराते हैं ५ जो राजा लोग अपने देश की रक्षा नहीं करते इसीसे उनका देश पराधीन होजाता है फिर वे राजालोग उस राज्यकी बढ़तीसे नहीं प्रकाशित होते जैसे पर्व्वत लोग समुद्रमें परनेसे नहीं प्रकाशित होते ६ अति प्रशस्तयत्न युक्त देव गन्धर्व्व किन्नर दानवों से बिगारकर अयोग्य आचरण करनेवाले तुम कैसे राजाहोसकोगे ७ हेराक्षस तुम्हारी बालकों कीसी बुद्धि है बरन महानिर्बुद्धि हो क्योंकि जो वस्तु जानने के योग्य है उसको नहीं जानते फिर कैसे राजा होसकोगे ८ जिन राजाओं के दूत को सब नीति उनके अधीन नहीं वे साधारण लोगों के तुल्य हैं कुछ राजाओं में उनकी गणना नहीं होसक्ती ९ जिससे कि राजालोग दूतोंकी द्वारा दूर २ के सब कामोंको देखलेते हैं इसीसे वे लोग दीर्घचक्षु कहाते हैं १० व जिससे कि तुम्हारे भाई बन्धु परम हितकारी जनस्थान निवासी मारेगये उनको तुमने आजतक न जाना इससे हमतुम को दुराचारी मानती हैं क्योंकि तुम साधारण मंत्रियों के बीच में बैठतेहो यदि कोई विशेष बुद्धिवाला मंत्री होता तो अबतक जरूर तुमको खबर करता ११ देखो भयंकर कामकरनेवाले चौदहहजार राक्षस खरदूषण सहित अकेले रामचन्द्र से मारेगये १२ व उन्हीं रामचन्द्रजी ने ऋषियों को अभय दानदिया दण्डकारण्य भरको कल्याणकिया व सम्पूर्ण जन स्थान को भयभीत करदिया ऐसे अद्भुत कर्म्मकरनेवाले रामहैं १३ परन्तु हे रावण तुम एकतो लोभी ठहरे दूसरे प्रमत्त तीसरेपराधीन फिर अपने

रक्षक नहीं समुझकर भयको क्या जानो १४ तीक्ष्णस्वभाव थोड़ा देनेवाला मतवाला अहंकारी मूर्खदुःखपरने पर ऐसे राजा को सब प्राणीछोड़देते हैं १५ व अतिमानी ग्रहण करने के अयोग्य अपनेहीं से अपना महत्त्व जनानेवाला सदाक्रोध करनेवाला ऐसे राजाको विपत्तिकाल में स्वजन भी मारडारताहै १६ जो राजाकरनेके योग्य स्वजनों की रक्षानहींकरता व स्वजनों के ऊपर दुःखपरनासे आपनहीं डरता वह शीघ्रही राज्य से च्युत होजाता व सब लोग उसको तृणके समान जाननेलगते हैं १७ सूखेकाठों से लोगों के कामहोतेहैं ढेलों से व धूलि से भी बहुतकाम होते हैं परजिसराजा से राज्य छूटजाताहै उससे किसी का कुछ भी काम नहीं होसक्ता १८ जैसे पहिराहुआवस्त्र किसी दूसरे के काम का नहीं होता व जैसे पहिरी हुई फूलों की माला फिर कामकी नहीं रहती इसीतरह राज्य से भ्रष्टराजा समर्त्थ भी हो तो निरर्त्थकही होताहै १९ व जो राजा अप्रमत्त सर्व्वज्ञ जितेन्द्रिय कृतज्ञ धर्म्मशीलहोता वह बहुत दिनोंतक राज्यकरता है २० व जो राजा नेत्रोंसे चाहै सोता भी रहताहो परंतु नीतिकरनेवाले नेत्रोंसे जागतारहै व जिसके ऊपर क्रोध वा प्रसन्नता करै उसका फल उसके ऊपर पहुंचै वह राजा लोगोंसे पूजितहोता है २१ हे रावण तुमतो निर्व्बुद्धिहो क्योंकि इन सब गुणों से हीनहो नहींतो इतने राक्षसों का महावध हुआ तुमने दूतोंके द्वारा न जानलिया २२ जिससे तुम विषय वासनामें अत्यासक्तहो इसीसे सबका अनादर करतेहो व इसीसे देशकालके निश्चयको नहींजानते व इसीसे गुणदोषके निश्चय करनेमें तुम्हारी बुद्धि योग्य नहीं इसीसे तुम बहुत दिनोंतक राजा न रहोगे वरन शीघ्रही नाशको प्राप्त होजावगे २३ रावण इसतरह से शूर्पणखाके मुखसे कहे अपने दोष बुद्धिसे देख धन अहङ्कार व बल से संयुक्त हो विचारने लगा २४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेत्रयस्त्रिंशस्सर्गः ३३ ॥

तिसके पीछे शूर्पणखा को कठोर वचन कहती हुई देख मंत्रियों के बीचमें बैठा रावण क्रोधकर पूंछनेलगा १ कि राम कौनहैं उनका वीर्य कैसाहै रूप व पराक्रम कैसा है इस दुस्तर दण्डकारण्यमें क्यों आये २

व रामचन्द्रके आयुध कौन कौनहैं जिनसे वे राक्षस मारेगये व खरदूषण त्रिशिरा भी हतहुये ३ व तेरेकान नाक किसने काटलिये हे मनोहरांगि सो तुमकहो जब इसतरह रावणने पूंछातो मारे क्रोधके मूर्च्छित शूर्पणखा ४ रामचन्द्रजीका यथावत् हाल कहनेलगी कि रामचन्द्रजीकी बहुत लम्बी तो बाहैं हैं व बड़ेबड़े नेत्र चीर व मृगचर्म्म धारण कियेहैं ५ रूप उनके समान कन्दर्पका है और वे महाराजाधिराज दशरथजीके पुत्रहैं उनके धनुषके समान इन्द्रका धनुषहै उसमें सुवर्णके वन्द लगेहैं उसे कानतक खींच ६ महाविषधर सर्पोंके समान देदीप्यमान वाण छोड़तेहैं परन्तु महावलवान् श्रीरामचन्द्रजी को न तो हमने कठोर वाणही लेते देखा न छोड़तेही देखा ७ न संग्राममें धनुषही कभी खींचते देखा केवल मारीहुई सेनातो अलवत्ता वाणोंकी वृष्टिसे देखा ८ जैसे इन्द्र अकालमें पत्थरोंकी वर्षासे कभी कभी अन्नों का नाश करदेते हैं ९ देखिये चौदह हजार राक्षसोंको अकेले पैदल श्रीरामचन्द्रजीने मारडाला १० सोयह नहीं कि बहुतदिनों में केवल डेढ़ही मुहूर्त्तमें खरदूषणादि सहित सबों को समाप्त करदिया ऋषियोंको अभय दानदे दण्डकारण्य निवासियोंको आनन्दित कर दिया ११ केवल एक हमीं को बनाया तरस्कार करके रामचन्द्र महात्मा ने छोड़दिया है सो भी क्या करें सर्व्वज्ञ सर्व्वदर्शी होनेके कारण स्त्री हिंसासे शङ्कित होगये क्योंकि धर्म्मशास्त्रानुसार स्त्री अवध्यहै १२ फिर अकेलेही नहीं हैं उनके एक महातेजस्वी गुणोंसे उन्हीं के तुल्य विक्रम उनमें अनुरक्त व उनके बड़ेभक्त अति वीर्य्यवान् लक्ष्मण नाम भाईहैं १३ ये किसी वीरकी गन्धहीनहीं सहते आप महादुर्जय औरको क्षणमात्रही में जीतलेते महाविक्रमी बुद्धिमान् व बलीहैं सत्य २ तोरामचन्द्रजीका दहिनाहाथहैं बरनउनके प्राणहीहैं हांइतनाअंतरहै कि औरदश प्राण तो रामचन्द्रजीकेशरीरके भीतरहैं व येबाहररहतेहैं १४ व रामचंद्रजीकी एक विशालाक्षी पूर्णमासीचंद्रमा सममुखी पतिको परम प्रिय व पतिके हितमें रात्रिदिन लगीहुई स्त्रीहै १५ उसके अति शोभन केशहैं नासिका बहुतही सुंदर जाँघे अति मनोहर रूप अतिही सुंदर महायशस्विनी मानो उस वनकी दूसरी देवताहीहै विराजमान होरही है १६ उसके देहकारंग तपाये सोनेके समानहै ऊंचे व लाल सबहाथ

पैरके नखहैं सब अंग जैसे लम्बे मोटे चौड़े चाहिये वैसेही हैं नितम्बा-
दि भारी मध्यभाग सूक्ष्म राजा जनककी कन्या सीता ऐसा नामहै १७
न तो उसके रूपके समान कोई देवीहै न गंधर्व्वी न यक्षी न किन्नरी
कहांतक गिनावें वैसी रूपवतीस्त्री हमने आजतक भूतलमें देखीहीनहीं
१८ जिस पुरुषकी भार्य्या सीता हों व जिसको प्रेमसे लपटें वह सब
लोकों में इंद्रसे भी अधिक सुखीहो जीवे १९ सो वे जानकी जिसके
सब शरीर बड़ाईही करनेके योग्यहैं व जो परम सुशीलाहैं रूपमें जानों
अपने समान चौदहो भुवनोंमें किसीको राखतीही नहीं तुम्हारे योग्य
भार्य्याहैं व तुम तिसके योग्य श्रेष्ठ पतिहो २० इससे यही शोचविचार
तिस विस्तीर्ण जघनापीन व ऊँचे पयोधरवाली व श्रेष्ठमुखीको तुम्हा-
री स्त्री बनानेके लिये हम आनने गईथीं २१ हे महाभुज परंतु महाक्रूर
स्वभाव लक्ष्मणने हमको विरूप करदिया यदि तुम तिन पूर्णचन्द्रानना
वैदेही को देखोगेतो कामके बाणों का निशाना होजावगे २२ जो उन
को अपनी भार्य्या बनाया चाहते हो तो जीतने के लिये शीघ्रही दहि-
ना पाव आगेधरो चलो २३ हे राक्षसेश्वररावण जो यह हमारा वचन
तुमको रुचताहो तो निशंकहोके हमारा यहवचनकरो २४ इसकेसिवाय
बिना इस उपायके राक्षसोंके प्राणभी न बचेंगे क्योंकि इन राक्षसों की
अशक्ति भी जानतेहो कि रामचन्द्रजीको न जीतसकेंगेफिरमारतो डारेंही
जायँगे योंतो सीता को तुम अपनी भार्य्या बनाने के लिये लावो बिना
उनके रामचन्द्र आपमरजायँगे जानों बेचारे राक्षसोंके प्राण बचें २५ ॥

चौ० सीता गर्भ राम कर वामा । जान निसाचर इन सम ब्रह्मवाना ॥
खरदूषण सह सबगे मारे । यह सुनि करियेउचितविचारे १ । २६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेचतुस्त्रिंशस्सर्गः ३४ ॥

शूर्पणखाके ऐसे रोमहर्षण वचनसुन मंत्रियोंकी सम्मतिले जो करने
के योग्यथा उसका निश्चयकर रावण मारीचके आश्रमको चला १ जाने
के समय तिस कार्य्यमें अच्छीतरह प्रवेशकर व उसके सब विषयों को
अच्छीतरह विचार दोष व गुणभी विचार लिये बल व अबल भी सोच
विचार लिया उसका सिद्धान्त जानकी जी का हरना व महात्मा राम-

[illegible] से विगारकरना यही उत्तम समझा २ जो २ कर्त्तव्य था सबका [illegible] में निश्चयकर स्थिर बुद्धि हो प्रथम बाजिशाला में गया ३ यान-शाला में जाय सारथिको एकान्त में बुलाय कहा हमारा रथ तैयारकरो [illegible] कहतेही बड़े जल्दबाज उसके सारथि ने सबसे उत्तम जिसे [illegible] ने प्रसन्न किया रथ तैयार किया ५ रावण उस यथेच्छाचारी कांचन से बनेहुये रत्नों से बिभूषित व पिशाचाकार मुखवाले गदहे नहे रथपै सवार हुआ ६ व रथ चला उसका मेघों के समान नाद होता था ऐसेरथपै चढ़ कुबेर का छोटा भाई रावण शोभायमानहो समुद्र के भीतर कोचला ७ उजले बालों का चमर होता जाताथा उजलाही छत्र ऊपर लगाथा वैदूर्य्यमणि कासा उसका नील स्वरूप था सब तपाये हुये सुवर्णही के भूषण धारणकिये था ८ दशमुख व बीसभुजा उसके थे सब सामग्री देखनेकेही योग्य थी देवताओंका शत्रु व मुनीन्द्रों को मारनेवाला मानोंदशकँगूरोंका पर्व्वतराजसा देखाईदेताथा ९ ऐसारावणउसयथेच्छा-चारी विमानपै चढ़ शोभायमान हुआ यह बिदितहोताथा मानों बिजुली सहित बादरबगुलोंकी पंक्तिकेसंग आकाशमार्ग्ग में जाताहै १० रावण जाते २ समुद्र के किनारेपर पहुंचा बीच में बहुतसे पर्व्वत व समुद्र की तराई के देश देखते जाता जो देश नानाप्रकार के पुष्प फल व वृक्षों से युक्तथा ११ व शीतमङ्गल जलसंयुक्त तलैयांचारोंओरसे जिसमेंथींवेद युक्त व बड़े २ आश्रमोंसे अलंकृतथा १२ केराका वन सबओरसेलगाथा नारियरकेभी वृक्षलगेथे साँखू तार तमालादिकोंकेपुष्पितवृक्षलगेथे १३ जोसदा निराहारही रहते ऐसे परमर्षियोंसे शोभितनाग गरुड़ गन्धर्व्व व किन्नरभी हजारों वहाँविद्यमानथे १४ कामको जीतेहुये सिद्ध व चारण लोगोंसेभी शोभितथा आज धूम्र वैखानस माष बालखिल्य मरीचिपआदि सिद्धलोग १५ दिव्य आभरण व मालाधारण किये अपनी दिव्य रूप स्त्रियोंके संग घूमरहेथे क्रीड़ा रसकी विधि जाननेवाली अप्सराओंके संगभी सिद्धिलोग विहर रहेथे १६ देवोंकी श्रीमती स्त्रियांभी विचरतीं अमृत पीनेवाले देव व दानवोंके समूह विचरतेथे १७ हंस कराकुल लव सारसादि पक्षी बोलरहेथे वैदूर्य्यमणि ठौर २ लगेथे समुद्रके तेज से जो पदार्त्थथेबहुतथे इससेसबपदार्त्थोंकी सघनताथी १८ जिसदेशके

चारों ओर गौरवर्ण विशाल दिव्यमालायुत व गीत वादित्रसेवित विमान घूमरहेथे १९ अपनी तपस्यासे लोक जीतनेवाले कामग विमानों पैचढ़े गन्धर्व्व अप्सराओं कोभी रावणने उसी सागर के अनूप देशमें देखा २० वहीं गोंदरस मूल सहित हजारों सुन्दर व नासिका के तृप्ति करनेवाले चन्दनों के वृक्षदेखा २१ व अगरोंक वनउपवनादि अङ्कोल वृक्षोंके भी सुगन्धित पुष्पितफलितवन उपवन देखा २२ तमालनाम वृक्षके फूलव मरिच के गुल्म समुद्र के तीरही परफूले व पतित देखे २३ पर्व्वत व प्रवालों के समूह चांदी व सोने के शृङ्गभी देखे २४ मनोहर सोते कमल प्रफुल्लित कुण्डधनधान्य सहित स्त्रीरत्न सहित देखे २५ औरभी हाथी घोड़े सहित नानाप्रकार के नगर देखते हुये रावण ने शीतलमन्द सुगन्ध पवन सहित २६ सिन्धुराजका अनूप देखा देखने में स्वर्गहीके समान था तहांचारों ओरसे मुनियों से सेवित मेघके सदृश श्याम एक बरगद का वृक्ष देखा २७ जिस बरगदकी डारें सबओर चारचारसै कोशतक चलीगईं थीं एक समय गरुड़जी एक महाहाथी व एक महा कछुहा ले भक्षण करनेके लिये २८ जिसकी शाखापै आयबैठे उन पक्षियों के स्वामी गरुड़जीने मारेभारके २९ उसकी बहुत पत्रोंवाली एक डार तोड़ डारीउस बरगदके तरे वैखानस माष वालखिल्या मरीचिप ३० आज धूम्र येसब महर्षि लोग एकत्रही रहते थे तिन मुनि लोगों के ऊपर दया करनेके लिये गरुड़जी ने उस टूटीहुई डारको ३१ हाथमें लेउस हाथी व कछुहाको एक पैरसे दबाय महात्मा गरुड़ ने उनका मांस भोजनकर ३२ उस शाखासे निषादके देश को नाश करदिया व उन मुनिलोगोंको छोड़ाय बड़े हर्षको पहुंचे ३३ उसहर्षसे उनका विक्रम दूनाहोगया तब उन्होंने अमृत लानेका विचारकिया ३४ जहां अमृत धराथा; उसके ऊपर लोह का जाल लगा था उसको तोड़ जिस इंद्र केघरमें अमृत धराथा उसेभी तोड़ताड़ जो रक्षक रखातेथे उन्हें मारइंद्र के घरसे अमृतलाये ३५ तबसे गरुड़जीके डारतोड़ने से उसवृक्षमें चिह्नबनगया था तपस्वियोंसे सेवित व गरुड़के चिह्नसे चिह्नित तिस सुभद्र नाम बरगदको रावणने देखा ३६ तिसके पीछेसमुद्रके पारजाय पुण्यदायक एकवनमें मारीच नाम राक्षस का आश्रम देखा ३७ वहां

मृगचर्म्म धारणकिये जटारखाये परिमित भोजन करनेवाले मारीचनाम राक्षसको देखा ३८ वहां पहुंचते पहुंचते मारीचने मनुष्यों के दुर्ल्लभ पदार्थोंसे रावणकी विधिपूर्व्वक पूजाकी ३६ भोजन जलादि से फिर मारीच अपने हाथों रावणकी पूजाकर अर्थका उपयोगी वचन बोला ४० हे राक्षसेश्वर रावण लंकामें कुशल तोहै किसलिये तुमफिर इतनीजल्दी यहां आये ४१ जब महातेजस्वी रावणसे मारीचने ऐसाकहा तो बोलने में अति चतुर रावण बोला ४२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेपंचत्रिंशस्सर्ग्गः ३५ ॥

हे मारीच हेतात हमारे वचन सुनो हमबड़े दुःखित हैं इस दशामें आपही हमारी गतिहैं १ आपतो जानते हैं जिस जनस्थान में हमारा भाई खर व दूषण व हमारी बहिन शूर्पणखा २ त्रिशिरा नाम राक्षस जो मांसही भोजन करता है इनके सिवाय और भी बहुतसे निशाचर वहां बहुत दिनों से रहते हैं ये सब युद्धमें बड़े उत्साही हैं ३ ये राक्षस लोग उस महावनके रहनेवाले मुनिलोगों को मारनेके लिये हमारी आज्ञासे वहां बसते हैं ४ वे अति भयंकर कामकरनेवाले चौदह-हजार राक्षस बड़ेशूर बड़े युद्धकरने में उत्साही व खर के चित्तके अनु-सार काम करनेवाले ५ महाबलवान एकत्रहोके जनस्थान में बसे थे अब सब के सब संग्राम में रामचंद्र के साथ ६ नाना प्रकारके शस्त्रास्त्र चलाय बड़ा क्रोध कर समरमें रामचंद्रने ७ बिनाकुछ कठोरवचन कहे-हीसुने धनुषपै वाण चढ़ाय महातेजस्वी चौदहहजार ८ मानुषका अव-तार लिये रामने तीक्ष्ण व दीप्तशरोंसे मारडारा खरको भी संग्राम में मारडारा दूषणभी मारागया ६ त्रिशिराको भी मारा व दंडकवन को निर्भय करदिया रामकी ऐसी दशाहै कि क्षत्रियों में निर्ल्लज्ज जान क्रोधकर उनके पिताने घरसे निकालदिया १० वही सहितस्त्री वनमें आयेहैं उन्हींने इन सब राक्षसों को माराहै ये बड़ेही अशील कर्कश स्व-भाव तीक्ष्ण प्रकृति मूर्ख लोभी अजितेन्द्रिय हैं ११ सबधर्म्मोंको त्याग कियेहैं इससे महाअधर्म्मात्माहैं सब प्राणियोंका अहितहीचाहते व करते हैं जिन्होंने बिना बैर कुछ उनका कोई बिगाड़ता नहींथा पर केवल

अपने बलके घमंड में आय १२ काननाक काटलेनेसे हमारी बहिन को विरूपित करदिया इसवास्ते इनकीभार्य्या सीताको जोकि देवकन्याओं से भी बढ़कर रूपमें है १३ हम अपने बल से लआवेंगे इस विषयमें आप हमारे सहायकहो तुम महाबलवान् सहायकके साथ १४ व अपने भाइयोंकेसंग हमदेवताओं को भी कुछनहीं समझते तिससे हेमारीच आप इसविषयमें हमारे सहायक हो क्योंकि आप समर्थ हैं १५ वीर्य्ययुद्ध व अहंकार में तुम्हारेसमान और दूसरा नहीं हैं क्योंकि उपाय से तुम महाशूर व महामाया विशारदहो १६ हे निशाचर इसी अर्थ हम तुम्हारे पास आयेहैं जो तिसकार्य्यमें सहायता करनीहै बताते हैं सुनिये १७ तुम चांदीकी बिन्दी सहित सुवर्ण का मृगबन रामचंद्रके आश्रमपै सीताके सामने होके जायचरो १८ जबमृगरूपी तुमको सीता देखेंगी तो निश्चयहै कि अपने पति व देवरसे कहेंगीकि इसको पकड़ो १९ जब वे दोनों जन तुमको पकड़ने चलेजावेंगे वह स्थान शून्य होजायगा तो हम सुखसे निराबाधहो सीताको हरलावेंगे जैसेराहु चद्रमा की प्रभा को हरलाताहै २० तिसके पीछे भार्य्या हरजाने के कारण रामचंद्र दुर्व्वल होजायँगे उनको सुखसे रणमें हरादेंगे २१ रामचंद्रजी कीकथा सुनतेही मारीचका मुख सूखगया व अति भयभीत होगया२२ सूखे ओठ जीभसे चाटने लगा नेत्रोंका पलक भांजना बन्दहोगया रावणकी ओर एकटक देखनेलगा मानो मृतकही होगया महा कष्टितहो बारबार देखने लगा २३ ॥

कुण्डलिका ॥

ब्याकुल चित मारीच जो जानत राम प्रभाव ।
महाविपिन महँ भेंटभै चल्यो न कछू उपाव ॥
चल्यो न कछू उपाव सुमिरिसोरावणसों कह ।
युगकरजोरि निहारिजोन हित करताकररह ॥
अरुनिजहूहित करण बचनभाष्योअतिआकुल ।
महा पराक्रम बीर धीरतजि अतिभयब्याकुल ११ । २४

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेषट्त्रिंशस्सर्गः ३६ ॥

रावणके वचन सुन वार्त्ताकरने में बड़ाचतुर मारीच राक्षसोंके ईश्वर

रावण से बोला १ हे राजन् संसारमें सदा प्रिय कहनेवाले पुरुष बहुतेरे हैं परन्तु सुननेमें स्वामीका अप्रिय और अन्तमें स्वामीका हितकारक ऐसे वचन कहनेवाले व सुननेवाला दोनों संसारमें दुर्ल्लभ हैं २ इंद्र व वरुणके समान महावीर्य्य व श्रेष्ठ गुणोंसे सर्व्वोपरि विराजमान रामचंद्रजीको तुम अच्छीतरह नहींजानते उसकाकारणयहहै कि तुम्हारी बुद्धिस्थिर नहींहै क्योंकि तुम्हारे योग्य दूतनहीं जिनकी द्वारा रामचंद्रजीके गुण जानलेते ३ हे तात इन बेचारे राक्षसों का कल्याण हो कहींतुम्हारे कोपकरायेहुये रामचंद्र राक्षस रहित सबलोक न करडारें ४ हम जानते हैं कि तुम्हारे प्राणान्तही करनेके लिये तो सीतानहीं उत्पन्न हुई भाई सीताके लआनेका जो व्यापारहै कहीं राक्षसों के दुःखका मूल तो नहो ५ महाकामी यथेच्छाचारी निरंकुश तुमको स्वामीपाय तुम्हारे व सब राक्षसों के साथ लङ्कापुरी कहीं नाशको तो न प्राप्त होजाय ६ क्योंकि तुम्हारे समान यथेच्छाचारी कामी दुश्शील पापी मंत्रियों से शिक्षित राजा अपना को व मंत्री राज्यादिकों को भी नाशता है ७ रामचन्द्रजीके पिताने उनका परित्याग नहीं किया न वे मर्य्यादा रहित हैं न लोभी हैं न दुश्शील न क्षत्रियोंमें निर्ल्लज्ज ८ न किसीतरहसेधर्म्म व गुणोंसे हीन किन्तु कौशल्याजीके आनन्दके बढ़ानेवालेहैं तीक्ष्ण स्वभाव नहीं हैं न सब प्राणियोंके वैरीहैं किन्तु सब प्राणियोंके हितमें तत्परहैं ९ अपने सत्यवादी पिता को कैकेयी के छलमें परेदेख उनको सत्यप्रतिज्ञ करने के लिये धर्मात्मा रामचन्द्रजी वनको चले आयेहैं १० अपनी सौतेली भी माता कैकेयीका व अपने पिता दशरथजीका प्रियकरनेके लिये राज्य व सब भोगविलास छोड़ दण्डकारण्यको चलेआये हैं ११ हेतात न तो रामचन्द्रजी कर्कशस्वभाव हैं न मूर्ख हैं न अजितेन्द्रिय न उनमें झुंठाई हमने किसीके मुखसे सुनीहै आप उनके विषयमें झुंठाई न कीजिये १२ किन्तु रामचन्द्रजी शरीरधारणकियेसाक्षाद्धर्म्ममूर्त्ति हैं व साधु प्रकृति सत्य पराक्रम व सब लोकोंके राजा हैं जैसे कि इन्द्र सबलोकों के राजा हैं १३ तुम तिनकी स्त्री सीताको हठकर कैसे इच्छा करते हो अरे वे अपने तेजही से उनकी रक्षाकरते हैं यह हरना तो ऐसा है जैसे कोई सूर्य्यकी प्रभा हरनाचाहै १४ ॥

दो० शरज्वाला असहन धनुष असि इन्धन रण माहिं ॥
बरत राम पावक प्रबल महँ पैठब भल नाहिं १ । १५

धनुष का चढ़ाना सोई मानों प्रकाशित मुख बाणहीं मानों दीप्ति इसीसे असह्य धनुर्व्वाण धारणकिये इसीसे तीक्ष्ण व शत्रु की सेनाके नाशनेवाले १६ अन्तकरूप रामचन्द्रजी के सम्मुख राज्यसुख छोड़ न जाइये नहीं तो अवश्य सम्मुख जातेही तुम्हारा विध्वंस होजायगा १७ जिनकी स्त्री जानकीजीहैं उनके तेज का कोई प्रमाण नहीं जानसक्ता इससे वनमें रामचन्द्रजीके धनुषकी रक्षा मेंटिकी जानकीजीको तुमनहीं हरसक्ते १८ क्योंकि तिन पुरुषसिंह चौड़ीछातीवाले श्रीरामचन्द्रजीको वे प्राणोंसे भी अधिक प्यारीहैं व उन्हींमें चित्त लगायेहैं १९ ऐसे तेजस्वी की स्त्री सीता जबरदस्ती तुम्हारे ग्रहणकरने के योग्य नहीं सीताजीको बरतेहुये अग्निकी शिखाके समान समझना २० हेराक्षसेश्वर इसव्यर्थ उद्यमके करने से क्या है क्योंकि जैसेही रामचंद्रजीने तुमको संग्राममें देखा वैसेही तुम्हारा बिध्वंस होजायगा २१ इससंसार में जीवन सुख व राज्य बहुतदुर्लभ है इससे जो सुखभोग कियाचाहो तो रामचन्द्रजीसे बिगार न करो २२ अब यहांसे जाय विभीषणादि धर्मिष्ठ मंत्रियोंके साथ सलाहकर अपनाभी मन निश्चलकर २३ दोष व गुणोंको बिचार रामचन्द्र व अपना बलाबलदेख फिर रामचन्द्रजीकेबलमें अपना बलमिलाय व जान २४ हमारीजान चुप होरहो तुम्हाराहित इसीमें है हमारे इसकड़े वचनको भी क्षमाकरना तुम्हारे हितके लियेकहाहै २५ ॥

कुण्डलिका ॥

कौशलराज्याधिप तनय महाराज रघुनाथ ।
रणमहँत्यहिसम्मुखगमन करिजनिहोहुअनाथ ॥
करि जनि होहु अनाथ नाथ सिखं मानहुं मेरी ।
कहत वचन हम जौन करहुसोइ करहु न देरी ॥
उत्तम बहुरि बिचार सहित मम वचन सुपेशल ।
सुनहु गुनहु जनिलड़हु अयेराक्षस कुलकौशल १ । २६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकांडेसप्तत्रिंशस्सर्ग्गः ३७ ॥

मारीच अब और वृत्तांत कहनेलगा कि एकसमयकीवार्त्ताहै मारेवीर्य्यके इस पृथ्वीमें घूमते घूमते दशहजार हाथी का बल धारणकिये पर्व्वताकार शरीर १ नीले बादरके समान रूप पक्के सुवर्ण के कुण्डलपहिरे परिघ आयुधलिये किरीटमस्तकपै धरे संसारभरको भयभीतकरतेहुये २ ऋषियों का मांसखातेहुये हम दण्डकारण्यमें घूमतेथे वहांहमने धर्म्मात्मा विश्वामित्रजीको बहुत दिक्क कियातो वे भयभीतहोकर ३ महाराज दशरथजीके निकट जाय बोले कि अमावस्या पूर्णमासी आदि पर्व्वोंमें ये राम हमारी रक्षा करेंगे ४ हे राजन् मारीच नाम निशाचर से हमको भय है जब धर्म्मात्मा महाराजाधिराज दशरथजी से मुनिने ऐसा कहा ५ तो महा भाग्यवाले विश्वामित्र महामुनिसे राजा दशरथ जी बोले कि अभी ये रामचंद्र कुछ कम सोलह वर्ष के हैं व अस्त्र विद्याभी इन्होंने अभी नहीं सीखी ६ इसलिये इनके जानेकी आवश्यकता नहीं हमारी यह चतुरङ्गिणी सेना चलेगी व हम आप चलेंगे वहां पहुंच उस निशाचर को ७ मारेंगे जोकि तुम्हारा शत्रु है जिसका मारना तुमको अभीष्ट है जब मुनि से राजाने ऐसाकहा तो मुनिराज राजासे यह बोले ८ कि यद्यपि संग्रामों में आप देवताओं के भी रक्षक हैं व आपकी सेनाभी बड़ी भारी है जिसके कर्म्म सब लोकों में प्रसिद्धहैं व आपके भी कर्म्म अति प्रसिद्ध हैं कि कई बार दैत्य राक्षसों से देवताओं को बचाया तथापि रामचन्द्र जीके बल को छोड़ और संसारभरका बल इस राक्षस का पराक्रम हटाने के लिये समर्त्थ नहीं इससे आप व आपकी सेना यहीं रहै वहां जानेका कुछ प्रयोजन नहीं ९ । १० ए रामचंद्र जी बालकभी हैं तोभी ऐसे तेजस्वी हैं कि इस मारीच नाम राक्षस को रोकदेने में समर्त्थ हैं इसलिये हम रामचन्द्रको लेकर जायँगे हे राजन् तुम्हारा कल्याण हो ११ यह कह तिनराजकुमार श्रीरामचन्द्रजी को ले परम प्रसन्नचित्त हो विश्वामित्र जी अपने आश्रमपै गये १२ वहां दण्डकारण्य में जब मुनि यज्ञ करनेलगे व दीक्षित हुये तो धनुष में टंकोर दे रामचन्द्र रखवारी करनेलगे १३ उस समय दाढ़ी मोछा आदिजो पुरुषके चिह्न हैं रामचंद्र के नहींथे श्रीमान बालक थे श्यामस्वरूप सुन्दरनयन एक जांघिया मात्र वस्त्र पहिरे धनुर्व्वाण लिये जुलुफ रखाये सुवर्णकी

गुरियों की माला पहिरे १४ अपने दीप्त तेजसे दण्डकारण्य को शोभित करातेहुये द्वितीया के चन्द्रमाके समान उदित रामचंद्रजी देखा पड़े १५ तिसके पीछे मेघ के समान रंग धारण किये तपाये सुवर्ण के कुंडल पहिरे अति बली ब्रह्मासे वर पायेहुये हम वहां आये १६ व रामचन्द्रजी ने देखा कि यह आयुध ऊपर को उठाये चलाआता है हम को देख हर्षित हो रामचन्द्रजी ने धनुषपर रोदा चढ़ाया १७ हम मारे मोह के बालक जान इनको अपने मनसे अवमानकर बड़ी जल्दीकेसाथ विश्वामित्रजीकी उसवेदीपरदौरे १८ रामचन्द्रजीनेशत्रुओंकेहननेवाला एक बिना गांसी का श्यामबाण छोड़दिया कि उसके लगनेसे हम चारसै कोशपै समुद्र में गिरे १६ हे तात तिनवीर श्रीरामचन्द्र जी ने हमारे मारडारनेकी इच्छा नहींकी नहीं तो उसी बाण के लगने से मर भी जाते उन्होंने कृपाकर रक्षाकी तिसपर भी रामचन्द्रजी के उसबाण के लगने से मूर्छित होगये व उतनी दूर चलेगये २० जब उन्होंने अति गहिरे सागर के जलमें हमको गिराया तो बड़ीबेरके पीछे मूर्च्छा जागने पै हेतात लंकापुरीको चलेआये २१ इसतरहसे अशिक्षितास्त्र बालस्वरूप सहजकार्य्यकारी रामचंद्रजीने हमको तो छोड़दिया पर जो हमारे सहायक और बहुतसे गयेथे उनको उन्होंने मारडारा २२ तिससे जो हमारे रोंकनेपर भी तुम रामचन्द्रजी से बिग्रह करोगे तो अति घोर बिपत्तिको पाय नाशहोजावगे २३ व क्रीड़ा रतियोंकी बिधिजाननेवाले समाजोंके उत्सव करनेहारे राक्षसोंको नाहक सन्ताप पहुंचावोगे २४ व जानकीजी के लिये तुम अटारी महल दुमहला पंचमहलादि युक्त नानाप्रकार के रत्नों से संयुक्त लंकापुरी बिनष्टही देखोगे २५ कुछ बात नहीं ऐसा होता भी हैकि बाज़ २ बेचारे आपकुछ पापनहींकरतेसदा पवित्रही रहते पर पापियोंके संगमें बैठने उठनेसे पराएपापोंसे नाशहोजाते जैसे सर्पों के कुंडकी मछलियांउन्हींके संग मारडालीजातीहैं २६ हमने जानलिया कि दिव्य चन्दन देहों में लगाये दिव्य भूषणधारणकिये राक्षसों को अपने दोषसे मारेहुये भूमि में पतित देखोगे २७ व किसी किसी की तो स्त्रियां हरजायँगी वा मारजायँगी कोई कोई सहित स्त्रीहीरहेंगे इसतरह से बहुत तो मारजायँगे जोदैवदैव करबचेंगे उनका

कोई रक्षक न देखाई देगा ऐसे बेचारे राक्षसों को दशोदिशाओं में हाय दादा बापू करते हुये देखोगे २८ व बाणों के जालों से झोरीहुई अग्नि की ज्वालासे सबओरसे पीड़ित सब मन्दिर नशीहुई लङ्का निस्सन्देह तुम देखोगे २९ ॥

चौ० परतिय गमनसमान न आना। महापाप क्षितिमहँ बलधामा ॥
शत सहस्र प्रमदा तवगेहा। नृप परतिय सों करियन नेहा १ । ३०
निज तियसँग बिहरहु दिनराती। पालहु निजकुल देव अराती ॥ मान
वृद्धि अरु राज्यसुहावन। अरु निजतनु पालहु मनभावन २ । ३१
जो चाहहु नारीगण पालन। मित्रवर्ग्ग भल चाहहु लालन ॥ जो चाहहु
चिर समय स्वराजू। रामबैर जनि करहु अकाजू ३ । ३२ हमरयहु
रोकेपर जो रावन। सीता हरण चहहु गे पावन ॥ रामबाण हत सह
परिवारू। यमपुर जैहहु लगिहि न बारू ४ । ३३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेऽष्टत्रिंशस्सर्गः ३८ ॥

हे रावण इसतरह से तो एकबार तबकी हमरामचन्द्रजी से छूटेथे इस समयभी जो वृत्तान्त अभीथोड़े दिनोंका है वहसुनिये १ जोकि दो मृगरूपी राक्षसों के साथ हम दण्डकारण्यको गयेथे वहांभी उसीतरह पराजितहुये २ जबहम अबकी दण्डकारण्यको गयेथे तो हमारी बड़ीभारी आगिके समान तो जीभथी बड़े बड़े दांतथे मृगरूप तो बनायेही थे बड़ी बड़ी सींगेंथीं महा बलवान् रूपथा दण्डकारण्य में मांस खाते हुये घूमते थे ३ हे रावण जहां जहां अग्निहोत्र यज्ञ होतथे व जहां जहां तीर्थरूप वृक्षथे वहां वहां तिन तपस्वियों को मारते खाते हम घूमते थे ४ उस दण्डकारण्य में धर्म्मचारी ऋषिलोगों को मार मार उनका रुधिर पीते व मांस भोजन करते थे ऋषियोंकाही मांस भोजन करते व महाक्रूर स्वभावहो वनमें जो कोई गजर करता उसको डरवाते हुये रुधिर पीनेसे मतवाले हो दण्डकारण्य में घूमतेथे ६ तब तापस धर्म्म में टिके हुये श्रीरामचन्द्रजी को दण्डकारण्य में घूमते हुये हमने पीड़ितकिया ७ व महा भाग्यवती वैदेहीजी को भी पीड़ित किया महारथ तापसरूप नियताहारी व सब प्राणियों के हित करनेवाले लक्ष्मणजी को भी

पीड़ित किया ८ फिरमहाबलवान् तपस्वी रामचन्द्र जी को तपस्वी मान पूर्व के बैर का स्मरण कर ९ मारडारने की इच्छा से क्रोधकर बड़ी बड़ी सींगें आगे को झुकाय यद्यपि उनके पराक्रम को जानतेभी थे पर दौरे १० तब उन्होंने अति तीक्ष्ण तीनवाण शत्रुओं के नाशन करनेवाले हमतीनों मृगों के ऊपर छोड़े वे बाण कानके समीप तक धनुष खींच कर उन्होंने चलाये थे कि गरुड़ व पवन के समान चले ११ वेवज्राकार अतिघोर रक्त पानकरनेवाले बाण हमलोगों के ऊपर पहुंचे १२ उनमें हमतो बड़ेही मूर्ख थे व रामचंद्रजीका पराक्रम जानते थे इससे भयभीत थे इसलिये उस बाणको किसीतरह बचायगये परंतु वे दोनों हमारे साथी उन दोनों बाणोंसे मारेगये १३ रामचंद्रजी के उस बाणसे बड़ीबड़ी युक्तियों से हम बचे इससे जीते रहगये तब वहांसे भागकर तपस्वी बन यहांआये हैं१४ यहां कोभी यह दशाहै कि चीर व मृगचर्म धारणकिये धनुर्वाण लिये व हाथ में फांशीभी लिये श्यामस्वरूप रामचंद्रजी को प्रत्येक वृक्ष के नीचे कालसमान खड़े देखते हैं १५ हेरावण इससमय भी मारे डरके सहस्रों राम हमको देखपड़ते हैं कहांतक कहें यह वनकावन हमको राममय देखाईदेताहै १६ जिस स्थानमें रामहोते भी नहीं वहांभी हम रामहींको देखते हैं व इसीसे सोयजानेपरभी रामचंद्रहीको देखते झटपट फिर जागपरतेहैं इसीमें रात्रिदिन चित्त व्याकुल बना रहता है १७ हे रावण रामचंद्रजीसेहमऐसे डरेहैं कि रथ रत्न राजादि जो रकारादि नामहैं सुनतेही सुनते हमको भय उत्पन्न करातेहैं १८ हम उनका प्रभाव अच्छीतरह जानते हैं तिनके साथ तुम युद्ध नहींकरसक्त क्योंकि बलि व नमुचिकोभी श्रीरामचंद्र मारसक्त हैं फिर तुम्हारी क्या गणनाहै १९ हे रावण रणमें चाहो रामचन्द्रके साथलड़ो वा क्षमा कर रहो परंतु जो हमको देखनाचाहते हो तो हमारे आगेरामकी कथाही न कहो नहीं तो हम कहीं भागजायँगे २० क्योंकि बहुत से समाधि लगानेवाले धर्मानुष्ठान करनेवाले साधुलोग इस संसार में पराये अपराधोंसे अपने परिकरसहित विनिष्ट होगये २१ इससे हे निशाचर हम भी पराये अपराधसे विनिष्ट हुआचाहते हैं तुमको जो रुचसोकरो तुम्हारे पीछे हमभी न अपने प्राण गवाँवेंगे २२ ॥

चौ० महातेजसी महापराक्रम । महाबली नहिं जगमें तासम ॥ राम निशाचरलोक विनाशी । जगमहँ एकहिहैं गुणराशी १ । २३ जनस्थानगत खर यदि रावन । शूर्पणखा हितमरयहु अपावन ॥ सरलकर्म कर राघव केकर । राम दोष यामहिं का बुधिवर २ । २४ कहहु विचारि जौनमन भावै । जो खल संगजात दुखपावै ॥ शूर्पणखा सँग किमि सो गयऊ । गयहु लरयहु खल गुण भल भयऊ ३ । २५ ॥

हरिगीतिका ॥

हितकारि शुभगुण धारि जो मम वचन नहिं तुम मानिहौ ।
दशकंठ शंठ विचारि देखहु तौ न शुभ फल जानिहौ ॥
रघुनाथ हाथ विमुक्त शर गण निहत यमपुर जाइहौ ।
तजि प्राण वान्धव सहितहित बिनकौन तुम्हहिं बचाइहौ ४ । २६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकांडेएकोनचत्वारिंशस्सर्ग्गः ३९॥

सहनेकेयोग्यवउचितमारीचके वचनसुनरावणने न अंगीकारकियेजैसे जो मरनेपर होता वह उत्तम औषधिका सेवन नहीं करता १ हितकारी व उचित वचन कहनेवाले मारीचसे अयोग्य व कठोर वचन कालप्रेरित रावण बोला २ हे मारीच हे प्रतिकूल ये वचन जोतुमने कहेहैं सब शूरों के कहनेके अयोग्यहैं व निष्फलहैं क्योंकि हमारे बिषयमें येवचन ऊषर मेंबीजबोनेके समानहैं ३ मूर्ख पापशील मनुष्य रामचन्द्रके संग्राममें उद्यत हमको तुम्हारे वचन नहीं भेदन करसक्ते ४ उनकी मूर्खता तो इसीसे स्पष्टहै जो सुहृद राज्य माता पिताको छोड़ स्त्रीके प्राकृत वचनसुन तुरन्तही वनको चलेआये ५ इससे खरकेघाती तिन रामचंद्रसे संग्रामकर तुम्हारे सामनेहीं तिनके प्राणोंसे भी अधिक प्यारीनारीको अवश्य हम हरलावेंगे ६ हे मारीच इसतरह की दृढ़बुद्धि हमारे हृदयमें विद्यमान है वह इन्द्र सहित सुरासुरों की लौटाई नहीं लौटसक्ती ७ यदि हम इस कार्य्य के करने के बिषयमें निश्चय वा अनिश्चय कुछतुमसे पूछते तो तुमको यखतियारथा चाहे गुण वा दोष उपाय वा नाश जो कहते पर हमने तो केवल सहायक होनेके लिये कहा था बिना पूंछीबातका उत्तर नाहक देनेलगे ८ जो चतुर मंत्री हैं व अपना ऐश्वर्य्य चाहते हैं तो

जो उनसे राजा पूंछे उसका उत्तर हाथजोर बड़ी नमूताके साथ देते ९ क्योंकि राजा के सामने सदा अनुकूल कोमलता सहित शुभहित व नीति युक्त वचन कहने चाहियें १० व चाहे हितभीहो पर जिस वचनके सुननेमें कुछग्लानि आतीहो व मान बर्जितहो मानार्थीराजालोग ऐसा वचन नहीं प्रसन्न करते ११ अमित तेजस्वी राजालोग अग्नि इंद्र चंद्रमा यम व बरुण इन पांचरूपों को धारण करते हैं १२ इसीसे हे निशाचर उन में अग्नि की उष्णता इंद्रका विक्रम चंद्रमाकी शीतलता यमराजकी दंडता व बरुण की प्रसन्नता उनमें ये पदार्थ सदा विद्यमानरहतेहैं १३ तिस से सब अवस्थावों में राजालोग मान्य व पूज्यहैं तुम बिना राजधर्म्मके जाननेसे मोहितहो केवल १४ अपनीदुष्टतासे अपनेसम्मुख आयेहुये हमसे ऐसेकठोर वचन कहते हौ हे राक्षस हमने इसकार्य के गुण दोष तुमसे नहीं पूछेथे न यह कि इसे हम करसक्तेहैं व नहीं १५ हे अमित विक्रम हमने तो केवल तुमसे यही कहा था कि इस कर्ममें आप सहायक हों १६ सो उस सहायतामें जो कर्म आपको करनाचाहिये हम बताते हैं सुनिये बीचबीच चाँदीके विंदु सहित सुवर्ण का मृग हो १७ तिन रामचंद्रके आश्रमपै जाय सीताके सम्मुख ह्वै चरौ व जानकी को ललचवाय वहां से चलेजाव १८ तब तुम को सोने का मायारूप मृग देख विस्मित हो इसको शीघ्रही लावो ऐसा मैथिली अवश्य कहेंगी १९ जब बहुत दूर तक रामचन्द्र तुमको पकड़ने के लिये चलेजायँ तो हा सीते हा लक्ष्मण ऐसा रामचन्द्र के वचन के अनुसार बड़े जोरसे पुकारना २० तुम्हारा वैसा वचन सुन सीताकी प्रेरणा से व रामचन्द्र के सोह्द से सम्भ्रांत चित्त हो रामचन्द्र के पीछे लक्ष्मणभी चलेजायँगे २१ जब रामचन्द्र चलेजायँगे व लक्ष्मणभी चले जायँगे तो सुखसे हम जानकी को हरलावेंगे जैसे इंद्र इंद्राणी को हरलायेहैं २२ हे राक्षस मारीच इसतरहसे यह कार्य करआवो आधीराज्य तुमको देंगे २३ हे सौम्य जाइये तुम्हारा मार्ग कल्याण दायक हो इस कार्यकी बढ़ती के लिये जाइये हमभी सहित रथ आपके पीछे दण्डकारण्यको आतेहैं २४ वहां रामचंद्रको बहँकाय बिना युद्धही किये सीता को पाय कार्यसिद्धकर तुम्हारे साथ लंकाको चलेआवेंगे २५ यदि यह

हमारा काम न करोगे तो हे मारीच तुमको आजही मारडालेंगे यह इतना हमारा कार्य तुम जबर्दस्ती से करोगे २६ क्योंकि राजा से विप्रतिकूल रहनेवाला पुरुष कभी सुख नहीं बढ़ासक्ता २७ रामचंद्र को प्राप्तहोके रहा चाहतेहो तो भी तुम्हारी मृत्यु में संशय है व हमारे साथविरोधकर यहां रहा चाहते हो तो हम अभी मारडारेंगे ये दोनों बातेंअपने मनमें विचारजिसमें अपना भलादेखो वहीकरो २८॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेचत्वारिंशस्सर्गः ४० ॥

जब रावण ने इस तरह राजाओंकी भांति आज्ञा दी तो निशंक हो अति कठोर वचन मारीच रावण से बोला १ हे निशाचर पुत्र राज्य व नौकर चाकर परिवार सहित तुम्हारे नाश करने का यह उपाय किस पापी ने तुमको बताया २ वह कौन पापी है जो तुमको सुखी नहीं देख-सक्ता यह मृत्यु का द्वार उपायसे किसने तुमको लखाया ३ हे निशाचर यह बात तो प्रसिद्धहीहै कि तुम्हारे शत्रुलोग वीर्य्यहीन होगये हैं योंतो कुछ करीनहीं सक्ते इससे चाहते हैं कि कोई बलवान् आय इनको घेरले व इनका नाशहोजाय ४ हेरावण किस शत्रुबुद्धि व नीच ने यह तुमको उपदेश दिया जो तुमको अपनेहीं कर्म्मोंसे नष्ट हुआ देखा चाहताहै ५ हे रावण सचिव लोग सबप्रकार से वध्य नहीं होते बरन जो मन्त्री कुमार्ग्ग में चलते हुये तुमको न निवारण करें वेही बधकरने के योग्य हैं ६ यथेच्छाचारी होने के कारण जब राजा कुमार्ग्ग में चलने लगता है तो अच्छे मन्त्रियोंको चाहिये कि उसको रोंक दें परन्तु तुमको कोई क्या रोंकेगा तुमतो कहाही नहीं मानते ७ हे निशाचर हे जीतनेवालों में श्रेष्ठ मन्त्रीलोग अपने स्वामीहीं के प्रसादसे धर्म्म अर्त्थ काम व यश पाते हैं ८ जब स्वामीका प्रसाद न हुआ तो सब व्यर्त्थ होजाता है स्वामी की खराबीसे और लोग दुःख पाने लगते हैं ९ हेराजन् धर्म्म व यश सब राजमूल हैं तिससे सब अवस्थावों में राजालोग रक्षा करने के योग्य हैं १० हे निशाचर नतो अति तीक्ष्ण स्वभाव राजा राज्यका पालन कर सक्ता है न वहीराजा पालन कर सक्ताहै जो सबका प्रतिकूलही चाहता है व न वह पालसक्ता है जो महात्माओं के आगे

नम्रता से नहीं रहता ११ व जो मन्त्री लोग बड़े कड़े हुक्म राजा से कहसुन जारी करादेते हैं वेलोग भी राजा के साथ कष्टित होते हैं जैसे खाले ऊंचे रथ हांकनेवाले सारथि लोगभी मालिक के साथ धक्केसहते हैं १२ योग्य धर्म्म करनेवाले बहुत से साधुलोग भी औरों के अपराध से सहित सामग्री नष्ट होजाते १३ इससे हे रावण सब बेचारे राक्षस अवश्य नष्ट होंगे क्योंकि जिनके कर्कश स्वभाव दुर्व्बुद्धि व अजितेन्द्रिय तुम ऐसा राजाहै १४ हेरावण प्रतिकूल व तीक्ष्ण स्वभाववाले राजासे रक्षित प्रजा नहीं बढ़ती जैसे सियारकी रक्षा से शशक आदि मृग नहीं बढ़ते १५ तिसतुम्हारे दुराचारी होने के कारण हमने भी यह घोर दुःख पाया व तुमभी सहित सैन्य नष्टहोजावगे इस विषयमें तुम शोचनीयहो १६ व हमको क्या हम जानों यहां न मरे रामहीं के हाथ मरे इसमें बहुत गुण हैं क्योंकि हमको प्रथम मारे फिर शीघ्रही रामचन्द्र जी सकुटुम्ब तुमको मारेंगे व हम तो जानों शत्रु के हाथों से मारेजाने के कारण कृतार्थही होजायँगे १७ रामके देखतेही देखते हमको मरेही समझिये व जानकी जी को हरकर बन्धुवर्ग्ग सहित अपना को भी मरेही समझो इसमें कुछ भी अन्तर न होगा १८ हमारे संग जाय कदाचित रामचन्द्रजी के आश्रमपर से सीताको लेभी आवोगे तो भी नतो तुम्हीं अपनाको समझो न हमीको न इनराक्षसोंको न लंकापुरी के क्योंकि इनसबको वे आय क्षणमात्र में समाप्त करदेंगे १९ ॥

कुण्डलिका ॥

हितकारी मम वचन सों रोक्यहु पर लंकेश ।
जोन समझि मन मानि हौ तौह्वैहहु रंकेश ॥
तौ ह्वैहहु रंकेश मरण सम्मुखजो होई ।
आयुषबिन नरसोइ सुनत नहिं निजहित सोई ॥
यद्यपिसुहृदयबिचारि कहततिनसोंश्रुतिधारी ।
ग्रहण करतवेनाहिं वचन यद्यपिहितकारी १।२०

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेएकचत्वारिंशस्सर्ग्गः ४१॥

रावण से ऐसे कठोर बचन कह राक्षसेश्वर के भयसे मारीचने फीको

कहदिया कि अच्छा चलोचलें १ कदाचित् शरचाप खड्गधारी व हमको मारने के लिये उद्यत श्रीरामचन्द्रजी ने फिर हमको देखा तो हमारे व अपने दोनों के प्राण गयेही समझना २ क्योंकि रामचन्द्रजी के सामने पराक्रम करके कोई पुरुष जीताहुआ नहीं लौट सक्ता फिर हमतो तुम्हारे दुराचारों से यमराज रूप रामचन्द्र के बाणों से मरः तुम्हारे सदृशही होजायँगे अर्थात् हमतुम दोनों मारे जायँगे ३ अबतुम दुष्टात्मा के सामने हम और क्या करसकें तुम प्रसन्नरहो हम अभी जावेहैं ४ मारीच के ऐसे वचन सुन रावण बहुत प्रसन्न हुआ व दोनों बाहें फैलाय लपटाय मिला व बोला ५ हे मारीच हां यहवचन तो तुम्हारे वीर्य्यके योग्यहै जोकि हमारी आज्ञा के वशीभूत होके तुमने कहा इससे इस समय तो हमने जाना कि तुम मारीचही हो इसके प्रथम तो यही विदित होताथा कि कोई अन्य साधारण राक्षसहो ६ अब आकाशगामी रत्नोंसे विभूषित व पिशाच मुख गदहों से युक्त इसरथ पै हमारे साथ शीघ्रही चढ़ो ७ व जानकी को अच्छीतरह ललचाय यथेष्ट वहांसे चलदेना तबशून्य स्थान होजाने से हम जनककुमारी सीताको हठसे लेकर चले आवेंगे ८ यहसुन ताटका के पुत्र मारीच ने कहा अच्छा चलिये इसके पीछे रावण व मारीच विमान के सदृश उसरथपै ९ सवारहो तिस आश्रम मण्डल से शीघ्रही दोनोंजन चले मार्ग में तिसी तरह से पुरपत्तन नगर बनादि देखते चले जैसे रावण आनेके समय देखता आयाथा १० पर्व्वत नदियां राज्यनगर देखतेभालते दण्डकारण्य में आय रामचन्द्रजी का आश्रम ११ सहित मारीच रावण ने देखा वहां उस सुवर्ण भूषित रथपर से उतर १२ मारीच का हाथ पकड़ रावण बोला कि जिसके किनारे किनारे केलाके वृक्षलगे हैं यही रामचन्द्र का आश्रम देखाई देताहै १३ हेसखे जिस वास्ते हमलोग यहां आयेहैं वहकाम शीघ्रही करो रावण के वचन सुन तिस समय मारीच राक्षस १४ मृग होकर रामचन्द्रजी के द्वारपै घूमने लगा उस समय उसने महा अद्भुत दर्शनरूप धारण कियाथा १५ इन्द्र नीलमणि जटित तो शृङ्ग बनाये मुखकी आकृति कहींश्वेत थी कहींश्याम मुख अरुण कमल के समान कान अति शोभायमान श्याम कमल के समान १६ गलकछ ऊंचा शोभायमान इन्द्रनील मणिहीं के सदृश नीले

का भाग महुआ के सदृश बगलें व कमल के किंजल्क का सा रङ्ग १७ वैदूर्य्यमणि के सदृश खुर जांघें बहुत पतली सब सन्धियां बनाय एकमें मिलीं इन्द्र धनुष के समान पूंछ ऊपर को उठीथी १८ अति मनोहर व चीकना रूप नानाप्रकार के रत्नोंसे युक्त इसतरह क्षणमात्रही में वहरा-क्षस परम शोभन मृग बनगया १९ उस सब वन को शोभित कराता रामचन्द्रजी के आश्रम को भी मनोहर दर्शनीय रूप धारणकर वह राक्षस शोभित कराने लगा २० जानकीजी के प्रलोभित होनेके लिये नानाप्रकारके धातुओं से विचित्रितरूप धारणकिये चारोंओरसे हरी हरी घास चरता हुआ रामाश्रम पै घूमनेलगा २१ सुवर्णके रङ्गका तो मृग बनाहीं था बीच बीच सैकरों चांदीकी बिन्दियां थीं इससे बहुतही प्रिय लगता था वृक्षोंके नये नये पत्ते चरता चुगता घूमता २२ फिर कर्णिकार के वृक्षों के साथजहां केलाके वृक्षलगेथे इधर उधर घूमता धीरे धीरे जाते जाते सीताजी के दृष्टिगोचर हुआ २३ कमलाकार पीठ बनाये रामचन्द्रजी के स्थानपै वहमृग सुखसे घूमनेलगा २४ वहमृगोत्तम चरते चरते आश्रमके भीतरगया फिर जल्दीही निकलआया फिर गया फिर लौटआया २५ खेलता कूदता कभीतो भूमिमें बैठजाता कभी फिर कूदनेलगता फिर आश्रमके द्वारपै आय वहां सुखसे चरतेहुये मृगोंके साथ चरनेलगता २६ कभी मृगोंके पीछे पीछे आश्रमके भीतर चलाआता व फिर लौटआता वह राक्षस आयजाय चाहताथा कि किसी न किसीतरह जानकीजी अच्छीतरह देखलें २७ इससे फिर इधरउधर मण्डलाकार घूमनेलगा इसकी कूदफांददेख अन्यजो वनके मृगथे २८ इसके पासआय सूंघकर दूरदूरको भागजाते यद्यपि वह राक्षस सदा मृगों के मारने में रत था तथापि उन वनेचर मृगों को २९ अपना भाव छिपानेके लिये छूवहीलेता भोजन नहींकरता उसीसमय में शुभलोच-ना श्रीजानकीजी ३० पुष्प तोड़नेकेलिये कर्णिकार अशोक आम्रादि वृक्षोंके नीचे घूमरहींथीं ३१ घूमती घूमती जानकीजी बनवासके योग्य तो थीहींनहीं वनकेहाल क्याजानें देखा तो आगे एक रत्नका मृग कूद रहाहै ३२ सब उसके अंग मुक्तामणियोंसे विचित्रित थे अति सुन्दरदांत ओष्ठवाली जानकीजीने अच्छीतरहसे उस मृगको देखा ३३ मारेविस्मय

के उत्फुल्ल नयना हो सहित स्नेह उसको निहारनेलगीं व वह मायाका मृगभी रामचन्द्रजीकी प्राणप्यारी जनककुमारीजीको देखताहुआ ३४ उस वनको प्रकाशितकरता विचरनेलगा उस नानारत्नमय मृगको अदृष्ट पूर्वदेख ३५ जानकीजी बड़े विस्मयको प्राप्तहुई ३६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेद्विचत्वारिंशस्सर्गः ४२ ॥

सुवर्णके रंगका व बीच बीचमें चाँदीके विन्दुओंसे शोभित उसमृगको देख फूलउतारतीहुई जानकीजीने देखा कि दोनों बगल इसके सोने रूपेके हैं १ उसेदेख अत्यानन्दितहो अनिन्द्यांगी श्रीजनकात्मजा घस्त्र शस्त्र धारणकिये रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीको जोरसे पुकारा २ बार बार पुकारा हे आर्यपुत्र हे लक्ष्मण शीघ्रहीआवो शीघ्रहीआवो यह कह कह फिर मृगको देखनेलगीं फिर जल्दी जल्दी बुलानेलगीं ३ जानकीजीके बारबार पुकारनेसे वे दोनोंभाई राजकुमारश्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी वह स्थान देखते देखते वहां आये व उसमृगको उन्होंने भी देखा ४ उसको वैसा देखतेही शंकमानहो लक्ष्मणजी बोले हे भाई हम इस मृगको मारीचनाम राक्षसमानतेहैं ५ इस पापरूपी दुष्टराक्षसने शिकार खेलने के लिये इस वनमें आयेहुये बहुतसे राजाओंको मारडाला है ६ इससे इसमायावी ने अपनीमायासे ऐसा मृगरूप बनायलियाहै यह गन्धर्वनगरकेसमानमिथ्याभूतहै मृगनहींहै७क्योंकि हे जगतीनाथ इसतरहका रत्नमय मृग कहीं पृथिवीमें नहीं है यहउस दुष्टराक्षसकीमाया-हींहै इसमेंकुछभी संशयनहीं ८ उसराक्षसके छलसे चित्तहरीहुई जान-कीजी ऐसा कहतेहुये लक्ष्मणजीको रोंक कुछ मुसुकाकर रामचन्द्रजीसे बोलीं६हे आर्य्यपुत्र यह अभिरामरूप मृग हमारे मनको हरेलेता है हे महाबाहो इसको पकड़लाइये हमारे खेलनेकेलिये होगा १० क्योंकि इस पुण्याश्रममें हमारे बहुतसे पुण्यदर्शन मृग चमर सृमरघूमतेहैं ११ व ऋक्ष वृषत वानर किन्नरादि अति रूपवाले बहुत विहरते हैं १२ परंतु तेज क्षमा व दीप्तिसे जैसा यह अपूर्व्व मृग हमने देखा है वैसा पहिले कभी नहींदेखा १३ क्योंकि यह नानाप्रकारके वर्णोंसेविचित्रांग है व बीच बीचमें रत्नोंकी विन्दियां बनीहैं इससे इस वनको प्रकाशित

करताहै व आप चन्द्रमाके समान प्रकाशित होताहै १४ इसका रूप व लक्ष्मी अत्याश्चर्य्य दायकहै बोल भी अति मधुर व प्रिय है यह मृग होकर जानों हमारा मन हरेलेता है १५ जो आपको यह मृग जीताही मिलजाय तोतो क्या बातहै बड़ेएक आश्चर्य्य का पदार्त्थ सदा नेत्रोंके आगे रहकर विस्मय उत्पन्न कराता रहेगा १६ व जबबनबास समाप्त होजायगा सबलोग फिर राज्य में चलेंगे तो फिर वहां जनाने में हम लोगोंके पास भूषणार्त्थ यह मृग होगा १७ व आर्य्यपुत्र भरतजी को व हमारी सासुओं व हमको भी यह दिव्यरूप मृग विस्मय उत्पन्न करावेगा १८ कदाचित्त जीताहुआ आपको न पकड़ मिलेगा तो हे नरशार्दूल इसका चर्म्म अति मनोहर होगा १६ जो यहजीव मृतकही होजायगा तोभी सुवर्णमय इसका चर्म्म होगा तो उस गुलगुले व नम्र रोमोंके आसनपै आपके संग हम बैठना चाहतीहैं २० यद्यपि स्त्रियोंको आपसे मनमाना किसी पदार्त्थ को देख मनचलना व पतिकी प्रेरणा करना अनुचितहै तथापि इसजीवके विचित्र रूप देखने से हमको विस्मय हुईहै इसीसे आपको प्रेरणा करतीहैं २१ इससे इस सुवर्णरोमा नीलमणि सदृश शृंगयुक्त प्रातःकालके सूर्य्यके समान वर्णवाले व आकाश सम प्रकाशित २२ रूपसे रामचन्द्रजी का भी मन विस्मित होगया इससे सीताजीके ऐसे वचन सुन व अद्भुत मृगदेख २३ तिसके रूपसे लोभित होगये फिर जानों सीताजीने प्रेरणा भी की इससे हर्षित हो श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजी से बोले २४ हे लक्ष्मण देखो तो इस मृगमें बैदेही कैसी अभिलाषा प्रकाशित होतीहै परन्तु रूपकी श्रेष्ठता से साफ़ विदितहै कि यह मृग न होगा २५ क्योंकि ऐसा मृगतो न नन्दन वनमेंहै न चैत्ररथवनमें फिर पृथिवीमें कहांसे आया २६ इसमृगमेंतो तिरछी व सीधी रोम पन्क्तियां हैं व सुवर्णके बिन्दुओं से चित्रविचित्र इस मृगको पाय शोभित होतीहैं २७ देखोतो जब यह जँभुआने लगताहै तो अग्निके समान देदीप्यमान जीभ मुखसे निकलतीहै जैसे मेघसे बिजुली चमकती हुई निकलती है २८ व इन्द्र नीलमणिके पानपात्रके सदृश मुख व शंख मोतीके आकार का पेट ऐसा यह वर्णनकरने से बाहर मृग किसके मनको न लोभावे २६ पके सुवर्ण के समान दी-

दीप्यमान नानाप्रकार के रत्नोंसे बनाहुआ इसको देख किसका मन वि-
स्मित न हो ३० राजालोग मांसकेलिये व बिहार करनेके लिये भी
जब शिकार खेलने जातेहैं तब मृगोंका मारतेहैं ३१ मणिरत्न सुवर्णयुक्त
धातुवन में बहुत होते पर राजालोग मृग आदिकों को मारउनके चम-
ड़ेकोही धन समझतेहैं ३२ तिससे मनुष्य को चाहिये कि थोड़ा बहुत
धन अवश्य संचयकरै व मनसे चिन्तित पदार्त्थ सब होतेहैं ३३ अर्थी
पुरुष जिस अर्त्थसाधन बस्तुके कारण बिना बिचार कियेही चला जाय
अर्त्थशास्त्र जाननेवाले लोगउसेअर्त्थकहतेहैं ३४ इस मृगरत्नकेबहुमूल्य
मृगचर्म्मपे जानकीहमारेसाथ बैठाचाहतीहैं ३५ छूनेमें इसके मृगचर्म्म
के समान बिलमें सोनेवाले कदली नाम मृगका मृगचर्म्मकोमलनहीं न
कोमल ऊंचे व सचीकने रोमवाली प्रियकी नाममृगका नप्रवेणी नाम का
न भेड़ियोंके रोमका ३६ यहश्रीमान् मृग व जो आकाशगामी दिव्यमृगहै
ये दोनों तारामृग व महीमृग एकसमानहैं ३७ व जो जैसा तुमहमसे कहते
हो यहराक्षसकी मायाही हो मृग न हो तौभी हमको इसका बधही करना
उचितहै ३८ क्योंकि इसदुष्ट अविवेकी मारीचने वनमें घूमतेघूमते बहुत
मुनिश्रेष्ठों को मारडारा है ३९ व शिकार खेलने को आयेहुये बहुत से
राजाओंको भी इसने इसवनमें मारडाला है इससे यह मृगरूप राक्षस
अवश्य मारडारनेके योग्यहै ४० देखो इसवनमें आगे वातापिनाम राक्षस
ने बहुत ब्राह्मणों को उनके पेटमें जाय मारडारा जैसे खचरी का बच्चा
पेटही में रहे रहे अपनी माताको मारडारता है ४१ वह वातापि कभी
महामुनि अगस्त्यजी को प्राप्तहुआ उन्होंने उसे अपने पेटमें पचैडारा
४२ जब वह वातापि मुनिके भी पेटसे निकलने के लिये उछलनेलगा
तब अगस्त्यजी ने कहा हे वातापिन् ४३ तुमने निशादरकर अपने तेज
से इस जीवलोक में बहुतसे ब्राह्मण श्रेष्ठोंको मारडारा इससे अबकी
हमारे पेट में पचगये अब नहीं निकल सक्ते ४४ हे लक्ष्मण हम ऐसे
जितेन्द्रिय व धर्म्मनिष्ठका जो निरादर करता है तो क्या वातापि के
समान यह राक्षसभी न मरेगा अवश्य मरेगा ४५ इससे यह अब हमको
पाय अगस्त्यको पाय वातापिके समान अवश्य मरेगा अबतुम यहां धनु
र्वाणलिये तैयार जानकीजी की रक्षा करतेरहो ४६ व हमतो जोकुछ

किया चाहते हैं वह मैथिली के अधीन है इससे कि तो हमइस मृगको मारही डालेंगे अथवा पकड़ही लावेंगे ४७ हे लक्ष्मण जबतक हम इस मृगको आनने जातेहैं पलटकर न आवें तबतक मृग में चित्त लगाये हुई जानकीको तुम देखते रहना ४८ उत्तम चर्म्मके हेतु इसमृगको तुममराही समझना जबतक हम लौट न आवें तबतक सीता के संग बड़ी होशियारीके साथ रहना ४९ हम एकही बाणसे तो इसको मारेलिये आते हैं इसको मार चर्म्म ले शीघ्रही लौटेंगे ५० हे लक्ष्मण अनुकूल व अतिबल जटायु नाम पक्षीके साथ जानकी जीको पोढ़े पकड़ेहुये सब ओरदेखतेभालते बड़ी सावधानीकेसाथ व शङ्कित चित्तहो यहां खड़ेरहना ५१॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेत्रिचत्वारिंशस्सर्गः ४३ ॥

भाई लक्ष्मण को ऐसा समझाय महातेजस्वी श्रीरामचंद्रजीने सुवर्ण निर्म्मित कबुजा लगाहुआ खड्ग अपने हाथमें लिया १ व फिर तीन स्थानोंपै झुकाहुआ धनुष जोकि अपना विभूषण था ले व दो तरकस भी ग्रहणकर महापराक्रमी श्रीरामचंद्र जी मारीचके मारनेके लिये गये २ तिन राजराजेन्द्र श्रीरामचन्द्रजीको देख बनेचरोंका राजा मायावी मृग मारेभयके अन्तर्द्धान होगया कुछ दूरपर फिर देखपरा ३ तब खड्गले धनुष भी सँभाल जिधर वह मृग देखपरा रामचन्द्रजी उधर दौरे अपने रूपकी कान्ति से तिस मृगको प्रकाशितही करतेहुये देखते जाते थे ४ कभी तो वह देखपरता कभी फिर नहीं देखपरता दौरा दौरा फिरताथा कभी कभीतो बनाय बाणके निकटही आयजाता कभी बहुत दूर चलाजाता फिर निकट आय लोभाता ऐसे मृग के पीछे धनुष हाथ में लिये श्रीरामचंद्र जी दौरे फिरते ५ फिर कहीं कहीं देखतेथे कि अवशङ्कितहो जानो उछलकर आकाशको चलाजाया चाहताहै कभी कभी फिर किसी वनके भागमें देखपरता ६ उससमय छिन्न भिन्न बादरोंसे घेरेहुये शरद ऋतुके चन्द्रमाके समान मारीच मृगरूप धारण किये कभी देख परता कभी नहीं जैसे चन्द्रमा कभी बादर की आड़में परजाता तो नहीं देख परता जब अलग हुआतो फिर देखाई देताहै ७ ऐसेही प्रत्यक्ष होता व छिपता हुआ मारीच रामचन्द्रजी को बहुत दूर लेगया वहां साधारण

मृगकारूप उसने धरलिया ८ तब श्रीरामचन्द्रजी क्रुद्ध व मोहितहो बहुत दूर चलेआनेके कारण कुछ थक ऐसेगये कि एक वृक्षकी छायामें सुन्दर हरीघासपर खड़ेहोगये ९ व मृगरूपी निशाचर रामचन्द्रजी को उन्मादितकर वनके अन्य मृगोंकेसाथ उनके निकटही फिर देखपरा १० तब रामचन्द्रजीको देखा कि मुझको पकड़लेना चाहते हैं इससे मारे डरके फिर अन्तर्द्धान होगया ११ फिर थोड़ी दूर पै वृक्षों के समूह से आगे निकल देखाई दिया महातेजस्वी रामचन्द्रजी ने मारडारने का निश्चय करलिया १२ व कोपकर सूर्य्यके किरणके समान प्रकाशित दीप्यमान शत्रुओं के मर्दन करनेवाला बाण श्री रामचन्द्रजी ने १३ दृढ़ धनुष पै चढ़ाय जोरसेखींच बरते अग्निके समान प्रकाशित तिस मृगके ऊपर १४ ब्रह्माका बनाया हुआ अति ज्वलित अस्त्र उस मृगरूप राक्षस के योग्य छोंड़ा वह १५ वज्रसमान बाण मारीचके हृदय को भेदन करगया तब मारीच एक तारके वृक्षके प्रमाण ऊपरको उछल अत्यातुरहो धरणी में गिरपरा १६ व बड़े जोरसे चिघरा प्राण थोरेही निकलने को बाकीरहे जब मरनेलगा तो मारीच ने अपनी वह कृत्रिम देह छोंड़दी १७ शरीर छोंड़नेके समय उस राक्षसने रावणके वचनका स्मरणकर जोरसे लक्ष्मण जीको पुकारा कि जिसमें उनको सीताजी यहां भेजदें व तिनको रावण हरलेजाय १८ उसने अपना मरणसमय जान रामचंद्रजीका सा वचन बनाय हा सीते हा लक्ष्मण ऐसे वचन कहे १९ इतनाकह तिस अनुपम बाणसेविद्ध मृगरूप छोंड़ वह राक्षस फिर राक्षसका राक्षस होगया २० प्राण छोंड़ने के समय वह मारीच बड़ा भारी होगया तिस भीमदर्शन मारीचको भूमिमें २१ रुधिर से बूड़ लोटताहुआ पृथिवीमें देख लक्ष्मण के वचनोंका स्मरणकर मनंसे रामचंद्रजीने सीताका स्मरणकिया २२ जो पूर्व्वकालमें लक्ष्मणने कहाथा कि यह मारीच की मायाहै सो सत्यही यह मारीचकी मायाहै वैसाही हुआ हमने मारीच को मारा २३ परन्तु सन्देह यहहै कि हा सीते हा लक्ष्मण ऐसा जोरसे पुकार जो मारीच ने प्राण छोंड़े हैं वह सुन सीता कैसी होंगी २४ व महाबाहु लक्ष्मण भी किस अवस्था को जायँगे यह स्मरणकर मारे स्नेह के रामचन्द्र जीके शरीरके रोम खड़ेहोगये २५ व मृगरूप राक्षसको मार व उसके वचन

सुन रामचन्द्रजी अति भयभीत हुये २६ व लोक विलक्षण मारीच मृग को मार तापसों के योग्य फलादि ले रामचन्द्र जी जनस्थान की ओर चले २७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेचतुश्चत्वारिंशस्सर्गः ४४ ॥

व यहां जानकीजी अपने स्वामी श्रीरामचंद्रजी का सा कष्टितश्शब्द सुन व जान लक्ष्मण जी से बोलीं हे लक्ष्मण जाव रामचन्द्र जी को देखो तो १ हमारा जी ठिकाने नहीं क्याजानै हृदय कैसाहोताहै क्योंकि जोरसे पुकारतेहुये अति कष्टित रामचन्द्रजीका शब्द हमने सुनाहै २ वनमें विचरतेहुये अपने भाईकी तुम रक्षा करने के योग्य हो रक्षक की इच्छा कियेहुये अपने भाईके पास शीघ्रही दौड़ो ३ क्योंकि वे राक्षसों के वशमें परे हैं जैसे सिंहों के वशमें परनेसे बैल व्याकुल होता वैसेही वे भी व्याकुल हैं यद्यपि जानकीजीने ऐसा कहा पर भाई रामचन्द्र की आज्ञा जानकीजी को छोड़कर कहीं जानेको थीही नहीं इससे लक्ष्मण जी न गये ४ तब क्षुभिततहो श्री जनककुमारी लक्ष्मण जी से बोलीं हे लक्ष्मणतुममित्ररूपसे तो यहां विद्यमानहो परअपनेभाईके शत्रुरूपहो५ जिससे तुम इसअवस्थामें अपने भाईके निकट नहींजाते इससे बिदित होताहै कि जिसमें हमको पायजाव इसलिये रामन्द्रजीको चाहतेहो कि मृतक होजायँ ६ हम जानतीहैं कि हमारे लिये लोभही से तुम रामचन्द्र जीके निकट नहीं जाते तुमको भाईका दुःखही प्रियहै उनमें तुम्हारा स्नेह कुछभी नहीं है ७ तिसीसे तिन महा प्रकाशित रामचन्द्रजी को बिना देखे विश्वास किये हुये बैठेहो जब वे तो संशयमेंहीं ब्याकुल हैं तो हमसे क्याहोगा ८ बताओ तुम्हारी तो यही दशा ठहरी अब हम क्याकरें आंशु व शोकभरी जानकीजी ने जब ऐसाकहातो ९ मृगबधूके समान डरीहुई सीताजीसे लक्ष्मणजी बोले कि हे बैदेहि नाग असुर गन्धर्व देवदानव व राक्षस १० ये कोई तुम्हारे भर्त्ता श्रीरामचन्द्रजी को जीत नहीं सक्के इसमें कुछ संशय नहीं हे देवि देव मनुष्य गंधर्व पक्षी ११ राक्षस पिशाच किन्नर मृग व अति घोरदानव इनमें ऐसाकोई नहींहै १२ जो इंद्रसम पौरुषी रामचन्द्र जीसे समरमें लड़े इससे राम-

चन्द्रजी समरमें अवध्यहैं तुमको ऐसा अनुचित न कहना चाहिये १३
हम बिना रामचन्द्र तुमको अकेली वनमें नहीं छोड़सक्ते व रामचन्द्रजी
के बलको तो बलवानों के भी बलनहीं रोंकसक्ते १४ तीनोंलोक सहित
देवता दैत्य अपने अपने बलसे युक्त उनका कुछभी नहीं करसक्ते इससे
तुम्हारा हृदय तहदिल हो व आप शोक छोड़दें १५ आपके स्वामी श्री-
रामचंद्रजी शीघ्रही उस उत्तम मृगको मारकर आवेंगे हम जानते हैं जो
शब्दहुआ है वह रामचन्द्र जीका बोल नहींहै न किसीदेवता काहै १६
यह गन्धर्व नगरके समान तिस राक्षसकी मायाहै हे वैदेहि तुमहमारे
निकट धरोहरके समानहो क्योंकि तिन महात्मा रामचन्द्रजी तुमकोहमें
सौंपगये हैं १७ इससे हमतुमको छोड़नहीं सक्ते व हमलोगोंसे सबरा-
क्षसोंसे बैरहै १८ जबसे खर मारागयाहै तभीसे सब जनस्थान निवा-
सी राक्षस लोग बिबिधप्रकारके वचन वनमें बोलते हैं १६ इन राक्षसों
को हिंसाही में बिहारहै इस समय तुमऐसी बातकी चिन्ता न करो जब
लक्ष्मणजी ने ऐसाकहा तो जानकीजी मारे क्रोधके अरुण नयनकर २०
सत्यबादी लक्ष्मण जीसे बोलीं हेनीच हम जानतीहैं कि दुष्टराक्षसों के
ऊपर तुमको बड़ी करुणाहै व तुम बड़े निर्ल्लज्ज व कुलाधमहो २१
हम जानतीहैं कि तुमको रामचन्द्रजीका बड़ा दुःखही बड़ाप्रियहै राम-
चन्द्रजीका ऐसा दुःखदेख तिसीहेतुसे तुम ऐसा कहतेहो २२ हेलक्ष्मण
क्रूरस्वभाव गुप्तपापी तुमऐसे बैरियों मेंजो ऐसा पापहुआ तो कुछआश्चर्य्य
की बातनहीं है २३ हम जानती हैं कि तुमबड़े दुष्टहो व गुप्तपापी हो
अकेले रामचन्द्रजीके साथ हमारेही हेतु अकेले आयेहो वा छिपकर भ-
रतके भेजेहुये आयेहो २४ हेलक्ष्मण वह तुम्हारा व भरतका मनोरथ
नहीं सिद्धहोता क्योंकि नीलकमलसम श्यामस्वरूप कमल नयन २५
रामचन्द्रजीको पतिछोड़ अन्यजनकी इच्छा हमकैसे करें हम तुम्हारेही
सामने अपने प्राण त्यागकरेंगी २६ क्योंकि बिना रामचन्द्र जीके हम
क्षणमात्र नहीं जीसक्तीं जब जानकी जीने ऐसे रोमहर्षण अतिकठोर
बचन कहेतो २७ हाथजोड़ जितेन्द्रिय लक्ष्मणजी सीताजीसे बोले कि आप
हमारी परम देवताहैं इससे उत्तरनहीं देसक्ते २८ हे जानकि स्त्रियोंको
ऐसा अयोग्य कहना कुछ आश्चर्य्य नहीं क्योंकि इन सब लोकों में

स्त्रीयोंका ऐसाही स्वभाव देखपरताहै २९ कि वे धर्म्म रहित चंचल स्वभाव व तीक्ष्ण भेद करनेवाली होती हैं पर हमभी तो ऐसे वचन नहीं सहसक्के ३० ये तुम्हारे वचन हमारे कानोंमें सन्तप्त लोहके बाणोंके समान लगतेहैं इसबातको बनदेवता लोगभी सुनतेहैं ३१ कि हमतो न्यायपूर्व्वक बोलतेहैं व तुम हमको ऐसेकठोर वचन कहतीहौ तुमको धिक्कार है जो हमसे ऐसी शंका रखतीहौ फिर मरनेपर तो आरूढ़ही हौ क्यों न ऐसाकहौ ३२ हमतो रामचन्द्रजीकी आज्ञामें टिकेथे इससेनहीं जातेथे पर स्त्रीके स्वभावसे तुमने हमको दुष्टजान दुर्व्वाद कहा अबजहां श्रीरामचन्द्रजीहैं वहांको हम जातेहैं तुम्हारा कल्याणहो ३३ हे बिशालाक्षि ये सब वन देवता तुम्हारी रक्षाकरैं क्योंकि इस समय हमको बड़ेबड़े अशकुन होतेहैं रामचन्द्रजीके साथ आयकहीं फिरतुमको देखेंतो शुभजानें ३४ जब लक्ष्मण जी ने ऐसाकहा तो बहुतरोती हुई जानकी जी बोलीं ३५ हे लक्ष्मण बिना रामचंद्र के हमगोदावरी में प्रवेश करजायँगी वा अपना देहही त्याग करदेंगी व वृक्ष पर्व्वतादि कहीं बिषमस्थान में बांधकर प्राण त्याग करेंगी ३६ वा तीक्ष्ण विष पान करेंगी अथवा अग्नि में प्रवेश करजायँगी पर श्रीरामचन्द्रजी आनन्दकन्द को छोड़ अन्यपुरुष का स्पर्श न करेंगी ३७ लक्ष्मणजीसे ऐसाकह मारेशोक के व्याकुल हो अति दुःख से जानकीजी दोनों हाथोंसे छाती पीटनेलगीं ३८ इसतरहसे रोदन करती व महा उद्विग्न सीताजीको देख लक्ष्मण जी ने बहुत समझाया पर अपने पति के भाई लक्ष्मण से जानकी जी कुछ न बोलीं ३९ ॥

कुंडलिका ॥

पीड़ित दुःखित रोवती सीतहि लषित्यहि काल।
हाथ जोरि कछु विनति करि तहँसे चलेबिहाल॥
तहँ से चले बिहाल लौटि देखत पुनि तेही।
मनमहँ सुमिरत जात राम पद परम सनेही॥
जहँ राघव बलवान जात तहँनहिं मन क्रीड़ित।
महादुखी तेहि काल लषन लषिजानकि पीड़ित १।४०

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकांडेपंचचत्वारिंशस्सर्गः ४५ ॥

जब जानकीजी ने ऐसे कठोरवचन कहे तो लक्ष्मणजी अति कोप कर रामचन्द्रजी के दर्शनोंकी इच्छासे चले १ यहां रावणने देखा कि अब शून्य स्थान है वस दंडी का बेष बनाय झटपट जानकीजी के आगे आय खड़ा हुआ २ उस समय सब गेरू के रँगेतो वह वस्त्र धारण कियेथा शिखा रखाये छाता ऊपर लगाये पनहीं पहिरे व बायें हाथ में लाठी व कमण्डल लिये था ३ इसतरह दंडीकारूप धारण किये दोनों भाइयों के न होनेपर जानकीजी के पास रावण पहुंचा ४ जैसे चन्द्र व सूर्य्य बिना सन्ध्या में अन्धकार प्राप्त होता वैसेही बिना राम-चन्द्र व लक्ष्मण के सीताजी के निकट दशानन आया व परम यशस्वि-नी तिन राजपुत्री सीता जी को देखा ५ जैसे चन्द्र हीन रोहिणी नक्षत्र को राहुदेखे महापापी व उग्र कर्म्म करनेवाले रावण को देख जन-स्थान वाले वृक्ष ६ न तो चलतेथे न पवन बहता बड़े वेगसे चलनेवाली गोदावरी नदी रक्त के समान लाल नेत्र किये देखते हुये रावणको देख७ धीरे धीरे बहनेलगी उसी समय रामचन्द्रजी का अन्तर चाहनेवाला रावण ८ भिक्षुकका रूप धारण कर श्रीजानकीजी के निकट आया व महाकुरूप अति रूपवती अपने पतिको शोचतीहुई सीताजीको ९ कैसा प्राप्त हुआ है जैसे चित्रा नक्षत्र को शनैश्चर आता है वहां पहुंचते पहुंचते उसने ऊपर से अति सुन्दर रूप बनाया जैसे ऊपरसे तृणों से कोई कुआं को मूंदे पर गिरनेवाला जब गिरेतो पाताल को चलाजाय १० महा यशस्विनी शुभ रूप शोभन दांतवोंठवाली व पूर्णमासी चन्द्र-मुखी श्री जानकी जीको देख वहां खड़ाहुआ ११ उससमय जानकी जी रोदन करती हुई पर्ण शाला में बैठीथीं १२ तिन कमलनयनी पीताम्बर धारण किये जानकीजी के पास निशाचर प्राप्त हुआ १३ व देखतेही काम बाण से पीड़ित हो वेदोच्चारण करता हुआ बोला १४ प्रथम तो तिन त्रिलोकोत्तमा सीताजी की बड़ाई करने लगा १५ हेरौप्यकांचन वर्णवाली हे पीताम्बर रेशमी धारण करनेवाली तुम कमलों की माला धारण किये १६ लज्जा लक्ष्मी कीर्त्ति श्री अप्सरा भूति वा कामचारिणी रतिहौ बताओतो १७ समान ऊंचे चीकने उजले तो तुम्हारेदांत हैं बिशाल व बिमलनेत्र जिनके बीचवालेताराओं के अन्त में अरुणताहै१८

ज़घन देश बिशाल व पीन जांघें हाथीकी शूंड़ के समान चढ़ा उतार व ऐ बड़े गोले एक में मिले कुछ कम्पायमान १९ पीन व उन्नत मुखयुक्त अति शोभायमान चिकने तालफलके आकारभणि भूषणभूषित व मनोहर तुम्हारे पयोधरहैं २० हे चारु हँसनेवाली हेसुदति हे सुनेत्रे हे बिलासिनि जैसे जलसे नदीका कूल गिरताहै वैसेही तुम हमारे मनकोहरतीहौ २१ हे अति सूक्ष्म करिहांव वाली हे सुकेशि हेसघनस्तनि तुम न देवीहो नगन्धर्व्वी न यक्षी न किन्नरी २२ क्योंकि ऐसी रूपवती स्त्री हमने भूतलमें कहीं देखीहीनहीं कहां तीनों लोकोंमें सबसे श्रेष्ठरूप व सुकुमार अवस्था २३ व कहां इस निर्ज्जन वनमें निवास यह हमारे चित्तको उन्मादित कराता है तुमयहां से चलो तुम्हारा कल्याणहो क्योंकि यहां बसनेके योग्यतुम नहींहौ २४ यह स्थान तो कामरूपी व कठोरचित्त राक्षसों के रहने के योग्यहै व वेहीलोग यहां रहतेहैं तुमतो अति रमणीय धवरहरोंपै व नगरोंके उपवनोंमें २५ जो कि सब वस्तु सम्पन्न व सुगन्धित बस्तु युक्तहैं वहां बसने बिचरने के योग्यहौ व श्रेष्ठमाला श्रेष्ठ चन्दनादि सुगन्धित बस्तु व श्रेष्ठवस्त्र भोगनेके योग्यहो २६ व जिसकी तुम स्त्रीहौ उसको हम धन्य मानते हैं तुमकौन हौ क्याग्यारहो रुद्रोंकी स्त्रीतो नहींहौ वा वंचासो पवनोंकी तो नहींहौ २७ हे वरारोहे कि आठो बसुओंकी तो नहींहो हमतो जानतेहैं की तुमकोई देवताहौ न तो यहां गन्धर्व्व आवें न देवता न किन्नर २८ किन्तु यहतो राक्षसों काही बासस्थानहै फिर तुमयहां कैसे आईहौ यहांतो वानर सिंह चीता व्याघ्र मृग भेड़िया २९ ऋक्ष गैंड़ादि जीव रहतेहैं फिरतिनसे कैसे नहीं डरतीहौ व मदान्ध कठोर चित्त शीघ्र चलनेवाले हाथियोंसे ३० कैसे इस महावन में नहीं डरतीहौ तुम कौनहौ व किसकी स्त्रीहौ कहांसे आईहौ व किस निमित्त दंडकारण्यमें ३१ अकेलीबिचरतीहौ यहवनतो घोर राक्षसोंसे सेवितहै इसतरहसे महात्मा रावणने जानकी जीकी बड़ाई की ३२ तिसको ब्राह्मण वेषधारी आया जान व देख अतिथियों के सब सत्कारोंसे मैथिली जीने पूजाकी ३३ पहिले तो बैठने के लिये आसन दिया फिर पाद प्रक्षालन करने को जलदिया फिरजो फलाहारादि बने तैयार थे निवेदन किये ३४ ब्राह्मणके वेषसे रावणको लाल

कपड़े पहिरे देख जानकीजी ने ब्राह्मणहीं के समान उसका निमन्त्रण किया ३५ व कहा कि हेब्राह्मण इस कुशासनपै बैठियै व यह पाद्य ग्रहण कीजिये ये वनके फल आपही के लिये हैं भोजन कीजिये ३६ जब रावणने देखा कि इन नरेन्द्रपत्नी जानकीजी ने तो हमारा बड़ा निमंत्रण किया व बहुत आदर पूर्व्वक हमसे बोलीं तबतो उस दुष्टने जबरदस्ती उनके हरनेको मनकिया ३७ जानकीजी को भी उसका यह अभिप्राय विदित होगया इससे सुन्दर बेषधारी शिकार खेलने को गयेहुये अपने पति श्रीरामचन्द्र जीको व लक्ष्मणजीको निहारने लगीं परन्तु हरितवर्ण का वह महावनहीं देखपरा रामचन्द्र व लक्ष्मणजी न देखपरे ३८॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेषट्चत्वारिंशस्सर्गः ४६ ॥

हरणे को मनकिये दण्डीका वेषबनाये रावणने जब जानकीजी से ऐसाकहा तो वे अपने आप अपना को बताने लगीं १ बिचारा कि जो हम इससे बोलती नहींतो यह ब्राह्मण उसमें फिर अतिथि हमकोशाप देगा इसलिये एक मुहूर्त्त भर अपने मनमें ध्यानकर जानकीजी बोलीं २ कि हम महात्मा जनकजीकी तो कन्याहैं व सीता हमारा नामहै तुम्हारा कल्याणहो महाराज रामचन्द्र जीकी रानीहैं ३ बिवाहके पीछे बारह वर्षतक इक्ष्वाकुबंशियों की राजधानी अयोध्यापुरीमें रहकर नानाप्रकार के मनुष्योंके सुख हमने भोगकिये व सबकाम सिद्धहुये ४ जब तेरहवां वर्षलगा तो हमारे श्वशुर महाराज दशरथ जीने मन्त्रियोंसे सम्मतिले रामचन्द्रजीके अभिषेककी तयारी की ५ जब रामचन्द्रजीके अभिषेककी सब तयारी होगई तो हमारी सासु कैकेयीजीने अपने पतिसे बरदान मांगा ६ उस समय कैकेयीने अपने धर्म्मात्मा हमारे श्वशुरजी को धर्म्म में ऐसा फँसाया कि उससे हमारे पतिको तो वनवास कराया व अपने पुत्रभरतको राज्य दिलाया ७ सत्य सन्ध नरोत्तम अपने पतिसेउन्होंने न हम भोजन करेंगी न शयन करेंगी न जलपान करेंगी यहकहदोबरमांगे८ व यहभी कहा कि जो रामचन्द्र का अभिषेक हुआ तो हम अपने प्राण छोड़देंगी जब कैकेयी ने ऐसा कहा तो हमारे श्वशुर महाराज दशरथ जीने ९ बड़ी प्रार्त्थना की पर कैकेयी ने कुछभी न माना उस समय महा

तेजस्वी हमारे स्वामी पच्चीश वर्षके थे १० व हम अठारह वर्ष कीथीं व हमारे पतिका राम ऐसा नामहै जो बड़े सत्यवान् शीलवान् पवित्र ११ विशालनयन महाबाहु सर्व्व प्राणियोंके हितकारी हैं पर उनके पिता महाराज दशरथ जी बड़े कामी थे १२ कैकेयी का प्यार करने के लिये उन्हों ने रामचन्द्रजीका अभिषेक न किया जब अभिषेक के लिये रामचन्द्रजी अपने पिता के निकट आयेतो १३ हमारे पतिसे बहुत शीघ्र कैकयी ने कहा कि हे राघव तुम्हारे लिये जो तुम्हारे पिताकी आज्ञाहै हमसे सुनो १४ यह अकण्टक राज्यतो भरतको देते हैं व तुमको १४ वर्षके लिये बनवास इससे तुमको चाहिये कि १४ वर्षतक १५ बन में रहने के लिये अभी चलेजाव व पिताजी को झूठेसे छोड़ाओ रामचन्द्र जी सब ओर से सदा निर्भय तो रहतेहीहैं उन्होंने कहा बहुतअच्छा ऐसाही करते हैं १६ इससे हमारे दृढ़व्रत भर्त्ता ने वैसाही किया क्योंकि उनके इन दोबातों की प्रतिज्ञाहै कि दान देयँ पर लेयँ कभी न सत्य सदा बोलें पर झूठ कभीनहीं १७ हेब्राह्मण रामचन्द्रजी ने ये उत्तमव्रत धारण किये हैं रामचंद्रजीके सौतेले भाई अति वीर्य्यवान् एक लक्ष्मण जी हैं १८ वे सदा रामचंद्रजी के सहायक रहते हैं व बड़े पुरुषसिंह हैं जोकि समरमें शत्रुको देखतेंही देखते मारहीडालते हैं वेलक्ष्मण नामभाई बड़े दृढ़व्रत व ब्रह्मचारी होकर १९ धनुष बाण हाथ मेंले जटा रखाय तपस्वी का रूप बनाय जब रामचंद्रजी बनको चले हमभी उनके संग चलीं तो वेभी पीछे पीछे चलेआये २० हम तीनोंजन इस तरहसे कैकेयी के कारण राज्य छोड़ दण्डकारण्य को आये २१ यहां अपने तेजसे इस बन में बिचरते हैं हे द्विजश्रेष्ठ एक मुहूर्त्त भर विश्राम करो २२ बन के कन्द मूल फलादि व रुरु बराह गोधाआदि जीवों को ताड़न कर अन्यभी तपस्वियों के भोजन करने की बहुत बस्तु ले हमारेस्वामी आवेंगे तब तुम्हारा अच्छीतरह सत्कार होगा तब तक बिराजिये २३ तुमभी अपना नाम गोत्र व कुल सब ठीक २ बतावो हे ब्राह्मण देव तुमभी अकेले दण्डकारण्य में क्यों बिचरतेहो २४ जब रामचंद्रजीकी स्त्री सीताजी ने ऐसाकहा तो महाबलवान् राक्षसों का राजा रावण बड़े कठोर वचन बोला २५ हे सीते जिसके भयसे देवता असुर व

मनुष्य सब व्याकुल हैं हम वही राक्षसों के राजा रावण हैं २६ अब कांचन के वर्ण वाली व रेसमी वस्त्र धारण किये तुमको देख अपनी स्त्रियों के संग रति न करेंगे २७ तुम्हारा कल्याण हो जो इधर उधर से हम बहुत सी उत्तम स्त्रियां हरलायेहैं उन सबमें हमारी बड़ी रानीतुम होवो २८ समुद्र के मध्य में सगर के पुत्रोंके किये हुये उपद्वीपमें त्रिकूट पर्व्वत के ऊपर लंकानाम हमारी महापुरी है २९ हेसीते तहां हमारे साथ महावनोंमें विचरोगी इस बनवास की इच्छा न करोगी ३० हे सीतेजो हमारी भार्य्या तुमहोगी तो सब भूषण पहिरे पांच हजार तुम्हारी दासियांहोंगी ३१ जब रावण ने ऐसा कहा तो श्रीजनकनन्दनी जी महाकुपितहो रावणका अनादर करबोलीं ३२ कि सुमेरु पर्व्वत के समान अचल व महेन्द्राचल के समान गुरु व समुद्रके समान भी अचल श्रीरामचन्द्र अपने पतिकी हम अनुव्रताहैं ३३ सर्व्व लक्षण सँय्युक्त महा वरगद के समान अपने आश्रयीभूतलोगों के तापध्वंसक सत्यप्रतिज्ञ व महाभाग्यशाली श्रीरामचन्द्र जी की हम अनुव्रताहैं ३४ आज्ञानुवाहु महाचौड़ी छातीवाले सिंहके समान विक्रमके साथ चलने-वाले मनुष्योंमें सिंहरूप व सिंहके समान प्रकाशित श्रीरामचन्द्रकी हम अनुव्रताहैं ३५ पूर्णमासीके चन्द्रमाके समान मुखवाले राजकुमार जिते-न्द्रिय महाकीर्त्तिमान् व महावाहु रामचन्द्रजी की हम अनुव्रता हैं ३६ व तुम शृगाल हो सिंहीरूप हमको चाहते हो हमतो तुमको दुर्ल्लभही हैं जैसे सूर्य्य की प्रभा को कोई नहीं छूसक्ता ऐसेही रामचन्द्रके तेजोरूप अग्निसे घिरीहुई हमको तुमनहीं छूसक्ते ३७ हे राक्षस श्रीरामचंद्रजीकी प्रिय भार्य्या हमको चाहते हो यह ऐसा दुर्ल्लभहै जैसेकोई दरिद्र सुवर्ण के हजारों वृक्ष अपने घरमें देखाचाहै ३८ व सब मृगोंके शत्रुबड़े जल्दबाज बड़े भूखे सिंहके मुखसे व विषधर सर्प्पके मुखसे दांत निकाला चाहते हौ ३९ तुम पर्व्वतोंमें श्रेष्ठ मन्दराचल को हाथसे उखाड़ा चाहते हौ व कालकूट विषपीकरकल्याण सहित जाया चाहते हौ४० सुईसेमानो अपने नेत्र खजुवाया चाहते हौ जीभ से मानो क्षूरा की धार चाटा चाहते हौ जो कि श्रीरामचंद्रजीकी परमप्यारी नारी हमको प्राप्तहुआ चाहतेहौ४१ गले में पर्व्वत शृंगबांध समुद्र उतरा चाहते व सूर्य्य चंद्रमा दोनों को

दोनों हाथोंसे पकड़उड़ना चाहतेहो ४२ जोकि रामचंद्रजीकी प्यारी भार्या को जबरदस्ती भोगकिया चाहते हो व प्रज्वलित अग्नि वस्त्रमें बांध लेजाया चाहतेहो ४३ जो रामचंद्रजीकी योग्य भार्या को प्राप्त हुआ चाहते हो मानो लोहेके त्रिशूलोंके बीचमें चला चाहतेहो ४४ जितना अन्तर सिंह व शृगालमें है व जितना छोटी नदी व समुद्रमें है व जितना अमृत व सिरका में है उतनाहीं अन्तर श्रीरामचंद्रजीमें व तुममें है ४५ जितना अन्तर काञ्चन व सीस लोहे में है व जितना चंदन व जलके कीचड़ मेंहै व जितना वनमें हाथी व बिलारमें है उतनाहीं अन्तर रामचंद्र जी व तुममें है ४६ जितना अन्तर गरुड़ व काक में है व जितना मुरैला व जलमुर्गी मेंहै व जितना हंस व गीध सेहै उतनाहीं अन्तर श्रीरामचंद्रजी व तुममें है ४७ इन्द्र सम प्रभावयुक्त रामचंद्र जो हाथमें धनुर्व्वाण धारणकिये इस भूतलमें टिकेहैं तो तुम हमको हरभी लेजावगे तोभी वहां परेपरे हम बुढ़ापा न होने पावेंगी जैसे माक्षी परने से घी नहीं खराबहोता वरन माक्षी आप मरजातीहैं घी ज्योंका त्यों बना-रहता है ४८ शुद्धस्वभाववाली जानकीजी दुष्ट राक्षससे ऐसे वचनकह सब अङ्ग कँपनेसे व्यथित हुईं जैसे पवन के मारे केला का पतला वृक्ष हिलने लगताहै ४९ तिन जानकीजीको कम्पित देख मृत्युसम प्रभाव रावण भय करानेके लिये अपना कुल बल नाम व कर्म्म कहनेलगा ५० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेसप्तचत्वारिंशस्सर्ग्गः ४७ ॥

जब जानकीजीने ऐसा कहा तो बड़े कोपसे भौहें तनेनीकर रावण कठोर वचन बोला १ हे सीते हम कुवेर के सौतेले भाई हैं रावण हमारा नाम है व हमारे दश शिर हैं प्रतापी जानो बड़ेही हैं २ जिस हमसे भयभीत हो देवता गंधर्व्व पिशाच पतंग सर्प्पादि ऐसेभाग-तेहैं जैसे मृत्युसे सदा प्रजालोग ३ व जिस हमने अपने सौतेले भाई कुवेरही को कारण पाय रणमें द्वन्द्वयुद्ध कर जीतलिया ४ वे कुवेर हमारे भयसे पीड़ित हो सब धनधान्य ऋद्धि सिद्धि युक्त अपना स्थान लंका छोड़ कैलास पर्व्वतपै जायवसे ५ तिसका यह यथेच्छाचारी पुष्पकनाम विमान हमने लेलिया जिसपर चढ़ आकाश मार्ग्ग हो जहां चाहते हैं

वहां चलेजातेहैं ६ हे मैथिलि जब कभी हम कुपित होतेहैं तो हमारा
मुखही देख मारे डरके इंद्रादि देव भागजातेहैं ७ जहां हम बैठेहोते हैं
वहां पवन डरता हुआ बहता है सूर्य्य व चंद्रमा दोनों भयभीत हो आ-
काशमें चलतेहैं ८ वृक्षोंके पत्ते नहीं हिलते नदियोंका जल नहीं चलता
जहां हम रहते हैं व चलतेहैं वहां ऐसा होताहै ९ समुद्रके पार हमारी
लंकानाम पुरीहै वह राक्षसों से पूर्णहै जैसे इंद्रकी अमरावती पुरीहै १०
जिसके आठों दिशा में समुद्रही खावाँ है व छहरदीवारी सोनेकी है वै-
दूर्यमणि के वन्दनवार बँधेहैं ११ हाथी घोड़े रथ इनके झुण्ड के झुण्ड
विद्यमान् हैं मंगलके नगारे सदा बजाकरतेहैं फुलवाड़ियों में ऐसे ऐसे
वृक्ष लगे हैं जो सब कालों में फला फूला करतेहैं १२ हे सीते तहां
तुम जब हमारे साथ वसोगी तो मनुष्यों की स्त्रियोंका स्मरण न
करोगी १३ वहां मनुष्योंके भोग विलासके पदार्थ व देवताओं के
भोग केभी भोगकर आयुर्वलहीन रामचंद्रका स्मरण न करोगी १४
क्योंकि राजादशरथजी ने अपने प्रियपुत्र भरतको तो राज्यदिया
व मन्दवीर्य जान इन रामचंद्र को वनको भेजा १५ हे विशालाक्षि तिन
राज्यभ्रष्ट गतचित्त तपस्वी रामचंद्र के साथ रहकर क्या करोगी १६
इससे कामसे अपने आप आयेहुये राक्षस पतिको अपना पति बनावो
कामबाणों से मारेहुये बेचारे रावणको जवाब न देवो १७ हेभीरु हमारा
अनादर कर पीछेसे पछतावगी जैसे राजापुरुरवा को लातोंसेमार पीछे
उर्वशी पछिताईथीं १८ हे वरवर्णिनि युद्ध में मानुषरूप रामचन्द्र ह-
मारी एक अंगुली के भी समान नहींहैं तुम्हारे भाग्य से हम यहां आय
गयेहैं अब हमको जवाब देनेके योग्य तुमनहीं हो १९ इसतरह जब
रावणने जानकीजी से कहा तो क्रोधसे नेत्र लाले पीले करअति कठोर
वचन निशाचर नाथसे बोलीं २० कि सब देवताओं के नमस्कार करने
के योग्य कुवेरदेव को अपना भाई बताय पर स्त्री हरण करना यह अ-
मंगलकर्म कैसे किया चाहतेहो २१ हे रावण जिन राक्षसों के दुर्बुद्धि
अजितेन्द्रिय व कर्कश तुम राजा हो वे सब अवश्य नाश को प्राप्तहोंगे
२२ इन्द्रकी शचीनाम भार्या को हरके चाहै जीता बच भी जाय परंतु
श्रीरामचंद्रकी भार्या हमको अपने घरमें लेजाय कभी सुखी नहींरहसका

२३ अत्युत्तम रूपवती इंद्राणी को इंद्रके न विद्यमान् होने पै हर चाहे जीताभी बचै परंतु हे राक्षस रामचंद्रजी के पीछे हमको लेजाय चाहे अमृत भी पीकर बैठोगे तो मारही डारे जावगे जीते न बचोगे २४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेऽष्टचत्वारिंशस्सर्गः ४८ ॥

सीताजीके वचन सुन प्रतापी रावण हाथसे हाथ मीज कोपकर अपना शरीर बढ़ाया १ व जानकीजीसे बड़ी चतुराई के साथ बोला कि उन्मत्त चित्त तुमने हमारा वीर्य व पराक्रम नहीं सुना २ अरे हम आकाश में खड़ेहोकर अपने भुजोंसे पृथ्वीको उठासक्ते हैं व समुद्रका सब जल पी सक्ते हैं रण में मृत्युको भी जीतसक्तेहैं ३ तीक्ष्णबाणोंसे कहो सूर्य्यको व्यथित करें पृथ्वी को तिल तिल करडालें हे उन्मत्ते कामरूप से कामरूपी हमको देखो हम सबकुछ करसक्तेहैं ४ इसतरह कहतेहुये रावणके नेत्र अग्निके समान लालहोगये व क्रोध बनाय प्रकटहोआया ५ व सुन्दर भिक्षुरूप जो धारणकियेथा उसे छोड़ जो उसका कालसमान रूपथा धारण करलिया ६ मारे कोप के नयन रक्तसदृश लालहोगये सब पक्के सुवर्ण के भूषण पहिरे अति शोभायमान होगया बहुत क्रोधकर काले बादर के समान देखपरनेलगा ७ उस समय दशमुख व बीश भुज होगया छलसे जो दण्डीका वेष बनायाथा उसे छोड़दिया ८ अपना पूर्वरूप धारण करलिया पर वस्त्र रक्तवर्णकेही धारण कियेरहा स्त्रियोंमें रत्न रूप श्रीजनककिशोरी जी को ९ श्यामकेशवती बसन भूषण विभूषित सूर्यकी प्रभाके समान देख रावण फिर बोला १० हे वरारोहे जो तीनोंलोकों में विख्यात पति चाहतीहो तो हमारे आश्रममें आवो क्योंकि तुम्हारे योग्य हमीं पतिहैं ११ बहुत दिनोंके लिये हमको भजो तुम्हारे योग्य पति बड़ाई करनेके योग्यहमीं पतिहैं हे भद्रे तुम्हारा अनादर हम कभी न करेंगे १२ अब मानुषभाव छोड़ो हममें अपना भाव लगावो राज्यसे भ्रष्ट आयुर्दायहीन अर्थरहित राममें १३ किन गुणोंसे अनुरक्तहो हे मूढ़े हे पण्डितमानिनि जो रामचन्द्र स्त्री के कहनेसे राज्य व इष्टमित्र सुहृदोंकोछोड़ १४ सर्प्पादि दुष्टजन्तुसेवित इस वनमें बसतेहैं प्रिय कहनेके योग्य प्रियवादिनी

श्रीमैथिलीजी के १५ समीपआय दुष्टात्मा रावण काममोहितहो जैसे आकाश में बुधने रोहिणी को ग्रहण कियाथा वैसेही रावण ने सीताजी को ग्रहण किया १६ उससमय मारे शोकके सीताजी ऐसी मूर्च्छित हो गई कि रावणने बावाँ हाथ तो छूटेहुये केशों में लगाया व दहिने से दोनों चरण पकड़ उठालिया १७ पर्वतशृंगाकार तीक्ष्ण दांतनिकाले व महालम्बीभुजा सहित दुष्ट रावण को मृत्यु समान देख भयभीत हो वन देवता भाग खड़ीहुई १८ उस समय मायामय गर्दभजुता रावण का स्वर्णमय रथ देख पड़ा १९ तब बहुत कठोर वचन कह व बड़े जोर से बोल घुड़क जानकीजी को जबरदस्ती रथपै चढ़ाय दिया २० जब रावण ने रथपै चढ़ाने के लिये सीताजी को पकरा तो हा राम ऐसा दूर गयेहुये रामचंद्रजीको जानकीजीने पुकारा २१ कामार्त्तरावण कामरहित जानकीजी को सर्पराज वधू के समान छटपटाती हुई पकड़ रथ उड़ाया २२ जब राक्षसेन्द्र लेचला तो भ्रांतचित्त व मत्त मनुष्य के समान बड़े जोरसे जानकीजी चिल्लाई २३ ॥

चौ० हालक्ष्मण गुरुचित्त प्रसादक । महाबाहु संग्राम सुनादक ॥ कामरूपि राक्षस हरिमोंहीं । लियेजात का विदित न तोहीं १ । २४ जीवत सुख धन धर्म्महिं लागी । तज्यहु राम वनमहँ अनुरागी ॥ लिये अधर्म्म हेतुमोहिं जाता । राक्षस देखहु लक्ष्मण भ्राता २ । २५ ॥

हे परन्तप आप उत्पथ गामियों को सीधे मार्ग्ग में चलाने वाले हैं फिर इसतरह के पापी रावण को क्योंनहीं सीधे मार्ग्ग में चलाते २६ अन्यायी पुरुष को कर्म्म का फल तुरन्त नहीं मिलता इस विषय में काल की भी आशा देखनी परतीहै क्योंकि अनबोने जानेपर तुरन्तहीनहीं फल देते जब उनका काल आताहै तभी देतेहैं २७ हे रावण काल के वशीभूत हो तुमने यय प्राणांतकारक अतिघोर कर्म्म कियाहै इससे रामचन्द्रजी से शीघ्रही दुःख पावोगे २८ परम यशस्वी व धर्म्मात्मा रामचन्द्रजी की धर्म्मपत्नी हम अब हरीजातीहैं अपने इष्ट मित्रादिकों के साथ कैकेयी सकाम होय २९ अबहम जनस्थान में फूलेहुये कर्णिकार वृक्षोंसे प्रार्थना करती हैं कि आपलोग रामचन्द्रजी से शीघ्रही कहें कि सीताको रावण हरले गया ३० हममाल्यवान् नाम पर्व्वत तुम्हारे प्रणाम करती हैं

तुम शीघ्रही रामचन्द्रजी से कहदेना कि सीताको रावण हरिले गया ३१ हंसवराजहंस सेवित गोदावरी को बन्दना करती हैं तुमशीघ्र रामचन्द्रजी से कहना कि रावण सीताको हरले गया ३२ बिविध प्रकार के वृक्षयुक्त इसवन में जो देवता हैं सबकोहम प्रणाम करती हैं आपलोग हमारे स्वामी से कहदेना कि रावण सीताको हरले गया ३३ इसवन में जो कोई बिविध भांति के जीवहैं तिनसब के हम शरणमें हैं चाहेमृग गणहोयँ वा पक्षिगणहों ३४ अपने पतिके प्राणोंसे भी अधिक प्यारी हमको रामचन्द्रजी से बतादेना कि बिवश सीताको रावण हरले गया ३५ क्योंकि आजानुबाहु श्रीरामचन्द्रजी जैसेही जानेंगे तैसेही जो स्वर्ग में व यमलोक में भी हमहोंगी तो शीघ्रही लिवा लावेंगे ३६ इस तरह करुणापूर्व्वक बिबिध प्रकार के बिलाप करती हुई जानकीजी ने एकवृक्ष के ऊपर बैठाहुआ गृध्रदेखा ३७ तिसको देख रावण के वशमें परी जानकीजीभययुक्त बचन बोलीं ३८ हेजटायुजी देखोयहपापकर्म्मा करुणा रहित राक्षसेन्द्र अनाथवत् हमको हरेलिये जाताहै ३९ यहक्रूर अति पराक्रमी बहुत अस्त्र शस्त्रलिये महादुर्म्मति निशाचरहै इसको तुम निवारण नहीं करसक्ते ४० केवल आप इतना करना किश्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मण से यहहमारा हरण ब्योरासमेत कहना ४१ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेएकोनपञ्चाशत्तमस्सर्ग्गः ४९ ॥

जानकीजीके ऐसे बचन सोतेहुये जटायुने सुनेव देखातो रावण व जानकीजी दोनों रथपैहैं १ जब अच्छीतरह जटायु देखचुके तो पर्व्वताकारदेह धार अति तीक्ष्ण टोंटवाले पक्षियों में उत्तम वृक्षपै बैठेहुये जटायुने बड़े ऊंचे स्वरसे रावणको पुकारा २ कि हे दशानन तुम पुराने धर्म्ममें स्थित व सत्य प्रतिज्ञहो हे भाई ऐसा निन्दित कर्म्म इससमय न करो फिर तो अपनी प्रकृतिके अनुसार करतेहो रहोगे ३ अभी इससे रोंकतेहैं कि हमभी बड़े पराक्रमी हैं व जटायु हमारा नामहै जितने पृथ्वीमण्डलमें गृध्रहैं उनके राजाहैं व महेन्द्र व बरुणसे भी अधिक सब लोकोंके राजा४ व सब लोकोंके हितमें रत महाराज दशरथजीके पुत्र रामचन्द्रजी जो कि चतुर्दश लोकोंके नाथहैं तिनकी ये परम यशस्विनी धर्म्मपत्नी हैं ५ इनका

सीता नामहै जिसको तुमलेजाया चाहतेहौ सो इतने बड़े भारी राजा हो फिर धर्म्ममें आरूढ़ तुम परस्त्रीको कैसेछूतेहो ६ हेमहाबल राजाओं को चाहिये कि सबकी स्त्रियोंकी रक्षाकरैं फिर राजाकी स्त्रियों की रक्षा तो विशेष करनी चाहिये इससे परस्त्रीको छूना यहजो नीचकर्म्महै इससे अपनी मति लौटा दिये ७ बीरको चाहिये कि ऐसा कर्म्म न करै जिसेकोई निन्दाकरै जैसे अपनी स्त्रीकी रक्षा परपुरुषसे करतेहैं ऐसेही और की भी स्त्रीकी रक्षा परपुरुषसे करनी चाहिये ८ हे पौलस्त्य नन्दन अर्थ धर्म्म वा काम जो शास्त्रोंके लेखसे निश्चित नहीं होता शिष्टलोग उसे राजा के करनेके अनुसार निश्चित करते हैं ९ जिससे धर्म्म शुभ वा पापये सब राजमूलही होते इससे धर्म्म काम व द्रव्यों का उत्तमनिधि राजा हीहै १० हे राक्षसोंमेंश्रेष्ठ पापस्वभाव व चंचल तुम ऐश्वर्य्यको कैसे प्राप्तहुये यह बहुत अनुचितहै जो तुम ऐसे पापी को ऐश्वर्य्य मिलगया जैसे दुराचारी पुरुषको विमानचढ़ना दुर्ल्लभहै ११ जो पुरुष स्वेच्छा-चारी होजाताहै वह स्वेच्छाचारी होनेके दुराचारों को नहीं मिटासक्ता इसीसे दुष्टात्माओंके गृहमें बहुतदिनोंतक ऐश्वर्य्य नहींरहता १२ हे रावण महाबल व धर्मात्मा श्रीरामचन्द्रजी तुम्हारे राज्य वा पुरमें जो कुछ अपराध नहीं करते तो तुम उनका अपराध कैसे करतेहौ १३ जो यह कहतेहो कि दुष्टाशूर्प्पणखाके हेतु खर जनस्थानमें आया व सरल कर्म्म करनेवाले इन्हीं रामचन्द्रजीने उसे मारडारा १४ कि जिनलोक-नाथकी भार्य्यालेकर तुमजाया चाहतेहौ तो तुम्हीं निश्चय करके कहो कि रामचन्द्रजीका इस विषयमें क्या अपराधहै क्योंकि न तो वे शूर्प्प-णखाको बुलानेगये न अपनेआप आनेपर भी उन्होंने कुछ कहा हां जब वह उनकेसङ्ग बिवाहकरना चाहनेलगी व उन्होंने न किया तो उनकी स्त्रीहीको खाने दौरी तब नाक काटली जीवसे तो भी नहीं मारा उसके ऊपर खर आया वहभी मारागया जो किसीके ऊपर अबिचार से चढ़ जाता माराहीजाता है १५ तिससे अभीअच्छाहै जानकीजी को शीघ्रही छोड़दो जिसमें रामचन्द्र तुमको अग्निरूप घोरनेत्रोंसे न भस्म करैं जैसे वृत्रासुरको इन्द्रके बज्रने भस्मकियाथा १६ अरेरावण महाविषधरसर्प को कपड़ेके बीचमें बांध उसकाख्याल नहींरखता व गलेमेंपरी काल

फाँशी नहींदेखता १७ हे सौम्य वहीभारले चलनाचाहिये जो पुरुषको दबाय न डारे व वही अन्न भोजन करनाचाहिये जोबिना कुछ रोगकिये हुये पचजाय १८ व जिसकर्म्म के करनेसे न तो धर्म्महो न कीर्त्ति न यश केवल शरीर को खेदही होतो वह कर्म्म कोनकरै १९ हेरावण हम साठहजार वर्षके हुये पिता पितामहादिकों का राज्य जैसाचाहिये पालन करचुके २० अब बनायवृद्धहैं व तुम अभी युवाहौ तिसपर धनुर्व्वाण कवच बखतर धारणकिये रथपै सवारहौ परन्तु जानकीजी को लेकर हमारे आगेसे कुशलपूर्व्वक न जावगे २१ हमारे देखते देखते जबरदस्ती तुम वैदेही जीको नहीं लेजाय सक्ते जैसे न्यायशास्त्र के झूंठे मूठे कारणों से आज्ञासिद्ध वेदकी श्रुतियों को कोई नहींजीतसक्ता २२ हे रावण यदि शूरवीर हो तो एक मुहूर्त्तभर खड़े होकर युद्धकरो जैसे तुम्हारा भाई खर पूर्व्वहीं पृथ्वीमें सोयगया वैसेही तुमभी शयन करोगे २३ जिन रामचन्द्रजीने बारम्बार हजारों दैत्य दानव मारडारे वेही चीर धारणकिये बहुतही शीघ्र तुमको मारडारेंगे २४ हे नीच हम इससमय क्याकरें वे दोनों राजकुमार दूर चलेगये नहीं तो तुम उनसे भयभीत हो शीघ्रही नाशको प्राप्त होजाते इसमें कुछभी संशय नहीं२५ खैर वे होते तबतो जो होता सो होता इतना अब भी है कि जबतक हमारेशरीरमें प्राणहैं तबतक रामचंद्रजीकी परमप्रियरानी कमलपत्राक्षी परम शोभनरूप इन सीताजीको तुमनहीं लेजाय सक्ते २६ क्योंकि जब तक हम जीते हैं तबतक हमको अवश्य तिन महात्मा रामचन्द्र जी व महाराज दशरथजीका कार्य्य करना चाहिये २७ हे रावण एक मुहूर्त्तभर खड़ेरहौ जैसे बौरसे फल तोड़लिया जाताहै वैसेही तुमको रथसे भूमिमें गिराये देतेहैं जबतक हमारे प्राणहैं युद्धातिथ्य करते हैं २८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेपंचाशत्तमस्सर्ग्गः ५० ॥

जब जटायु ने ऐसा कहा तो मारेक्रोध के लालनेत्रकर तपाये हुये सुवर्णके कुण्डल धारणकिये राक्षसोंकाइन्द्र रावण पक्षियोंके इन्द्रजटायु केसामने असहन शील हो दौड़ा १ उस महायुद्ध में उन दोनों बीरों की मार ऐसी घोरहुई जैसे पवनके ज़ोर से आकाश में दौड़ने से दो बादरों

की टक्कर लगने से होती है २ उससमय गृद्ध व राक्षस दोनों का ऐसा अद्भुत युद्धहुआ जैसे माला पहिरे पंखसहित दो पर्व्वतों का युद्ध हो ३ इस तरह प्रथम तो द्वन्द्वयुद्ध हुआ तिसके पीछे रावण ने नानाप्रकार के वाणों की वर्षा जटायु के ऊपर की ४ रावण के चलायेहुये सब अस्त्र शस्त्रों के समूह पक्षिराज जटायु ने ग्रहण करलिये ५ व अतितीक्ष्ण नखवाले अपने चरणों से रावणके अंगो में सहस्रों घावकर दिये ६ तब शत्रुके मारडालने की इच्छा से मारे क्रोधके रावण ने १० वाण लिये व मृत्यु के दण्डही के समानथे ७ व उन्हीं अति तीक्ष्ण बड़े जोरसे छोड़े हुये सीधे बाणोंसे जटायुके अंग भेदन किये ८ परंतु रावणके रथपै बैठी शोकयुक्त जानकीजी को रोदन करती हुई देख उन वाणों को कुछ न समझा रावण की ओर जटायु झपटे ६ व मणि विभूषित सहित धनुष रावणके वाण महातेजस्वी जटायु ने अपने चरणोंसे तोड़डाले १० तब महाक्रोधकर व उस बातको न सहकर रावण और धनुष ले सैकरों हजारों वाण मारनेलगा ११ यहां तक कि उन वाणोंसे जटायु ऐसे घिरगये व शोभित हुये जैसे अपना स्थान पाय पक्षी शोभित होता है १२ जटायु ने रावण के चलाये सब बाण अपने पंखोंसे अलगकर दोनों चरणों से रावणका धनुष तोड़डाला १३ व अग्निके सदृश देदीप्यमान रावणका कवचभी महातेजस्वी पक्षिराज ने अपने पंखोंसेही तोड़फोड़डाला १४ व सुवर्ण के कवच ओढ़े आकाश में उड़नेवाले पिशाचों के मुखों के समान मुखवाले तिस रावण के रथ के गदहोंको भी महाबली जटायु ने मारडाला १५ व तीन बांश लगा यथेच्छाचारी अग्नि सम प्रकाशित व अति विचित्र पहिआ आदि अंग सहित तिस का रथ भी रत्ती २ चूर्ण करदिया १६ व पूर्णमासीके चंद्रमा के समान प्रकाशित छत्र व व्यजन भी हांकनेवालों सहित अति वेगसे भूमि में गिराय दिया १७ व महा बलवान् जटायु ने रावण के सारथि का बड़ा भारी शिरभी अपनी टोंट से काटलिया १८ अब रावणका धनुष भी टूटगया रथ के घोड़ेभी मारेगये रथभी चूर्णीभूत होगया सारथिभी मार गया इससे जानकीजी को दोनों हाथोंसे पकड़े हुआ पृथिवीमें गिरपरा १६ रावणको भूमिमें गिरा देख व उसके अस्त्र शस्त्र वाह-

नादि टूटे फाटे मरे मराये देख सब वहां के रहनेवाले प्राणी बहुत अच्छा बहुत अच्छा ऐसा कह गृध्रराज की बड़ाई करने लगे २० रावणभी जटायुको वृद्धापन के कारण थकाथकाया देख जानकीजी को फिर ग्रहण कर ऊपर को कूदगया २१ जब जटायुने देखा कि रावण हर्षित हो जानकीजी को फिर उठाय कोरा में बैठाय लिये चलाजाता है व केवल खड्गही इसके हाथमें रहगई है अन्यसब अस्त्रशस्त्र बाहन सारथ्यादि साधन हतहोगये हैं २२ तबमहा तेजस्वी जटायु बड़ेजोर से कूद व रावण को रोंक फिरबोले २३ हे रावण बज्र समान बाणधारी श्रीरामचन्द्रजीकी भार्य्या जोतुम हरेलिये जातेहोतो केवल सबराक्षसोंको बधही कराने के लिये नकि इनसे कुछ सुखभी तुमको होगा २४ यह जानकी हरण रूपबिष मित्रबन्धु मन्त्रीसेना व परिवार सहित तुमपीते हो जैसे प्यासा मनुष्य पानीबड़े प्रेमसे पीता चलाजाताहै २५ इसका परिणाम यहहोगा कि जैसे बिषपान करनेवाले लोग उसके फलको बिनाजाने पानकरते हैं फिर बिनाशही को प्राप्तहोते हैं ऐसेही तुमभी सकुटुम्ब नाशको प्राप्तहोगे २६ अबतुम कालकी फांशीमें बँधेहो कहां जाय उससे छूटोगे जैसेमांस सहित कटिया को मुखसे पकड़ मछली मरही जातीहै और कुछनहीं होता २७ हे रावण श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मण दोनोंभाई निन्दा सहने के योग्यनहीं हैं इससे जैसेही जानेंगे कि तुमने इसस्थान की निन्दाकी जो ज़बरदस्ती जानकीजी को लियेचले जातेहो तो उसको न सहसकेंगे २८ जैसा महाडरपोंक तुझने लोक निन्दित कर्म्मकिया है वहचोरों का कर्म्म है बीरोंका कर्म्मनहीं है २९ हे रावण यदितुम शूरहो तो एकमुहूर्त्त भरखड़े हो युद्धकरो कहांभागे जातेहो जैसे तुम्हारा भाईखर मारजाने के पीछे भूमिमें सोयाहै वैसेही तुमभी शयन करोगे ३० अपने मरने के समय पुरुष जिसकर्म्म को प्राप्तहोता है तुम अपने नाशके लिये उसीधर्म्म को प्राप्तहो ३१ हेपापी रावण जिसकर्म्म का जोफल है उसको बिष्णु ब्रह्मा व महादेव भी नहींमिटा सक्ते तो तुम्हारी क्या गणना है ३२ इतनाकह महाबीर्य्यवान् जटायु गृध्रराज उसरावण नाम राक्षस की पीठपै फरफराय जाय लपट गये ३३ व पकड़कर रावण के सर्व्वाङ्ग अपने तीक्ष्ण नखोंसे चीर फारडाले जैसे

मदान्ध हाथीके ऊपर चढ़ हथिवाल जहांपाता वहीं अंकुश भालाआदिसे
मारनेचोंकनेलगता है ३४ वैसेही पीठमें अपनीटोंटलगायनखोंसे नोचने
लगे नखपक्ष व मुखयेही तीनतो आयुधथेही इन्हींसे शिरमोच्छ आदिके
जितने बालथे उखाड़ डाले व रत्तीरत्ती मांस नोच बहादिया ३५ तबरा-
वण बहुत पीड़ित हुआ किसी ओरसेमुह फेरने का अवकाशही नहींपाता
था इससे बहुतही ब्याकुल हुआ मारेक्रोध के ओठ कांपने लगे व सर्व्वाङ्ग
थरथराय कांपने लगा ३६ तबजिससे अवकाश पायभाग न जायँ इससे
जानकीजी को बायेंहाथ से पकड़ मारेक्रोध के मूर्च्छितहो जटायु के ए-
कलात उसने मारी ३७ उसलात को बचाय जटायु ने बाईंओर के दश
रावण के हाथ उखाड़ लिये ३८ व दूरफेंक दिये बाहुकटे हुये रावण
के कैसे शोभित होतेथे जैसे बामीसे निकलेहुये बिषारी सर्प्पमारे
बिषकी ज्वालाके शोभित होतेहैं ३९ तिसके पीछे मारेक्रोध के रावण
जानकीजी को छोड़ मूकाओं से व लातोंसे जटायु को मारने लगा ४०
व येभीउसे नोचने पोचने लगे इसतरह राक्षसराज रावण व पक्षिराज
जटायु का एकमुहूर्त्त भररोमहर्षण युद्धहुआ ४१ तब श्रीरामचन्द्रजी के
लियेयुद्ध करतेहुये जटायु के पंख चरण व बगलें तलवार उठाय रावण
ने काटडाला ४२ जबराक्षसराजने ऐसाकिया तो बिनापंख होजाने के
कारण जटायु पृथिवी में गिरपरे व बनाय मरण प्राय होगये ४३ रुधिर
बहतेहुये जटायु को धरणी में परेलोटते देख मारेदुःख के पीड़ित हो
जानकीजी उनकी ओरदौरीं जैसेकोई अपने भाईबन्धु को दुःखित देख
दौरता है ४४ रावणने भी कालेबादर के समान व ललझरपटयुक्तमहा
पराक्रमी जटायु को पृथिवी में परेदेखाजैसेबुझीहुई आगको कोईदेखै ४५॥

कुंडलिका ॥

पक्षी कहँ लषि जानकी रावण मर्दित गात ।
भूमि बिलोटत धूलियुत मुखनहिं आवत बात ॥
मुख नहिं आवतबात जनक तनया करिरोदन ।
पकरिजटायुहि बहुरिमिलींतजिसकलप्रमोदन ॥
यहि बिधि बारहिबार देखि पक्षी निज रक्षी ।
जनकसुता बिललात लषत पुनिपुनिसोपक्षी १ । ४६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेएकपंचाशत्तमस्सर्गः ५१॥

चन्द्रमुखी श्री जानकी जी रावण के मारे गृध्रराज जटायु को देख अति दुःखित हो विलाप करनेलगीं १ कि मनुष्योंको जब सुख व दुःख मिलने पर होता है तो अवश्य उनको सुख दुःख सूचक दक्षिण वाम नेत्रादि अंग फरकने लगते व दर्प्पण आदिमें शिर नहीं देखपरता स्वप्न में कालेदांत युक्त कालेपुरुष देख पड़ते पक्षियोंका दहिने बायें होकर उड़ना होता पक्षियोंकी बोली समझ पड़ती ऐसा अवश्य होताहै २ हे रामचंद्र हेकाकुत्स्थ अपना को बड़ा कष्ट नहीं जानते क्योंकि हमारा वियोग जनाने के लिये मृग वा पक्षी अनुचित दहिने वा बायें तुम्हारे घूमतेहोंगे ३ हाय यह बेचारा पक्षी हमारी रक्षा करने के लिये आया हमारीही अभाग्य से इस पापी दुष्ट रावणने इसेभी मारडाला कि यह पृथिवी में पराल़ोटता है ४ हेश्रीरामचंद्र व हे लक्ष्मण इस समय हमारी रक्षाकरो क्योंकि तुम्हारी श्रेष्ठ स्त्री हम बहुत ब्याकुल हैं जे हमारे निकट बैठे बैठे बचन सुनलेतेथे वैसेही वहांहीं से सुनो ५ इस तरह रोती पीटती व बिलपती जानकीजी को देख रावण फिर पकरने को दौरा ६ महा वृक्षों में लपटी हुई लता के समान जटायुको पकड़े रोदन करती हुई सीताजी को देख इसे छोड़ो ऐसा कह रावण जानकी जी के समीप आया ७ व राम २ लक्ष्मण लक्ष्मण बार बार कहती हुई जानकीजी को राम रहित बनमें यमराज समान रावणने पकरा ८ जब जानकी जीको जबरदस्ती रावण ने शिरके बार पकर जोरसे खींचा तो सब चराचर संसार महा अन्धकारसे पीड़ित होगया सूर्य्य व चंद्रमा भी मारे शोक के मन्द होगये ९ इसीसे उस समय पवनका चलना वन्द होगया व सूर्य्य की प्रभा जातीरही उसी समय दिव्य दृष्टि से ब्रह्माजी ने देखकर जानलिया कि रावण सीताको हरलेगया १० श्री रामचन्द्र जी ने देवताओं का कार्य्य किया क्योंकि अब रावण को अवश्यही मारडारेंगे यह बात उन्होंने सब देवताओंसे कही यह सुन देवों को कष्ट अब न होगा इससेतो सब ऋषिगण सुखी हुये व जानकी जी का हरण सुन परम दुःखित हुये ११ जानकी जीको हरीहुईदेख दण्ड-

कारण्य निवासियों ने भी जानलिया कि अपने आप रावणका नाश होगया कुछभी शंका नहीं है १२ व राम राम लक्ष्मण लक्ष्मण कह कह रोदन करती हुई जानकीजी को ले रावण आकाश को चलागया १३ उस समय अग्नि में तपाये हुये सुवर्ण के भूषणों के समान वर्ण वाली जानकी जी पीत रेसमी वस्त्र पहिने सुदामा पर्व्वत परकी बिजुली के समान शोभित हुईं १४ जानकीजी के पीत वस्त्रों के उड़ने के कारण अग्नि लगे हुये पर्व्वत के समान रावण शोभित होताथा १५ तिन परम कल्याणी श्रीजनककुमारी जीके अरुण व महकतेहुये कमल पत्रादि रावण के ऊपर गिरते चले जातेथे १६ तिन जानकी जीका रेसमी वस्त्र पीत वर्ण होने के कारण आकाश में सन्ध्याकाल के बादर के समान शोभित होता था १७ व तिन जानकी जी का मुख रावण के अंक में टिकने के कारण आकाशमें बिना रामचन्द्र जी के बिना नाड़ी के कमल के समान नहीं शोभित होताथा १८ नील मेघको भेदन कर उदित चन्द्रमा के समान सुन्दर ललाट सहित सुन्दर केश पर्य्यन्त पद्मगर्भ सम प्रकाशित विस्फोटकादि चिह्नरहित १९ देदीप्यमान शुक्लवर्ण के दातोंकी प्रभासे अलंकृत सुन्दर नयनयुत श्री जानकीजी का मुख रावण के अंक में स्थित आकाश में हुआ २० व रोदन युक्त बिनाआंशु पोंछा हुआ चन्द्रमा के समान प्रियदर्शन सुन्दर नासिका संयुक्तमनहर अरुण ओष्ठसहित सुवर्णके आकार २१ रावणसे कँपाहुआ तिन जानकीजीका मुखारविन्द आकाशमें दिनके चंद्रमाके समान बिना श्रीरामचन्द्र के न शोभितहुआ २२ सुवर्णके वर्णकी जानकीजी नीलवर्ण के रावणके संग ऐसी शोभित हुईथीं जैसे सुवर्ण की क्षुद्रघण्टिका नीले हाथीकी कटि में बँधनेसे शोभित होतीहै २३ पीले कमलके समान पीतरंग की व सुवर्ण के रंग के सदृश रंगवाली तप्त सुवर्ण के भूषण धारणकिये जानकी जी बादरके संग बिजुलीके समान शोभित हुई थीं २४ तिन जानकीजी के भूषणोंके शब्दसे रावण गर्ज्जतेहुये विमल नील बादरके समान हुआ २५ रावणकी हरीहुई जानकीजी के शिरसे जो फूलोंकी वर्षाहोती चलीजातीथी वह पृथिवी पै गिरतीथी २६ व वही फूलोंकी वर्षा रावणके वेगसे कँपाईहुई फिर रावणहींके अंगमें संल्लग्न होतीथी २७ व सीता जी के

शिरके फूलोंके धारा रावणके चारोंओर सुमेरु पर्व्वतके चारोंओर नक्षत्रों की पांति के समान शोभित होती थी २८ रत्नभूषित वैदेहीजी का नूपुर चरणारविन्द से गिरपरा व बिजुलीके समान पृथिवीमें जाय परा २६ वृक्ष के पल्लव के समान अरुण रंगकी श्रीराज राजेश्वरी जानकी जी नीलरंगके रावणको हाथीको सुवर्ण की कक्षाके समान शोभित करातीथीं ३० अपने तेज से आकाश में महाज्वाला के समान देदीप्यमान श्री जानकीजीको आकाश में प्रवेशकर रावण हरलेगया ३१ तिन जानकी जीके अग्नि समान देदीप्यमान भूषण पृथिवीमें आकाशसे गिरेहुये पुण्य क्षीण नक्षत्रोंके समान शब्दायमान होतेथे ३२ व श्रीजनककिशोरी जी के गलेसे गिराहुआ चन्द्रसमान प्रकाशितहार आकाश से चुईहुई गंगा जी के समान शोभित होता ३३ उत्पात पवन के लगनेसे कम्पित व नानाप्रकार के पक्षीयुक्त वृक्ष जानो आगे को झुंक जानकी जी से यही कहतेथे कि न डरो ३४ व पवनके बेगसे उलट पलटे कमल होजानेके कारण व जलचरोंके भयभीत होनेसे छोटीछोटी तलैयां उत्साह रहित अपनी सखीही के समान जानकीजीको शोचतीथीं ३५ व सिंहव्याघ्र मृग पक्षी लोग चारोंओरसे जानकीजी की पछाहीं के पीछेपीछे मारेक्रोध के दौरतेथे ३६ जानकीजीके हरजाने के समय जलप्रपात आँशुओंके साथ ऊंचेऊंचे शृङ्गही मानो बाहुहैं तिनकोउठाये जानों सबपर्व्वत रोदनहीं कररहेथे ३७ श्रीसीताजी को हरीदेख भगवान् सूर्य्यनारायण प्रभा रहित होगये व उनका मण्ड धूमिल होगया ३८ अरेभाई अब संसार में धर्म्म नहींरहा फिर सत्यकहांसे रहै सरलता व सुशीलता भी नहीं है क्योंकि नहींतो श्रीरामचन्द्रजी की स्त्री जानकीजी को रावण कैसे हरता ३६ यहकह सब जीवजन्तुओं के झुण्डके झुण्ड बारबार रोदन करते व मृगोंके बच्चे भयभीत हो बारबार रोतेथे ४० नेत्रउघार उघार बार बार देख देख वनदेवताओं के सर्व्वाङ्ग मारेभयके कांपनेलगेथे ४१ व राम राम लक्ष्मण लक्ष्मण कह कह जोरसे रोदन करती व पुकारती जानकीजी को मधुर स्वरसे बोलती देख सुन ४२ व बार बार धरणी तल निहारतीहुई देख अतिव्याकुल चित्त तिनको अपनानाश कराने के लिये रावण हरलेगया ४३ मनोहर दन्तवाली मन्द मन्द मुसुकाना

जाननेवाली मैथिली को रावणने बिनाबन्धुकी करदिया इससे बिना श्री रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी के देखे मारेभयके भारसे पीड़ित सीताजीका रङ्ग कुछ और का औरही होगया ४४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेद्विपञ्चाशत्तमस्सर्गः ५२ ॥

जब रावणको श्रीजानकीजीने देखा कि हमको आकाशमार्गी होकर उड़ायेलिये जाताहै तो इसमहादुःखके होनेसे अतिदुःखितहुईं १ व मारे क्रोधके रोदनकरने से ताम्रके समान अरुणनयनकर अतिभयानकनेत्र वाले रावणसे बोलीं २ हे नीच रावण जो कि शूनेमेंसे हमको चोरके समान हरेलिये भगाजाताहै इसनीच कर्म्मसे नहींलज्जित होता ३ हे दुष्टात्मन् हमारे हरनेकी इच्छासे तुम्हींने मायाका मृगबनाय हमरेपति को दूरकरदिया ४ व जो यह हमारे श्वशुरका सखा गृध्रराज जटायुह-मारी रक्षा करनेके लिये उद्यत हुआथा उसेभी तूने मारडाला ५ हेरा-क्षसाधम तेरावीर्य्य हमको बड़ाभारी देखाईदेता है पर जिससेतूनेप्रथम तो अपनानाम बड़ाभारी सुनाया व फिर राम लक्ष्मणके सामने युद्धकर जीतकर हमको नहींलाया इससे विदितहोताहै कि तू केवलचोरहै परा-क्रमी नहीं है ६ हेनीच शूनेमें पराई स्त्रीका हरना ऐसा नीचकर्म्मकर तू कैसे लज्जित नहीं होता ७ लोकमें जो तू अपना को बीर मानताहै व ऐसा निन्दितकर्म्म करता अधर्म्मिष्ठक निर्ल्लज्ज कर्म्म लोगकहेंगे ८ तेरी शूरता व पराक्रम को धिक्कारहै जो कि तूने पहिले अपनी बड़ीभारी बड़ाई की कि मेरी बराबर संसारमें कोईनहीं व फिर ऐसाकर्म्म किया जिससे सबलोकोंमें तेरीनिन्दा होगी ऐसे तेरे कर्म्मको धिक्कारहै ९ क्या करें तू तो बड़ेबेग से भगाजाता जो एक मुहूर्त्त भर भी ठहरजाता तो जीता न जाने पाता १० क्योंकि उन दोनों महाराजकुमारोंके दृष्टि-गोचर हो सेनासहित भी तू मुहूर्त्त भरभी नहीं जीसक्ता ११ तिनदोनों भाइयोंके बाणोंके घावोंको कौनकहै तू उनका छूनाहीनहीं सहसक्ताजैसे वनमें लगे हुये अग्निका स्पर्श पक्षी नहीं सहसक्ता १२ हे रावण अब भी कुशलहै जो तू अपनाभला चाहताहै तो हमको चुप्पे छोड़दे नहींतो हमको जोतू पकड़ेलिये जाताहै इसबातको जैसेही हमारेस्वामी जानेंगे

क्रोधकर अपने भाईके साथ १३ अवश्य उपायकरेंगे व जो तू हमको नहीं छोड़ता तौ अपनी मौतही समझ व जिसलिये तू हमको अपनेयहां लेजाया चाहताहै १४ हेनीच वह तेरामनोरथ निरर्थकही होगा क्योंकि सब देवताओंसे भी उत्तमस्वरूप अपनेस्वामीको बिनादेखे १५ शत्रुके वशमें पर हम बहुतदिनोंतक प्राणनहीं धारण करसक्तीं हमजानती हैं कि तुम अपना कल्याण व हितनहींदेखते १६ जैसे मृत्युसमयमेंमनुष्य सब विपरीतिही देखताहै जितनेलोग मरनेपर होतेहैं उनसबोंकोअपना हित नहीं रुचता १७ हे निशाचर जिससे कि इसपरमभय स्थानमें भी पड़के तुम नहीं डरते इससे हमजानती हैं कि तुमकालकी फांशमें फँशे हो १८ हमजानती हैं कि तुमको अवश्य वृक्ष सुवर्णके दिखाईदेते होंगे क्योंकि जो मरनेपर होताहै कुछदिन प्रथमहीसे उसको सबवृक्ष सोने हीके दिखाई देनेलगतेहैं हेरावण तुम रुधिरकी धाराबहतीहुई अतिघोर वैतरणीनदी व १९ खड्ग पत्र वन नाम अति भयानक करन शीघ्रही देखोगे व तपायेहुये सोनेके रंगके फूलसहित व वैदूर्य्यमणिके पत्तेलगे २० लोह के कांटों से जटितसेमरका वृक्षदेखोगे क्योंकि तिन महात्मा रामचन्द्रजीके साथ ऐसा अपराधकर तुमनहीं जीसक्ते २१ जैसे कि विष पानकर बहुत देरतक प्राणनहीं धारण करसक्ता इन सब बातोंसे स्पष्ट है कि रावणतुम कालकीफाँशीमेंबँधेहो २२ महात्माहमारेभर्त्ताके सामने संग्राममें आय फिरअन्यत्र कहीं कल्याण न पावोगे कुछउनके भाई लक्ष्मणजी की आवश्यकता नहींहै तुमअकेले उन्हींके सामने पड़के जीते न बचोगे २३ जिन रामचन्द्रजीने अकेलेही चौदहहजारराक्षस एकडेढ़ मुहूर्त्त में मारडारे वहीसर्व्वशास्त्र कुशल व महाशूरवीर व बलीरामचन्द्र जी २४ अपनीपरमप्रिय भार्य्याके हरनेवाले तुमको क्योंतीक्ष्ण बाणोंसे न मारडारेंगे यह व इसीतरहसे अन्यभी कठोरवचन रावणके बाहोंकेबीच मेंबैठीहुई जानकीजीमारेभय व शोककेव्याकुलहोरोयरोयकहतीथीं२५॥

दो० इमि भाषत बिलपतकरुण सीतहि राक्षस नीच ।
हरिलैगयहु कराल नहिं गनत आपनी मीच १ । २६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेत्रिपंचाशत्तमस्सर्गः ५३ ॥

इस तरह से हरीहुई जानकीजीने ऐसा मार्ग्गमें किसीको न देखा जो उनकी रक्षा करता हां जातेजाते एक पर्व्वतके कँगूरा पै बैठे पांचउत्तम बानर देखे १ तब उन बिशालनयनी जानकीजीने सुवर्णके रंगका अपना एक वस्त्र व कुछ भूषण निकाल तिनके मध्यमें २ इस बिचारसे छोड़ दिये कि जिसमें येलोग रामचन्द्रजीसे आनेके समय कहदेवें वह जानकीजी का छोड़ाहुआ भूषण सहित वस्त्र उन्हीं बानरों के बीचमें गिरा ३ मारे जल्दबाजीके रावणने जानकी जीका यह कर्म्मनहीं जाना पर उन पीली पीली आंखों वाले पांचो वानरोंने उन बिशालाक्षी सीता जीको रोदन करती हुई अपने नेत्रोंसे बार बार देखलिया ४ व रावण पम्पापुरीकोनांघ लंकापुरीकी ओर ५ रोदन करतीहुई सीताजीको लेकर चलागया तिनको हर्षितहो रावण लेगया पर वास्तवमें अपनीमौत अपने साथ लेगया ६ जैसे कोई महा बिषधरी सर्प्पिणीको कोरामेंलेकर दुलरावे आकाश मार्ग्गहोकर जानेके कारण बहुतसे पर्व्वत वन नदियांवतडागादि देखताहुआ ७ रावणबड़ी शीघ्रताके साथ मत्स्य कच्छप मकर नक्रादिकोंके स्थान समुद्रको उतरगया जैसे चापसे छूटा हुआ वाण अति वेगसे सीधा चलताहै ८ जब समुद्रके उसपार रावण जाने लगातो जानकी जीके हरणके भयसे भीतहो समुद्र खलभला उठा लहरियां बढ़आईं जलजन्तु सब ब्याकुलहो उठे कि क्याहुआ चाहताहै ९ जानकीजी के हरणके समय यहदशा तो समुद्रकी हुई व अन्तरिक्ष में सिद्धचारण लोगोंके ऐसे बचन सुनाई देतेथे १० कि बस अब रावणका अन्तइन्हीं जानकीही तकरहा अब यहजीता न बचेगा यह बतकही तो होतीही थी कि सीताजी को लेरावण ११ अपनी लंकापुरीमें पैठा सीता जीको नहीं लेगया मानों अपनी मौत कहींसे खरीद लाया लंकापुरी बड़ेबड़े चौरहोंसे व सड़कोंसे उस समय शोभितथी १२ वहां पहुंचअति मनोहर अपने जनाने स्थानमें पहुंचा व वहां शोकमोह समन्वित तिन परम सुन्दरी जानकीको जाय बैठाय दिया १३ मानो मयकी बनाई दूसरी माया का रूपहै इनको बैठाय अति घोर दर्शन निशाचरियों से रावण बोला १४ कि इन सीताकी इसतरहसे रक्षाकरो कि जिसमें बिना हमारी आज्ञाके न कोई पुरुष न स्त्री इनको देखसके व मुक्तामणि सुब-

णी वस्त्र भूषण १५ जो जो ये चाहें इनके मनमाना सबजनी लेले कर दियाकरो व जो कोई स्त्री तुमलोगोंमें से इनवैदेहीको अप्रिय बचन१६ अज्ञानसे वा जानबूझके कहेगी वह अपने प्रियप्राणों को अपने शरीरमें न समझे इसतरह सब रक्षाकरनेवाली राक्षसियोंसे कह महा प्रताप-वान् रावण १७ जनानेस्थानसे बाहर निकल शोचनेलगा कि अबहम को इस समय क्या करनाचाहिये देखातो आगे मांसभक्षी आठ बड़े भारी राक्षस बैठेथे १८ उनको देख ब्रह्माके बरदानके बलसे मोहित रावण हँसके व अपनी बड़ाई करबोला १९ कि हे बीरो नानाप्रकारके अस्त्रशस्त्रादि धारणकर बहुतही शीघ्र यहांसे जिस जनस्थानमें बहुत दिनोंसे खर रहताथा व इन दिनोंमें वह मारगयाहै वहां चलेजावो२० व वह जनस्थान शून्यपराहै क्योंकि उसमें रहनेवाले राक्षस मारगये हैं इसलिये तुमलोग अपने पौरुष व बलके आश्रितहो भयको दूर कर वहांजाय टिको २१ प्रथम वहांजो बहुत बड़ी भारीसेना रहतीथी वह खरदूषण सहित रामचन्द्रके बाणोंसे मारीगई २२ तिसीसे यद्यपिहमबड़े धैर्य्यवान्हैं परहमको क्रोधबढ़ाहुआहै व रामचन्द्रके साथ बड़ा दारुण वैरभी उत्पन्न हुआहै २३ सो हम अपने शत्रुके ऊपर वह बैर प्रकटकरना चाहतेहैं क्योंकि बिना अपने शत्रुको मारडाले हमको नींदनहीं आती२४ इससे खरदूषणादिकों के मारनेवाले तिन रामचन्द्र को मार हम सुखी होंगे जैसे निर्द्धन पुरुष धनपाय सुखी होता है २५ वहां जनस्थान में बसकर आपलोग रामचंद्रकी प्रवृत्ति देखे रहना कि वे वहां क्या करते हैं २६ बस अबतुम सबजन वहां चलेजाओ व रामचन्द्रके मारजानेका यत्न सदा करते रहो २७ तुम लोगों का बल हमने बहुत संग्रामों में जानलियाहै इसीसे इस जनस्थान में तुमलोगोंको स्थापित कियाहै २८ वे आठो राक्षस रावणके ऐसे प्रिय अर्थयुक्त बचनसुन व उसके प्रणाम कर लंकापुरी छोड़ एक संगहो गुप्तरूप जनस्थानको गये २९ व रावण जानकीजीको पाय हर्षितहो राक्षसियों को उनको सौंप श्रीरामचन्द्रजी से मारे मोहके परम वैरकर आनन्दित हो अपने घरमें बैठा ३० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेचतुःपंचाशत्तमस्सर्ग्गः ५४ ॥

महा बलवान् आठ राक्षसोंको जनस्थान में रहनेके लिये आज्ञा दे अपनी बुद्धिकी विकलता से अपना को रावणने कृतकृत्य माना कि बस अवहम सबकार्य्य करचुके १ फिर कामबाणों से पीड़ित हो जानकीजी को रात्रिदिन स्मरण करताहुआ रावण घरमेंजाय बड़ी शीघ्रताके साथ श्री सीताजी को देखने गया २ वहां जाय उसने राक्षसियों के मध्य में बैठी शोक करती जानकीजीको देखा ३ उससमय सीताजी के नेत्रों से आंशु बहरहेथे व मारे दुःखके भारसे पीड़ितहो अति व्याकुल होरहीथीं इससे जैसे वायुके वेगसे नौका जलमें कांपतीहै वैसेही कांप रहीथीं ४ व जैसे मृगोंके झुण्डसे भूलीहुई मृगी कुत्तोंके बीचमें घिरीहुई व्याकुल रहती उसीतरह राक्षसियोंके बीचमें नीचेको मुखकिये बैठीहुई जानकी जीकेनिकट जाय रावण ५ उन महाशोकके वश अतिदीन परवश जानकी जीको जबरदस्ती देवताओंके गृहके समान अपना सब घर घुमाय घुमाय देखानेलगा ६ जिस घरमें नानाप्रकार के चत्तरहर बनेथे उनमें सहस्त्रों स्त्रियां ठौर ठौर बैठी थीं नानाप्रकारके पक्षी बोल रहेथे व बैठेथे नाना-प्रकारके मणियोंसे बनेथे व ठौर ठौर मणियों के ढेरके ढेर धरे थे ७ व ठौर ठौर हाथीदांत के खम्भे लगे थे व बीच बीच सुवर्ण स्फटिक मणि चांदी हीरा व वैदूर्य्यमणिके बूटे कसीदे बनेथे इसीसे देखनेवालोंके मन हरलेतेथे ८ दिव्य नगारे ठौर ठौर बाज रहेथे तपायेहुये सुवर्ण के पत्रों से बनाहुआ बन्दनवार लटकता था ऐसे मन्दिर में सुवर्णकी सिड्ढियों पै सब राक्षसियों समेत जानकी जी के साथ रावण चढ़ा ९ वहां ऊपर हाथीदांत व चाँदीकी झँझरी लगेहुये हजारों झरोखे बनेथे जिनके देख-तेही मन प्रसन्न होजाता था सामान्य मन्दिर भी वहां लाखों बने थे व सबमें सुवर्णहीके जँगले लगे थे १० सब भूमिभाग सुधा व मणियों से बननेके कारण विचित्रित था ऐसा मन्दिर रावणने सीताजीको देखाया ११ फिर मन्दिर में ठौर ठौर बावली व छोटी छोटी तलैयां भी बनीथीं जिनमें नानाप्रकार के फूल फूल रहेथे शोकपरायण जानकीजीको रावण ने वेभी सब दिखाये १२ वह सम्पूर्ण मन्दिर सीताजीको देखाय उनकोलोभाने की इच्छा से पापात्मा रावण सीता जी से बोला १३ हे सीते बत्तिशकिरोड़ राक्षस यहां हैं तिन सब भयंकर कार्य्यकारी

राक्षसों के हम स्वामी हैं १४ इनमें वृद्ध व बालक राक्षसोंकीगणनानहीं है व एक सहस्र तो हमारे अकेले के खिदमतगारहैं १५ हे बिशालाक्षि तुम हमको प्राणों से भी अधिक प्रियतमहो इससे यहराज्य व अपने प्राण तुम्हारे अर्पण करते हैं १६ हेसीते तुम हमारी भार्य्याहो वो हमारी जितनीसब उत्तम उत्तम स्त्रियांहैं उनसबकी स्वामिनी होवोगी १७ अब तुम्हारी बुद्धि अलग क्यों जातीहै हमारे वचन अङ्गीकारकरो व हमको भजो हमदीन के ऊपर दयाकरो १८ यहसौ योजन की लंका समुद्र ने बनाय हमकोदी है इसमें इन्द्रादि देव व असुर कोईभी कहींसे भयदेनेके लिये नहीं आयसक्ता १९ हम न देवताओं में न यक्षोंमें न गन्धर्वोंमें न ऋषियों में न किसीलोक में अन्यही किसीकोऐसा देखते हैं जो वीर्य्यमें हमारे समानहो २० तो फिर राज्यसे भ्रष्ट अतिदीन तपस्वी पैदरं चलनेवाले व अल्पतेजस्वी रामचन्द्र मनुष्य को लेकर क्या करोगी २१ हेसीते इससे हमींको भजो क्योंकि तुम्हारे योग्य भर्त्ता हमींहैं यह युवावस्था सदा न बनीरहैगी हमारे संग बिहार करो २२ हे बरानने रामचन्द्र के दर्शन करने में अबबुद्धि न करो उनकी कौनऐसी शक्ति है जो मनोरथ से भी यहां आयसकें २३ जो कोई महाप्रचण्ड पवन को आकाश में चलते हुये बांधाचाहै तो नहीं बांधसक्ता न दीप्यमान अग्नि की ज्वालाही कोई पकड़ सक्ताहै २४ इसीतरह हेशोभने हमतीनों लोकों में किसीको ऐसानहीं देखते जो हमारे भुजोंसे पालित तुमको अपने बिक्रम से यहांसे लेजाय २५ इससे अबयहीं रहकर लंकाका यह बड़ा भारी राज्य पालिये कि तुम्हारी आज्ञामें हमारी तरहके सहस्रों देवता असुर चराचर रहेंगे २६ अबयहां के राज्याभिषेक के जलसे भी सन्तुष्ट हो हमको अपने संग रमावो जो तुम्हारे पूर्व्व जन्म के कुछपाप थे वे बनवास करने से मिटगये अब सुदिन आये २७ जो तुम्हारे पूर्व्वजन्म व इसजन्म के पुण्य हैं उनका फलयहां भोगकरो क्योंकि यहां सबतरह की माला है व जितने दिव्यगन्ध हैं सोभी हैं २८ व नानाप्रकार के भूषण भी बिद्यमान हैं वेसब हमारे संगभोगो हे सुश्रोणि कुबेरजीका पुष्पक नाम २९ बिमान सूर्य्य के समान देदीप्यमान यहांहै कुबेर को रणमें जीत हम यहां वह लाये हैं यहअति बिशाल रमणीय व मनोहर

हैं बेग उसका मनसे भी अधिक है ३० इसलिये तिस बिमान पै चढ़के हमारे साथ नानाप्रकार के बिहार करो हे वरानने कमलसम प्रकाशित बिमल व सुदर्शनीय तुम्हारा मुख ३१ शोकार्त होनेसेनहीं शोभित होता इससे शोच न करो जब रावणने ऐसाकहा तो महा पतिव्रताओं की शिरोमणि सीताजीवस्त्रकी आड़में ३२ चन्द्र समान मुखकररोदनकरने लगीं इस अवस्था को प्राप्त ध्यानकरती हुई चिन्तासे दीप्ति रहित सीताजीसे ३३ राक्षसों का स्वामी अति पराक्रमी रावण बोला हे वैदेहि धर्म्म के लोप करनेवाली इसलज्जा से कुछनहीं होसक्ता ३४ यह अचल लज्जा जो तुमको हुई है वह ऋषियोंकी है इसका यहां कुछ भी कामनहीं तुम्हारे चरणहम अपने दशोशिरों से मींजते हैं ३५ हमारे ऊपर प्रसन्न होवो हमतुम्हारे वशीभूत व दासहैं ये बचन हमने अपने भाई खरके दुःखसे सूखकर कहेहैं ३६ नहींतो आजतक रावणनेकिसीस्त्रीके चरणों पै अपना शिरनहीं धरा इसतरह जनककुमारी जी से रावण ने कहा व यमराजकीवशमें तो पड़ाहीहै सीताजीको अपनीहीं मानने लगा ३७॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेपंचपंचाशत्तमस्सर्गः ५५ ॥

जब रावणने वैदेही जीसे ऐसाकहातो येनिर्भयहोमारे शोककेपीड़ित तृणकी ओट कर रावणसे बोलीं १ कि धर्म्मके सेतु पर्व्वत सम गम्भीर स्वभाव सत्यसन्ध महाराजाधिराज दशरथजी हुये तिनके ये पुत्र श्री रामचन्द्रजीहैं २ येभी बड़े धर्म्मात्मा तीनोंलोकोंमें विख्यात आजानुबाहु बिशालनयनहैं जोकि हमारे परम देवता व पतिहैं ३ इक्ष्वाकुवंशियोंके कुलमें उत्पन्न हुयेहैं सिंहकासा इनका कन्धाहै व बड़े द्युतिमान् हैं वेही रामचन्द्रजी अपने भाई लक्ष्मणजीकेसाथ यहांआय तुम्हारे प्राणोंका नाश करेंगे ४ यहां आनेकी कुछभी आवश्यकता न थी जो तुम उनके सामने जबरदस्ती हमको खींचतेतो वहीं खरस्थानही में तुमभी मरकर सोयजाते जैसे खर सोयाथा ५ व जो तुमने इतने अपने यहांके घोररूप व महाबली राक्षस गिनाये वे रामचन्द्रजीके सामने गरुड़ के आगे पनिहा कीड़ोंके समानहैं ६ सुवर्णकी फुनगी लगेहुये रामचन्द्रजी केधनुषकी रोदासे छूटेहुये वाण तुम्हारा शरीर ऐसा गिरादेंगे जैसेगंगा

जीकी लहरियां अपने किनारोंको गिरातीहैं ७ हे रावण यद्यपि तुम अपनाको असुरोंसे व देवताओं से अवध्य बतातेहो पर अबकी ऐसे बड़े भारीसे तुमने बैर उत्पन्न कियाहै कि जिसके सामने जीते न बचोगे ८ क्योंकि वे महाबली श्रीरामचन्द्रजी तुम्हारे प्राणोंके अन्तकारीहैं उनके सामने यज्ञस्तम्भमें बँधेहुये छगड़े के समान तुम्हारे प्राणबचने दुर्ल्लभ हैं ९ रोषके मारे कड़ीनजरसे जैसेही तुमको रामचन्द्रजी देखदेंगे वैसे-ही जैसे महादेवजीकी दृष्टिसे काम भस्महोगया है तुमभी भस्म होजा-वगे १० जो श्रीरामचन्द्रजी चन्द्रमाको आकाशसे गिराय सक्ते व नाश करसक्तेहैं व समुद्रको भी शोषसक्ते वे यहांसे सीताकोभी छोड़ावेंगे ११ तुमबिना प्राणोंके हो श्रीभी तुम्हारी जातीरही पराक्रम भी तुम्हारा जातारहा इन्द्रियभी तुम्हारी सब अपने अपने कार्य्योंसेशिथिल होगईं इनबातोंसे साफविदित होताहै कि तुम्हारे लिये यहलंकाबिधवां होजा-यगी १२ जिससे हमने अपने पतिकीसेवा नहीं करनेपाया व तुमजब-रदस्ती यहीं उठालाये हो इसी हेतु यह तुमने ऐसा पाप कर्म्म किया जिससे महादुःख पावोगे १३ सोदुःख अबतक तुमपायचुके होते परन्तु हमारे देवरके साथ महातेजस्वी व निर्भय हमारेस्वामी निर्ज्जनदण्ड-कारण्यमें हैं १४ वे शीघ्रही तुम्हारावीर्य्य बल अहंकार व घमंड संग्राम में अपने बाणोंसे तुम्हारे अंगोंसे अलग करदेंगे १५ जब कालकी प्रेरणा से प्राणियोंका बिनाश देखाई देताहै तब पुरुष कालके बशीभूतहो कार्य्य करने में मदान्ध होजातेहैं १६ हे राक्षसाधम हमको जबरदस्ती पकड़ ले आनेके कारण वही काल तुम्हारे व राक्षसों व जनानें रहनेवाली स्त्रियोंके बधकरनेके लियेआयाहै १७ जैसे यज्ञ सामग्रीसेभूषितब्राह्मणों के पढ़ेहुये मन्त्रोंसे पवित्र यज्ञशालाके बीचकी वेदी चाण्डाल नहीं गोंज सक्ता १८ ऐसेही धर्म्मपरायण श्रीरामचंद्रजी की दृढ़व्रता धर्म्मपत्नी हमको राक्षसोंमें अधम महापापी तू नहीं छूसक्ता १९ व कमलों के वनमें राजहंस के साथ क्रीड़ा करती हुई राजहंसी तृण के बीच में बैठे हुये जलकाक को कैसे देख सकेगी २० हे राक्षस जब हमारा शरीर मूर्छित होजायगा तो चाहे इस को बँधुआ करना वा मार-डारना अभीतो हमारे प्राण व शरीरकी न तुम रक्षाही कर सक्के न बध

ही कर सक्ते हो २१ क्योंकि जीतेजी तुमसे अपने अङ्ग स्पर्श कराय पृथिवी में अपनी निन्दा न करावेंगी मारे क्रोधके ऐसे कठोर वचन जानकीजी २२ रावण से कह फिर कुछभी न बोलीं अति कठोर व रोमहर्षण सीताजीके वचन सुन २३ रावण भय देखाता हुआ सीताजी से बोला हे मैथिलि जो आज से बारह महीनों के भीतर २४ हमको न प्राप्त होगी तो हमारे रोसोई बरदार प्रातःकाल के भोजन के वास्ते तुमको रत्ती रत्ती काटेंगे २५ ऐसे कठोर वचन कह शत्रुओं के रोवाने वाला रावण क्रोध कर राक्षसियों से बोला २६ हे बिरूप घोर दर्शन व मांसशोणित भोजन करने वाली राक्षसियो शीघ्रही इनका अहङ्कार मिटायदो २७ वे घोर रूप व घोर दर्शन राक्षसियां तिसके वचन से हाथ जोड़ जानकी जीको समझाने लगीं २८ तब राक्षसों का राजा रावण चरण उठाय उठाय पृथिवी में पटकने लगा मानों धरणी खोद वहायही दिया चाहताथा तिन भयावनी सूरतवाली राक्षसियों से बोला २९ कि मैथिलीको अशोकवनिकामें लेजाओ वहांतुम चारोओरसे घेरेहुई इनको रखाना ३० व अतिभयानक डरवानेकीचीजोंसे व समझानेबुझानेसे इन जानकीको बशीभूतकर हमारे पासलानाजैसे जङ्गली हथिनी बहुत तरह के उपायों से अपने बश में कीजाती हैं ३१ रावण के ऐसे बचन सुन सब राक्षसियां जानकीजी को अशोकवनिका में ले गईं ३२ उस अशोकवनिका में प्रायस्सदाफर वृक्षलगेथे नानाप्रकार के फल पुष्पादि लगेथे व सबकालोंमें मतवालेपक्षियोंसेसेवितथा ३३॥

चौ० शोक बिवश मिथिलेश कुमारी । रोदन करत अनेक प्रकारी ॥ परी राक्षसिन के बश सोई । ब्याग्घ्र मध्य हरिणी जिमि होई १ । ३४ महा शोक बश ह्वै बैदेही । रोवत परन कछुक सुधि तेही ॥ कबहुं न लहत तनिक कल्यानू । पास बद्धजिमि हरणी जानू २ । ३५ महा कराल राक्षसी घेरी । जनक सुता सुख लहै न हेरी ॥ शोकभीति पीडित दिन राती । सुमिरत पति देवर गुणपांती ३ । ३६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेषटपञ्चाशत्तमस्सर्गः ५६ ॥

वहां लंकामेंतो जानकीजीकीयह दशाहुई यहां मृगरूपधारीउस मा-

रीचनामराक्षसकोमारश्रीरामचन्द्रजी बहुतही शीघ्रलौटे१ जानकी जीके देखनेकी इच्छासे अति वेगसे चलेआतेथे कि उनकेपीछे बड़े कड़े स्वरसे एक सियार बोला २ अतिदारुण व रोमहर्षणतिसका बोल सुन सियार के बोलसे शंकित हो रामचन्द्रजी चिन्तनाकरने लगे ३ कि यह शृगाल का बोल हम अशुभ मानते हैं भला इसबोलसे जो अशुभहुआ होगा सो तो होही गयाहोगा अब जानकीजीका शुभहो कोई भक्षणतो न करले ४ यदि मारीचका वह बचन सुनके लक्षण ने हमारा वचन समझाहो ५ तो उस शब्द को सुन मैथिली को वहीं छोड़ जानकी ही के पठाने से लक्ष्मण हमारे निकट जरूर चलेआवेंगे६ तोराक्षसलोग अवश्य सीता को मारडारेंगे क्योंकि इसीलिये वह सोनेका मृग बन हमको आश्रम से दूर लाया ७ फिर जब हमने बाण मारा तो फिर राक्षस होगया व बोला कि हा लक्ष्मण हम मारेगये ८ इस बात को सुन वेभी तो चलेही आये होंगे बन में हम दोनों जनों के न होनेपर कैसे कहें कि कल्याण होगा क्योंकि जनस्थान के निमित्त हमसे सब राक्षसों से बैर है ९ व इस समय बहुत घोर निमित्त देखाई देते हैं शृगाल का बोल सुन रामचन्द्रजीने ऐसी चिन्तना की १० व मृगरूप धारण किये वह राक्षस जो अपना को दूर लायाथा उसीका स्मरण करते हुये बहुत जल्द अपने आश्रम पै आये ११ शंकित चित्त रामचन्द्रजी जब अपने आश्रमपै पहुंचे तो इनके उदासमन देख सब मृग पक्षी प्राप्त हुये १२ व सब के सब इनकी बाईंओर होकर अति भयंकर शब्द करनेलगे वे महा भयानक निमित्तदेख श्री रामचन्द्रजी ने १३ देखातो प्रभाहीन लक्ष्मणजी चले आतेथे देखतेही लक्ष्मणजी बनाय रामचन्द्रजी के निकट आय गये १४ रामचन्द्र जी को उदास देख औरभी उदास होगये रामचन्द्र जी भाई लक्ष्मणकी निन्दा करने लगे १५ क्योंकि राक्षस सेवित सून्य बनमें सीताजीको छोड़ आयेथे लक्ष्मणजी का बावां हाथ अपने हाथसे पकड़ श्रीरामचंद्रजी १६ अति मधुर बाणी से बड़ा कठोर वचन बोले हे लक्ष्मण जो सीताको छोड़कर तुम यहां चले आये तुमने यह महा निन्द्य कर्म्म किया १७ भला किसी तरह से अबस्वस्ति हो सक्ती है हे वीर हमको तो इसबात में कुछभी संशय नहीं कि जनक-

कुमारी अब वहां नहीं हैं १८ क्योंकि बनचारी राक्षसों ने यातो भक्षण ही करलिया होगा या कोई चोरायही लेगयाहोगा क्योंकि ये बड़े बड़े अशुभ हमको होतेहैं १९ हे लक्ष्मण क्या अब हम जीतीहुई जनककुमारी के सब अंग सानुकूल देखने पातेहैं २० क्योंकि ये सब मृग गण व शृगाल व सब पक्षी अति भयानक शब्द कररहे हैं व दिशाओं को देखतेहो जानों इनमें आगलगी है २१ इन बातों से यही बिदित होता है कि बड़ी ही बात हो जो उन राजपुत्री जानकी का कुशल हो २२ यह मृग रूप राक्षस हमको ललचाय बहुत दूर चलागया था वहां बड़े श्रमसे जो हमने इसको मारा तो यह मरने के समय फिर राक्षस हो गया २३ ॥

दो० मम मनदुःखित बाम चख फरकत करतबिकार ॥
निश्चय सीता नहिं अहैं हरी मरी वा यार १ । २४

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेसप्तपंचाशत्तमस्सर्गः ५७ ॥

लक्ष्मणजीको दीन मुख व सून्य चित्त व बिना जानकीजी को संग लियेदेख धर्म्मात्मा श्रीरामचन्द्रजी पूंछनेलगे १ हेलक्ष्मण जो जानकी दंडकारण्य को आनेके समय हमारे पीछे पीछे चली आईं व जिनको छोड़ तुमयहां चले आये वे जानकी अबकहां हैं २ राज्यसे भ्रष्टहो अति दुःखितचित्त दण्डकारण्यमें दौड़तेहुये हमारेदुःखमें सहायक जानकी कहां हैं ३ हेबीर जिनबिना हममुहूर्त्त भरभी नहींजी सक्ते वे सूक्ष्माङ्गी जानकी कहांहैं जो हमारी सदा सहायता करतीहैं ४ हे लक्ष्मण सूर्य्य समानदेदीप्यमान जानकी बिन हम देवताओं का राज्य व पृथिवीमण्डलकी भी आधिपत्य नहीं चाहते ५ हेबीर भला प्राणोंसे भी अधिक प्रिया हमारी जानकी जीती हैं भला हमने जो १४ बर्षतक बनमें रहने की प्रतिज्ञाकी है कहीं मिथ्यातो न होजाय ६ हेलक्ष्मण सीताके निमित्त हमारे मरजाने पर व तुम्हारे लौटजानेपर भला कहीं कैकेयी तो सुखितहोवेगी ७ भला पुत्र व राज्यसहित सब अर्थसिद्ध कैकेयी की सेवा मृतपुत्रा व तपस्विनी कौसल्याजी तो कहीं करेंगी ८ जो बैदेही जीतीहोंगी तोतोहम आश्रम पै जायँगे व यदि वे पतिब्रता सीता मृतक होगई होंगी तोहम

भी प्राण त्यागकरेंगे ९ हे लक्ष्मण आश्रम पै जानेपर जो सीताहमसे फिर हँसकरन बोलेंगी तोभीहम प्राणत्याग करेंगे १० हेलक्ष्मण बतावो तो जानकी जीतीहैं वा नहीं कि तुम्हारे रहतेही रहते राक्षसोंने तो नहीं भक्षण करलिया ११ हमजानते ह कि अतिसुकुमारी षोडशबर्ष की अवस्थाको प्राप्त व जिन्होंने कभीदुःख देखाही नहींथा ऐसी जानकी हमारे बियोगसे उदासहो जरूरशोचतीहोंगी १२हमने यह जानलिया कि उस दुष्टात्मा कुटिल राक्षसके लक्ष्मण कहकह पुकारनेसे तुमको भी भय उत्पन्नहुई १३ वहशब्द वैदेहीजीने भी हमजानतेहैं कि सुनाहोगा इसीसे हमारा शब्द जान उन्होंनेही तुमको भेजाहै इसीसे तुम शीघ्रही हमारे देखनेको यहांआयेहो१४तुमजो सीताको छोड़यहां चाहजैसे आये परसबतरह से तुमने अयोग्यही किया क्योंकि दुष्टराक्षसों को तुमने अपना दावँलेने का अवसर देदिया१५खरकेमारनेके कारण सबराक्षस दुःखित तोथेही जरूर उनघोरोंने सीताको मारडाराहोगा इसमें कुछभी संशय नहीं १६ हे रिपुनाशन हम इसदुःखमें डूबतेहैं व शंकाकरतेहैं कि इस बिषय में हमको क्या करना चाहिये १७ इसतरह वरारोहा सीता को चिन्तवन करते कराते श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजी को संग लिये जनस्थान पै आये १८ दुःखित छोटेभाई लक्ष्मणजीको धिक्कारते हुये रामचन्द्रजी आय आश्रम शूनादेख एकतो भूंखेप्यासे व थके थे दूसरे मारेशोक के औरभी सूखगये १९ जबसीताजीको न देखा तो पहिले जहां आप बैठते उठते थे वहां ढूंढ़ा फिर जहां आप कभी जातेही न थे केवल जानकीजीही के बैठने उठने व बिहारके स्थानथे वहांजायदेखा वहांभी जब वे न देखपरीं तो कहा कि हाय ये स्थान जानकी के बैठने उठनेके हैं परवे नहीं हैं इतना कहतेही रोमखड़े होगये व आप बहुत ब्याकुल होगये २० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेअष्टपंचाशत्तमस्सर्ग्गः ५८ ॥

जब इसतरह रामचन्द्रजी ने पूंछा भी पर आश्रमके बीचमें लक्ष्मण जी कुछ उत्तर न देसके तोमारे दुःखसे श्रीरामचंद्र जी फिर लक्ष्मणसे पूंछने लगे १ कि हे लक्ष्मण जब कि तुम्हारे बिश्वास पर सीताकोबन

में छोड़ आये तो तुम उनको छोड़ कैसे चलेआये २ जो राक्षसों के हर लेजाने का हमारे मनमें महापाप था तुमको जानकी को छोड़ आते हुये देख सत्यही प्रतीत होगया ३ व सीता रहित तुमको दूरही सेदेख हमारा बाम नेत्र फरकने लगा व बाहु और हृदय भी कांपने लगा ४ जब शुभलक्षण युक्त लक्ष्मणजी से रामचन्द्रजीने ऐसाकहा तो वेअति दुःखित हो महा दुःखित श्रीरामचन्द्रजी से बोले ५ कि हम अपने मन से नहीं तिसको स्थान पै छोड़ यहां आये किन्तु तिसी के कहने से आप के निकट आये थे ६ उनके कहने काभी कारण यह हुआ जो आपकीही बोली बनाय किसी ने बड़े जोरसेकहा कि हे लक्ष्मण हमारी रक्षाकरो वह बोल जानकीजी के भी कर्णों में परा ७ तब वह आर्त्तश्वर सुन आपके श्नेह के मारे जानकी जी मारे भयके बिह्वलहो जाव २ हमसे यह कहने लगीं ८ जब उन्होंने कई बार कहा कि जावजाव तो हमने उनके बिश्वास के लिये ये वचन कहे कि ९ ऐसा हम किसी राक्षस को नहीं देखते जो श्री रामचन्द्रजी को भय भीत करसकै इससे आपनिधड़क रहें यह वचन अन्य किसी ने बनायकर कहा है रामचन्द्रजी का बोल नहीं है १० क्योंकि जो श्रीरामचंद्रजी देवताओंकी भी रक्षा कर सक्ते हैं वे हमारी रक्षा करो ऐसे निन्दित व नीच वचनहमारे भाईकाहे को कहेंगे ११ यह किसी निमित्तकिसीपुरुषने हमारे भाईका साबोलबनाय हे लक्ष्मण हमारी रक्षाकरो ऐसा दीन बचन कहाहै १२ हे शोभने मारे भय के किसी राक्षस ने ऐसा बचन कहाहै कि रक्षा करोइससेआप ब्यथित न हों क्योंकि ब्यथित तो खराब स्त्रियांहोतीहैं १३ इससेब्याकुल होनेका कुछ भी कामनहीं आपस्वस्थचित्तहों इस बातको स्मरण न करें क्योंकि लोक में ऐसा आजकल कोईपुरुष नहीं जो संग्राममेंश्रीरामचंद्र जीको १४ पराजितकरैंआजकल क्याकोई कभीऐसाहुवा भीनहीं वनहोनेवालाहै क्योंकि श्रीरामचन्द्रजीको संग्राममें इन्द्रादिदेवताभी नहींजीत सक्ते१५जब हमने जानकीजीसे ऐसाकहा तो परि मोहितचित्तहो रोदन करतीहुई उन्होंने हमसे ऐसा दारुणवचनकहा १६ कि तुमनेहममेंअपना पाप भाव स्थापित कियाहै कि हमारे भाई मरजायँ तो हम इनकोलेलें सोतो तुमहमको नहीं पायसक्ते १७ व जो कहो कि हम भरतके निकट

चलेजायँगे सो वहभी नहीं होसक्ता क्योंकि जो तुममारे कष्टके एकान्त में पुकारते हुये रामचन्द्रजीके निकट नहींजाते तो भरतभी तुमको निकालही देंगे १८ हम जानतीहैं कि तुमहमारे शत्रुहौगुप्तहोकर हमकोलेने के लिये पीछेपीछे वनमें फिरतेहो केवल रामचन्द्रजी का अन्तरही देखते थे कि कबये कहींजायँ व हम इनकोलेलें इसीसेतुम इससमयरामचन्द्रजी केनिकट नहींजाते १९ जब वैदेहीजी नेऐसाकहा तो मारेक्रोधके हमारे नेत्रलाल होगये व क्रोधहीसे ओष्ठ फरफराने लगे क्याकरेंआश्रमपर से निकलखड़ेहुये २० जब लक्ष्मणजीने ऐसाकहा तो मारे सन्तापकेमोहित हो श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजी से बोले कि हेसौम्य जो कि तुम जानकी को छोड़ चलेआये तुमने बड़ापाप किया २१ क्योंकि तुमजानते भी थे कि हमकितने बड़ेसमर्त्थहैं केवल मायावी राक्षस वहँका लेगयाथा तोभी जानकीजी का क्रोधयुक्त बचनसुन तुम निकलखड़ेहुये २२. जिससे तुम मैथिलीको छोड़आये हमकभी तुम्हारेऊपर प्रसन्न न होंगे क्योंकि एकतो स्त्री दूसरे क्रोधकिये जानकीके कठोरबचनसुन चलेआये २३ ऐसाही था तो संगही क्यों न लिये आये जो केवल सीताके कहने से भागखड़े हुये सर्व्वथा तुमने अनुचितही किया क्योंकि क्रोधके वशीभूतहो तुमने हमारी आज्ञाका प्रतिपालन न किया हमतोकहीआयेथे कि चाहे जैसाहो पर जानकीको अकेली न छोड़ना २४ मृगरूपहो जो राक्षस हमको आश्रम सेदूरतक दौराळाया वहयही है बाणसे मारापराहै २५ जबहम ने जोर सेखींचलीला पूर्व्वक इसके एकबाणमारा तो यहमृगकी देहछोड़ बहूंटा बांधे सभय बचन बोला २६ जबबाण से मारागया तो हमारीसीबोली बनाय अति दुःखितहो ऊंचेस्वरसे अति दारुण बचन बोला जिसको सुन जानकी को छाड़तुम यहांचले आये २७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेएकोनषष्ठितमस्सर्गः ५९ ॥

जब रामचन्द्रजी जल्दी जल्दी आश्रमको चलनेलगेथेतो उनके बायें नेत्रके नीचेका भाग फरकने लगा था जिसके फरकनेसे पुरुषका बड़ा अशकुन होताहै व अटककर गिरभी परेथे इस अशकुनके होनेसे जिस कार्य्यकोजावो उसकी सिद्धिनहीं होतीशरीरभी कँपनेलगाथा यहभीबड़ा

अनिष्टहै १ ऐसे अशुभ निमित्तदेख बारबार कहतेजातेथे कि जो सीता को फिर कुशल पूर्वक पावेंतो बड़ी बातहो २ यही शोचते शोचते जानकीजीके देखनेकी इच्छासे जल्दी जल्दी आय आश्रम शून्यदेख बहुत ऊबे ३ व फिर जल्दी जल्दी घूम घूम पर्णशालामें इधर उधरदेखनेलगे उस पर्णशालामें रत्तीरत्ती सबढूंढ़ा ४ परउसमें कहीं जानकीजी न देख परीं बिना सीताजीके वह पर्णशाला हेमन्त ऋतु में जाड़के मारे ध्वस्त कमलिनीके समान शोभारहित देखपरी ५ उस स्थानमें मानों वृक्षरोय रहेथे पुष्पमृग व पक्षीसब उदास होरहेथे शोभाका कहीं नामही नहीं था सब ध्वस्त होगया था वनदेवताओं नेभी छोड़दिया था ६ ठौर ठौर मृगचर्म्म व कुश परेथे मुनियोंके इत्यादि आसनटूटेफटेपरेथे ऐसास्थान शून्यदेख श्रीरामचन्द्रजी बार बार रोदन करने लगे ७ ॥

दो०　हरीमरी वा भगिगई वा केहूं चखिलीन ।
　　लुकीजाय बनमहँ डरी प्रिया भीरुतनु छीन १ । ८
　　फूललेन वा वनगई फलतोड़न दहुकाह ॥
　　अथवा नदी तड़ागमहँ गई बारिकी चाह २ । ९

इस तरह कहकह वरोयरोय यत्नसे वनमें ढूंढ़ा परप्राणप्रिया बैदेहीजीको न पाय मारेशोकके लालनेत्रहो उन्मत्तोंके समान फिरनेलगे १० मारे शोक के कीचड़ में डूबे श्रीरामचन्द्र जी इस वृक्ष से उस वृक्ष के नीचे जाते इस पर्ब्बत से उस पर्ब्बत के निकट व इस नदी से उसनदी के किनारे ११ कदम्ब वृक्ष से पूंछने लगे हे कदम्ब यदि कदम्ब प्रिया हमारी प्रिया तुमने देखी होतो बतावो कहां गई १२ रेशमी पीताम्बर धारण किये चीकने पल्लवों के समान चीकनी व बिल्वस्तनी हमारी प्रिया हे बिल्व जो तुमने देखीहो तो बताओ १३ हेअर्ज्जुन वृक्ष अर्ज्जुन प्रियाहमारी प्रियाको जो जानतेहो कि जीतीहैं वा नहीं जीती तौभी बताओ १४ हम जानते हैं कि यह ककुभ वृक्ष ककुभ के समान जंघावाली मैथिली को जरूर जानता है क्योंकि इस वृक्ष में लता पुष्प व फल सब लगे हैं १५ इस तिलक के वृक्ष पै भ्रमर बहुत गूंजरहेहैं इस से बिदित होता है कि तिलक प्रिया जानकी इसने देखीहै १६ हे अशोक हमारा शोक दूरकरो क्योंकि शोक से हमारा मन हरगया है हम को

हमारी प्रियाके दर्शन कराय अशोककरो १७ हे तालकेवृक्ष जो हम में हमारी दया होतो पक्क ताल समस्तन वाली जानकी को देखाहो बताओ १८ हे जामुन जाम्बूनद नाम सुवर्ण के रंगकी हमारी प्रिया जो तुम ने देखी हो व जानते हो कि कहांहै तो बताओ १९ हे कर्णिकार कर्णिकार प्रिया हमारी प्रियाजो तुम ने देखी हो तो बताओ २० इसीतरह आम्र नीप सांखू कटहर कुरर अनार को देख देख भी श्री रामचन्द्रजी ने पूंछा २१ व बकुल पुन्नाग चन्दन केतकी आदि अन्य वृक्षोंके नीचे जायजाय पूंछा २२ फिर मृगोंसे पूंछने लगे हे मृगो तुमने मृग नयनी जानकी को देखातो नहीं क्योंकि मृगियों के देखने के लिये चाहिये कि उन्हीं के बीचमें घूमतीहों २३ हे गज तुम्हारी शूंड़ के आकार की जंघा वाली हमारी प्रिया तुमने जरूर देखी है बताते क्यों नहीं २४ हे शार्दूल यदि तुमने चन्द्रसम प्रकाशित हमारी प्रिया देखी हो तो बताओ हमारा विश्वास मानों हम तुमको मारेंगे नहीं डरो न बतायही जाव २५ इतना वृक्षोंसे कह जानकीजीहीं से मानों कहने लगे हे प्रिये हे कमलेक्षणे अबतो हमने देखही लिया क्यों दौड़ी दौड़ी फिरतीहौ व वृक्षों में अपनाको छिपाय हमसे क्योंनहीं बोलतीहौ २६ हे वरारोहे खड़ीहो खड़ीहो क्या हमारे ऊपर अब दया नहीं है हमने तो तुमसे बहुत हँसीआ भी नहीं किया हमको क्यों छोड़तीहो २७ हेपीताम्बर धारण करनेवाली क्या तुमको हमने नहीं जानपाया यद्यपितुम दौड़ी जाती हो पर हमने तो देखहीलिया जोसौहृदहोतो खड़ीहोजावो २८ हम जानतेहैं कि तुमको किसीने मार नहीं डारा फिर जो जीतीही बनीहौतो तुम्हारे बियोगसेहमबहुत पीडितहैं इससे हमको न छोड़ो २९ कुछनहीं हम जानतेहैं कि हमारी प्रियाके अंगअंग बांट चूंट मांस भक्षी राक्षसोंने भक्षण करलिया इसीसे हमारा बियोग होगया ३० निश्चय है कि प्राणप्यारी का शुभदांत ओठवाला शुभ नासिका व शुभ कुण्डल वाला पूर्णचन्द्र समान मुख निष्प्रभ होगया अब राक्षसों ने लील लिया ३१ व उन चम्पकके रंग सदृश रंगवाली प्राणप्यारी का गल जोहार पहिरने के योग्य अति कोमल था वहभी राक्षसोंने भक्षण कर लिया ३२ व पल्लवसे भी कोमल हाथके भूषण सहित प्राणप्रिया की

लम्बायमान बाहें भी भक्षित होगईं ३३ हाय हमने राक्षसोंके भक्षणहीं
कलिये वनमें छोड़दिया यद्यपि सीताके बहुत बान्धवहैं परकोईभीकाम
न आया जैसे साथियोंके छूटजानेसे कोई स्त्रीवनमें भक्षितहोजातीहै ३४
हा लक्ष्मण तुमकहीं हमारी प्राणप्यारी को देखतेहो हाप्रिये कहांगई
हो हासीते हाप्रिये इस शब्दको बार बार कहते थे ३५ इसतरह
विलाप करते व इस वनसे उस वनमें दौड़तेहुये श्रीरामचन्द्रजीकहीं तो
मारे वेगके गिरपरते कहीं बौंड़रके समान घूमने लगते ३६ कहीं मत-
वाले पुरुषके समान कुछका कुछ कहने लगते जानकीजी के ढूंढ़ने में
तत्परहो नदी नार वन पर्व्वत झरना आदिमें भ्रमण करते थे ३७ तिस
के पीछे जानकीजी को सबकहीं ढूंढ़ते ढूंढ़ते महावनोंमें ढूंढ़ा सब ओर
ढूंढ़चुके तो फिरएक ओरसे ढूंढ़ने लगे ३८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेषष्टितमस्सर्ग्गः ६० ॥

इस तरह ढूंढ़ते ढूंढ़ते श्रीरामचन्द्रजी फिर आश्रमपै आये देखा तो
शून्यपड़ा है पर्णशाला में भी कोइनहीं है आसन भी सबपड़ेहैं १ व बै-
देही वहां नहींहैं इससे सबओर देख बड़ारोदन कर लक्ष्मणजीके दोनों
हाथ पकड़ बोले २ हे लक्ष्मण बैदेही कहांहैं वा यहांसे कहां चलीगईं
क्या कोई हरलेगया वा किसीने भक्षण करलिया ३ हे सीते जोवृक्षकी
ओटमें खड़ीहो हमको हंसा चाहतीहो तो ऐसे हँसौआकी कुछ आवश्य-
कता नहीं अब दुःखित हमको देखो ४ हे सीते जिन परके हुयेमृगों के
बच्चोंके साथतुम खेलती थीं वे अब तुम्हें बिना रोदन करते ध्यावतेहैं ५
हे लक्ष्मण सीता रहित हम न जीवेंगे जब हमें सीता हरणसे उत्पन्न
शोकके मारे मृतक होजायँगे ६ तो निश्चयहै कि परलोकमें हमारेपिता
महाराज दशरथजी वहां हमको देखेंगे तो कहेंगे कि हमने तो तुमको
बनवास करनेको भेजाथा व तुमने भी प्रतिज्ञा कीथी कि हमचौदह वर्ष
तक वनमें बसेंगे ७ सो उसकाल को बिना पूराकिये तुमयहां इतनी
जल्दीकैसे आये तुम यथेच्छाचारी अनारी व मृषावादीको ८ धिक्कार है
यह हमसे परलोक में पिताजी जरूर कहेंगे विवश शोक सन्तप्त दीन
व भग्न मनोरथ ९ व दया करनेके योग्य हमको यहां छोड़ जैसे कुटिल

मनुष्यको कीर्त्ति छोड़ देतीहै हे बरारोहे कहांजातीहो हे सुमध्यमे हमें न छोड़ो १० नहीं तो बिना तुम्हारे हम प्राण छोड़देंगे सीताजीके दर्शन की लालसा किये रामचन्द्रजी इसतरह बिलाप करते थे ११ पर दुःखार्त्तही हुये उन्होंने जानकीजी को न देखा तब सीताको ढूंढ़ते हुये व शोक परायण श्री रामचन्द्रजी को १२ महा दलदल में फँसे हुये हाथी के समान व्याकुल देख हितकी कामना से लक्ष्मणजी बोले १३ हे वीर हेमहाबुद्धे बिषाद न कीजिये किन्तु हमारे साथ यत्न कीजिये इस पर्व्वत के बन में बहुत कन्दरा हैं १४ व जानकी जी को बन में घूमना बहुत प्रिय है क्योंकि बनको देख सदा उन्मत चित्त होजाती थीं कौन जानें कहीं बनहीं देखने न चली गई हों वा कमलादि पुष्प युक्त कहीं तलैया न देखने गईहों १५ नहीं मछली व बेत युक्त नदीही को कहीं स्नान करने की इच्छा से न चलीगईहों व कहीं बनमें ठहरगईं हो १६ व हमारी तुम्हारी गली देखतीहों इससे हम लोगों को चाहिये कि तिनके ढूंढ़ने का अवश्य यत्न करें १७ बनमें ढूढ़ें जहां कहीं जानकी जीहोंगी मिलहीजायँगी जो हमारी यह बात आप मानतेहों तो अबवृथा शोक न कीजिये १८ जब लक्ष्मणजी ने ऐसाकहा तो उनको सङ्ग ले श्री रामचन्द्रजी ढूंढ़ने लगे १९ दोनों जनों ने बन पर्व्वत नदी तड़ाग सीताजी के ढूंढ़ने के समय एकओर से सब ढूंढ़े २० फिर तिस पर्व्वत के कँगुरा चट्टान व शिखर सब एक ओर से रत्ती रत्ती ढूंढ़ा पर जानकी जीको न देखा २१ सब ओरसे पर्व्वत ढूंढ़ रामचन्द्रजी लक्ष्मणजी से बोले हे लक्ष्मण इस पर्व्वत पर तो जानकी नहीं देख परतीं २२ तब दण्डकारण्य में बिचरतेहुये महातेजस्वी भाई रामचन्द्र जीसे मारे दुःख के सन्तप्तहो लक्ष्मण जी बोले २३ हेमहाबाहो जैसे राजा बलि को बँधुआकर बामन जी ने पृथ्वी पाई है वैसेही आप भी जानकीजी को पावेंगे २४ जबबीर शिरोमणि लक्ष्मणजीने ऐसा कहा तो मारे दुःख के व्याकुल श्रीरामचन्द्रजी अतिदीन वचन बोले २५ हे महाप्राज्ञ सब बन अच्छीतरह से ढूंढ़ा व कमल फूली हुई तलैया भी ढूंढ़ीगई बहुत कन्दरा व झरना सहित यह पर्व्वतभी अच्छीतरह ढूंढ़ा २६ परंतु प्राणों से अधिक प्यारी जनककुमारी को न देखा इसतरह बिलाप

करते सीताजी के हरण से दुर्ब्बल हो २७ अति दुःखित मन शोक के मारे व्याकुल हो एक मुहूर्त भरतक श्रीरामचन्द्र जी व्याकुल रहे २८ यहां तक कि सर्व्वाङ्ग में व्याकुलता छाय गई जानो बुद्धिजाती रही इससे मूर्छित होगये बारम्बार ऊर्द्ध्वश्वासले अत्यातुर हो बैठगये २६ व राजीवलोचन श्रीराम बहुत जल्दी जल्दी श्वासलै हाप्रिये ऐसाकह गद्गद हो अँशुआय जोरसे रोदन करने लगे ३० हाथजोर मारे शोक के व्याकुल हो परम प्रिय भाई लक्ष्मणजीने रामचन्द्र जीको बहुत समझाया ३१ पर लक्ष्मण के मुख से कहे वचन का अनादर कर जानकी जीको न देखने से श्रीरामचन्द्रजी बार बार बिलाप करते रहे ३२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेएकषष्ठितमस्सर्ग्गः ६१ ॥

धर्म्मात्मा शोकके मारे हतेन्द्रिय महाबाहु व कमललोचन श्रीरामचन्द्र जी जानकीजीको बिनादेखे फिर बिलाप करनेलगे १ कामसे पीड़ितहो सीताजी को बिनादेखे भी जानों देखतेही थे ऐसे श्रीराम बिलाप के कारण दुर्व्वचनवत् वचनबोले २ हेप्रिय पुष्प प्रियहोनेके कारण हमको शोक बढ़ानेवाली तुम अपनी देह अशोक की शाखाओं से छिपाती हो ३ हे देवि केलाके खम्भाके समान अपनी जांघें तुमकेलाके खम्भों से आच्छादित कियेहो सो हमदेखते हैं तुम उनको नहीं छिपासक्ती क्यों छिपातीहो ४ हेभद्रे हेदेविहँसतीहुईतुमकर्णिकारका बनसेवन करतीहो हमको बाधापहुंचाने वाले तुम्हारे इसहास्य का कुछभी कामनहीं ऐसा हँसीवा न करना चाहिये ५ हे प्रिये यद्यपि परिहास प्रिय तुम्हारा स्वभावहम जानते हैं तथापि इससमय अब तुमको हास्य न करना चाहिये क्योंकि उसके करने के और समय हैं ६ हे बिशालाक्षि तुम आवो तम्हारी पर्णशाला खालीपरीहै हे लक्ष्मण यहनिश्चय होताहै कि किंतो सीताको निशाचरों ने भक्षण करलिया वा वे उनको हरले गये ७ नहींतो हमको बिलाप करते जान आणप्यारी जरूर आतीं इसके सिवाय येमृग रोदन करतेहैं ८ येभीयही बतलातेहैं कि तिनसीताको राक्षसों ने भोजन करलिया हा श्रेष्ठे हा पतिव्रते हा वरवर्णिनि कहां चलीगई हो ६ हाय अबहमारी सौतेली माता कैकयी सकामा होगी क्योंकि देखेंगी कि सीता

सहितबनकोगये व बिनासीताके आये १० हम अबशून्य अपनेघरमें कैसे पैठेंगे क्योंकि सबलोग हमको निर्व्वीर्य्य व निर्दय कहेंगे ११ क्योंकि बिनासीता को लिये जानेसे हमारी कदराई प्रसिद्धही होजायगी और नहीं हमइस बातको शोचते हैं कि जब बनबाससे लौटघर को जायँगे व मिथिला पुरीके राजा जनकजी कुशल पूंछेंगे तो उनकी ओरहम कैसे देखसकेंगे १२ हमको बिनासीता के देखे निश्चय है कि बिदेह राज अपनी कन्या के बिनाश से सन्तप्तहो मोहित होजायँगे १३ अथवा भरतकी पालीहुई अयोध्यापुरी को अबहम न जायँगे क्योंकि जानकी बिना स्वर्ग्ग भी हमारे मतसे शून्यही है १४ हमको यहीं बनमें छोड़ तुमशुभ अयोध्यापुरी को चलेजाव हमतो किसी भी तरह बिनासीता के नहीं जी सक्ते १५ वहांजाय भरत को अच्छीतरह लपटाय हमारी ओरसे कहदेना कि रामचन्द्र ने तुमको आज्ञा देदीहै पृथ्वी का पालन करो १६ व हमारी आज्ञासे हमारी माता कैकयी सुमित्रा व कौसल्याजी से यथा योग्य प्रणाम कहदेना १७ व इनसब की रक्षाभी अच्छी तरह से करना १८ और सीताजी का व हमारा बिनाश भी बिस्तार सहित सबसे कह देना १९ बिनातिन सुकेशी सीताजी के दुःखित हो बनमें रामचन्द्रजी के रोनेपर मारेभय के बिकल मुखहो लक्ष्मणजी भी अति व्यथित हो आतुर होगये २० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेद्विषष्ठितमस्सर्ग्गः ६२ ॥

प्रिया हीन शोक व मोहसे पीड्यमान अतिआर्त्त महाराजकुमार श्रीरामचन्द्रजी भाई लक्ष्मणजी को बिषाद कराते हुये बड़ेतीव्र बिषाद को पहुंचे १ व शोकके बशीभूत लक्ष्मणजी से बिपुल शोकमें बूड़ते हुये श्रीरामचन्द्रजी दुःखके अनुरूप रोदन करते हुये सहित शोक बचन बोले २ कि हमजानतेहैं इस पृथिवी तलमेंहमारी बराबर दुष्कृत कर्म्म करनेवाला दूसरा कोई पुरुष नहीं है क्योंकि शोकके पीछे लगातार हमको शोकही परते जातहैं जोकि हमारे हृदय व मनदोनों को तोड़े डालते हैं ३ पूर्व्व में कभी हमने बड़ी अभिलाषा के साथ बार बार पापकर्म्म किये हैं तिन्हीं पापों का यहफल उदय हुआहै जिसके कारण दुःखके पीछे दुःखही पाते

हैं ४ देखो प्रथम तो राज्य हाथसे जातारहा फिर स्वजनों से वियोग हुआ फिर पिताजी का विनाश हुआ तिसके पीछे माताजीका वियोग हुआ इनसबको जब हम सुधिकरते हैं तो ये सब हमको शोकसे पूर्ण करदेते हैं ५ सो वे राज्य नाशआदि शोक तो बनमें जानकीजीके मिलनेरूप संयोगसे शरीरही के भीतर शान्त होगये थे अब फिर सीताजीके वियोगसे काठलगाय बारदिये अग्निके समान प्रज्वलित हो हमको जारते हैं ६ हम यह निश्चय जानते हैं कि हमारी प्राणप्रियाको आकाश मार्गसे कोई राक्षस हरलेगया सब अति मधुर व प्रिय बोलने वाली हमारी प्रिया भयंकराके बचन से रोदन करने लगी ७ सुन्दर लालचन्दन लगानेके योग्य हमारी प्रियाके गोलकुच रुधिर लगने से अब न शोभित होतेहोंगे ८ तिन हमारी प्रिया का चीकनसाफ कोमल बोल युक्त टेढ़ेबारों के बीचमें विराजमान मुख राक्षस के बशीभूत होनेके कारण न शोभित होताहोगा जैसे राहु के मुखमें चन्द्रमा नहीं शोभित होता ९ सो अब परम पतिव्रता हमारी प्राणप्यारी का सदाहार पहिरने के योग्यगल शून्यमें भेदनकर रुधिर पीनेवाले राक्षसलोग रक्त पीतेहोंगे १० बिनाहमारे निर्जन बनमें बैठीहुई हमारी प्रियाको राक्षसों ने आयजब खींचाहोगा तो अति विशाल व सुन्दर नेत्रवती सीता निश्चय है कि कुररी के समान बिलाप करने लगीहोंगी ११ हे लक्ष्मण इस शिलातल पै हमारे साथ सुखसे बैठीप्राण प्रियाने मन्दहास के साथ तुमको बुलाय बहुतसी बातें कही थीं १२ यहसब नदियों में श्रेष्ठ गोदावरी नदी हमारी प्रियाको सदाप्रिय थी जो कहें कि उसीके तीरकहीं न गईहों तो वहभी असम्भव है क्योंकि अकेली तो वेकभी जातीही न थीं १३ जो कहें कि पद्ममुखी कमलनयनी सीता कमल के फूललेने गई हैं तो यहभी अयोग्यही है क्योंकि बिना हमारे संग वे अकेली कभी कमल लेनेनहीं जातीथीं १४ जोकहें कि पुष्पित वृक्ष संयुक्त नानाप्रकार के पक्षियों से भरा यहबन देखनेको गईहोंगी तो यहभी अयोग्यही है क्योंकि उनका तो बहुत डरभुत चित्तथा इसीसे अकेली जाने में डरती थीं १५ हे लोकके कृताकृत जाननेवाले व लोगोंके सत्यझूंठ कर्म्मके साखी सूर्य्य हमारी प्रिया कहांगई कोई हरले गया शोकहत हमसे सबबताओ १६ हे पवन लोकोंमें ऐसीकोई बस्तुनहीं जो तुम नित्य न जानते हो

इससे बताओ कि कुलके पालन करनेवाली हमारी प्रिया मृतकहोगई व हरगई व कहीं मार्गमेंहै बताओतो १७ इसतरह शोकके वशीभूत मूर्च्छित व रोदनकरते श्रीरामचन्द्रजीसे हर्षित पराक्रम लक्ष्मणजी न्यायशास्त्रमें स्थितहो समयके अनुसार बोले १८ कि शोक को छोड़ धारणाकी सेवाकरो जिसमें जानकीजीके ढूंढ़नेमें उत्साह हो क्योंकि उत्साहवाले पुरुष बड़े बड़े कठिनकामोंमें कष्टनहींपाते १९ महापौरुषी लक्ष्मणजीने जब ऐसाकहा श्रीरामचन्द्रजीने तो भी धैर्य्य न धारण किया बारबारउसी दुःखहीको प्राप्तरहे २० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेत्रिषष्टितमस्सर्ग्गः ६३ ॥

अति दीनहो रामचन्द्रजी लक्ष्मणजीसे दीनवचन बोले हे लक्ष्मण शीघ्रही गोदावरीनदीकेतीरपै जाकरजानोतो १ सीतागोदावरीमें कमल लेने न गईहों जब रामचन्द्रजीने ऐसाकहा तो लक्ष्मणजी फिर २ बड़ी जल्दी अतिरम्य गोदावरीनदीकोगये उसकेघाटपै जानकीजीकोअच्छी-तरह देखभाल शीघ्रहीआप रामचन्द्रजीसेबोले ३ कि हमनेतो गोदा-वरीके घाटोंपै तिनको कहीं न देखा फिर बड़ेजोरसे पुकारा भी पर उन्होंने नहींसुना नहींजानते कि क्लेशनाशिनी वैदेही किसदेश को चलीगईं ४ नहींजानते आपकी प्राणप्रिया सीता कहांहैं लक्ष्मणके वचनसुन दुःखितहो मारेसन्तापके मोहित श्रीरामचन्द्रजी ५ आप गोदावरीनदीके किनारेगये व तहां खड़ेहो सीता कहांगईहो ऐसा कह पुकारनेलगे ६ मारजानेकेयोग्य रावणकी हरी सीताजीको जैसे पूंछने पर सब जीवोंने नहीं बताया वैसेही गोदावरीनदीने भी न बताया ७ तब पृथ्वी जल वायु अग्नि आकाश इनपांच महाभूतोंने गोदावरीनदी से कहा कि रामचन्द्रजीसे सीताको बताओ व शोच करतेहुये रामचन्द्र जीने भी पूंछा पर गोदावरीने सीताको न बताया ८ न बतानेका कारण यह हुआकि रावणकारूप व उस दुष्टात्माके कर्म्मोंका स्मरणकर मारे भयके गोदावरीने नहींबताया ९ जब तिसनदीने भी न बताया तो रामचन्द्रजी निराशहोगये व सीताजीके देखनेकेलिये दुर्व्वलहो लक्ष्मण जीसे बोले १० हे सौम्य यह गोदावरी तो कुछभी नहीं बताती हे

लक्ष्मण भला चलके जनकजीसे क्या कहेंगे ११ व वैदेही की मातासे भी बिनाजानकी कैसे अप्रियवचन कहेंगे जो जानकीराज्यविहीन व वनमें कन्दमूल फलादि भोजनकर जीतेहुये हमारे १२ सब शोकदूरकरतीथीं वे वैदेही कहांगईं हम जानतेहैं कि जातिके लोग व सहायक लोगों से बिहीन होनेकेकारण व राजपुत्रीको न देखनेकेहेतु १३ रात्रियोंमें हम-को नींद न आवेगी इससे वे हमको बड़ी जानपरेंगी अबहम मन्दाकिनी नदी जनस्थान व झरना बहताहुआ यह पर्व्वत १४ इन सबोंमें घूमा-करेंगे जिससे सीतादेखपरें हे बीर ये मृगगण हमको बार बार देखतेहैं १५ इनके मनकीबात जानपरतीहै कि हमसे कुछ कहाचाहते हैं यह लक्ष्मणसे कह तिन मृगोंकोदेख पुरुषसिंह श्रीरामचन्द्रजी मृगोंसेबोले १६ कि हे मृगो सीता कहांहैं यह कहतेही वचन गद्गद होआया आँशु बहनेलगे जब महाराजकुमार श्रीरामचन्द्रजीने ऐसाकहा तो वे सबमृग एकाएकी उठखड़ेहुये १७ जिस दिशाको जानकीजी हरगईंथीं उसी दक्षिणदिशाकी ओर मुखकर आकाश निहार निहार देखनेलगे १८ जिसहेतुसे वे मृग मार्ग्ग देखाय देखाय राजारामचन्द्रजीकी ओर निहारनेलगे तिसीहेतुसे लक्ष्मणजीने मृगोंको मार्ग्गदेखानेवाले समझा कि बस दक्षिणदिशाको कोई आकाश मार्ग्गहो जानकीको लेगया १९ वे मृगगण बारबार उसी दक्षिणदिशाकी ओर मुख कर कर चिंघरते व फिर रामचन्द्रजी की ओर निहार दक्षिणको दौरते मृगोंकी यहदशा देखलक्ष्मणजीने उनके हृदयका हालजान लिया २० व वे अपने दुःखित बड़े भाई रामचन्द्रजीसे बोले कि जब आपने इनमृगोंसे पूछा कि सीता कहांहैं तो ये एकाएकी उठखड़े हुये २१ व दक्षिण दिशा व पृथ्वीदेखाने लगे इससे हमलोग इसी दक्षिण दिशाकी ओर चलें २२ कौनजाने जो जानकी जीके जानेही का कोई चिह्न देखाईदे वा सीताजी ही न देखाईदें रामचन्द्रजीने कहा अच्छातो है बस इतनाकह दक्षिण दिशा की ओरचले २३ पीछेपीछे लक्ष्मण व आगेआगे आप इधर उधरदेखते दोनोंजन बतलाते चले २४ आगे देखातो मार्ग्गमें फूलपड़े थे उसपुष्प वृष्टिको भूमिमें पड़ीदेख श्रीरामचन्द्रजी २५ दुःखितहो दुःखित लक्ष्म-णजीसे बोले हे लक्ष्मण हमजानते हैं ये वही पुष्पहैं २६ जो हमारे

देनेसे जानकी जीने अपने शिरमें गुहेथे अभी कुंभिलाये नहीं क्योंकि हमारा प्रिय करनेके लिये सूर्य्य पवन व यशस्विनी पृथिवी २७ इनकी रक्षा करतीहै पुरुषश्रेष्ठ लक्ष्मणजीसे ऐसा कह आजानुबाहु श्रीरामचन्द्र २८ अरना झरते हुये पर्व्वतसे बोले हे पर्व्वतश्रेष्ठ भला तुमने सर्व्वांग सुन्दरी २९ हमारी प्रिया हमसे विहीन देखीहै जब पर्व्वत ने उत्तर न दिया तो क्रुद्धहो उससे बोले जैसे सिंह छोटे मृगोंसे घुड़क कर बोलताहै ३० हे पर्व्वत जबतक हम तुम्हारे शृंग तोड़ा चाहैं तबतक सुवर्णके रंगके आकार रंगवाली सीताको हमें देखाओ ३१ जब रामचन्द्र जीने पर्व्वतसे ऐसा कहा तो जानों वह मैथिली जीको जानता था पहिले रामचन्द्रजी से कहनेलगा पर पीछे रावण के भयसे नहीं बताया ३२ तो श्रीरामचन्द्रजी उस पर्व्वत से बोले हे पर्व्वत तुम हमारे बाणोंके अग्निसे जरभस्मीभूत होजावोगे ३३ तो तृण वृक्ष पल्लवादि न रहजाने से तुम्हारी सेवा कोई न करेगा हे लक्ष्मण हम इस नदीकोभी शोषलेंगे ३४ जो यह चन्द्रमुखी हमारी सीताको नहीं बताती तो ऐसाही करेंगे इसतरह कठोर वचन कहते हुये श्रीरामचन्द्रजी जानों नेत्रसे जारेही डारते थे ३५ कि देखातो भूमिमें राक्षसके पद बनेथे व उसीस्थानपै भयभीत व रामचन्द्रजीके दर्शनकी इच्छा किये ३६ व राक्षससे घसीटी हुई जानकी जीके भी पदोंके चिह्न बीचबीचमें बनेदेखे सीता जीके व राक्षसके पद एकमें मिलेदेख बड़ाकोप किया ३७ धनुष व तरकसभी टूटा हुआ परादेखा रथभी रत्तीरत्ती चूर्णभित पराथा इस दशाको देख बहुत ब्याकुलहो रामचन्द्रजी अपने भाईसे बोले ३८ हे लक्ष्मण देखोवैदेहीके सुवर्णके भूषणोंके बिन्दु गिरपरेहैं व मालाभी टूटी पड़ीहैं ३९ हे सौमित्रे देखो तो तपाये सुवर्णके रंगके चित्र बिचित्र बूंदोंसे धरणी तलयुक्त है क्या सीताही का तो रुधिर नहींहै ४० हम जानतेहैं कि कामरूपी राक्षसोंने वैदेहीको काट काट बांटलिया वा भक्षणही कर लिया ४१ देखो दो राक्षस यहांपै उनसे सीताके निमित्त बिवाद हो घोरयुद्ध हुआ है ४२ किसी का मुक्तामणि जटित सुवर्णके बन्दलगा धनुष टूटा धरणी में पराहै ४३ सो यहधनुष यातो राक्षसोंका है वा देवताओं का है प्रातःकालके सूर्य्य के समान अरुण व वैदूर्य्यमणि की मूठ इसमें लगीहै ४४

किसीका सोनेका कवच भी रत्तीरत्ती टूटाफूटा पृथिवी में पराहै १०० कामीका छत्रभी दिव्यपुष्पोंसे शोभित पराहै ४५ इसकी डाँड़ीभी चूर्ण हो गईहै व सोनेकी गर्द्दनीपरी पिशाचोंके समान मुखवाले गदहेभी ४६ महा भयानक व महाकाय किसीके रथमें मारेपरेहैं फिर दीप्तिमान अग्निके समान अति देदीप्यमान किसीका संग्राम में काम देनेवाला रथहै ४७ जोजो ठौर ठौर पटकने व दैमारने से टूटगया है व किसीके रथकी फ-रियों के समान लम्बे बाणभी सुवर्ण के बिभूषणों से भूषित ४८ टूटेफटे परेहैं जिनके देखने से भयहोती है बाणों से पूर्ण किसीके तर्कसभी भूमिमें टूटेपरे हैं ४६ देखो चाबुक व बाणहाथ में लिये किसीका सारथि भी मृतक पराहैदेखो यह किसीराक्षसके जानेका मार्ग्गबनाहै ५० हमसे व राक्षसों से अतिबैर तो हईहै हमजानते हैं उनकठोर हृदयवाले दुष्ट राक्षसों ने ५१ यातो बैदेही को भक्षणही करलिया वा वे हरीले गये वा ऐसेही मरगई होंगी क्याकहें सीताजब बनमें हरीजाने लगीं तो उनके पातिब्रत धर्म्मनेभी रक्षा न की ५२ या जब उनको वे भक्षण करनेलगे वा जब हरनेही लगे तो भी धर्म्मने रक्षा न की तो अबलोक में औरकौन हमारा प्रियकर सकेगा ५३ हे लक्ष्मण सबलोकों के कर्त्ता महाशूरबीर परम दयावान् हमारासब प्राणी अज्ञान से अपमान करते हैं ५४ व दे-वतालोग भी कोमल स्वभाव होने लोकों का हितकरने इन्द्रिय दमन करने व करुणा जानने से हमको निश्चय निर्व्वीर्य्य मानते हैं ५५ ह-मको पाय ये सबगुण दोष होगये इनदोषोंसे हममूंदगये अबकोई हमको पराक्रमीही नहीं समझता इससे अभीसब प्राणियों व राक्षसों के नाश के लिये ५६ चन्द्रमा की उजियारी को मिटाय महासूर्य्य के समान उदित हमारा प्रकाश देखो जोकि सौशील्यादि गुणों को छोड़ अब सबको ठीक करते हैं ५७ न यक्ष न गन्धर्व्व न पिशाच न राक्षस न किन्नर व न मनुष्य कोईभी सुखपावेंगे लक्ष्मण तुम देखते तो रहौ ५८ हमारे बाणोंसे अभी आकाश पूर्णहुआ जाताहै तीनोंलोकों में जितने प्राणीहैं सबको अभी गिराये देतेहैं ५६ जो ब्रह्मा विष्णु महादेवादि देवता कुशलपूर्व्वक सीताको न देंगे तो सहित ग्रहगण सहित चन्द्रमा बिना अग्नि पवन सहित सूर्य्य ६० सहित पर्व्वत शुष्क समुद्र

तड़ागादि सहित टूटेफाटे वृक्ष सहित महासागर जलरहित ६१ तीनोंलोक करदेंगे अर्थात् तीनोंलोकों का नाशकर देंगे ६२ हे लक्ष्मण इसी मुहूर्त्त भरमें हमारा विक्रम सबलोग देखलेंगे कि फिर आकाशको भी कूदकर न जानेपावेंगे ६३ हे लक्ष्मण आज हमारे छोड़े हुये निरन्तर वाण समूहोंसे मर्दित व भ्रान्तचित्त मृगपक्षी आदि युक्त६४ व व्याकुल मर्य्याद संसार देखो व कानों तक प्रत्यंचा खींच छोड़े हुये वाणोंसे बिना पिशाच व राक्षसका संसार जानकी के हेतु करदेंगे ६५ आज क्रोधसे छोड़ेहुये व रोषसे चलाये गये हमारे वाणोंका बल देवता लोग देखेंगे ६६ व नदेवतानदैत्य न पिशाच न राक्षसकोईभी हमारेक्रोध से तीनोंलोकोंके विनाशनेपर न रहेंगे ६७ व जो देवतादानव यक्षराक्षसों के लोकहैं वेभी हमारे वाणोंके लगनेसे खण्ड खण्ड हो गिरपरेंगे ६८ इनसब लोकों को वाणों से मारमार मर्य्यादा रहित करदेंगे जो ब्रह्मा विष्णु महादेव इन्द्र वरुण कुवेर यमराजादि जगत् के ईश्वर हरी हुई व मरीहुई सीता न देंगे तो ऐसाहीहोगा ६९ फिर जैसी जानकीजी थीं वैसेही न देंगे तोचराचर सहित तीनोंलोक नाश करदेंगे ७० इतनाकह मारे क्रोधके नेत्र रक्तसमानकर व धनुष जोरसे खींच श्रीरामचन्द्रजी ने अतिघोर विषधरके समान वाणले धनुषपै चढ़ाया ७१ व युगान्ताग्नि के समान क्रोधकर यह वचन बोले कि जैसे वृद्धता जैसे मृत्यु जैसेकाल व जैसे विधि ७२ सब जन्तुओं में समय समयपर आतेहैं व कोई इनको रोंकनहीं सक्ता तैसेही जबहम क्रोधसँय्युक्त होतेहैं तो किसीके रोंकेनहीं रुँकते ७३ ॥

कुण्डलिका ॥

निन्दारहित सुदन्तयुत जोन जानकिहि देहिं ।
प्रथमहितो सुरदैत्य अहि नर गन्धर्व्वसमेहिं ॥
नर गन्धर्व्व समेहिं शैल काननयुत सब जग ।
नष्ट करब क्षणमाहिं रहिहिकाहूकर नहिंभग ॥
तुमसों कहत विचारि लषण सुनिहोहु अनन्दा ।
जनकसुतहिनहिंदेहिं करबतबदेवननिन्दा १ । ७४

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेचतुष्षष्टितमस्सर्गः ६४ ॥

सीताजी के हरण से दुर्व्वल तप्यमान सम्वर्त्तक अग्नि के समान लोकोंके नाशकरने में युक्त १ धनुष की प्रत्यंचा निहारते बार बार जोरसे श्वासलेते युगान्तमें महादेवजीके समान सब जगत्के भस्मकरने में तत्पर २ अदृष्ट पूर्व्वरूप बड़ा क्रोध किये श्री रामचन्द्र जी को देख लक्ष्मणजी मारे शोकके मुख सूखाकर हाथजोर बोले ३ हे श्रीरामचंद्र महाराज प्रथम आप सरल स्वभाव सर्व्वेन्द्रियजित् सब प्राणियों के हितकारी हो सबके पालनके लियेहुये अब क्रोध के बशहो अपनी प्रकृति छोड़नेके योग्य आप नहीं हैं ४ क्योंकि चंद्रमा में केवल लक्ष्मीहै सूर्य्य में दीप्ति पवनमें शीघ्रचाल पृथिवीमें क्षमा इन चारों में ये चारो पदार्त्थ एकही एक हैं व आपमें ये चारो व यश ये पांच पदार्त्थ हैं ५ इससे आप एकके अपराधसे सब लोकों का नाश न करिये क्योंकिहम नहीं जानतेकि किसका यह समरका रथ टूटा पराहै ६ व नहीं जानते कि किसके हेतु वा किसके निमित्त सहित आयुध सहित ओहार आदि यहटूटा हैं व किसीके खुरोंसे तोड़ा गयाहै चारो ओरसे इसमें रुधिर लगाहै ७ फिरइस स्थानमें एकही का युद्ध विदितहोता दूसरेके पैर भी नहीं देखाई देते ८ आपके इस पराक्रम करनेसे हमकुछ बड़ायश नहीं देखते जोकि एकके अपराधसे आप सबलोकों का बिनाश किया चाहतेहैं ६ सब रघुबंशी राजायोग्य दण्डदेनेके कारण सरलस्वभाव व शान्त चित्तहोने के हेतु प्रख्यात रहे इसीसे आपभी सबप्राणियोंके शरण्य व सबके परम गतिहैं १० फिरऐसा कौनहै जो आपकी स्त्री का नाश अच्छा समझताहो क्योंकि नदीसमुद्र पर्व्वत देवता गन्धर्व्व दानव ११ इनमें ऐसाकोई नहीं जो आपका अप्रिय करसके जैसे यजमान का अप्रिय साधुलोग नहीं करसक्ते इससे हे राजन् जो सीताको लेगया हो उसको ढूंढ़िये १२ हमारे साथ धनुष हाथमें लेचलिये सब महर्षियोंको सहायक बनाय समुद्र वन व पर्व्वत १३ विविध प्रकारकी गुहा ताल तलैया देवता गन्धर्व्वादि के सबलोक ढूंढ़ेंगे १४ जबतक आपकी भार्य्या हरने वालेको न पावेंगे बराबर ढूंढ़तेही रहेंगे हे कोशलेन्द्र जब वे ब्रह्मादि देव तुम्हारी भार्य्या न बतावेंगे तब बनाय समझाय बुझायभी देखलेंगे जो न मानेंगे तो फिर आप उनको दण्डही दीजियेगा १५ उ-

क्षमशील समझाना विनय व नीतिसे जब आप सीताको न पावेंगे तो फिर सुवर्णपुंख युक्त इंद्रबज्र समान बाणोंसे सबको चाहे संहार कर डालियेगा १६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेपंचषष्टितमस्सर्गः ६५ ॥

इस तरह शोकके सन्तप्त अनाथों के समान बिलाप करते महामोह युक्त अति दुःखित अचेतन १ रामचन्द्रजीको मुहूर्त्त भरतक लक्ष्मणजी समझाय व कुछप्रसन्नकर चरणमींजनेलगे २ व कहने कि महातपस्या करने व महाकर्म्म करनेसे महाराज दशरथजीसे आप साक्षात्परब्रह्महो उत्पन्नहुये कि उन्होंने अलभ्य पदार्थ पाया जैसे देवताओंने बड़ेबड़े उपायोंसेअमृतपाया ३ फिरतुम्हारेही गुणोंसे बँधेहुयेराजा तुम्हारेही वियोग से वे देवलोक को चलेगये क्योंकि भरतको राज्यदेनेकेलिये केकयी से कहचुकेथे ४ हे श्रीरामचन्द्रजी जब आपयह दुःख न सहसकेंगे तो फिर अन्य प्राकृती मनुष्य कौन सहेगा ५ जो आप दुःखित हो अपने तेजसे इनलोकों को जारडालेंगे तो पीड़ितहो प्रजा किसकी शरणको जायँगी ६ लोकका यह स्वभावहीहै कि होताहै फिर जाताहै राजा नहुषके पुत्रययातिजीइन्द्रके लोककोचलेगये फिर वहांसे गिरपरे ७ व जो हमारे पिताजी के पुरोहित महर्षि बसिष्ठजी हैं उन्होंने एकही दिनमें १०० पुत्र उत्पन्न किये फिर एकहीदिनमें वे सबनष्टभी होगये ८ रहेकोशलेश्वर व जो यह जगत् की माता व जिसके सबलोग नमस्कार करते हैं पृथिवी है वहभी चलायमानहै सदाबनी नहीं रहती ९ व जोसूर्य्य चन्द्रमा धर्म्महैं व जगत के नेत्रहैं व जिन्हींमें सबजगत् टिकाहै वेभीदोनों महाबली ग्रहण को प्राप्तहोते हैं१०व पृथिवीजल पवन अग्नि आकाश ये महाभूत व सब देवताभी जबदेह धारण करते हैं तो उसदैव को नहीं छोड़ते उसीके अनुसारही चलते हैं ११ हे नरशार्दूल इन्द्रादि देवताओं को भी सुख दुःख प्राप्तहोते हैं इससे आपशोच करन के योग्यनहीं १२ हेवीर जो जानकीजी मृतकभी होजातींवा नष्टभी होजातीं तोभी आपको शोचनहीं करना था क्योंकि यहशोच करना प्राकृती मनुष्यों का कामहै नकि प्राकृत बिलक्षण आपका १३ निरन्तर सर्व्वदर्शी सर्व्वज्ञ आपसरीखे लोग

शोच करने के योग्यनहीं हैं हे रामचन्द्रजी ऐसेलोग तो बड़ेबड़े कष्टोंमें भी नहींशोच करते १४ हे नरश्रेष्ठ अब अपने तत्वसे समझ इसकी चिन्तनाकरें क्योंकि महाप्राज्ञ लोग बुद्धिसे युक्त होनेहीके कारण शुभाशुभ पदार्त्थ जानते हैं १५ ये सब कर्म्म अध्रुव हैं इनका जबतक गुण वा दोषनहीं देखलिया जाता तबतक इष्टफल नहीं जान परता वहजानना बिना क्रियाकिये नहीं होसक्ता १६ ये सबबातें आगे आपही ने हमको बताई हैं व आपको सिखानेवाला तो कोई नहीं चाहेसाक्षाद्बृहस्पति भी हों १७ हे महाप्राज्ञ आपकी बुद्धिको तो ब्रह्मादि देवता भी नहीं पहुंचसक्ते परन्तु इस समय मारे शोकके आप सोयगये हैं इससेहम जगाते हैं १८ हे इक्ष्वाकुबंश्य शिखामणि अपना पराक्रम दिव्य व कुछ कुछ मनुष्यों का साजान शत्रुओं के बधके बिषय में यत्नकीजिये १९ सब लोकों का नाश करने से आपका कौन प्रयोजन है केवल उसी अपने पापी बैरी को जान बिध्वंस कीजिये २० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेषट्षष्टितमस्सर्गः ६६ ॥

जब लक्ष्मणजीने ऐसाकहा तो सारग्राही श्रीरामचंद्रजीने महासार रूप वचन ग्रहणकिये १ आजानुबाहु श्रीराम बढ़ाहुआ कोप शान्तकर चित्रविचित्र धनुष से प्रत्यंचा उतार लक्ष्मणजी से बोले २ हे लक्ष्मण हमलोग अब क्या करें व कहांचलें व किस उपायसे सीताको पावें इस विषयमें विचारकरो ३ रामचंद्रजीको दुःखितदेख लक्ष्मणजीबोलेकिप्रथम तो यही जनस्थानही आपढूंढ़िये ४ क्योंकि इस स्थानमेंराक्षसबहुत हैं व नानाप्रकारके वृक्ष लतादि विद्यमानहैं पर्व्वतभी बहुतहैं कंदराभीबहुत ५ अति घोर बिबिधिप्रकार की गुहा भी हैं जिनमें नानाप्रकार के जंगली जीव भरेहैं किन्नर व गन्धर्व्वोंके भी बहुत भवन व रहनेके स्थान हैं ६ हम व आप दोनोंजन तिन सबको ढूंढ़ें क्योंकि आपके समान महात्मा पुरुषोत्तम अति बुद्धिमान् ७ विपत्तिमें भी नहीं कम्पित होते जैसे वायुके बेगसेपर्व्वतनहीं कांपते यहसुन लक्ष्मणके साथ श्रीरामचन्द्रजी ने सब वन ढूंढ़ा ८ ढूंढ़नेके समय रामचन्द्रजी बड़ा कोप किये अति पैन बाण धनुषपै चढ़ायेथे जाते जाते देखातो आगे एक पर्वताकार बड़े भाग्यवाला

पक्षी पराथा ९ उसका जटायु नामथा रुधिरसे उसके सबअंग बूड़ेहुयेथे व भूमिमें बेचारा पराथा तिसको पर्वताकार देख श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मण जीसे बोले १० कि इसनेहीं सीताजीको भक्षण करलियाहै इसमें कुछ सन्देह नहीं यहतो निश्चयहै कि गृध्रका रूप धारणकिये यह राक्षसहै घूमरहा है ११ जो विशालाक्षी सीताजी को खाय सुखसे यहां बैठा है इससे इसको घोर अग्निसमान प्रकाशित सीधे चलनेवाले बाणोंसे वध करेंगे १२इतनाकह धनुषपै अतितीखा बाण चढ़ाय उसकेदेखनेकेलिये श्रीरामचन्द्रजी क्रोधकर समुद्र पर्य्यंत पृथिवी को कँपातेही ऐसे चले १३ तब तिन दीन दशरथनन्दन श्रीरामजी से अतिदीन वचन हो मुख से सहित फेन रुधिर उगिलताहुआ वह पक्षी बोला १४ हेआयुष्मन् श्रीराम जिसको इस महावनमें औषधिके समान ढूंढ़तेहौ उनदेवी सीताको व हमारे प्राणोंको भी रावणने हरलिया १५ जब तुम छोड़ मारीच के पीछे चलेगये व लक्ष्मण भी चलेगये तो शून्यस्थान पाय रावण सीताको हरलेचला तब हमने देखा कि यह बलवान् लियेजाताहै १६ तब सीता के छोड़ाने के लिये हम प्राप्त हुये इससे रावण व हमसे बड़ाभारी युद्ध हुआ उसमें हमने उसका रथ छत्र सब विध्वंस करदिया व उसेभी पृथिवी में गिरायदिया १७ हे रामचंद्र यह धनुष उसीकाहै जो टूटाफूटापरा है व ये उसके बाणहैं जो चूर्णीभूत परेहैं यह उसका संग्राम करनेका रथहै जो रणमें तोड़डारा गयाहै १८ यह उसका सारथिहै जो हमारे पङ्ख से मरा पराहै जबहम बूढ़ेतोथेही लड़ते लड़ते थकगये तो रावणने खड्गसे हमारे पंख काटडारे १९ व फिर वह सीताजी को ले आकाश को कूद गया सो अब राक्षस के मारे हुये हमको आप न मारें २० रामचन्द्र जी सीता में लगीहुई तिसकी कथा सुन धनुष हाथ से बहाय गृध्रराजको लपटाय मिले २१ व विवश हो सहित लक्ष्मण भूमि में गिर रोदन करने लगे यद्यपि रामचन्द्रजी महाधीरतर थे तथापि उस समय उनको दूना ताप हुआ इससे बनाय फिर व्याकुल होगये २२ तब एकान्त में परेऊधी सांस लेते बार बार कष्टमें डूबहुये लक्ष्मणजी को देख अति दुःखित हो श्रीरामचन्द्र बोले २३ कि वहां तो राज्य भ्रष्ट होगया फिर बनबास हुआ फिर सीता हरगई फिर यह परमोपकारी

बेचारा पक्षी मारागया ऐसी हमारी विपत्ति अग्निकोभी भस्मकरसक्ती है २४ व जो हम सम्पूर्ण समुद्रको इस समय उतरेंतो वहभी निश्चय है कि नदियों का पतिभी हमारी दरिद्रासे सूखाहोजाय २५ जिस हमने इतनी बड़ी दुःखकी फांसी पाई तिसके समान अभाग्यवान् इस सचराचर संसार में दूसरा कोइ नहीं है २६ हायये गृध्रराज हमारे पिताजी के बड़े पराक्रमी मित्रहैंजोहमारी अभाग्यसे मरे भूमिमें शयन करते हैं २७ ऐसाकह श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी दोनों भाई पिताकास्नेह देखाते हुये जटायुके सर्व्वांग अपने कर कमलोंसे सुहराये २८ पङ्ख कटे हुये रुधिर में डूबे तिन गृध्रराजको पकड़ श्रीरामचन्द्रजी प्राणसमान मैथिली कहां गई यह कह भूमिमें गिरपरे २९ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेसप्तषष्टितमस्सर्गः ६७ ॥

महा रौद्र रूप रावणसे मारेहुये जटायुकोदेख परम मित्र लक्ष्मणजीसे श्री रामचन्द्रजी बोले १ हे लक्ष्मण यह पक्षी हमारेही अर्थ दौड़ाथा जब संग्राम में राक्षस से मारागया व अब प्राण त्याग करता है २ हे लक्ष्मण अब इस के शरीर में एकही प्राण रहगया है सोभी अति दुखित है इस पक्षीका बोलभी अब बनाय मन्दहोगयाहै व व्याकुलताही के साथ देखता भी है ३ लक्ष्मण से ऐसा कह जटायुसे बोले हे जटायुजी जो अब फिर बोलसको तो सीताको बताओ व अपना बधभी बताओ तुम्हारा कल्याण हो ४ रावण किसकारण सीताको हरलेगया हमने तिसका कौनअपराधकिया जिसको देखरावणने हमारी प्रिया हरी ५ जब तुमने सीताको देखाथातो उस समय चन्द्रसमान प्रकाशित व मनोहर उनका मुख कैसाथा व उस समय सीताने कौन वचन कहे हे पक्षिराज बताओतो ६ उस राक्षसका कैसावीर्य्यहै व उसका रूप कैसा है कर्म्म भी उसके कैसे हैं घर उसका कहांहै हे तातजो जो हम पूंछते हैं सब बताइये ७ रामचन्द्र जीको बिलाप करते व पूंछते देख वह धर्म्मात्मा जटायु बहुत धीरेसे रामचन्द्रजी से बोला ८ कि सीताको राक्षसों का राजा दुष्टात्मा रावण हरलेगयाहै लेजानेके समय उसने अपनी बड़ी माया फैलाय बदरी औ कीसी धारे धीरे पानी भी

बरसने लगा था ६ जब हम थक गये तो हमारे पंखकाट वह निशाचर जानकी जीको ले दक्षिण मुख चला गया १० हेरामचन्द्रजी अब हमारे प्राण रुकगये दृष्टिभी भ्रमती है हमको सब वृक्ष सुवर्ण के देखाई देते हैं व जानों सब वृक्ष मूड़े के बारों में पुष्पोंकी माला पहिने हैं ११ जिस मुहूर्त में सीताको लेकर रावण गया है उसका यह प्रभाव है कि जो वस्तु उसमें जाती रहती है बस्तुका स्वामी शीघ्रही पायजाता है १२ हे रामचन्द्रजी उस मुहूर्त्तका बिन्द नाम है उसका प्रभाव रावण नहीं जानता इसी से जैसे कटिया में बँधाहुआ मांस खाय मछलीनाश को प्राप्तहोती इसी तरह वहभी सीताको लेजाय नाशको प्राप्त होगा १३ इससे आप जानकी जी के बिषय में ब्यथा न कीजिये क्योंकि तिस दुष्ट रावणको समर में मार आप वैदेहीके संग बिहार करेंगे १४ रामचंद्रजी से ऐसा कहते हुये सावधान चित्त उन गृध्रराज के मुख से सहित मांस रुधिर बहनेलगा इससे बिदित हुआ कि वे मरने चाहतेथे १५ गृध्रराज ने इतना कहा कि वह बिश्रवाका तो पुत्र है व कुबेरजीका भाई कि उन के प्राण शरीर से निकल गये १६ हाथजोरे श्रीरामचंद्र जी बोले २ ऐसा कहीरहेथे कि शरीर छोड़ गृध्रराजके प्राण आकाश को चले गये १७ व वे भूमिमें शिरगिराय व चरण फैलाय अपना शरीर फटफटाय प्राण त्याग धरणी मेंगिरपरे १८ तिस गृध्रको मराहुआ ताम्रवत् रक्त सम नेत्र देख रामचंद्रजी मारे दुःखोंके दुःखितहो लक्ष्मण जी से बोले १६ इस राक्षसों के स्थान दण्डकारण्य में सुखपूर्ब्बक बहुत वर्षोंसे यह पक्षी यहां बसतारहा २० व हजारों बर्षोंका यह है सो अब मराहुआ भूतल में सोता है कालकी मर्य्यादा कोई नहीं नांघ सक्ता २१ हे लक्ष्मण देखिये यह गृध्र कैसा परोपकारी है जो सीता की रक्षा करने में बलवान् रावण से मारागया २२ देखो अपने पिता पिता महादि गृध्रोंका राज्य छोड़ इसपतगेश्वर ने हमारे हेतु अपने प्राण त्याग किये २३ हे लक्ष्मण शूरबीर शरण्य धर्म्मचारी साधुलोग सर्व्वत्र देखाई देतेहैं देखो मनुष्यादि चैतन्योंको कौनकहै पशु पक्ष्यादि तिर्य्यग्योनि योंभी ऐसेलोग देख परतेहैं २४ हे लक्ष्मण हमको सीता के हरण से ऐसा दुःख नहींहुआ जैसा कि हमारे अर्थ इसगृध्र के मरने

से हुआ है २५ जैसे महा यशस्वी राजा दशरथ जी हमको पूजनीय व मान्य हैं उनका सखाहोने व उपकार करने से तैसाही यह गृध्रराज है २६ हे लक्ष्मण काष्ठले आवो कि हम उनको मथ अग्नि निकाल अपने अर्थ मरेहुये गृध्रराज का दाह करेंगे २७ काष्ठ ले झटपट चिता बनाइये उसदुष्टराक्षससे मरेहुयेपक्षिराजका हम अवश्यदाह करेंगे २८ यहकह काष्ठ मँगाय चिता बनाय गृध्र से श्रीरामचंद्रजी ने कहा कि

दो० यज्ञ शील जोगति लहत आहिताग्नि गति जौन ॥
अपरावर्त्ती जो लहत महिदाता जो भौन १ । २९
ममकर संस्कृत ह्वै लहहु मम आज्ञा सों तौन ॥
गृध्रराज उत्तम सकल लोक शोक बिन जौन २ । ३०
यह कहि चिता चढ़ाय किय गृध्रराज कर दाह ॥
धर्म्मात्मा रघुबंश मणि दीनपाल नरनाह ३ । ३१
लै मृग मांस पुनीत दिय ताहित पिण्ड अनेक ॥
तिन सों तारेहु पक्षि कहँ कृपासिंधु सबिबेक ४ । ३२
जहां रहे अति हरित तृण ताहित श्राद्ध तहांहिं ॥
कीन्हराम करुणायतन धर्म्म मूर्त्ति सक नाहिं ५ । ३३
जासु प्रेत हित जौन ऋषि लोग कहत सो राम ॥
गृध्रराज हित जप्यहुसो सब बिधि पूरण काम ६ । ३४
राम लषण द्वौ बन्धु पुनि गोदावरी अन्हाय ॥
दीन्ह तिलांजलि गृध्रहित प्रेम सहित हरषाय ७ । ३५
सकल शास्त्रबिधिसों करी पिण्डजलादिक रीति ॥
गृध्रराज हितराज सुत मन प्रसन्न युतनीति ८ । ३६
अशकर दुष्कर कर्म्म करि रण मरि गृध्र महान ॥
बरमहर्षि सम रामसों संस्कृत चढ्यहु बिमान ९ । ३७
गृध्र जलादि क्रियाकरी लषण सहित श्रीराम ॥
सीता खोजन हितचले बासवेन्द्र सम धाम १० । ३८

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेऽष्टषष्टितमस्सर्गः ६८ ॥

इसतरह गृध्रराजकी मृतकक्रिया अपने हाथोंकर जानकीजीको देखते

हुये श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मण पश्चिम दिशाको चले १ फिर धनुषबाण खड्ग धारण किये दोनों भाई जिसमार्ग्ग में तबतककोई मनुष्य नहीं गयाथा पश्चिम दक्षिण के कोणको उसमार्ग्गमें चले २ उसमार्गमेंनाना-प्रकारकेझाड़वृक्ष वल्लीलता आदि लगेथे इससेचारोंओरसे घिराथा व इसी से अतिभयानक व दुर्ग्गम लगताथा ३ उसगलीको जल्दी जल्दी नांघ फिरदक्षिण दिशाको चले.वहांभी बड़ाभयानक बनथा वहभी अतिबल-वान् दोनोंभाई नांघे ४ तिसकेपीछे जनस्थान से तीनकोश आगेजाय दोनोंभाई अति भयङ्कर क्रौंचारण्य में पहुंचे ५ इसबन में नानाप्रकार के वृक्षमेघों के समानथे नानाप्रकार के पुष्प व मृगगण सँयुक्तथे चारोंओर वहांके जीव हर्षितही देखाईदेते ६ जानकीजी के देखने की इच्छासे वह सबबन दोनों भाइयों ने ढूंढ़ा व सीताजी के हरण के दुःखसे दुःखित ठौर ठौर बनमें खड़े होतेजातथे ७ तिसबन के पूर्व्वओर तीनकोश चल म-तंगाश्रमपै पहुँचे यहांभी अति भयंकर बनथा ८ व उसमें नानाप्रकार के मृग व पक्षी भरेथे वृक्ष बड़ेही घनेलगेथे ९ दोनों भाइयों ने उसबन में एकबड़ी गहरीकन्दरा देखी जिसमें बड़ी अँधिआरीथी १० उसकन्दरा सेबाहर आय दोनों भाइयों को एकअति भयानक रूप विकृत स्वरूप राक्षसी देखपरी ११ वहअल्प पराक्रमी लोगोंको भयदेती व उसके बड़े बीभत्स कर्म्मथे रूपअति भयानकथा पेटबहुत लम्बा दांत बहुत तीखे महा करालरूप खाल उसकी बहुतही कड़ी १२ बड़ेबड़े मृगोंको भी भ-क्षण करती रूपअति बिकटथा मूंड़केसब बालछूटेथे उसने रामलक्ष्मण दोनों भाइयों को देखा १३ व रामचन्द्रजी के आगेखड़े लक्ष्मणजी को पाय कहने लगी बीरयहां आवो हमतुम दोनों बिहारकरें १४ यहलक्ष्मण जीको लपटाय बोली कि हमारा अयोमुखी नामहै तुमको अलभ्य लाभ हैं व तुमहम को अतिप्रियहो १५ हेनाथ हमारे संग आप नानाप्रकार के पर्व्वतोंपै व नदियों के किनारोंपै जबतक दोनोंजन रहें बिहारकरें १६ जबउसने ऐसाकहा तो कोपकर तरवार निकाल लक्ष्मणजीने उसके काननाक व स्तन काटडाले १७ जब कान नाक व स्तन काट डालेगये अति भयावनी बोलीसे बोली व गर्ज्जी व जिधर से आईथी महाघोर दर्शना राक्षसी उसी ओरको भागी १८ जबवह नाक कान स्तन कटाय

हाय हाय करती भागी तो रामलक्ष्मण दोनोंभाई बनमेंपैठे १९ व महा-
तेजस्वी सत्यवक्ता शीलवान् व पवित्र लक्ष्मणजी हाथजोर महा तेजस्वी
अपने भाईसे बोले २० कि हमारा बाहुजानों कटागिरा परताहै मनजा-
नों बहुत ऊबता है इनबातों से जानों बहुत अनिष्ट होतेजान परते हैं २१
तिससे हे आर्य्य आप तैयार होरहैं हमारे बचन मानें क्योंकि इननिमित्तों
सेहमको संशय होताहै २२ परबिजय हमारीही होगी क्योंकि यहबंजुलक
नामपक्षी जो जोरसे शब्दकरताहै वह हमलोगोंकी बिजय सूचित कराता
है २३ इसतरह बतलाते दोनोंभाई बनमें जानकीजी को ढूंढ़ही रहेथे कि
उस बनमें बड़ाभारी शब्दहुआ उससे मानों बनकाबन बिध्वंस हुआ जाता
था २४ ऐसे बेगसे प्रचंड पवन चला कि सबबन भरके वृक्ष एक दूसरे
से टक्कर खानेलगे व मानों उसशब्दसे बनपूर्ण होगया २५ उसशब्द का
कारण देखने के लिये भाई सहित श्रीरामचन्द्रजी खड्ग धारण किये
इधर उधर निहारने लगे उनको एक महाशरीर चौड़ीछातीवाला राक्षस
देखपरा २६ सामने टिकेहुये उस राक्षसको देख दोनोंभाई आगेबढ़े कि
अच्छीतरह से देखें देखाता वह बड़ाभारी था शिर व गला उसके थाही
नहीं मुख पेटमेंथा २७ भालाके समान बड़ेलम्बे व तीखेरोम उसके रोमथे
जानों बड़ाभारी पर्व्वतथा रंग उसका नीले मेघके समान था शब्द जानों
मेघोंका गर्ज्जनाही था २८ मस्तक अग्नि ज्वालाके समान देदीप्यमान
व अति धूमिली पलकें बड़ी बड़ी थीं २९ एक अतिघोर नेत्रतो उसका
छातीमें था दांत मुखमें बड़ेभारी थे मुखसे जानों लीलेही लेता था ३०
सिंह ऋक्ष व्याघ्रादि मृग गणों को पकर२खाता चलाजाता था चार
चार कोशकी लम्बी अति भयंकर उसकी बाहें थीं ३१ उन बाहोंसे प-
कर पकर हजारों मृगोंको खाता चला जाता था किसी छोटे बड़े सिंह
व्याघ्रादि को नहीं छोड़ता था ३२ वह जिस मार्ग्ग होकर दोनों भाइ-
यों को जाना था उसीमें पराथा घूमके कोशभर जाय देखा तो ३३ एक
महा कवन्ध देखाई परा यहभी कवन्ध ही के समान अति घोर दर्शन
था ३४ उसने दोनों बाहें लपकाय इन दोनों महा बलवान् भाइयोंको
पकड़ लिया ३५ यद्यपि दोनों भाई खड्ग धारण किये धनुष लिये म-
हा तेजस्वी थे तथापि दोनों जनों को पकड़ अपनी ओरको उसने खींचा

३६ उन दोनों भाइयों में शूरहोने व धैर्य्यके कारण रामचन्द्रजीतो कुछ भी व्याकुल न हुये पर बाल्यावस्था होनेसे व अनाश्रय होनेसे लक्ष्मण जी बहुत घबराये ३७ व रामचन्द्रजी से बोले हे बीर हमको देखिये राक्षस के विवशहैं ३८ हे रामचन्द्रजी अब आप हमको इसे बलिरूप दे छोड़ाय चलेजाइये अपना को बचाइये व सुखसे भागजाइये ३६ व जल्द जानकीजी को प्राप्तहूजिये व फिर अपने पिता पितामहकी पृथ्वी पाय ४० जब राज्य करने लगियेगा तो सदा हमारा स्मरण करते रहियेगा अब हमारी आशा न कीजिये जब लक्ष्मणजी ने ऐसाकहा तो श्रीरामचन्द्रजी बोले ४१ कि हेबीर त्रास न कीजिये क्योंकि तुम्हारेसरीखे बीर ऐसा बिषाद नहीं करते इसी अवसरमें वह क्रूर राक्षसदोनों भाइयोंसेबोला ४२ कि तुम दोनों वृषभ समान कन्धा वाले व धनुर्बाण धारण किये कौन हौ ४३ व इसघोर देशमें आयेहो फिर भाग्य बश हमारे दृष्टिगोचर हुये अपना कार्य्य तो बताओ कि क्यों इसदेश में आयेहौ ४४ फिर आते आते अति भूंखे हमारे मुखमें आय परे हो वाण धनुष व खड्गलिये मानों तीक्ष्ण शृंगके वृषभके समान हो ४५ पर अब हमारे मुख में पर तुम दोनों जनोंके प्राण दुर्ल्लभ हैं दुष्टात्मा कबन्धके बचन सुन ४६ रामचन्द्रजी मुख सूखाकर लक्ष्मणजी से बोले हे भाई यहतो अब कष्टसे कष्टतर प्राप्तहुआ है ४७ अब तो यह महा दुःख प्राप्तहुआ है प्रियाके पानेकी आश न कीजिये हे लक्ष्मण सब प्राणियों में कालका बड़ा वीर्य्य देखाई देताहै ४८ हे लक्ष्मण देखिये तो तुम हम कैसे दुःखमें परेहैं दैवका सब प्राणियोंमें बड़ाभारी भारहै ४६ देखिये शूर बलवान् व रणमें कुशल लोगभी कालके बशीभूत हो बालू के सेतु के समान बिगड़ जातेहैं ५० ऐसाकह दृढ़सत्य बिक्रम महा यशस्वी महा प्रतापवान् उदारकीर्त्ति श्रीरामचन्द्रजीने लक्ष्मणजी को देख अपने मनसे अपनी मति स्थिर की ५१ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेएकोनषष्टितमस्सर्गः ६६ ॥

अपनी बाहों की फांशी में बँधे राम लक्ष्मण दोनों भाइयों को देख कबन्ध उन दोनों जनों से बोला १ हे क्षत्रियों में श्रेष्ठ दोनोंजन हमको

भूखेदेख खड़ेहोवो दैवने तुम्हेंहमारे भोजनके लिये भेजाहै २ तिसकेऐसे वचन सुन लक्ष्मणजीकालकेअनुसार हितवचनकहितहोविक्रममेंनिश्चय कर बोले ३ हे रामचन्द्र जी यहराक्षसाधम तुमको व हमको दोनों को दोनों बाहोंसे पकड़ेहै इससे बड़ी लम्बीचोड़ी इसकीबाहें आवो खड्गसे काटडालें ४ क्योंकि यह महाभुज व महाविक्रम राक्षस बड़ा भयङ्कर है इसने पहिले सब लोक जीते हैं अब हमको तुमको मारा चाहता है ५ जो कहिये कि यहतो अस्त्रशस्त्र कुछलियेही नहीं है फिर इसको कैसे मारें तो राजाको निश्चेष्टही पुरुषका मारना अनुचित है ऐसेका मारना तो उचितही है जैसे यज्ञमें आयेहुये छागोंका वध उचितही होता ६ दोनोंजनों की ऐसी बतकही सुन वह राक्षस क्रुद्धहो मुखफैलाय दोनों भाइयों को लीलनेलगा ७ पर ये दोनोंभाई तो देशकालके जाननेमें बड़ेही निपुणथे उसकी दोनों बाहें जहांसे जमीथीं काटडालीं ८ उनमें दहिनी बाहँ तो परमचतुर श्रीरामचंद्रजीने खड्ग से काटी व बाईं लक्ष्मणजीने ९ जब बाहें कटगईं तो बड़ा शब्दकर गिरपरा आकाश पृथिवी व सब दिशों में उसका शब्द भरहुआ जैसे मेघके गर्ज्जनेसे भरहोताहै १० तो वह अपनी कटी बाहेंदेख रुधिर में डूबाहुआ दुःखितहो दोनों वीरोंसे बोला कि आप दोनों कौन हैं ११ जब तिसने ऐसा पूछा तो शुभ लक्षण लक्ष्मणजी ने रामचंद्रजीको कवन्ध से बताया १२ कि ये इक्ष्वाकुबंशियोंके राजाधिराज हैं लोग इससमय इनका रामचंद्रनाम कहते हैं इन्हींके छोटे भाई हमको जानो हमारा लक्ष्मण नाम है १३ हम लोगोंकी सौतेली माता केकयी ने इनका राज्य पाना रोक दिया तो ये वनको भेजेगये इन्हीं के साथ हमभी आये इनकी महारानी भी साथहीथीं १४ देवोंसे भी अधिक प्रतापी इनके वनमें वसनेके समय इनकी भार्य्या राक्षस हरलेगया उन्हीं को ढूंढ़ते २ हम लोग यहां आये हैं १५ अपना हाल तो हमने बताया तुम अपना तो बताओ कौनहो व किसलिये कवन्धके सदृश छातीमें मुख लगाये जांघें तोड़े पृथिवीमें लोटते हो १६ जब लक्ष्मणजीने ऐसाकहा तो प्रसन्न चित्त हो इन्द्रके वचनका स्मरण करताहुआ कवन्धबोला १७ कि हे नरव्याघ्रो आपलोग अच्छीतरह से तो आये बड़ी भाग्यकी बात है जो आप लोगोंको मैं देखताहूं व बड़ीही भाग्य की बातहै कि बन्धन

रूप मेरी बाहें आप लोगोंने काटडालीं १८ जिसतरह से हमारा इस विरूप का रूपथा व जिस अविनय से हमारा कुरूप होगया कहते हैं आपलोग कृपापूर्व्वक सुनिये १६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेसप्ततितमस्सर्ग्गः ७० ॥

हे महाबाहु श्रीरामचंद्रजी हमारा रूप पूर्व्वकालमें महाबल पराक्रमयुक्त व तीनोंलोकों में विख्यातथा १ जैसे कि सूर्य्य चन्द्रमा व इन्द्रका शरीरहै वैसाही हमारा भी रूप था सो ऐसा रूप धारणकर हम तीनोंलोकों को भयभीत करने लगे २ घूमघूम वनवासी ऋषि लोगों को भयभीत करते जाते जाते हमने स्थूलशिरा नाम महर्षि को कोपित कराया ३ वे महर्षि जी विविधिप्रकार के वनके पुष्प फलादि एकत्रकर रहेथे कि हमने अपने रूपके गर्व्वसे उनको धिक्कारा व फटकारा उन्होंने हमारी ओर देख अति घोर शापदिया ४ कि जाव मूर्ख तुम्हारा हमाराही सा कुरूपरूप होजायगा जबहमने उनको क्रोधयुक्त हो शापदेते देखातो शाप नाशके लिये प्रार्त्थना की कि कब इसशापका अन्तहोगा ५ तब शापके अन्तहोने के लिये उन्होंने कहा कि जब रामचन्द्रजी तेरे हाथकाट तुझको निर्ज्जन वनमें फूंकदेंगे ६ तब तुम अपना प्रथमका सुन्दर रूप पाय जावगे हे लक्ष्मण मुनिने तो यों कहा हमदनु के पुत्रहैं ७ संग्राममें इन्द्रजीके शापसे यह कवन्ध कासा रूप हमनेपाया उसका ब्योरावार हालयह है कि आगे हमने अत्युग्र तप करनेसे ब्रह्मा जीको प्रसन्न किया ८ उन्होंने हमको बड़ीभारी आयुषदी उससे हमको बड़ा अहंकार हुआ अपनेमनमें समझनेलगे कि अबतो हमारी आयुबड़ी भारीहै इन्द्रहमारा क्या करेंगे ६ ऐसी बुद्धिमें टिक संग्राम में जाय हमने इन्द्रको फटकारा उन्होंने सौ धारका अपना बज्र हमारे ऊपर चलाया उसके लगनेसे १० मूंड़ कनपटी आदि सब हमारा शरीरके भीतर पैठगया जब हमने प्रार्त्थनाकी तो हमको उन्होंनेयमपुरको नहीं भेजा ११ कहा जाव ब्रह्माजीके बचन सत्यहों बहुत दिनोंतक जीतेरहो तब हमने कहा कि शिर कनपटी आदितो हमारे हई नहीं बिना कुछ खायेपिये कैसे जीवेंगे १२ जब हमने ऐसा पूंछा तो इन्द्रने कहा अच्छा

तेरी बाहें चार चार कोशकी लम्बी होजायँगी १३ व उन्होंने हमारे पेटमें बड़ेबड़े दांत सहित मुख बनाय दिया तबसे हम अपनी इनलम्बी बाहोंसे बनचरों को पकर मुखमें डारलेते १४ उनमें सिंह व्याघ्र ऋक्षादि जो मिलते पकड़ पकड़ खाया करते हैं इन्द्रजीने यहभी कहा था कि जब रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी १५ समरमें तुम्हारी बाहें काटेंगेतो तुम फिर स्वर्गको आवोगे तबसे हेराजसत्तम लक्ष्मण जी हम इसी-तरह के शरीरसे इस बनमें १६ जो जो देखते हैं तिस तिसको ग्रहण करतेहैं व यहभी जानते हैं कि इन्द्रके वचनानुसार कोई न कोई अवश्य हमको मिलता रहेगा १७ सदा अपनी ऐसीही बुद्धि रखते हैं कुछ बड़ा श्रमभी नहीं करते सो अब सत्य सत्य हमने जाना कि आप रामचन्द्रजीहैं क्योंकि और कोई १८ हमको नहीं मारसक्ता क्योंकि महर्षि ने जो कहासो सत्यही हुआचाहै इससे हे राम और तो हमसे कुछनहीं हो सक्ता बुद्धिसे आपकी कुछ सहायता करेंगे १९ अर्थात् जब आप हमको अग्निमें भस्म करदेंगे तबहम आपको एकमित्र बतावेंगे जबइस तरह उस दनुके पुत्रने महात्मा व धर्म्मात्मा रामचन्द्रजीसे कहातो २० लक्ष्मण जीके देखतेही देखते श्रीरामचन्द्र जी उससे बोले कि हमारी यशस्विनी भार्य्या रावण हरलेगया २१ हमदोनोंभाई उस समयजनस्थानमें न थे तब लेगया था हमउस राक्षस का नाम मात्रतो जानतेहैं पर उसका रूपनहीं जानते २२ न उसका निवास व प्रभाव जानें इस से मारे शोकके व्याकुल अनाथों के समान इधर उधर दौड़ते हुये हम लोगोंके ऊपर दया कीजिये २३ हम इसीको उपकार समझेंगे व हाथियों के तोड़े सूखेकाठ बटोर तुमको २४ प्रातःकाल होते होते भस्म करेंगे किसीतरह का सन्देह न मानो अबतुम सीताको बताओ कि कौन व कहांको लेगया २५ जो जानते हो तो हमारे संगयही उपकार करो जब रामचन्द्र जीने ऐसाकहा तो वह दानव २६ अति कुशलवक्ता श्री रामचन्द्रजीसे बड़ी कुशलताके साथ बोला कि हमारा ज्ञानदिव्य नहीं इससे हम मैथिली को नहीं जानते २७ पर जबतुम हमको भस्मकरोगे तो हम अपना रूपपाय जो तुमसे सीताको बतावेगा उसे बतावेंगे जो कि उस राक्षसको अच्छी तरह जानता है २८ जो कहिये कि अभी

बताओ तो बिना आपके जोरसे अभी हमको ऐसी शक्तिनहीं जो उसे बताय सकें जिसने आपकी सीता हरीहै २९ प्रथम हमें बड़ा बिज्ञान था पर शापके दोषसे नष्टभ्रष्ट होगयाहै हमने अपनेही कर्म्मोंसे लोकमें निन्दित रूप पायाहै किसी का इसमें दोष नहीं ३० परन्तु हे राम जबतक सूर्य्य अस्ताचल को न जायँ जोकि अस्त हुआहीचाहत हैं तभी तक गढ़ामें धर हमको आप यथा बिधि भस्मकरें ३१ हे बीर रघुनन्दन जब आप हमको न्यायपूर्व्वक भस्मकरदेंगे तो हमउसे बतावेंगे जो उस सीतापहारी राक्षसको भली बिधिसे जानताहै ३२ आप उससे मित्रता करलेना वहआपकी बड़ी भारी सहायताकरेगा ३३ क्योंकि वह किसी कारण से सबलोकों में घूमाहै इससे तीनोंलोकोंमें ऐसा कोई नहीं जिसके हाल वह न जानता हो ३४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेएकसप्ततितमस्सर्गः ७१ ॥

जब कबन्धने उनदोनों बीर शिरोमणियोंसे ऐसाकहा तो दोनों भाइयोंने पर्व्वतकी गुहामें जाय अग्नि लायधरी १ व लक्ष्मण जीने चारों ओरसे चिता बारदी व वह बरने लगी २ चरवी से पचित कबन्धकाशरीर घृतके पिण्डके समान था इससे अग्नि उसे धीरे धीरे जारताथा ३ जब चिता बनाय बरबुझायगईतो उसमें से वह निर्द्धूम अग्निके समान नये बस्त्र व दिव्यमाला पहिरे निकला ४ उसके सब अंगोंमें भूषण जटितथे उत्तम उत्तम वस्त्रधारण किये था दीप्ति देवताओं कीसीथी ५ वह हंसजुते हुये बिमानपै बिराजमान अपनी बड़ीभारी प्रभासे दशदिशों को प्रकाशित कराता हुआ ६ अन्तरिक्ष में प्राप्तहो कबन्ध श्रीरामचन्द्रजी से बोला कि हे राघव जिसतरह सीताको पावोगे वह रीति निश्चय से सुनो ७ हे राम जिन युक्तियों से लोकमें सब पदार्थ बिचारे जातेसन्धि बिग्रह यान आसन द्वैधीभाव व समाश्रय इन भेदोंसे वे ६ हैं बिना इनको किये कार्य्य सिद्धिनहीं होती ८ आप व लक्ष्मण दोनोंजन दशाहीनहैं इसीसे यह स्त्री हरण दुःखमिला है ९ इससे अब आपकोई अच्छा एक मित्र जरूरकरें क्योंकि बिना मित्रकिये आपके कार्य्यकी सिद्धिहमनहीं देखते १० हे रामचन्द्रजी सुनिये एक सुग्रीव नाम बानर

है इन्द्रका पुत्रबाली उसके भाईका नामहै उसने क्रोधकर सुग्रीवकोघर
सेनिकालदियाहै ११ वह सुग्रीव पम्पासरके निकट ऋष्यमूकपर्व्वतपर
अपने चार बानरों के साथ रहताहै १२ वह बानरेन्द्रमहावीर्य्य महाते-
जस्वी महादीप्तिमान् सत्यप्रतिज्ञ नीतिशास्त्र वेत्ता धारणा शक्तिमान्
महान् १३ दक्ष प्रगल्भ प्रकाशवान् महाबल पराक्रम युक्त है परराज्य
के कारण उसके भाईने उसे निकाल दिया है १४ वहसीताजी के ढूंढ़ने
के बिषय में आपका सहायक व मित्रहोगा हे रामचन्द्रजी शोकमें न मन
कीजिये १५ जोकुछ होनीहोती वहहोतीही है उसके बिपरीत कोईकुछ
भी नहीं करसक्ता हे इक्ष्वाकु शार्दूल कालकी गतिबड़ी दुर्ग्गम है १६
इससे यहांसे शीघ्रही जाय तिसी महाबली सुग्रीव को मित्र बनाइये
अभी जाइये बिलम्ब न कीजिये १७ व जाय अग्निबार उसको साक्षीकर
सुग्रीव से मित्रता कीजिये परउस बानराधिप का कभी अपमान न की-
जियेगा १८ क्योंकि वहबड़ा कृतज्ञ है व जबजैसा चाहता वैसारूप
धारण करलेता सहायक होनेके वहीयोग्य है क्योंकि बड़ावीर्य्यवान् है
जो कार्य्य वहकहे आपलोग भी करदेंगे १९ फिरचाहे आपलोग कुछ
उसका कामकरेंगे चाहे न करेंगे परवह आपका कार्य्य जरूर करेगा
क्योंकि वहऋक्षरजस कीस्त्री में सूर्य्यसे उत्पन्न हुआ है इस समय भाई
की शंकासे पम्पासर के किनारे घूमता है २० सूर्य्यनारायणका औरस
पुत्र है परबाली के संग बिगाड़ होनेके कारण दुःखित है इससे आप
अस्त्रशस्त्र दूरधर ऋष्यमूक पै बैठहुये उस बानरराज से २१ सत्यता के
साथमैत्री कीजिये वह कपिकुंजर सबस्थानोंमें जाय जाय २२ फिर अच्छी-
तरह से राक्षसोंके भी लोकमें चलाजायगा क्योंकि लोकमें ऐसाकोई स्था-
ननहीं जिसे सुग्रीव न जानताहो २३ जहांतक सूर्य्य तपते हैं उतने
बीचकी जितनी नदियां व बड़ेबड़े पर्व्वत व पर्व्वतों की कन्दराहैं २४सब
में जहांकहीं आपकी भार्य्याहोगी वहबानरों से ढुंढ़ाय आपको मिलायदेगा
क्योंकि तुरन्त सब दिशों में बानरों को भेजेगा २५ व तुम्हारे वियोग
से शोचकरती हुई मैथिलीको रावणकेमंदिरसे अवश्य ढुंढ़ालावेगा२६॥

दो० शैल शिखरपर बैठिहू वा पाताल निवासि॥
सीतहिलाइहि सुगलहनि राक्षसेन्द्रकीराशि १ । २७

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेद्विसप्ततितमस्सर्गः ॥ ७२॥

सीताजी के ढूंढ़नेके विषयकी वार्त्ताकर परमार्थवेत्ता कवन्ध फिर श्री रामचंद्रजी से बोला १ हे राम यही वहांका कल्याणदायक मार्ग्ग है जिधर ये फुलाने वृक्षलगेहैं जो यहांसे पश्चिमओर देखाईदेतेहैं २ इन वृक्षों में जामुन चिरौंजी कटहर वरगद पकरिया तेंदू पीपर कठचंपा आमआदि नानाप्रकारके हैं ३ व धवई नागकेशर अगेथू तिलक किरवार श्याम अशोक कदम्ब कँदैल,येसब पुष्पित लगेहैं ४ हरेअशोक नींबके वृक्ष सबतरहके अन्यभी उत्तम उत्तम वृक्षहैं उनपैचढ़के व हिलाय फल भूमिमें गिराय ५ अमृत समान फल खाते पीते दोनों भाई चले जाइयेगा जब उसफूले वनको नांघजावगे ६ और एक नंदनवन व उत्तर कुरुदेश के समान वन मिलेगा जिसमें सब कालमें फरनेवाले मीठे फल वाले वृक्ष लगेहैं ७ मिलेगा उस वनमें सब ऋतु सब कालोंमें रहते हैं जैसे चैत्ररथवनमें रहते हैं वहां सब वृक्ष फलभारसे लदेखड़े रहतेहैं ८ वे सब मेघ व पर्वतों के समान शोभित होते वहांभी चाहे उनपै चढ़के व जोरसे हिलाय भूमिमें गिराय जैसा सुख समझपरे ६ अमृत समान फल आपको लक्ष्मण देयँगे इसतरह दोनोंभाई पर्वतोंको नांघतेहुये इस वनसे उस वनमेंजाय १० फिर पम्पानाम पुष्करणीमें पहुंचोगे जिसमें कहीं सिटकियोंका नाम नहीं न कहीं बिछलहर है घाट बराबर बने हैं सेवार का कहीं नामनहीं ११ वारू उसमें बहुत अच्छीकमल नानाप्रकार के उसमें फूलते हैं हंस राजहंस क्रौंच कुरव आदि पक्षी १२ पम्पाके जलमें तैरते हुये मनोहर शब्द बोलते हैं मनुष्यों को देख डरते नहीं क्योंकि अभीतक वे जानतेही नहीं कि पक्षियोंकोभी कोई मारताहै १३ वहां जाय उन पक्षियों को देखते भालते हुये आप दोनों नानाप्रकार के फल मूल दलादि तपस्वियों के भोजनके योग्य १४ जो मिलेंगे व अन्यभी पदार्थ जो २ लक्ष्मण तुम्हारेलिये जावेंगे १५ उनको आप प्रसन्नता से भोजन करेंगे व उनको भी करावेंगे १६ व तिस पम्पा का कमलके सुगंधसे सुगंधित निर्मलसाफ रोगरहित जल लक्ष्मण तुम्हारे लिये लावेंगे १७ व आपको कमलके पत्तामें करके पिआवेंगे व बड़ेबड़े

वानर पर्वतों की कंदराओं व वृक्षों पर रहनेवाले १८ संध्या समय लक्ष्मणजी आपको देखावेंगे वे जल पीनेके लिये बैलों के समान शब्द करतेहुये आतेहैं १९ फिरवहां बड़े मोटे ताजे व पीले नीले भी बहुत से वानर वृक्षोंकी शाखा हाथ में लिये देखोगे २० पम्पा का शीतल जल देख व पानकर आप शोकको भूलजायँगे व वहांफूलेहुयेतिलक किरवार आदि के वृक्ष हैं २१ व नानाप्रकारके कमल भी फूलरहेहैं पर उनपुष्पों की माला बनानेवाला व पहिरनेवाला कोईमनुष्य वहां नहीं रहता २२ न वे पुष्पकभी कुंभिलाते हैं न अपने आप गिरतेहैं क्योंकि वहां मतंग मुनिके शिष्य एकाग्रचित्तहो विहराकरते २३ वेलोग अपनेगुरूके लिये फल पुष्पादि लेनेजातेहैं व मारे श्रम के उनके अंगोंसे जो पसीनाके बूंद गिरतेहैं २४ मुनियों की तपस्या से वही पुष्प होजातेहैं इसीसे पसीना के बिन्दुओंसे उत्पन्न होनेके कारण वे पुष्प नहींनाशको प्राप्तहोते २५ यद्यपि अब मतंगमुनिके शिष्य वहां कोईनहीं सब परमधाम को चले गये तथापि तिनलोगों की दासी शवरी नाम एक स्त्री वहां अबतक भी तपस्या करती देखाई देती है २६ वह बहुत दिनों से वहां रहती है व अपने धर्म्ममें टिकीहै जब सब प्राणियोंके नमस्कार करने के योग्य व देवों से भी उत्तम रूप धारी आपको देखेगी तो स्वर्गको चलीजाय गी २७ तिसके पीछे पम्पाके पश्चिम के तटपै एकबड़ा सुन्दर आश्रम आपदेखेंगे २८ उस आश्रमको हाथी नहीं गोंजसक्ते यद्यपि उसपर्व्वत व बनमें विविधप्रकार के हाथी रहते हैं २९ व वह वन मतंग ऋषि के प्रतापसे मतंगवन कहाता है ३० व वह नन्दनवन के समानहै उसमें नानाप्रकार के पक्षी सुहावनी बोली बोलते हैं वहां आपअच्छी-तरह से विहरोगे ३१ व उसी पम्पाके पूर्व्वओर ऋष्यमूकनामपर्व्वतहै जिसपै नानाप्रकारके वृक्षफूलेलगे हैं उसपर का चढ़ना बड़ा कठिनहै क्योंकि उसकी रक्षा छोटे २ हाथी व छोटे २ सर्प्प किया करते हैं यह पर्व्वत बड़ाही सुन्दर है बहुत दिनहुये इसको ब्रह्माजीने बनायाथा ३२ हे रामचन्द्र जी जो पुरुष उस पर्व्वतपर सोताहै वह स्वप्नमें जो धनपाता है जागनेपर भी उसे मिलताहै ३३ व जो कोई पापीदुराचारी पुरुष उस पर्व्वत के ऊपर चढ़ता है वह जैसेही वहां सोने लगता कि

राक्षसलोग आय उसको वहीं मारडारते हैं ३४ हे राम तहां भी मतङ्गा-श्रम वासी छोटे छोटे हाथियोंका शब्द सुनाई देता है ३५ उन हाथियों के अरुणरंगका मद बहुधा बहा करता है व अन्य वनवाले हाथियों को देखतेही मारडारतेहैं सब बड़ेवेगवाले व कालेवादरके समान रंगके हैं ३६ वे हाथी पम्पा का विमल सुन्दर व अत्यन्त सुखदायक सुगन्धित जल पीकर ३७ पम्पामें सब पैरते व क्रीड़ा करते हैं हे राम वहां आप ऋक्ष व्याघ्र नीलगाय ३८ आदि कोमल व सुन्दर वनचारी पशु देख शोक छोंड़देंगे हे राम तिस पर्व्वतकी महाशोभायमान कन्दरा है ३९ उसके द्वारपै एक बड़ी भारी शिला दीरहती है इससे उसमें का पैठना सहज रीतिसे नहीं होता व तिस गुहाके पूर्वके द्वार पै एक बड़ाभारी कुण्ड है जिसका पानी चलताही नहीं ४० उसके किनारे किनारे फूलेफूले बहुत से वृक्ष लगे हैं इससे अति रमणीयहै तिसी गुहामें सुग्रीवजी वानरों के साथ वसते हैं ४१ कभी२उस पर्वतकी कँगूरा पै भी बैठरहते हैं इसतरह वह कवन्ध रामचन्द्र व लक्ष्मणजी को सब बताय ४२ फूलोंकी माला पहिरे सूर्य्यके समान प्रकाशित आकाश में शोभित होनेलगा उस महा भाग्यवान्को श्रीरामचंद्रजी व लक्ष्मणजीने ४३ कहा कि अच्छा हमभी वहां जातेहैं तुमभी अबजाव उसने भी कहा अच्छाहम जाते हैं आपलोग भी जायँ यह कह कवन्ध चला ४४ वैसा रूप पाय शोभायमान सुवर्ण सम देह हो रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीको देख मित्रताकी बातें बताताहुआ स्वर्ग्गमार्ग्ग हो कवन्ध चलागया ४५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेत्रिसप्ततितमस्सर्ग्गः ७३ ॥

कवन्धने जिसतरह पम्पाकामार्ग्गबतायाथा उसीपश्चिमदिशाकीसूध में दोनों राजकुमार चले १ मार्ग्गमें पर्व्वतों पर नानाप्रकारके फले फूले रसीले वृक्ष देखते दोनोंभाई सुग्रीवके देखनेकोगये २ गलीमें एकपर्व्वत केऊपर रात्रिभररह दोनोंभाई प्रातःकाल जातेजाते पम्पाके पश्चिमतीर पैपहुँचे ३ पम्पाके पश्चिम तीरपै पहुँच दोनोंभाइयोंने शवरीका उत्तम आश्रमदेखा ४बहुत वृक्षोंसे घिरा शवरीका आश्रमदेख फिर दोनोंभाई शवरीकेनिकटपहुँचे ५ उससिद्ध शवरीने जैसेही रामचन्द्रजी व लक्ष्मण

जीकोदेखा तैसेहीउठकेहाथजोर दोनोंभाइयोंके चरणारविन्द ग्रहणकिये
६ व पाद्याचमनीयादि सब पदार्त्थभी विधिपूर्व्वक दिये तिसको अपने
तपस्विनीके धर्म्ममें टिकीजान श्रीरामचन्द्रजी बोले ७ कि भला
तुम्हारे विघ्नतो सबजीतगयेहैं व तुम्हारा तपबढ़ताहै कोपतुम्हारेवशमेंहै
आहारभी तुम्हारेकाबूमें है इसमेंकुछ सन्देह तो नहीं हे तपोधने ८
तुम्हारेसब नियमतो अच्छीतरह चलेजातेहैं व तुम्हारेमनको सदासुख
तो रहताहै हे चारुभाषिणि भला तुमअपने गुरुओंकी सेवा अच्छीतरह
करतीहो ६ जब रामचन्द्रजीने शवरीसे इसतरह पूंछा तो वह परम-
सिद्धा व महावृद्धा बड़ीअधीनतासे बोली १० हे महाराज आपकेदर्शन
से आजमैंने तपस्याकी सिद्धिपाई व आजमेरा जन्म सफलहुआ व
आज गुरुलोगोंकी पूजा अच्छीतरहसेहुई ११ आजमेरा तपभी सफल
हुआ व अब यहभी आशाहुई कि स्वर्ग्गबासभी होगाक्योंकि देव देव
आपकी मैंनेपूजाकी १२ हे मानदेनेवाले श्रीरामचन्द्रजी तुम्हारे सौम्य
नेत्रोंकी सौम्यदृष्टिसे मैं पवित्रहुई व इसीसे अब अक्षयलोकोंको जाऊं-
गी १३ जिन ऋषियोंकी मैं सेवाकरतीथी वे सब जब आप चित्रकूटमें
थे तब अति प्रकाशित विमानोंपर आरूढ़हो यहांसे स्वर्ग्गको चलेगये
१४ तिन महात्मा महर्षियोंने मुझसे कहाथा कि सुपुण्यरूपतेरे इस
आश्रमपर श्रीरामचन्द्रजीआवेंगे१५इससे लक्ष्मणसहित तिनरामचन्द्र
जीको तू श्रेष्ठ अतिथि जान अच्छीतरह ग्रहणकरना तिनको देख तू
अतिश्रेष्ठ लोकोंकोजायगी १६ हे महाभाग जबसे उनमहात्माओं ने
मुझसे ऐसाकहा तभीसे मैं विविधिप्रकारके अच्छे अच्छे फल ढूंढ़ ढूंढ़
१७ आपकेलिये धरतीहूं वे सबफल कहींदूरकेनहींहैं केवल इसीपम्पा
के तीरकेवृक्षोंकेहैं इसतरह जब परमधर्म्मात्मा श्रीरामचन्द्रजीसे शवरी
ने कहा तो श्रीरामचन्द्र उससे बोले १८ क्योंकि अपने मनसे विचार
लिया कि यह परमात्माकोभी अच्छीतरह जानतीहै इससे कहा कि
हमने कवन्धसे तो तुम्हारे महात्माओं का हाल सुनाथा १६ पर जो
तुमचाहतीहोतो प्रत्यक्षमें भी उनकाहालदेखाचाहतेहैंरामचन्द्रजीके मु-
खारविन्दसेनिकलाऐसावचनसुन२० शवरीनेदोनोंभाइयोंकोवहमहावन
देखाया व कहा हेरघुनन्दन बादरसम श्यामरंगकायहवन देखिये २१

इसमें नानाप्रकार के मृगगण व पक्षी विद्यमान हैं व इसका मतंग बन नाम है हे महाद्युतिमान् श्रीराम यहीं वे महात्मा हमारे गुरुलोग मंत्र पूजित मन्त्र युक्त गंगादि तीर्थोंका आवाहन करते थे २२ वह यही वेदी है जहां हमारे गुरु लोग अपने करोंसे पुष्पोपहार करतेथे २३ हे रघूत्तम देखिये तिन्हीं महात्माओंके प्रभाव स अबभी सब दिशा शोभा से प्रकाशित हैं व वेदीकी भी अतुल दीप्ति है २४ देखिये सात समुद्र जब मारे उपवासों के श्रम से आलस्य में आय मुनि लोग स्नान करने नहीं जातेथे तो उन लोगोंके चिन्तना करने से यहां आये हैं २५ देखिये फिर तिन मुनिलोगों ने इनमें स्नानकर अपन ओदे बस्त्र इन वृक्षों पर टांग दियेहैं वे अबतक भी नहीं सूखे २६ व देव कार्य्य करने के लिये उन लोगों ने जो पुष्पों की माला वा पुष्प यहां छोड़थे वेअब तक नहीं मुरझाने २७ अब सब बन आपने देखा व जो सुनने के योग्य था सुना अब में आप की आज्ञा चाहती हूं कि यह अपना शरीर छोड़ दूं २८ क्योंकि जिन मुनियों की में चरण दासी हूं अब उन्हीं महात्माओं के निकट जाया चाहतीहूं २९ उस शबरी के धर्म्मिष्ठ वचन सुन रामचन्द्रजी सहितलक्ष्मण बहुतहर्षित हुये व इस विषयको बहुत आश्चर्य्य मान बोले ३० कि हे भद्रे तूने हमारी बड़ी पूजाकी हम तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न हुये अब जहां जाना चाहतीहो जा ३१ जब मृग चर्म्म धारण किये व बार रखाये हुई उस शबरी से श्रीरामचन्द्रजी ने ऐसाकहा तो वह अपनाशरीर अग्निमें हुन ३२ प्रज्वलित अग्निकेसमान प्रकाशित हो स्वर्ग्ग को चली गई जानेके समय सब आभरण उसके दिव्यहोगये व दिव्यही सब माला होगई चन्दनादि सुगन्धित लगाने के पदार्थ भी दिव्यहीहोगये ३३ बस्त्रभी सब दिव्यही धारणकियेथी व रूपभी दिव्य ही दर्शन करने के योग्य होगया उस स्थानको सुदामानाम पर्ब्बत पर की बिजुली के समान प्रकाशित करतीथीं ३४ जिस स्थानको वे महात्मा लोग गये थे उसी पुण्य स्थान को अपने तप के बल से व रामचंद्र जी के दर्शन के प्रभाव से शबरी गई ३५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरण्यकाण्डेचतुस्सप्ततितमस्सर्ग्गः ७४ ॥

जब अपने तेजसे शबरी स्वर्ग्गको चलीगई तोलक्ष्मण सहित श्रीराम-

चन्द्रजी चिन्तना करने लगे १ तिन महात्माओं का अद्भुत प्रभाव बिचार परम हितकारी अपने भाई लक्ष्मणजी से बोले २ हे लक्ष्मण हमने इनमहात्माओंका अति आश्चर्य्य युक्त आश्रम देखा जिसमेंसब पशु बैर भाव छोड़ एकही स्थान पै चरतेहैं पक्षी भी नाना प्रकार के विद्यमान हैं ३ इन मुनि लोगोंके लायेहुये सातो समुद्रों के जल में स्नान करने से पितरभी तृप्त होजातेहैं ४ इससे हमारेभी पितर तृप्तहोगये अशुभ सबनष्ट होगये कल्याण प्राप्त हुये हे लक्ष्मण तिसी से इस समय हमारा मन प्रसन्नहै ५ हमको इससमय बिदित होताहै कि अबकुछ शुभहोगा इससे उसमनोहर पम्पासर पै चलें ६ जिसपम्पा के निकटही वहऋष्यमूक पर्व्वत देखाई देताहै जिसपर सूर्य्यकेपुत्र सुग्रीवजी रहते हैं ७ वे सदाबाली के भयसे डराकरते हैं इसीसे चारबानर अपने संगलिये वहां बिराजते हैं हमबहुतही शीघ्र तिन बानरश्रेष्ठको देखने चलेंगे ८ क्योंकि सीताको ढूंढ़ना जो हमारा कार्य्य है वहउन्हीं के अधीन है जबरामचन्द्रजीने ऐसाकहा तो लक्ष्मणजीबोले ९ कि बहुतअच्छा चलिये हमारेमनमेंभी बड़ीजल्दी लगीहै यहसुन दोनोंभाई उस आश्रमसे निकल १० पम्पासर के तीरपहुंचे देखातो उसके चारोओर नानाप्रकार के वृक्षलगेथे ११ कोकिल अर्ज्जुन सुआमैनाआदि नानाप्रकारके पक्षी उसबन में बोलतेथे १२ उनके बोल सुनतेहुये दोनोंभाई चलेजातेथे कि रामचन्द्रजी बिबिधप्रकार के तालाव आदि देख बहुत व्याकुलहोउसके बनाय तीरपै पहुंचे १३ उत्तमजल बहती हुई पम्पाको पाय प्रथम उसके निकटही जो मतंग कुण्डथा उसमें स्नान किया १४ तबराजाधिराज दशरथजी के पुत्र श्रीरामचन्द्रजी शोकके मारे बहुत ब्याकुलहुये १५ व ऐसापम्पा नामसर उन्होंने देखा जोकि ॥

दो॰ पंकज शोभित रम्यअति लषत हरत जनपीर ॥
तिलकाशोकोद्दाल पुन्नाग प्रकाषित तीर १ । १६
सुन्दर उपबनयुत कमल संयुत नीरसुहात ॥
स्फटिकसदृशजलबिमलशुभबालुकामकहितात २ । १७
मीन कमठ मणजहँ बहुत तरुसमूह ज्यहितीर ॥
सखी सरिस बेष्टित लतन देखत रहत न धीर ३ । १८

नागयक्ष गन्धर्व्व निशिचर किन्नर युतजोइ ॥
नानातरु ब्रतती सहित शीतल जल ज्यहिहोइ ४ । १६
पद्म सुगन्धित तामजो कुमुद सहित जोश्येत ॥
नीलिरंग कुवलय सहित करि कम्वल छविदेत ५ । २०
उत्पल अरु अरविन्दयुत पद्म सुगन्धित योग ॥
कुसुमित उपवन चूतयुत मोरशोर सम्भोग ६ । २१
लषण सहित रघुवंश मणि पम्पालषि कियशोक ॥
यासोंकीन विलाप बहु रही तनिक नहिंरोक ७ । २२
तिलकबिजौराबट सुसित तरुसँय्युत ताकीर ॥
अति पुष्पित पुन्नागकर बीरपुष्प युत तीर ८ । २३
कुन्द मालती गुल्म भण्डीरनि चुलरु अशोक ॥
सप्तपर्ण केतक सहित अरु किरवार बिलोक ९ । २४
अन्य बिबिध तरुयुत कुटिल कामिनि समसो शोभ ॥
ताहि बिलोकि कृपायतन करमन भयहु सलोभ १० । २५
याहितीर पुष्पित फलित तरुसह पर्व्वत एक ॥
नानाधातु न रंगयुत ऋष्यमूक अति नेक ११ । २६
चित्र पुष्प पुष्पित सुतरु ऋष्यमूक परनीक ॥
ऋक्षरजस सुत सुगलतहँ बसतन ताहित ठीक ११ । २६
अति महात्म सो सुगलत्याहि देखनहित चलिदेहु ॥
तादर्शनसों मनुजवर निजआशय गनिलेहु १२ । २७
यहकहि पुनिकह लषनसों सत्य पराक्रम राम ॥
हमबिन किमिरहिहैं सखे सीताके असुग्राम १३ । २८
इमि बहुभांति विलापकरि रघुपति करुणापूर ॥
परममनोहर पम्पसर पैठ्यहु करि भ्रमदूर १४ । २९
बन देखत मग कुसुमयुत पम्पा देख्यहु जाय ॥
नाना शकुनिसमेत जो दुःखित चित छौभाय १५ । ३०

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआरगयकाण्डेपंचसप्ततितमस्सर्ग्गः ७५ ॥

समाप्तोऽयम्वाल्मीकीयरामायणस्यारगयंकाण्डस्तृतीयः ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
वेदान्त	**राग**	गोपीचंद भरतरी	स्वयम्बोध
योगवाशिष्ठ	रागप्रकाश	कथा श्रीगंगाजी	ज्ञानचालीसी
आनंदाऽमृतवर्षिणी	लावनी	अवधयात्रा	दोहावली
सांख्यतत्वकौमुदी	**क़िस्सा वग़ैरह**	भरतरीगीत	बालाबोध
काव्य	नानार्थनौसंग्रहावली	दानलीला व नागलीला	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
सूरसागर	ब्रह्मसार	दोहावली रत्नावली	किताबजंत्री
कृष्णसागर	शिवसिंहसरोज	गोकर्णमाहात्म्य	गणितकामधेनु
विश्रामसागर	भक्तमाल	श्रीगोपालसहस्रनाम	लीलावती
प्रेमसागर	इन्द्रसभा	कथासत्यनारायण स-	पटवारियों की पुस्तक ४ भा-
ब्रजविलास बड़ा व छोटा	विक्रमविलास	हनूनाटक	**वैद्यकभाषा**
कृष्णप्रिया	बैतालपच्चीसी	हनुमानबाहुक	निघण्ट
विजयमुक्तावली	सिंहासनबत्तीसी	जनकपच्चीसी	अमरविनोद
अनेकार्थ	पद्मावतीखण्ड	हरिहरसगुणनिर्गुणप-	वैद्यजीवन
छन्दोर्णवपिंगल	शुकबहत्तरी	दावली	औषधिसंग्रहकल्पवल्ली
रसराज	बकावलीसुमन	वनयात्रा	अमृतसागर बड़ा व छोटा
सतसई मूल व सटीक	चहारदरवेश	कायस्थवर्णनिर्णय	वैद्यमनोत्सव
सभाविलास	क़िस्सा हातिमताई	विहारवृंदावन	रसायनप्रकाश
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	अपूर्व्व कथा	समरविहारवृंदावन	इलाजुल् गुर्ब्बा
भजनावली	क़िस्सा गुलसनोबर	कल्पभाष्य	दिल्लगन
प्रेमरत्न	सहस्ररजनीचरित्र	लक्ष्मीसरस्वतीसंवाद	**ज्योतिषभाषा**
युगुलविलास	राबिन्सन् का इतिहास	उपदेशचन्द्रिका	जातकचन्द्रिका
चित्रचन्द्रिका	सीताहरण	मंगलविनोद	जातकालंकार
बारहमासा बलदेवप्रसाद	सतीविलास	विजयचन्द्रिका	दैवज्ञाभरण
मनोहरलहरी	क़िस्सा मर्द औरत	सिद्धांतसंग्रह	ज्ञानस्वरोदय
गंगालहरी	सांगीत प्रह्लाद	नवीनसंग्रह	रमलसार
यमुनालहरी	**मुतफ़र्रिक़ात**	रामविनयशतक	रमलनौरत्न
जगद्विनोद	शनिश्चर की कथा	**दरसी**	इन्द्रजाल
शृंगारबत्तीसी	ज्ञानमाला	अक्षरावली	लीलावती संस्कृत

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
संस्कृत की पुस्तकें	संस्कृत उर्दू टीका	उर्दू कैथी महाजनी	व शिमाली १९ सन् १८७३ ई०
लघुकौमुदी	मनुस्मृति	टिकट के लाइसन्स का	तरमीम मजमूआ ज़ाबिता
सिद्धान्त चन्द्रिका	विष्णुहारीत	ऐक्ट २ सन् १८७४ ई०	फ़ौजदारी ११ सन् १८७४ ई०
भाषातत्त्वप्रकाश	महिम्नस्तोत्र	नागरी	तक़ावी के क़ायदे
पंचमहायज्ञ	व्रतार्क	ऐक्ट लगान मग़रबी व	सवाल व जवाब पुलिस
निर्णयसिन्धु	याज्ञवल्क्यस्मृति	शिमाली १० सन् १८५९ ई०	अवध रुहेलखण्ड रेलवे
कर्म्मविपाक	संस्कृत भाषा टी०	इंडियन पिनल कोर्ट मज-	का दस्तूरुल अमल
संग्रहशिरोमणि	अमरकोष तीनों काण्ड	मूआ ज़ाबिता फौजदारी	ताज़ीरात हिन्द
भगवद्गीता पञ्चरत्न	याज्ञवल्क्य स्मृति	ऐक्ट २५ सन् १८६१ ई०	महा भारत सबल सिंह कृ-
दुर्गापाठ मूल व सटीक	संध्या पद्धति	ऐक्ट रजिस्टरी २० सन्	१- आदिपर्व्व
विष्णुभागवत	व्रतार्क	१८६६ ई०	२- सभापर्व्व
कथायमद्वितीया	भगवद्गीता टीका ह०	ऐक्ट स्टाम्प १ सन् १८६२ ई०	३- विराट पर्व्व
अपराधभंजनस्तोत्र	भगवद्गीता टीका आ०	ऐक्ट स्टाम्प अदालत २६	४- उद्योगपर्व्व
कायस्थकुलभास्कर	गीतगोविंद	सन् १८६७ ई०	५- भीष्मपर्व्व
कायस्थधर्म्मनिरूपण	कथा सत्यनारायण स-	मजमूआ ऐक्ट अवध ल-	६- द्रोणपर्व्व
तथाछोटा	टीक	गान १९ सन् १८६८ ई०	७- कर्णपर्व्व
मयुरासभा	शार्ङ्गधरसंहिता	पुरज़ादारी २६ सन् १८६६	८- शल्य पर्व्व
ज्योतिष	पाराशरी सटीक	ई० वग़ैरह	९- गदा पर्व्व
मुहूर्त्तगणपति	शीघ्रबोध सटीक	ऐक्ट स्टाम्प दस्तावेज़ात	१०- स्त्रीपर्व्व
मुहूर्त्तचक्रदीपिका	लघुजातक	१८ सन् १८६९ ई०	११- स्वर्गारोहण
मुहूर्त्तचिन्तामणि स-	परमार्थसार	ऐक्ट ताल्लुक़दारान मक़-	किताबें जो छप रही हैं
मुहूर्त्तदीपक	सामुद्रिक	रूज़ अवध २४ सन्	उनके नाम नीचे लिखे हैं
बृहज्जातक सटीक	गरुड़ पुराण	१८७० ई०	मदनपारिजात
जातकालंकार	रामविवाहोत्सव	ऐक्ट चौपायों का मदाख-	मार्कण्डेय पुराण उर्दू टी-
जातकाभरण	अपरोक्षानुभव	लबेजा १ सन् १८७१ ई०	का सहित
होरामकरन्द	लग्नचन्द्रिका	ऐक्ट मजमूआ ज़ाबिता-	ऐक्ट १४ सन् १८८२ ई०
मुहूर्त्तमार्त्तण्ड सटीक	क़ानूनकैथी	फौजदारी १० सन् १८७२ ई०	दीवानी
षट्पञ्चाशिका	पटवारियों के क़ायदे	ऐक्ट मालगुज़ारी मग़रबी	

